



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय



विषय संख्या

५३०.०९

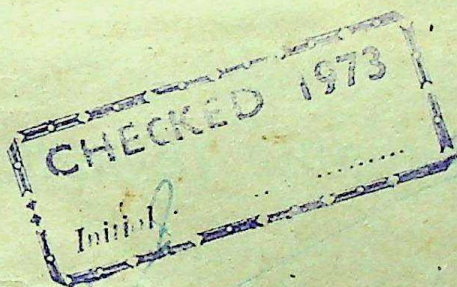
पुस्तक संख्या

२५(२)

आगत पञ्जिका संख्या ४०, २२३

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां
लगाना वर्जित है । कृपया १५ दिन से अधिक
समय तक पुस्तक अपने पास न रखें ।

संस्कृत मन्त्रालय १८०८-११-११



420.08

88, 222

16-2-28

22 (2)

श्रीनिघण्टशिरोमणिः ।

सदित्पणः ।

आयुर्वेदपञ्चाननोपाधिजुषा

श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्लेन

सम्पादितः प्रकाशितश्च ।

संवत् १९७१



40223

THE

NIGHANT SHIROMANI

Edited by

AYURVED PANCHANANA

PANDIT JAGANNATH PRASAD SHUKLA,

Editor "Sudhanidhi"

ALLAHABAD.

1914

PRICE 2/4/-]

[मूल्यम् सपाद रूप्यक द्वयम् ।

● अरुण साजान सुक्ति: ●		
५	पुस्तक नं. ५३०.०१	५
	प्राप्त नं. ५५ (२)	
	लिपि:	
गुरुकुल प्रकाशन संस्थान		

Printed by Babu Rajkishore, at the Triveni Printing Works
Daraganj-Allahabad.

प्रकाशकका कथन ।



इस समय संस्कृत और हिन्दीमें जितने निघण्टु प्रकाशित हुए हैं, वे या तो केवल अपनी सम्मति प्रकाशित कर ग्रन्थ अपूर्ण रखते हैं, या अपने साथही अन्य ग्रन्थकारोंकी भी सम्मति उद्धृत कर ग्रन्थको आवश्यकतासे अधिक बढ़ा देते हैं। यह “निघण्टु-शिरोमणि” इन स्योंसे भिन्न प्रकारका है और पढ़ने, कण्ठ करने तथा संग्रह करनेके लिये बहुत ही उपयोगी और सचमुच नामके अनुसार निघण्टुओंमें शिरोमणि है। केवल एक इसी निघण्टुको पास रखनेसे दूसरे निघण्टुकी आवश्यकता नहीं पड़ती। कमसे कम एक दर्जन निघण्टुकारोंकी सम्मति तो अकेले यही प्रकाशित करता है; परन्तु ऐसी खूबीसे प्रकाशित करता है कि ग्रन्थ आवश्यकतासे अधिक बढ़ने नहीं पाता और किसीकी बात छूटने भी नहीं पाती। इसमें ग्रन्थकारने पहले अपनी सम्मतिके अनुसार औषधियोंके नाम और गुण लिखे हैं और फिर भावप्रकाश, मेदिनीकोष, अमरकोष, राजनिघण्टु, मदनपाल निघण्टु, केयदेव निघण्टु, धन्वन्तरि निघण्टु, द्रव्यनिघण्टु, द्रव्यरत्नाकर, गणनिघण्टु, शिवनिघण्टु और शोढलनिघण्टुको छान कर देखा है कि मेरे कहे हुए नाम-गुणोंके अतिरिक्त इनमें और भी कोई नामगुण तो नहीं हैं। यदि दिखाई पड़े हैं तो केवल उन्हीं नाम गुणोंको ग्रन्थ या ग्रन्थकर्ताके नामके साथ उद्धृत कर दिया है जो उसके कथनमें नहीं है तथा अन्य निघण्टुओंमें भी नहीं हैं। इस प्रकार सब निघण्टुकारोंका कथन भी इसमें संगृहीत हो गया है और ग्रन्थका आकार भी नहीं बढ़ने पाया। इन्हीं सब गुणोंके कारण “आयुर्वेदविद्यापीठ” आरम्भसे इसे अपने पाठ्यक्रममें पसन्द करता आ रहा है। बात भी

यही है कि इसका अवलोकन करनेके पश्चात् फिर ऐसा कोई नहीं जो इसका पक्षपात न करे। इसी तरह नामोंमें भी यदि इसके लिखे नाम वैद्योंको याद रहें तो किसी भी संस्कृत चिकित्सा ग्रन्थके लगानेमें उन्हें अड़चन नहीं पड़ सकती। ऐसे गुणविशिष्ट निघण्टुको दक्षिण देशके वेलापुर निवासी वैद्य सिद्धेश्वरने संग्रह किया और उन्हींकी आज्ञासे राघवकविने छन्दोबद्ध किया। यह नहीं मालूम कि इसकी रचनाका काल क्या है तथापि भावप्रकाशके पीछेका होनेके कारण अभी डेढ़ दो सौ वर्षसे पहलेका नहीं है। इसे पहले वैद्य-सम्मेलनके जन्मदाता आयुर्वेदोद्धारक स्वर्गवासी शङ्करदाजी शास्त्री पद्मे महोदयने सम्पादित कर प्रकाशित किया था और अब वही आवश्यक पादटिप्पणियां देकर तथा विषयोंका क्रम ठोक कर इस नवीन रूपमें पाठकोंके सामने आता है। टिप्पणियोंके कारण इसका आकार सवाया बढ़ गया है तथापि इसका दाम कुछभी नहीं बढ़ाया गया। आशा है वैद्यसमाजमें इसका बहुत आदर और प्रचार होगा जिससे जो रुपया इसमें फँसा है उससे अन्य उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित की जा सकें।

जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल वैद्य

दारागञ्ज-प्रयाग ।



अनुक्रमणिका ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अ		आम्लवेतस	... ६३
अमरवल्ली	... ८	आरामघोलिका	... १३३
अग्निजार	... ८६	आरि	... १४७
अग्निदमनी	... ३२	आहुली	... ५०
अजगन्धा	... ५२	इ	
अजमोदा	... ६०	इंगुदी	... १५०
अतिबला	... ३६	इन्द्रवारुणी	... १०
अतिचिषा	... ६४	इन्दीवरा	... १५
अपर्वदण्ड	... १५४	इक्षुदर्भा	... १६०
अपामार्ग	... ३७	ई	
अमृतश्रवा	... २३	ईश्वरी	... १२
अरण्यमुद्ग	... ४	उ	
अरण्यकुसुम्भ	... ५०	उपोदकी	... १३१
अरण्यकार्पासी	... ५५	ऊ	
अरण्यकुलत्थिका	... ६७	ऊखल	... १६०
अरण्यजीरक	... ८७	ऊ	
अरण्यसूरण	... १२२	ऊ	
अरिमेद	... १४६	ऊ	
अलक्तक	... १०५	ऋद्धिः	... ६०
अश्वकाथरिका	... ७४	ऋषभक	... ५८
अश्वगन्धा	... ४१	ए	
अहिफेन	... १०८	एकवीर	... १४६
आ		एला	... ६०
आखुकर्णी	... १०	एलावालुक	... ४३
आदित्यपत्र	... ५१	एवार्ह	... १४२
आदित्यभक्ता	... ५३	औ	
आर्द्रक	... ८१	औखर	... १११
आवर्तकी	... २२	औ	
आम्लनिशा	... १०७	अ	
आम्लपर्णी	... २२	अवष्टा	... ३५

(क)

विषय	क	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कटवी	...	२३	कुणंजर शाक	... १३२
कटुहुंची	...	१४४	कुन्दरु	... १५६
कटुका	...	६३	कूष्माण्डी	... १३४
करीरः	...	१५०	केना	... ७७
कस्तूणः	...	१५७	कोशातकी	... ६
कटुतुम्बी	...	७	कोकिलाक्षः	... ५५
कलिकारी	...	४४	कोलकन्द	... १२५
कलिंग	...	१३६	कौसुम्भशाक	... १३२
कर्णस्फोटा	...	२३	कंदगुडची	... २
कृष्णजीरक	...	८६	कंटकारी	... २७
कर्चरः	...	६२	कंटकशरफुंका	... ३४
कर्कोटकी	...	१३६	कंधारी	... १५१
कर्कटी	...	१४१	ख	
काकनास	...	१७	खड्गशिंवी	... १३८
काकादमनी	...	१८	खदिर	... १४६
काकमाचिका	...	४५	खदिरसार	... १४८
काकजड्ढा	...	४६	खस्वस	... ५०
कासमर्द	...	५१	ग	
कालांजनी	...	५४	गजपिप्पली	... ७६
कार्पासी	...	५५	गृहकन्या	... ६३
कामवृद्धिः	...	५६	गृजन	... ११५
काचलवण	...	११०	गार्जर	... ११६
कासालु	...	१२४	गुडची	... १
कारवल्ली	...	१३८	गुंडाला	... ७६
कारी	...	१५३	गुच्छकन्द	... १२६
काश	...	१५५	गोपालकर्कटी	... १७
कांडीरः	...	२१	गोक्षरक	... २६
काकोली	...	३	गोजिहा	... ३६
कटुम्बिनी	...	६८	गोरक्षी	... ७१
कुणंजर	...	७१	गोलामी	... ७२
कुलंजन	...	८५	गोरक्षदुग्धी	... ७८
कुश्विका	...	८७	गोरक्षतुम्बी	... १३५
			गोमूत्रिका	... १६०

(ख)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
गौर सुवर्णशाक ...	१३४	भ	
गन्धनाकुली ...	१२६	किंकिरीटा ...	५७
गन्धपत्रा ...	१०७	झण्डुक ...	७८
गंडदूर्वा ...	१५६	ट	
घ		टंकण ...	११२
घोली ...	१३३	ड	
घोटी ...	१५२	डोड़ी ...	५४
घ		डंगड़ी ...	१४१
चक्रमर्दः ...	५७	त	
चव्य ...	८३	तक्राहा ...	४६
चंचू ...	४७	तमालपत्र ...	१००
चंडालकन्द ...	१२८	त्वचं ...	१००
चांगेरी ...	७२	तवक्षीर ...	१०१
चाणक्यमूलक ...	११५	तरटी ...	१५४
चांगेरीशाक ...	१३३	त्रपुसी ...	१४२
चिचिलिका ...	६८	ताम्रवल्ली ...	२०
चिल्लिका ...	१३०	तालीसपत्र ...	१०२
चित्रकः ...	८३	त्रायमाण ...	६५
चिर्मिटा ...	१४३	तिकतुण्डो ...	६
चीनाकर्कटिका ...	१४३	त्रिवृत ...	६६
चुक्र ...	१३०	त्रिपर्णीकन्द ...	१२८
ज		त्रिधार ...	१५०
जयन्ती ...	४४	तेजोवती ...	१३
जलब्राह्मी ...	६६	तेरणी ...	४३
जालबबूलकः ...	१४६	तैलकन्द ...	१२८
जीवन्ती ...	५	तंदूलीयक ...	६७
जीवक ...	५८	तंडुलीयपत्रं ...	१३२
जीरक ...	८६	द	
जीवशाक ...	१३३	दधिपुष्पी ...	१३७
जेपालः ...	६८	द्रवन्ती ...	७७
ज्योतिष्मती ...	१२	दाहहरिद्रा ...	१०४
जंतुधा ...	२१		

(ग)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
दीर्घरोहिषक	... १५७	नीलालु	... १२४
दुरालभा	... ३२	नीलदूर्वा	... १५८
दुग्धफेनी	... ७२	घ	
दुग्धतुम्बी	... १३५	पटोल	... ३
देवदाली	... ८	पलाशी	... २४
द्रोणपुष्पी	... ७७	पर्पटः	... ५८
द्रोणय	... १११	पलांडु	... १२१
ध		पखौड	... १४६
धरणीकंद	... १२६	प्रसारिणी	... ६१
धान्यक	... ८२	प्रतिसौमा	... १६
धातकी	... १०५	पृष्ठिपर्णी	... २८
धाराकोशातकी	... १३६	पाषाणभेदी	... ६२
ध्वाक्षनाशिनी	... ४२	पाण्डुर्फली	... ७७
धूम्रपत्रा	... ६१	पाठा	... ६६
न		पानीयालु	... १२४
नखनिष्पाविका	... १४०	पालक्य	... १३१
नल	... १५७	पारिमद्र	... १४६
नागबला	... ३६	पिप्पली	... ७६
नागदमनी	... ६६	पिप्पलीमूल	... ८०
नागदन्ती	... ७०	पिंडमूलक	... ११६
नाडीहिङ्गु	... ८८	पिंडालु	... १२३
नागरमुस्ता	... ६५	पीततण्डुला	... २७
नागकेशर	... १०१	पीतमार्कव	... ४६
नाकुली	... १२६	पुत्रदात्री	... २४
निर्विषा	... १०६	पुत्रदा	... ४६
निष्पावी	... १३६	पेऊ	... १२०
निकुञ्जिका	... १५४	फ	
निःश्रेणिका	... १६०	फोंडालु	... १२४
नीली	... ३५	फंजिका	... १३४
नीलमार्कव	... ४६	फंजादिशाक	... १३४
नीलतिन्दुक	... ४८	ब	
नीलाम्ली	... ५२	वस्तांत्री	... १५
नीलपुनर्नवा	... ७२	बला	... ३८

(घ)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
बलोत्तरा	... ३८	महापिण्डीतक	... १५३
बबुल	... १४८	महानल	... १५८
बल्यजा	... १५७	मृगाक्षी	... १४३
ब्रह्मदण्डी	... ७७	मार्कव	... ४६
बाकुची	... ३२	मायाफल	... १०६
ब्राह्मी	... ६५	माकन्दी	... ११६
विडलवण	... ११०	मालाकन्द	... १२६
बोल-बोल	... ६१	मिश्रेया	... २५
भ		मिशी	... १५६
भद्रमुस्ता	... ६४	मुखालु	... १२३
भृंगाहा	... १२०	मुसलोकन्द	... १२६
भार्गी	... ६६	मुञ्जा	... १५५
भूम्याहुली	... ५१	मूर्वा	... २
भूम्यामलकी	... ७१	मूषकमारी	... ४५
भृपाटली	... ७६	मूलक	... ११४
भूतुम्बी	... १३६	मूलपोती	... १३२
भूतृण	... १५६	मेदा	... ६०
भेण्डा	... ४६	मेथिका	... ८७
म		मोचरस	... १४५
महत्फला	... ११	मंजिष्ठा	... १०२
महानीला	... १४	य	
महानीली	... ३६	यवासा	... ३०
महाबला	... ३८	यवानी	... ८३
महाराष्ट्री	... ४०	यण्ठीमधु	... ६५
महाशतावरी	... ४२	यवक्षार	... ११४
महाश्रावणो	... ५६	यावनालशर	... १५५
महामेदा	... ६०	र	
महाद्रोणा	... ७८	रक्तगुंजा	... १६
मरिचं	... ८१	रक्तापामार्ग	... ३७
मधुबल्ली	... ६५	रक्तपादी	... ७३
महाकन्द	... १२०	रक्तापुनर्नवा	... ७४
महिषीकन्द	... १२४	रक्तचित्रक	... ८४
मदन	... १५३	रक्तत्रिवृत	... ६६

(६)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
रक्तशिग्रु	... ११७	वन्दाक	... ६६
रसून	... १२०	वनपिप्पली	... ८०
रक्तपिंडालु	... १२३	वचा	... ८५
रक्तरोहितक	... १४५	वत्सनाभ	... १०७
रक्तखैर	... १४७	वज्रक्षार	... ११३
रक्तपरण्ड	... १५२	वनजोपोदकी	... १३२
रास्ना	... ८६	वर्वाभूशाक	... १३४
राजपलांडु	... १२१	वसुपत्रशाक	... १३४
राजगिरा	... १३१	वल्लीदूर्वा	... १५८
राजिकापत्र	... १३३	बृहज्जीवन्तिका	... ५
रुदन्ती	... ६५	बृद्धदारु	... २०
रेणुका	... ६१	बृहती	... २६
रोमक	... ११२	बृहच्चंचू	... ४७
रंध्रवंश	... ११८	वृद्धिः	... ६१
ल		वृश्चिका	... ७६
लक्ष्मणा	... २८	वृक्षाम्लं	... ६२
लघुशणपुष्पी	... ३३	बृहद्दन्तिका	... ६८
लघुदन्ती	... ६७	वासकः	... ३०
लवणक्षार	... ११३	वाराही	... १२५
लक्ष्मणाकन्द	... १२८	वास्तुक	... १२६
लघुशमी	... १४८	वार्ताकी	... १४०
लताकरंज	... १५२	वालुकी	... १४२
लाक्षा	... १०४	विजया	... ४५
लिङ्गिनी	... ६	विषमुष्टिः	... ५३
लोध्र	... १०५	विष्णुकान्ता	... ७०
व		विडंगः	... ८४
वत्सादनी	... १७	विष	... १०६
वनशृङ्गाटक	... २६	विष्णुकन्द	... १२५
वटपत्रोपापाणभेदी	... ६२	विदारोकिन्द	... १२७
वह्निचूडा	... ६४	विट्खदिर	... १४७

(च)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
चेत्र	... ११६	श्वेतगिरिकर्णी	... १३
चेतलतर	... १५४	श्वेतगुञ्जा	... १६
चन्द्रयाककोटकी	... ६	श्वेतवृहती	... २७
वंशलोचना	... १०२	श्वेतशणपुष्पी	... ३४
वंश	... ११८	श्वेतशरफुंका	... ३४
वंशांकुर	... ११८	शेफालिका	... ४८
वंशग्रन्थि	... ११८	श्वेताश्ली	... ५२
श		श्वेतशिला	... ६३
		श्वेतापुनर्ववा	... ७४
		श्वेतावसु	... ७५
		श्वेतमरिचं	... ८२
		श्वेतलोध्र	... १०५
		श्वेतटंकण	... ११३
		श्वेतशिशु	... ११७
		श्वेतचिल्ली	... १३०
		श्वेतरोहितक	... १४५
		श्वेतखदिर	... १४७
शताह्वा	... २४	श्वेतपरण्ड	... १५१
शणपुष्पी	... ३३	श्वेतदूर्वा	... १५८
शरफुंका	... ३४	श्वेतवचा	... ८५
शण	... ३४	श्वेतजीरक	... ८६
शतावरी	... ४२	शोभांजन	... ११७
शतपुष्पदल	... १३२	शोली	... ११६
शशाङ्गुली	... १४४	शंखपुष्पी	... २२
शमी	... १४८	शंखनी	... ११
शर	... १५५	ष	
शृङ्गी	... ६७		
शृङ्गाटक	... ११६		
शालिपर्णी	... २५		
श्रावणी	... ५६		
शालमलीकन्द	... १२८		
शितिवार	... ३१		
शिशुपत्रशाक	... १३१		
शिशू	... ११६		
शिल्पिका	... १६०		
श्रीवल्ली	... १५४		
शुष्कापिप्पली	... ७६		
शुनकचिल्ली	... १३१		
शुण्ठी	... ८१	षड्भुजा	... १४७

(छ)

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
स		सैन्धव	... १०६
समष्ठीला	... २६	सोमवल्ली	... १६
समुद्रफल	... १०६	सौवर्चल	... १०६
समुद्रलवण	... १११		
समुद्रफेन	... ११२	ह	
सर्वक्षार	... ११४	हपुष्पा	... ४१
स्वयंगुप्ता	... ७	हस्तिशुण्डी	... ६८
स्वर्णुली	... ४६	हरिद्रा	... १०३
स्वर्णक्षीरी	... ६४	हस्तिमद	... १०८
स्थलपद्मिनी	... ६६	हस्तिकन्द	... १२४
सपिणी	... ७५	हस्तिजोडिका	... १२६
सर्जिश्चार	... ११३	हस्तिकेशातकी	... १३७
सातला	... ५६	हरिद्वर्भ	... १५६
साखरुण्ड	... १०८	हिं गुपत्री	... ८८
सांभर	... ११०	हिं गु	... ८८
सार्षपपत्र	... १३३	हितांवल्ली	... १०८
खादुपटोली	... १३७	हेमजीवन्ती	... ६
खादुतुण्डिका	... १३६	हंसपादी	... ७३
सिंदुवार	... ४८	क्ष	
सिम्रुडी	... ५०	क्षीरकाकोली	... ४
सितदर्भ	... १५६	क्षीरमोरटा	... १४
स्नुही	... १५०	क्षीरणी	... ६४
सुगन्धभूतृण	... १६०	क्षीरविदारी	... १२७
स्थूलैला	... ८६	क्षुद्रदुरालभा	... ३१
सूरण	... १२१	क्षुद्रचंचू	... ४७
सूक्ष्मघोलिका	... १३३	क्षुद्रपाषाणभेद	... ६३
स्थूलैरण्ड	... १५२	क्षुद्रोपोदकी	... १३२
स्थूलशर	... १५५	क्षुद्रकारलीकन्द	... १४४
सैहली	... ८०	क्षेत्रजाघोली	... १३३

ग्रीधन्वन्तरयेनमः ।

श्रीनिघंटशिरोमणिः ।



मंगलाचरणम् ।

घंदे महागणपतिं ग्रंथनिर्विघ्नसिद्धये । लंबोदरं चतुर्बाहुं गुंडा-
दंडविराजितम् ॥ १ ॥ आदौ निघण्टनालोडय नामभिः पत्रकं कृतम् ।
सिद्धेश्वराख्यवैद्येन घेलापुरनिवासिना ॥ २ ॥ तदाब्ज्या राघवस्तु
निघंटानां शिरोमणिम् । अकरोद्भिषजां प्रीत्यै लोकोपकृतिहेतवे ॥ ३ ॥

१ गुडूच्यादिवर्गः ।

गुडूची-गुर्व ।

नामानि—गुडूच्यमृतवल्लो च ज्वरारिरमृता तथा । श्यामां-
वरा सुरकृता तथैव मधुपर्णिका ॥ १ ॥ छिन्नोद्भवाऽमृतलता छिन्ना
चैव रसायणी । तथैव सोमलतिका तद्वदमृतसम्भवा ॥ २ ॥ वत्सा-
दनी छिन्नरुहा विशल्या तु भिषक्प्रिया । कुण्डलिनी वयस्था च
तथा चैव जिवंतिका ॥ ३ ॥ चंडहासा छन्निका च तथा नागकुमा-
रिका । एते 'राजनिघंटे' तु सम्यक् प्रोक्ता भिषग्वरैः ॥ ४ ॥ धारा
तु कुण्डली चैव छिन्नांगा चकलक्षणा । तन्दिक्का ज्वरनाशी च म-
ण्डली देवनिर्मिता ॥ ५ ॥ सौम्याऽपित्र्या बहुच्छिन्ना प्रोक्ता 'धन्वन्तरे'
तथा । 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः 'सोमा' चैका प्रकीर्तिता ॥ ६ ॥ 'द्र-
व्यरत्नाकरे' चैव छिन्वा चैका स्मृता बुधैः । चक्रिका तंत्रिका चैव
प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ ७ ॥ तिकामृता भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्ता 'गण-
निघंटके' । चत्वारिंशत्संख्यकाश्च संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ ८ ॥

गुणः—गुडूची क्षोणवीर्या च कषाया तिकका स्मृता । कृष्ण-
ज्वरवमीनां च नाशिनी भ्रमहारिणी ॥ ९ ॥ पांडुप्रमेहवातासृक्दाह-
हंत्री रसायनी । संप्रोक्ता भिषजां श्रेष्ठैः 'राज' नामनिघंटके ॥ १० ॥
रक्तार्शकुष्ठजन्तूनां त्रिदोषाणां विनाशिनी । ग्राही मेध्यायु प्रदेति

कफवातापहारिणी ॥ ११ ॥ कङ्कममेध्या पित्तघ्नी बला 'धन्वन्तरे' स्मृता । पाके मधुरसा हृद्या घन्धिकृत् कासनाशिनी ॥ १२ ॥ कामलामज्जरघ्नीति 'केयदेवे' स्मृता बुधैः । दोषज्वरहरा चैव दीपनी 'द्रव्यरत्नके' ॥ १३ ॥

२ कन्द गुडूची-कन्द गिलोय ।

नामानि—ततः कंदोद्भवा चैव तद्वत् कंदोभवा तथा । कन्दाभृता बहुच्छिन्ना तथा पिंडगुडूचिका ॥ १४ ॥ तथा बहुरुहा चैव पिंडालुः कंदरोहिणी । एवं 'राजनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ १५ ॥ शटीरूपा तु संप्रोक्ता 'द्रव्यरत्नाकरे' तथा । रसायनी मृत्तिका च चन्द्रहासा भिषक्जिता ॥ १६ ॥ कन्या 'धन्वन्तरौ' प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः । विच्छिन्ना 'केयदेवे' तु संप्रोक्ता कविसत्तमैः ॥ १७ ॥ एतां चतुर्दशा प्रोक्ता गुणास्तु पूर्ववत्स्मृतः ।

गुणाः—कटुरूपणा विषघ्नी च भूतज्वरविनाशिनी । बलीपलितनाशेति प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ १८ ॥

३ मूर्वा-मुरहरी ।

नामानि—मूर्वा दिव्यलता देवी मता मधुरसा तथा । मधुश्रेणी त्रिपर्णी च मरी मिश्रदली तथा ॥ १९ ॥ तिका मधुमती चैव पृथक्पर्णी तथैव च । गोकर्णी लघुकर्णीका दहनी मोरटा तथा ॥ २० ॥ तेजस्विनी देवश्रेणी पीलुनीतमधूलिका । ज्वलिनी गोपवल्लीच निघण्टे 'राजनामनि' ॥ २१ ॥ 'धन्वन्तरे' स्वादुरसा संप्रोक्ता भिषजां वरैः । वृषत्वचा मुरंगीका तद्वत्त्वभिरसा तथा ॥ २२ ॥ 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः वर्णितास्तु न संशयः ॥ २३ ॥ तेजस्विनी सूवा चैव प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' । वृषश्रेणी पृथुश्चैव प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' ॥ २४ ॥ सर्वात्वमरकोशे स्युरष्टत्रिंशत् प्रकीर्तितः ।

गुणाः—तिकोष्णा च कषायेति वमिकुष्ठविनाशिनी ॥ २५ ॥ कफवातप्रमेहघ्नी विषमज्वरहा 'नृपे' । 'धन्वन्तरे' रसे स्वादु कंडुहा कविभिः स्मृतः ॥ २६ ॥ पाके गुरुरसा चैव त्रिदोषहरिणी तथा । कुष्ठघ्नी घन्धिकृत्प्रोक्ता मद्हा विषनाशिनी ॥ २७ ॥ मुखशोषहरा चैव सामा-

गुडूच्यादिघर्गः ।

न्यञ्जरहा तथा । तृष्णाहृद्रोगशमनी रक्तपित्तापहारिणी ॥२८॥ 'केय-
देवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता कविभिर्ध्रुवम् । श्लेष्मपित्तहरा प्रोक्ता
'द्रव्यनामनिघंटके' ॥ २९ ॥ मुख्यासृग्धारिणी प्रोक्ता 'गणनाम-
निघंटके' ।

४ पटोल-परवल ।

नामानि—ततः कटुफला चैव पटोलः कुलकस्तथा । 'राज' ना-
मामृनलता कर्कशच्छद एव तु ॥ ३० ॥ पांडुर्याडुफला चैव बीजगर्म-
स्तथैव च । ततो नागफलश्चैव कुष्ठारिस्तदनंतरम् ॥ ३१ ॥ पंचरा-
जिफला चैव ज्योत्स्ना तु कासमर्दनः कुष्ठघ्नो चैव संप्रोक्तो 'राजना-
मनिघंटके' ॥ ३२ ॥ राजनामा राजिफला पांडुका धन्वनामके । पटु
'स्त्वमरकोशे' च एकोनविंशति स्मृता ॥ ३३ ॥

गुणाः—तिक्तमुष्णं रसश्चैव कटुप्रोक्तं सदैव हि । बलासकफ-
पित्तघ्नं कटुकुष्ठं विनाशनम् ॥ ३४ ॥ असृग्ज्वरघ्नं दाहघ्नं प्रोक्तं
राजनिघण्टके । पत्रं तस्य भिषक्श्रेष्ठैः पित्तघ्नं कफनाशनम् ॥ ३५ ॥
रक्तदोषहरं चैव संप्रोक्तं नैव संशयः । फलं त्रिदोषशमनं वल्ली
चैव कफापहा ॥ ३६ ॥ मूलं विरेचनं प्रोक्तं 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ।
वल्ली शीतकरी प्रोक्ता श्लेष्मघ्नं बीजतैलकम् ॥ ३७ ॥ वाताशीति-
हरं चैव 'द्रव्यरत्ने' प्रकीर्तितम् । फलं त्वग्दोषशमनं प्रोक्तं 'गण-
निघंटके' ॥ ३८ ॥

५ काकोली ।

नामानि—काकोली मधुरा काकी वायसा वायसूलिका । क्षीरा
तु ध्वक्षिका वीरा शुक्ला धीरा तु मेदुरा ॥ ३९ ॥ ध्वाक्षोली स्वादु-
मांसा च वयस्था जीवनी तथा । एते 'राजनिघंटे' तु सम्यक् प्रोक्ता
भिषग्वरैः ॥ ४० ॥ कोकिला कविभिः प्रोक्ता 'धन्वन्तरिनिघंटके' ।
काकोली कवली काणा शुक्लक्षीरा तथैव च ॥ ४१ ॥ ततस्तु क्षोर-
शुक्लीका कायस्था च तपस्विनी । 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैरेते प्रोक्ता
न संशयः ॥ ४२ ॥ वायसोली भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्ता 'मदनपालके' ।
चतुर्विंशतिसंख्या च संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ ४३ ॥

गुणाः—शीतामधुरसा चैव क्षयपित्तानिलापहा । रक्तदाहहरा
 चैव ज्वरदाहविनाशिनी ॥ ४४ ॥ कफनिर्हरिणी प्रोक्ता तथा शुक्र-
 विवर्धिनी । प्रोक्ता 'राजनिघंटे' स्मिन् भिषक्श्रेष्ठैर्नसंशयः ॥ ४५ ॥
 वृष्या गुरु वृंहणं च वातपित्तहरा तथा । शोषघ्नी 'केयदेवे' च
 संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ ४६ ॥ रक्तपित्तहरा चैव हृद्रोगशमनी
 तथा । प्रोक्ता 'द्रव्यनिघंटे' च भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ ४७ ॥ वात-
 तृषाहरा चैव प्रोक्ता 'मदनपालके' । वातदाहास्रपित्तघ्नी शोषहा 'भा-
 वनामके' ॥ ४८ ॥

६ क्षीरकाकोली ।

नामानि—ततस्तु क्षीरकाकोली क्षीरशुक्ला पयस्विनी । पयस्था
 क्षीरमधुरा वीरा क्षीरविषाणिका ॥ ४९ ॥ जीववल्ली जीवशुक्ला
 'राजनाम्नि' निघंटेके । क्षीरिणी तु सुकोली च वयस्था च क्षुरा
 तथा ॥ ५० ॥ विषाणिका 'केयदेवे' कविभिः परिकीर्तिता । सुरा-
 ष्या क्षिरावहा च 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ॥ ५१ ॥ तथा 'मदनपाले'
 च सुरावहा परिकीर्तिता । धारा तु क्षीरवल्लीका शुक्ला 'भावप्र-
 काशके' ॥ ५२ ॥

गुणाः—हृद्रोगशमनी प्रोक्ता 'द्रव्यनामनिघंटे' ।

७ अरण्यमुद्ग-वनमृग ।

नामानि—मुद्गपर्णी क्षुद्रसहा शिखी मार्जारगंधिका ॥ ५३ ॥ व-
 नजा शिङ्गणी ह्रस्वाश्रूपणी च कुरङ्गिका । कोशिला काकमुद्गा च
 वनमुद्गा वनोद्गवा ॥ ५४ ॥ अरण्यमुद्गा वन्या च प्रोक्ता 'राजनिघं-
 टे' । शिष्यं बुभेत्त्वह्रस्वा च तथैव वनजारिणी ॥ ५५ ॥ 'धन्वंतरि-
 निघंटे' च प्रोक्तैषा कविसत्तमैः । मृगगंधा शिबिपर्णी वनत्रा सिंभि-
 रिङ्गिणी ॥ ५६ ॥ सहा तु 'केयदेवे' च शिबिसिंही प्रकीर्तिता । कुरं-
 टिणी सुवर्णी च सिंही शृङ्गी तथैव च ॥ ५७ ॥ प्रोक्ता 'मदनपाले'
 च भिषक्शास्त्रविशारदैः । अल्पिका चक्रपर्णी च प्रोक्ता 'भावप्रका-
 शके' ॥ ५८ ॥ एकत्रिंशतिसंख्याका संप्रोक्ता भिषजां वरैः ।

गुह्यादिवर्गः ।

५

गुणाः—मुद्गपणी हिमा प्रोक्ता कासज्वरविनाशिनी ॥ ५६ ॥
वातरक्तापहा चैव प्रोक्ता 'राजनिघटके' । स्वादु कृमिघ्नी कफहृत्
प्रोक्ता 'धन्वंतरे' ध्रुवम् ॥ ६० ॥ लघु दोषत्रयघ्नी च ग्रहणीदोषहा-
रिणी । अर्शातिसारहन्त्रीति संप्रोक्ता 'केयदेवके' ॥ ६१ ॥ जन्तुज्वरहरा
चैव 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता । रक्षा 'भावप्रकाशे' च संप्रोक्ता भिषजां
वरैः ॥ ६२ ॥ कफपित्तहरा चैव तथैव रक्त (?) स्तम्भिनी ॥ प्रोक्ता
'गणनिघट्टे' च भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ ६३ ॥

८ जीवन्ती ।

नामानि—जीवन्ती जीवनी जीव्य जीवती जीवदात्रिका । शाक-
श्रेष्ठा जीवभद्रा भद्रा मंगल्यनामका ॥ ६४ ॥ एषा 'राजनिघट्टे' तु
संप्रोक्ता भिषजां वरैः । यशस्करी मागधेया तथैव जीववर्द्धिनी
॥ ६५ ॥ क्षुद्रजीवा यशस्या च शृङ्गाटी जीवपुष्टिका । कांजिका श-
शिबीजा च पिंगला जीवनीयका ॥ ६६ ॥ 'धन्वंतरिनिघट्टे' च प्रोक्तैषा
भिषजां वरैः । मधुस्वसा जीवपुष्टा तुल्या भद्रमधुस्त्रवा ॥ ६७ ॥ ना-
मधेया पुत्रभद्रा जीवदेवा सुखंकरी । शृङ्गराटी 'केयदेवे' संप्रोक्ता
कविसत्तमैः ॥ ६८ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव जीवना परिकीर्तिता । ततः
पयस्विनी चैव प्रोक्ता भावप्रकाशके ॥ ६९ ॥ तथा 'गणनिघट्टे' च
संप्रोक्ता शिविराटिका । द्वात्रिंशत्संख्यया प्रोक्ता जीवन्ती परिकी-
र्तिता ॥ ७० ॥

गुणाः—जीवन्ती मधुरा शीता रक्तपित्तहरा तथा । रक्तवातक्ष-
यहरा दाहज्वरविनाशिनी ॥ ७१ ॥ कफदा वीर्यदा चैव प्रोक्ता 'रा-
जनिघट्टके' । चक्षुष्या दोषनुत् प्रोक्तं 'धन्वंतरिनिघट्टके' ॥ ७२ ॥
स्निग्धा ग्राही टीलघुला (?) बल्या 'केये' स्मृता बुधैः ॥

९ बृहज्जीवन्तिका-बड़ी जीवन्ती ।

नामानि—बृहत्पूर्वा पुत्रभद्रा मधुरा च प्रियंकरी ॥ ७३ ॥ बृहती
जीवपुष्टा च यथैव च यशस्करी । प्रोक्ता 'राजनिघट्टे' तु सप्तसंख्या
न संशयः ॥ ७४ ॥ भूतविद्रावणी ज्ञेया वेगाद्रसनियामका ।

गुणाः—बृहज्जीवन्तिका चैव बहुवीर्या रसायनी ॥ ७५ ॥ भूत-
द्रावीति संप्रोक्ता 'राजनामनिघट्टके' ।

१० हेमजीवन्ती । *

नामानि—ततस्तु हेमजीवन्ती तृणग्रन्थी हिमाश्रया । स्वर्णपर्णी सुजीवन्ती स्वर्णजीवा सुपर्णिका ॥ ७६ ॥ हेमपुष्पी स्वर्णलता जीर्णजीवन्तिका तथा । हेमवल्ली हेमलता प्राक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ७७ ॥ सैषा द्वादशसंख्याका संप्रोक्ता भिषजां वरैः । स्वर्णजीवन्तिका वृष्या चक्षुष्या मधुरा च सा ॥ ७८ ॥ शिशिरा वातपित्तासृग्दाहजिह्वलवर्धिनी ।

गुणाः—स्वर्णजीवन्तिका 'वृष्या' 'चक्षुष्या' मधुरा तथा ॥ ७९ ॥ शिशिरा वातपित्तासृग्दाहघ्नी बलवर्धिनी । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' च भिषग्विद्याविशारदैः ॥ ८० ॥

११ लिङ्गिनी-शिवलिङ्गी । †

नामानि—लिङ्गिनी बहुपुत्री च ईश्वरी शिववल्लिका । स्वयंभूलिङ्गसंभूता लैङ्गी चित्रफला ततः ॥ ८१ ॥ चण्डली लिङ्गजा देवी चण्डा या स्तंभिनी तथा । शिवजा शिववल्लीति प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ८२ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव संप्रोक्ता लिङ्गसम्भवा । पञ्चमी संख्यका प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः ॥ ८३ ॥ लिङ्गिनी कटुरुष्णा च दुर्गन्धा च रसायनी । सर्वसिद्धिकरा दिव्या वर्या रसनियामिनी ॥ ८४ ॥

गुणाः—लिङ्गिनी कटुरुष्णा च दुर्गन्धा च रसायनी । सर्वसिद्धिकरी दिव्या 'नृपे' रसनियामिनी ॥ ८५ ॥ पित्तजा तु क्षयकरी कफकुष्ठविनाशिनी । 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्ता भिषग्विद्योपजीविभिः ॥ ८६ ॥

१२ कोशातकी-कडूतरोई ।

नामानि—कोशातकी कृतच्छिद्रा जालिनी कृतवेदना । क्ष्वेडा सुतिका घण्टाली मृदङ्गफलिनी तथा ॥ ८७ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' च

* इसके फलसे पीला दूध निकलता है और दण्डीमें एक ही फल लगता है ।

† इसके बीजमें जलहरी सहित शिवलिङ्गका चिन्ह रहता है । इसे हिन्दीमें पचगुरिया भी कहते हैं । यह बनमें आपही जगती और वृत्तों पर सता चढ़ती है ।

गुडूच्यादिवर्गः ।

७

भिषक्शास्त्रविशारदैः । इवेतघाषा कोशवती कर्कोटी च मृदङ्गिका ॥ ८८ ॥ उबला तु तिक्तघोटाली ज्योत्स्ना च कर्कटेच्छदा । छली च घोषका चैव 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ ८९ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव वेदिभा परिकीर्तिता । अक्षाहा घोसला चैव तथैव कर्कशच्छदा ॥ ९० ॥ 'अमरे' चैव कविभिः प्रोक्ता धामार्गवा ध्रुवम् । त्रयोविंशतिसंख्याका संप्रोक्ता कटुजालिनी ॥ ९१ ॥

गुणाः—कटुकोशातकी चैव शिशिरा कटुका तथा । कपायकल्प-विख्याता पित्तवातकफापहा ॥ ९२ ॥ मलाध्मानविशोधी च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । पक्वाशय विशोधी च तिक्तामाशयशोधिनी ॥ ९३ ॥ रुक्षा लघ्वी च विख्याता पाके तु कटुका स्मृता । गरोदरं जयेत् कासं पांडुशोफविनाशिनी ॥ ९४ ॥ कफप्लीहाशंगुल्मघ्नी कामला-कुष्ठनाशिनी । फलं पाके हिमं प्रोक्तं 'केयदेवनिघण्टके' ॥ ९५ ॥ फलं तु भेदनं प्रोक्तं शीतलं स्यात्तथा लघु । श्रिदाषमेहक्षु प्रोक्तं वैद्यै 'मदनपालके' ।

१३ स्वयंगुप्ता-खाजके वाच ।

नामानि—स्वयंगुप्ताथ गुप्ता च कपिकच्छु महर्षिभिः ॥ ९६ ॥ लांगुली कुण्डली चण्डा मर्कटी दुरभिग्रहा । कपिरोमफलाऽगुप्ता दुःस्पर्शा कच्छु राजया ॥ ९७ ॥ प्रावृष्णेया भूकशिंबो बदरी बद-रर्षभी । शिंबो वराहिता तीक्ष्णा रोमालुवनरूरिका ॥ ९८ ॥ किश-रोमा रोमवल्लो चैषा 'राजनिघण्टके' । शीतपित्तघ्नासृघ्नी प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ९९ ॥ वातघ्नी कविभिः प्रोक्ता 'धन्तरिनिघण्टके' । 'केयदेवे' बृहणीति भिषग्भिः परिकीर्तिता ॥ १०० ॥

गुणाः—बीजं तु वातशमनं वाजोकरणमेव च । प्रोक्तं 'मदन-पाले' च भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ १०१ ॥ गुरु तिक्ता वातहरा बल्या कफविनाशिनी । प्रोक्ता 'भावप्रकाशे' च पुरातनचिकित्सकैः ॥ १०२ ॥ सीता हिमेति संप्रोक्ता गणनामनिघण्टके ।

१४ कटुतुंगी-कडूलौकी ।

नामानि—कटुतुंगी कटुफला तुम्बिनी कटुतुम्बिनी ॥ १०३ ॥ बृहत्फला राजपुत्री तिक्तबीजाजतुं विका । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' च

भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ १०४ ॥ कटुकालांजुनी तुंवी लंबा पिण्ड-
फला तथा । इक्ष्वाकु क्षत्रियवरा तथैव च महाफला ॥ १०५ ॥ धन्व-
न्तरौ स्मृता नूनं भिषक्शास्त्रपरायणैः । ततोत्र विट्फला चैव
राजन्या प्रवरा वरा ॥ १०६ ॥ तिकालांबू दुग्धनिका दुग्धिका तद-
नन्तरम् । 'केवदेवे' प्रयुक्ताश्च सर्वा द्वाविंशतिः स्मृता ॥ १०७ ॥

गुणाः—कटुतुंवी भवेत्तीक्ष्णा वान्तिहृत् श्वासनाशिनी । कटु-
स्यात्कफवातघ्नी शोधनी व्रणशूलहृत् ॥ १०८ ॥ शोफघ्नी विषनाशा
च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । रसे पाके हिमा लघ्वी प्रोक्ता 'गण-
निघण्टके' ॥ १०९ ॥ पाके कटुवी वातपित्तश्वासज्वरविनाशिनी ।
अह्वया शीतला प्रोक्ता 'केवदेवनिघण्टके' ॥ ११० ॥ वातपित्तज्वरान्
हन्ति हृद्या भावप्रकाशके ।

१५ अमरवल्लि-अमरवेल ।

नामानि—खवल्ल्याकाशवल्लि च दुस्पर्शा व्योमवल्लिका
॥ १११ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु ततस्त्वमरवल्लरी । 'भावप्रकाशे'
विदिता पञ्चसंख्या भिषग्वरैः ॥ ११२ ॥

गुणाः—आकाशवल्लि कटुका मधुरा पित्तनाशिनी । वृष्या
रसायनी वल्या दिव्यौषधि 'नृपे' स्मृता ॥ ११३ ॥ ग्राही तिका
पिच्छिला च तुवरा नेत्ररोगहृत् । 'भावप्रकाशे' संप्रोक्ता पुरातन-
भिषग्वरैः ॥ ११४ ॥ हृद्याग्नि कार विख्याता पित्तश्लेष्महरा भवेत् ।

१६ देवदाली-बन्दाळ ।

नामानि—जीमूतका कंठफला सहावेणी गरागरी ॥ ११५ ॥
तथा कोशफला घोरा कंदं ता कट्फला तथा । विषहा कर्कटी चैव
देवदाली तदुत्तरम् ॥ ११६ ॥ ततस्तु सारमुषिका कोशवृत्ता तथैव
च । आखुविषहा ददाली च ततो रोमपत्रिका ॥ ११७ ॥ तुरङ्गीका
च कर्मारी देवतांगा च ताडका । 'द्रव्यरत्ने' व्यालवेणी भिषग्भिः
परिकीर्तिता ॥ ११८ ॥ ततारका देवतांडा जाली 'मदनपालके' ।
खरागरी कोशसंस्था संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ ११९ ॥

गुह्यादिवर्गः ।

६

गुणाः—तिक्तोष्णा देवदाली स्यात्कटुः पाण्डुकफापहा । दुर्गन्ध-
श्वासकासघ्नी कामला भूतनाशिनी ॥ १२० ॥ 'राजनाम्नि' निघण्टे
च भिषग्भिः परिकीर्तिता । फलं कृमिघ्नं संप्रोक्तं श्लेष्मघ्नं गुल्म-
संघनम् ॥ १२१ ॥ शूलवातहरं प्रोक्तं वैद्यैः 'भावप्रकाशके' । वांति-
हाऽखुविषघ्नी च कफपाण्डुविनाशिनी । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च भिष-
ग्भिः परिकीर्तिता । रसे तिक्ता तु पाके च तीक्ष्णा वातामहारिणी
॥ १२३ ॥ कफशोथविनाशा च कासज्वरविनाशिनी । हिध्मारुचि-
क्षयघ्नी च कृमिनुत् 'केयदेवके' ॥ १२४ ॥

१७ वन्ध्याकर्कोटकी-वांभखेकसा ।

नामानि—वन्ध्यादेवी नागहन्त्री वन्ध्या कर्कोटकी तथा ।
नागरातिमनोज्ञा च दिव्या पथ्या सुकन्दका ॥ १२५ ॥ पुत्रदात्री च श्री-
कन्दा कन्दवल्लीश्वरी तथा । सुगन्ध्या सर्पदमनी कुमारी विषकर्कोटकी
॥ १२६ ॥ भूतहन्त्री परा चैव प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । नागारी नाग-
दमनी प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' तथा ॥ १२७ ॥ विषमा शमनी चैव निष्फला
नागघातिनी । ततस्तु मज्जादमनी 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ १२८ ॥
तथा 'मदनपाले' तु प्रोक्ता योगेश्वरी बुधैः । पङ्चविंशति च संख्यायां
संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ १२९ ॥

गुणाः—वन्ध्याकर्कोटकी तिक्ता कटूष्णा कफनाशिनी । स्था-
वरादिविषघ्नी च संप्रोक्ता 'राजनामके' ॥ १३० ॥ पाके कटुरुष्ण-
वीर्या प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' । विषद्वयं शिरोरोगं कन्दोहन्तीति
वञ्चके ॥ १३१ ॥ लघु व्रणविशोधो च बलासाही विषापहा । विस-
र्पघ्नी 'केयदेवे' संप्रोक्ता वैद्यनायकैः ॥ १३२ ॥

१८ तिक्ततुंडी-कडूकुन्दरु ।

नामानि—तिक्ततुंडी तु तिक्ताख्या कटुका कटुतुंडिका । तुंडी
'राजनिघण्टे' तु संप्रोक्ता पञ्चसंख्यका ॥ १३३ ॥

गुणाः—कटुतुंडी कटुरसा कफवांतिविषापहा । रक्तपित्ता-
रुचिर्हन्ति रेचनी 'राजनामके' ॥ १३४ ॥

१९ आखुकर्णी-मूसाकानी ।

नामानि—आखुकर्णी तु कृशिका द्रवन्त्युन्दिरकर्णिका ॥ १३५ ॥
चित्रा सुकर्णी न्यग्रोधो तथा मूषिककर्णिका । बहुकर्णी वृश्चिपर्णी
माता भूमिचरी तथा ॥ १३६ ॥ चंडा च शंवरी चैव तथैव बहुपा-
दिका । पृथक्श्रेणी वृषा चैव पुत्रश्रेणी तदुत्तरम् ॥ १३७ ॥ प्रोक्ता
'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्राविशारदैः । मूषिका च विषा चैव
त्वखुपर्णी तदुत्तरम् ॥ १३८ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च संप्रोक्ता
मिषजां वरैः । मूषकश्रवणी लीका भूदर्यासुश्रुतिच्छदा ॥ १३९ ॥
श्रवणा वृषकर्णी च तथैव भूधरश्रिया । 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता
नैव संशयः ॥ १४० ॥ वृश्चिपर्णीन्द्रपर्णी च 'द्रव्यरत्ने' भिषक्जनैः ।
पर्णिका भूदरीजा च प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ १४१ ॥ पृथक्पर्णी
शुभश्रेणी तथा भूमिरदश्रवा । श्रवला चैव कान्ता च तद्वदिन्दिर-
कर्णिका ॥ १४२ ॥ प्रोक्ता 'गणनिघण्टे' तु सप्तत्रिंशतिसंख्यका ।

गुणाः—आखुकर्णी कटूष्णा च कफपित्तापहा सरा ॥ १४३ ॥
आनाहज्वरशूलघ्नी पाचनी 'राजनामके' । हृद्गोमकफजन्तुघ्नी 'धन्व-
न्तरिनिघण्टके' ॥ १४४ ॥ विषाके कटु मूत्रघ्नी प्रोक्ता केयनिघण्टके ।
लघु शीता तिक्ता च कपाया भावनामके ॥ १४५ ॥

२० इन्द्रवारुणी-लघुइन्द्रायण ।

नामानि—ऐन्द्रीद्रवारुणी चैव त्वरुणा च मृगादनी । गवादनी
क्षुद्रसहा सूर्येद्री चिर्मिद्या तथा ॥ १४६ ॥ विषघ्नी गणकर्णिका
माता च त्वमरा तथा । सुवर्णा सुफला तारा वृषभाक्षी तथैव च
॥ १४७ ॥ गवाक्षी पीतपुष्पा च हेमपुष्पी तदुत्तरम् । इन्द्रवल्ली
क्षुद्रफला वारुणी बालकप्रिया ॥ १४८ ॥ रक्तेर्वारुविषलता शकवल्ली
विषापहा । अमृता विषवल्ली च प्रोक्ता 'राजघिण्टके' ॥ १४९ ॥
इन्द्राव्हा इन्द्रवारु च इन्द्रा 'धन्वन्तरौ' स्मृता । ऐन्द्रवारु सुरेन्द्रा
च तथैव सुरवारुणी ॥ १५० ॥ चित्रदेवी स्थाणुकर्णी धेनुश्रेणी
तथैव च । सूर्याव्हा चैव विख्याता तथैव मरुसम्भवा ॥ १५१ ॥
'द्रव्यरत्नाकरे' चैव चन्द्री त्वेका प्रकीर्तिता । तुवसीति भिषक्श्रेष्ठैः

प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' ॥ १५२ ॥ युग्माब्धिसंख्यका प्रोक्ता पुरातन-
चिकित्सकैः ।

गुणाः—अथेन्द्रवारुणी तिका कटु शीता च रेचनी ॥ १५३ ॥
गुल्मपित्तोदरश्लेष्मकृमिकुष्ठज्वरापहा । 'राजनामनिघण्टे' तु संप्रोक्ता
भिषजां वरैः ॥ १५४ ॥ मेहारुचिकृमिकफपांडुरोगापहारिणी । मूढ-
गर्भहरा प्रोक्ता सर्वांगप्रस्थिमोचनी ॥ १५४ ॥ विषगंडामयहरा
संप्रोक्ता 'केयदेवके' । रसे पाके कटु लघु वीर्योष्णा कामलापहा
॥ १५५ ॥ कफपित्तश्लेष्महरा कण्ठरोगापचीघ्निका । श्वासकास-
प्लीहहरा गरोदरहरा तथा ॥ १५६ ॥ मूढगर्भव्रणहरा प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ'
ध्रुवम् ।

२१ महत्फला-बड़ी इन्द्रायण ।

नामानि—महत्फला चित्रवल्ली महेन्द्री त्रपुसी तथा ॥ १५७ ॥
ततश्चित्रफला चैव त्रपुसा तदनन्तरम् । पुत्रसा (त्रपुसा ?-पुत्रदा ?)
चात्तरक्षा च विशाली दीर्घवल्लिका । बृहत्फला तु सौम्या च
महेन्द्रवारुणी तथा ॥ १५८ ॥ बृहद्वारुणिका चैव प्रोक्ता 'राजनिघ-
ण्टके' । श्वेतपुष्पा मृगाक्षी च मृगेर्वाह मृगादनी ॥ १५९ ॥ हस्ति-
दन्ती नागदन्ती वारुणी गजचिर्भरी । 'धन्वन्तरौ' 'द्रव्यरत्ने'
इयमेकी प्रकीर्तिता ॥ १६० ॥ एकविंशतिसंख्याका प्रयुक्ता भिषजां वरैः ।

गुणाः—महेन्द्रवारुणी क्षेया पूर्वोक्तगुणभाशिनी ॥ १६१ ॥ रसे
वीर्यं विपाके च किञ्चिदेषा गुणाधिका ।

२२ शङ्खिनी ।*

नामानि—यवतिका महत्तिका दूढपादा विसर्पिणी ॥ १६२ ॥
नाकुली नेत्रमीना च शङ्खिनी पत्रतंडुली । अक्षपीडा सूक्ष्मपुष्पी यव-
तिका यशस्विनी ॥ १६३ ॥ माहेश्वरी तिक्तयवा तंडुली 'राज-
नामके' । इन्द्राक्षी चैव पिण्डा तु नेत्रमीला यशस्करी ॥ १६४ ॥

* शङ्खिनीकी बेलि शिबलिङ्गीके समान होती है और फल भी वैधे ही
होते हैं । इसके फूलका भीतरी अंश (बीजकोष) शङ्खके आकारका होता है ।
यकने पर फलका रङ्ग लाल होता है । शिबलिङ्गीके समान इसके फल पर सफेद
रेखा नहीं होती । इसका फल कटु और रेचक होता है ।

१२

निघण्टुशिरोमणिः ।

‘धन्वन्तरौ’ निगदिता पुरातनचिकित्सकैः । तिकला चैव विश्वा
च बहुफेना तदुत्तरम् ॥ १६५ ॥ अक्षपीडा बहुरसा प्रोक्ता ‘गण-
निघण्टके’ । चारपुष्पी कोशिनी च कोशे चैव प्रकीर्तिता ॥ १६६ ॥
षड्विंशतिसमाख्याता पुरातनभिषग्वरैः ।

गुणाः—यवतिका तु तिकाम्ला दीपना रुचिकृत्तथा ॥ १६७ ॥
कृमिकुष्ठविषामघ्नी रेचनी च त्रिदोषनुत् । प्रोक्ता ‘राजनिघण्टे’ च
वैषविद्याविशारदैः ॥ १६८ ॥ रसेपाके च मधुरा ह्युदरानाहनुद्वणे ।

२३ ईश्वरी, रुद्रजटा-इशरमूल ।

नामानि—रौद्रीजटा रुद्रजटा रुद्रा सौम्या सुगन्धिका
॥ १६९ ॥ सुवहा चेश्वरी चैव धना रुद्रलता तथा । सुगन्धपत्रा
सुरभी सुपत्रा च सुरावहया ॥ १७० ॥ रुद्राणी पत्रवल्ली च जटा-
वल्ली महाजटा । नेत्रपुष्करनामा च जटा रुद्रेति विंशतिः ॥ १७१ ॥
संप्रोक्ता भिषजां श्रेष्ठैः ‘राजनार्घ्य निघण्टके’ ।

गुणाः—रसे कटुस्त्वैश्वरी च श्वासकासहरा ‘नृपे’ ॥ १७२ ॥
हृद्रोगभूतविद्रावी राक्षसानां निवर्हणी ।

२४ ज्योतिष्मती-मालकांगनी ।

नामानि—ज्योतिष्मती स्वर्णलता विख्यातात्तनुलप्रभा ॥ १७३ ॥
ज्योतिर्लता तु कटभी पिङ्गला तदनन्तरम् । क्षता मेध्या च
मतिदा दुर्जरा च सरस्वती ॥ १७४ ॥ अमृता चैव संप्रोक्ता ‘राज-
नाम्नि’ निघण्टके । सुवर्णलतिका चैव ज्योतिः कायाग्निभासका
॥ १७५ ॥ लवणोक्ता दुर्भरेति ‘धन्वन्तरिनिघण्टके’ । कंगुनिका तु
क्रद्धीका कुन्दनी च वृषा तथा ॥ १७६ ॥ ‘केयदेवे’ तु संप्रोक्ता तत्ता
वन्हिरुचिस्तथा । ‘द्रव्यरत्नाकरे’ चैव भिषग्भिः परिकीर्तिता ॥ १७७ ॥
पारावतपदो चैव ज्योतिष्का तु कुकुन्दनी । प्रोक्ता ‘भावप्रकाशे’ च
पञ्चविंशतिसंख्यका ॥ १७८ ॥

गुणाः—ज्योतिष्मती रसे तिका किञ्चित्कटु स्मृता जनैः ।
दाहप्रदा वातकफान् हन्ति प्रज्ञाप्रदायिनी ॥ १७९ ॥ मेधाकृद्धीपनी
प्रोक्ता ‘राजनामनिघण्टके’ । कषायामोहदा स्निग्धा वर्णदा व्रणपां-

डुहा ॥ १८० ॥ विसर्पघ्नी 'केयदेवे' प्रोक्ता वैद्यैर्न संशयः । श्लेष्म-
वातहरा चैव पाचनी कटुका सरा ॥ १८१ ॥ अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा
वन्निहदा 'धन्वनामके' । आमवातहरा प्रोक्ता 'मदने' भिषजां वरैः
॥ १८२ ॥ मुखरोगहरा चैव 'भावे' प्रोक्ता मनीषिभिः । कण्ठरोगहरा
हिक्कानाशिनी 'गणनामके' ॥ १८३ ॥

२५ तेजोवती-बड़ी मालकांगनी ।

नामानि—तेजोवती बहुरसा तथैव कनकप्रभा । तीक्ष्णा
सुवर्णनकुली लवणा तदनन्तरम् ॥ १८४ ॥ अग्निदीप्ता तु तेजस्वी
तथा सुरलता मता । अग्निफलाऽग्निगर्भा च कंगुनी वायसी स्मृता
॥ १८५ ॥ ततः शैलसुता चैव सुवेगा तदनन्तरम् । तीव्रा चैव तु
काकांडो तथैव वायसादनी ॥ १८६ ॥ गीर्लता श्रीलता सौम्या
ब्राह्मी लवणकिंशुका । पारावतपदी पीता पीततैला यशस्विनी
॥ १८७ ॥ मेध्या मेधावती धीरा प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । तेजोवहा
तेजनी शीता अर्शघ्नी वल्कला तथा ॥ १८८ ॥ पारिजाता महौजस्वी
प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवम् । काकांडकी रुक्षफला वेगा काकादनी
तथा ॥ १८९ ॥ पिण्या कूटत्वचा चैव 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ १९० ॥

२६ श्वेतगिरिकर्णी-सफेद गोकर्णी ।

नामानि—अश्वखुराऽर्द्रकर्णी च कटभी दधिपुष्पिका । गर्दभी
शीतपुष्पी च श्वेतस्पृण्डापराजिता ॥ १९१ ॥ श्वेतभद्रा सुपुष्पी च
विषहन्त्री तदुत्तरम् । नागपर्यायकर्णी च अश्वावहादिखुरी तथा ॥
॥ १९२ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु भिषक्शास्त्रपरायणैः । श्वेतपुष्पी
तु श्वेता च तथैव गजकर्णिका ॥ १९३ ॥ श्वेतनामा तथा प्रोक्ता
'धन्वन्तरिनिघटके' । श्वेतस्वन्ना विषघ्नीकाऽमेदा च 'केयदेवके'
॥ १९४ ॥ शीताऽपराजिता चैव तथैव मोहनाशिनी । प्रोक्ता 'मदन-
पाले' तु भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ १९५ ॥ अस्फोटा विष्णुकांता च
प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ तथा 'गणनिघटे' च वाजिखूरा
प्रकीर्तिता ॥ १९६ ॥ पंचविंशतिसंख्याका संप्रोक्ता भिषजां वरैः ।

गुणाः—श्वेता तु गिरिकर्णी स्यात् हिमा तिका च पित्तनुत् ॥ १६७ ॥ चक्षुष्या विषहा प्रोक्ता त्रिदोषशमनी 'नृपे' । ग्रहणीकंठ-शूलघ्नी कुष्ठमेहामनाशिनी ॥ १६८ ॥ व्रणशोफहरा प्रोक्ता 'केयदेव-निघंटके' । मूत्रशूलहरा चैव सरा स्याद् 'द्रव्यनामके' ॥ १६९ ॥ ग्रहघ्नी 'मदने' प्रोक्ता कंठरोगहरा 'तथा' । हिमवीर्या सदा स्निग्धा वातपित्तहरा 'ऽमरे' ॥ २०० ॥

२७ महानीला-नीला विष्णुकान्ता ।

नामानि—महानीला नीलपूर्वा गिरिकर्णी गवादनी । व्यक्त-गंधा निलस्पंदा प्रोक्ता 'राजनिघंटके' ॥ १ ॥ उग्रगंधा वल्लिवाता प्रोक्ता 'धन्वंतरौ' ध्रुवम् । महाश्वेता पाणिनी च वल्ली च विभवाशिका ॥ २ ॥ 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैर्गदिता नैव संशयः । महारुष्णा नीलपुष्पा 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ॥ २०३ ॥ अव्यक्त-श्लक्ष्णा वशो स्निग्धा (?) रक्ता तथा । प्रोक्ता 'गणनिघंटके च भिषग्विद्याविशारदैः ॥ २०४ ॥ सर्वा षोडशसंख्याका भिषग्भिः परिकीर्तिता ॥

गुणाः—नीली तु गिरिकर्णी स्यात्तिका च शिशिरा तथा ॥ २०५ ॥ रक्तातिसार हन्त्री च ज्वरदाहहरा तथा । उन्मादमदकृत् श्वासकासच्छर्दिहरा 'नृपे' ॥ २०६ ॥ कफकुष्ठक्षयहरा पित्तजंतुहरा तथा । ग्रहघ्नी कंठरोगघ्नी प्रोक्ता 'मदनपालके' ॥ २०७ ॥ स्निग्धा तु हिमवीर्या च वातपित्तहरा 'गणे' ।

२८ क्षीरमोरटा-क्षीरमुरहरी ।

नामानि—मोरटा कर्णपुष्पी च पीलुपत्रा मधुश्रवा ॥ २०८ ॥ घनमूला दीर्घमूला परुषः क्षीरमोरटा । तथैव क्षीरबहुला प्रोक्ता 'राजनिघंटके' ॥ २०९ ॥ 'धन्वंतरौ' तेजनीति संप्रोक्ताभिषजां वरैः । अपरा कोरपुष्पीका स्वदली हस्तिपर्णिनी ॥ २१० ॥ बहुमूत्रा 'केयदेवे' प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः । कीर्णपुष्पा मद्यमूला प्रोक्ता 'गणनिघंटके' ॥ २११ ॥ एषा सप्तदशा नूनं भिषक्श्रेष्ठैः प्रकीर्तिताम् ।

गुणाः—मोरटः क्षीरबहुलो मधुरः सकषायकः ॥ २१२ ॥
 पित्तदाहज्वरान् हन्ति वृष्यो बलिविवर्धनः । मोरटा क्षीरबहुला
 कषाया मधुरा तथा ॥ २१३ ॥ पित्तदाहज्वरहरा वृष्या बलकरी
 'नृपे' । कफपित्ते तृषाहन्त्री दाहज्वरविनाशिनी ॥ २१४ ॥ रसे पाके
 हिमा प्रोक्ता 'केयदेवे' निघण्टके । विष्टंभी वातला रूक्षा 'केय-
 देवे' च कीर्तिता ॥ २१५ ॥ सदा गुरु पित्तरक्तमेहहा मेहहृत्तथा ।
 तृदोषतृष्णाहृद्रोगकंङ्कुष्ठहरा 'नृपे' ॥ २१६ ॥

२९ इन्दीवरा=उत्तरण । *

नामानि—इन्दीवरा युग्मफला दीर्घवृन्ता तमारिणी । पुष्प-
 मंजरिका द्रोणी करभा नालिका तथा ॥ २१७ ॥ प्रोक्ता 'राज-
 निघण्टे' तु पुरातनचिकित्सकैः । करंभा कर्कशा चैव सुगोणी तदनं-
 तरम् ॥ २१८ ॥ उत्तमा रणिका चैव 'केयदेवे' प्रकीर्तिता । वारुणी
 या क्रूरवल्ली फलयुग्मा तथैव च ॥ २१९ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव
 संप्रोक्ता भिषजां वरैः । ततोऽतिवारुणी चैव तथैव रुष्य (?) मंजरी
 ॥ २२० ॥ एषा 'गणनिघण्टे' च प्रोक्ता कर्कशनासिका । अष्टाद-
 शेति संख्याका प्रोक्ता वैद्यैर्विचक्षणैः ॥ २२१ ॥

गुणाः—इन्दीवरा कटुः शीता पित्तश्लेष्महरा तथा । चक्षुष्या
 कासनुत् प्रोक्ता व्रणकुमिहरा 'नृपे' ॥ २२२ ॥ पापघ्नी योनि-
 दोषघ्नी वातघ्नी व्रणरोपणी । प्रोक्ता 'गणनिघण्टे' च पुरातन-
 चिकित्सकैः ॥ २२३ ॥ भूत्रकृच्छ्रहरा चैव दद्रुहा व्रणशोधिनी । गर्भ-
 योनिवातरुजां नाशिनी 'केयदेवके' ॥ २२४ ॥ श्लेष्मवातहरा शोफ-
 नाशिनी 'द्रव्यनामके' ।

३० वस्तांत्री-बोक्डी, पुंगली ।

नामानि—वस्तांत्री वृषगंधा च मेपांत्री वृषपत्रिका । अजांत्री
 बस्तिनी चैव प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ २२५ ॥ वृषपत्री छागलांत्री
 'केयदेवे' प्रकीर्तिता । नखगंधा स्रंसनी च अजात्री 'गणनामके'
 ॥ २२६ ॥

*इसके वामवर्ता और दक्षिणवर्ता दो भेद हैं ।

गुणाः—वस्तांघ्री स्यात्कटुरसा कासदोषविनाशिनी । सुवीज-
गर्भजननी कीर्तिता भिषगुत्तमैः ॥ २२७ ॥ बीजदा गर्भजननी
प्रोक्ता ' राजनिघण्टके ' ॥ अन्ये गुणात्पुप्युक्तास्तस्मादत्र न
वक्ष्यते ॥ २२८ ॥ लघु तिक्ता कषाया च मधुरा च हिमा तथा ॥
कटुपाका श्लेष्मापित्तनाशनी वातकोपनी ॥ २२९ ॥ ' केयदेवे '
निघण्टे च प्रोक्ता वैद्यैर्विचक्षणैः ।

३१ सोमवल्ली-सोमलता ।

नामानि—सोमवल्ली महागुल्मा यज्ञश्रेष्ठा धनुर्लता ॥ २३० ॥
सोमदा गुल्मवल्ली च यज्ञवल्ली द्विजाप्रिया । सोमक्षीरा तु सोमा
च यज्ञांगा तदनंतरं ॥ २३१ ॥ प्रोक्ता ' राजनिघण्टे ' च भिषक्-
शास्त्रविशारदैः । यज्ञसेना ' मदनके ' प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ॥ २३२ ॥
' भावप्रकाशे ' सोमाक्षी संस्पृता भिषजां वरैः ॥ २३३ ॥ ' धन्वतरुः '
परा नेता पक्ष्मनेमी वध्निप्रिया । महायज्ञा महार्या च श्येनदूता मख-
प्रभुः ॥ २३४ ॥ भेदी तु विशदा चैव तथैव रुरुत्तरा ॥ यज्ञा चैव
हि संप्रोक्ता ' केयदेवे ' भिषगजनैः ॥ २३५ ॥ श्येनाकृतश्च द्रुतरु-
र्महार्षा यज्ञज्ञातृका । प्रोक्ता ' गणनिघण्टे , च त्रिंशदेकोनसंज्ञका
॥ २३६ ॥

गुणाः—सोमवल्ली कटुः शीता मधुरा पित्तदाहनुत् । तृष्णो-
पविषनाशेति प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः ॥ २३७ ॥

३२ प्रतिसोमा-महिषवल्लि । *

नामानि—सोमवल्लीभेदतः सा प्रोक्ता माहिषवल्लिका ।
सौम्या महिषवल्लि च प्रतिसोमाभ्रवल्लिका ॥ २३८ ॥ कांडशाखा-
ऽपत्रवल्लि प्रोक्ता ' राजनिघण्टके ॥ २३९ ॥ षट्संख्यामुनिभिः
प्रोक्ता वैद्यशास्त्रविचक्षणैः ।

गुणाः—रसवीर्यविपाके च सोमवल्लीसमा स्मृता ॥ २४० ॥
मेघकुष्ठगुणैः प्रोक्ता धातुसाम्यकरा तथा । सोमवल्ली सप्तगुणा
प्रोक्ता माहिषवल्लिका ॥ २४१ ॥

* इसमें पत्तियां नहीं काण्ड होते हैं । एक एक काण्ड एक एक बालिशत
पर होता है । इसकी बेलसे दूध निकलता है ।

३३ वत्सादनी-छिरहटा ।

नामानि—वत्सादनी सोमवल्ली विक्रांता मोचकाभिध्या । पातालगहडी तार्क्षी सौपर्णी गहडी तथा ॥ २४२ ॥ महाबला दीर्घकांडा दीर्घवल्ली तदुत्तरम् । तथा दृढलता चैव प्रोक्ता 'राज-निघण्टके' ॥ २४३ ॥ सुदर्शना च चक्रांका तथैव मधुपर्णिका । वदध्याली (?) मैचका च 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ २४४ ॥ छिल्ली महाजटा चैव छल्ला हिड्डा तथैव तु । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव प्रोक्ता विंशतिसंख्याका ॥ २४५ ॥

गुणः—वत्सादनी तु मधुरा पित्तदाहाघ्ननाशिनी । वृष्या सन्त-
र्पणी रुच्या विषदोषनिवारिणी । प्राक्ता 'राजनिघण्टे' च वैद्य-
विद्याविशारदैः ॥ २४६ ॥ उष्णशोफकफार्शघ्नी वातहा 'केय-
देवके' । ग्राही वृष्या 'द्रव्यनामे' कफघ्नी वायुहृत् 'नृपे' ॥ २४७ ॥

३४ गोपालकर्कटी-गोपालककडी, कचरी ।

नामानि—गोपालकर्कटी वन्या तथैव गोपालकटी । क्षुद्रेर्वारु
क्षुद्रफला गोपाली क्षुद्रचिमटा ॥ २४८ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
तु सप्तसंख्या भिषक्जनेः ।

गुणः—गोपालकर्कटी शीता मधुरा पित्तनाशिनी । मूत्रकृच्छ्रा-
स्मरीमेहशोषहा 'राजनामके' ॥ २४९ ॥

३५ काकनास-कौआढोड़ी । *

नामानि—काकनासा ध्वांसनासा काकतुंडी तु वायसी ।
सुरंगी तस्करस्नायू ध्वांशतुंडा सुनासिका । वायसाब्दा ध्वांश-

*कौआढोड़ीकी वेलि बहुत विस्तृत होती है । इसके पत्ते पीपलीके
समान और फूल भीतरसे सफेद और बाहरसे नीले रङ्ग के होते हैं । फूल में
पांच पत्रुली होती हैं । इन वेलिके सभी हिस्सोंमें दूध रहता है । यह वेलि
बहुत कड़ू होती है । इसमें बर्छीके समान प्रत्येक पैनी दरुडी मेंदो फल
लगते हैं । फलमें तीन धारा होती हैं । फलका चिरा कौवकी चौवके
समान होता है । इसीसे इसे काकनासा कहते हैं । इस वेलिका सेवन करने—
वान्ति होती ओर पित्त भड़कता है । यह बहुत तीव्र वनस्पति है ।
इसका दूध फोड़े अथवा गांठपर लगानेसे गांठ जरूद बैठजाती है ।

बल्ली काकाक्षी ध्वांसनासिका ॥ २५० ॥ काकप्राणा विदात्री च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । ध्वांक्षतुंडफला ध्वांक्षी प्रोक्ता 'धन्वंतरी' तथा ॥ २५१ ॥ काकांगी काकसंख्या च चारस्नायुशिरोचला । काकास्या जीवनीया च 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ २५२ ॥ ध्वांक्षेष्टा तस्करवृक्षा 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता । काकतुंडफला चैव प्रोक्ता 'धन्वंतरी' तथा ॥ २५३ ॥ शिरावलेति मुनिभिः प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' । पंचविंशतिसंख्याका प्रोच्यते भिषजांवरैः ॥ २५४ ॥

गुणः—काकनासा तु मधुरा शिशिरा पिच नाशिनो । रसायनी दाढ्य करी बलीपलितहा 'नृपे' ॥ २५५ ॥

३६ काकादनी-काकमारी ।*

नामानि—काकादनी काकपीलु काकशिंखी तु स्कला (शिरोबला ?) । ध्वांक्षादनी वक्रश्या दुर्मोहा वायसादनी ॥ २५६ ॥ काकतुंडी ध्वांक्षनखी वायसी काकदंतिका । ध्वांक्षदंतीति प्रोक्ता विदिता 'राजनिघण्टके' ॥ २५७ ॥ वक्रश्या काकणंती प्रोक्ता 'धन्वंतरी' तथा । पंचभूसंख्यका प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः ॥ २५८ ॥

गुणः—काकादनी कटूष्णा च तिक्ता चैव रसायनी । वातदोषहरा रुच्या बलीपलितस्तंभिनी ॥ २५९ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' च पुरातनचिकित्सकैः । केश्या शिरोदोषहरा ग्रहहा 'द्रव्यनामके' ॥ २६० ॥ कषाया च रसे पाके कटुः स्यात्कफनाशिनो । शोफार्शहा च वमनो वित्रकुष्ठविनाशिनो ॥ २६१ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' च प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः ।

*काकमारीकी पेलि कोकणप्रान्तमें बहुत होती है । इसके फल जामुनी रङ्गके छोटे अंगूरके समान होते हैं । एक दख्खी में दो या तीन फल लगते हैं । प्रत्येक फलमें गोल बिद्या निकलता है । यह वनस्पति बहुत विषैली है । उधरके जङ्गली लोग मछली और मक्खियां मारनेमें इसके फलका उपयोग करते हैं । कौवा इसके फलपर मोहित होकर चोंच मारता है; परन्तु विष चढ़ कर मर जाता है । इसीसे इसे काकनासा कहते हैं । इसका बीज कटू और कृमि नाशक है ।

३७ रक्तगुंजा-लालगुंजा ।

नामानि—गुंजा सौम्यशिखडी च कृष्णला त्वरुणा तथा ॥ २६१ ॥ ताम्रिका शीतपाकी च उच्चटा कृष्णचूडिका । रक्ता तु रक्तिका चैव किंभोजो भिल्लभूषणा ॥ २६२ ॥ एषा 'राजनिघंटे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः । चटकी काकसावहा च प्रोक्ता 'धन्वंतरौ' तथा ॥ २६३ ॥ ततस्तु कृष्णकांवीजी तथैव काकमन्त्रिका । प्रोक्ता 'गणनिघंटे' तु पुरातनचिकित्सकैः ॥ २६४ ॥ कृष्णकातरकातुंडी 'केयदेवे' स्मृता बुधैः । शिखंडिका काकर्णती 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ॥ २६५ ॥ काकवीच्यंगारवलली प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' । चक्रलाऽमर-कोशे तु कविभिः परिकीर्तिता ॥ २६६ ॥ चूडामणी तु वन्या च तथा श्यामलचूडका । प्रोक्ता 'राजनिघंटे' तु कविभिः सप्तविंशतिः ॥ २६७ ॥

३८ श्वेतगुंजा ।

नामानि—श्वेतगुंजाभिरिंदीका तद्वत्काकादनी तथा । काक-पील्लु वक्रशल्या प्रोक्ता 'राजनिघंटे' ॥ २६८ ॥ 'धन्वंतरिनिघंटे' तु प्रोक्ता शीतोच्चटा ध्रुवम् । श्वेतपाकी तु चूडाला दुर्भाषा चक्रिका तथा ॥ २६९ ॥ चूडा च वक्रशल्येति 'केयदेवे' प्रकीर्तिता । चंडा तु दुर्मुखा चैव 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ॥ २७० ॥ ततो 'मदनपाले' तु दुर्माका परिकीर्तिता । कालभंडी निरंटीवा प्रोक्ता 'गणनिघंटे' ॥ २७१ ॥ ततस्तु श्वेतकांभोजी 'राजनाम्नि' निघंटे । प्रोक्ताष्टा-दशसंख्याका भिषग्विद्याविशारदैः ॥ २७१ ॥

गुणाः—गुंजद्वयं तु तीक्ष्णोष्णं वीजं वातिकरं तथा । पत्रंशूल-विषे हंति वश्ये श्वेतं 'नृपे' स्मृतम् ॥ २७३ ॥ वातपित्तज्वरे हंति मुख-शोषश्रमापहम् । श्वासतृष्णामदान् हंति रक्ताबुद्धिनाशनम् ॥ २७४ ॥ 'भावप्रकाशे' संप्रोक्तं पुरातनभिषग्वरैः । रसे तिक्ता कषाया च कफपित्तापहारिणी ॥ २७५ ॥ चक्षुष्या शुक्ला केश्या रक्षत्वंगव-दायिनी । इंद्रलुप्तहरा चैव मदमोहप्रहा तथा । रक्षीग्रहं विषं हन्ति कंडुकुष्ठव्रणापहम् । 'हमिहृत्केयदेवे' च संप्रोक्तं वैद्यनाथकैः ॥ २७६ ॥

३९ वृद्धदारु-विधारा ।

नामानि—अवेगी वृद्धदारु च तुंगको दीर्घतालुकः । वृद्धपुष्पी त्वजांत्री च तथैव छांगलांबिका ॥ २७७ ॥ जीर्णदारु जीर्णफंजी सुपुष्पी त्वजरा तथा । सूक्ष्मपर्णा भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्ता 'राजनिघंटके' ॥ २७८ ॥ जंतुका चैव संप्रोक्ता 'धन्वंतरिनिघंटके' । 'द्व्यर-तनाकरे' चैव जांगला परिकीर्तिता ॥ २७९ ॥ नागको जीर्णवालश्च अंतकोटरपुष्पिका । छांगी चैव तु विख्याता तथा महिषवल्लरी ॥ २८० ॥ 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः प्रोच्यते नैव संशयः । छांगडी ऋक्षगंडीति प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ २८१ ॥ अंतकोटरपुष्पी च तीरवालक एव च । एकत्रिंशतिसंख्याका भिषग्भिः कथिता ध्रुवम् ॥ २८२ ॥

गुणाः—वृद्धदारु पिच्छिला च कफवातापहारिणी । बल्या कासामदोषघ्नी प्रोक्ता 'राजनिघंटके' ॥ २८३ ॥ रसायनां च शु-क्रर्द्धिवलमेधाश्लि वृद्धिकृत् ॥ २८४ ॥ स्वरकांतिकरं चैव सरः शो-फामवातहृत् । वातमेहकफान् हन्ति प्रोक्तं 'केयनिघंटके' ॥ २८५ ॥ वृद्धदारुद्वयं* तिक्तमुष्णं कटुसमीरितम् । श्वयथुकृमिमेदघ्नं वातो-दरहरं 'धनौ' ॥ २८६ ॥ रक्तार्शनाशनं प्रोक्तं वैद्यैः 'मदनपालके' ।

४० ताम्रवल्ली ।†

नामानि—कैवर्तिका सुरंगा च लतावली दुमाराहा ॥ २८७ ॥ रिगिणी च सुभगा तदनंतरम् । ताली तमाली ताम्रा च ताम्र-वल्ली तमालिका ॥ २८८ ॥ सूक्ष्मवल्ली सुलोमा च शोधनी मालिका तथा । द्विवन्धिसंख्यका प्रोक्ता भिषग्विद्याविशारदैः ॥ २८९ ॥

गुणाः—कैवर्ता लघुवृष्या च कषाया कफनाशिनी । मंदाग्निश्वा-सकासांश्च हन्तीति 'राजनामके' ॥ २९० ॥

*इसीका एक और भेद है, जीर्णफंजी, फांजी अथवा काली विधारा कहते हैं । इसका भी गुण विधाराके समान है ।

†ताम्रवल्ली चित्रकूटकी पहाड़ी तथा युक्तप्रदेशके अनेक स्थानोंमें होती है । किसी किसी निघण्टुमें कैवर्तिकाको इसका अलग भेद मान कर लिखा है कि कैवर्तिका नामसे मालवामें प्रसिद्ध है ।

गुह्यचर्यादिवर्गः ।

३५(२)

२१

४०, २२३

४० कांडीरः-कांडवेल, हड़जोर ।

नामानि—कांडीरः कांडकटुकोः नासासंवेदनः पटुः । अग्र-
कांडस्तं यवल्ली कारवल्ली सुकांडकः ॥ २६१ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघंटके'
तु भिषक्शास्त्रविशारदैः । धन्वंतरे, तृयकांडा कविभिः परिकीर्तिता
॥ २६२ ॥ कांडीरी तु कटिल्लश्च तथैव कांडवल्लिका । नासालि-
वेदनश्चैव 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ २६३ ॥ कांडवेदनकश्चैव प्रोक्ता
'गणनिघंटके' । पंचभूसंख्यका प्रोक्ता भिषक्श्रेष्ठैः संशयः ॥ २६४ ॥

गुणाः—कांडीरः कटुतिकोष्णसरः प्रोक्तस्तथैव च । व्रणगुल्मो-
दरप्लीहशूलतृतविनाशकृत् ॥ २६५ ॥ अग्निप्रदीपकः प्रोक्तो 'राज-
नामनिघंटके' । वातशूलहरश्चैव 'द्रव्यनामनिघंटके' ॥ २६६ ॥ क-
फपित्तकृमीकुष्ठान् हंतीति 'गणनामके' ।

४१ जंतुघा-उत्तरदेशे पद्मावती ।

नामानि—जंतुघा जंतुकारी च जननी चक्रवर्तिनी ॥ २६७ ॥
तिर्थक्फला निशांघ्रा च बहुपत्री सुपत्रिका । राजवृक्षा जनेष्टा च
कपिकच्छुफलोपमा ॥ २६८ ॥ रंजनी सूक्ष्मवल्ली च भ्रमरी कृष्ण-
वल्लिका । निजूलिका कृष्णरुहा ग्रंथिपर्णी सुवल्लिका ॥ २६९ ॥
तरुवल्ली दीर्घफला प्रोक्ता 'राजनिघंटके' । सहर्षजन्तुकश्चैव प्रोक्ता
धन्वंतरौ, ध्रुवम् ॥ ३०० ॥ जंतुकृष्णा तु संस्पर्श तथैव जनरंजनी ।
जंतुघ्नी पर्पटी कृष्णा जंतुनी जंतुकं तथा ॥ ३०१ ॥ 'केयदेवे' भिष-
क्श्रेष्ठैः कथिता नैव संशयः । जनी 'मदनपाले' तु भिषग्भिः परि-
कीर्तिता ॥ ३०२ ॥ तथा 'भावप्रकाशे' च जन्तुका परिकीर्तिता ।
ततो 'गणनिघंटके' तु जन्तुकारः स्मृतो बुधैः ॥ ३०३ ॥ संस्पर्शामर-
कोशे' तु चतुःस्त्रिंशतिसंख्यका ।

गुणाः—जन्तुघा शिशिरा तिक्ता रक्तपित्तकफापहा ॥ ३०४ ॥
दाहतृष्णाविषघ्नी च रुचिकृद्दीपनी 'नृपे' । तुवरा वर्णकृत् कण्डू-
कुष्ठव्रणविनाशिनी ॥ ३०५ ॥ पित्ताद्भवकफघ्नाति प्रोक्ता 'केय-
निघण्टके' । *

*इसकी छाल कपड़ेमें रख छोड़नेसे कपड़ेमें कीड़ा नहीं लगता और न
वह बिगड़ता है ।



४३ आम्लपर्णी-रामचना ।

नामानि—आम्लपर्णी च तीक्ष्णास्ला कंडूला तदनन्तरम् ॥३०६॥
वल्ली करवटादिश्च वनस्था बलिसूराणा । अरण्यवासिनी चैव
संप्रोक्ता 'राजनामके' ॥ ३०७ ॥ वसुसंख्या भिषक्श्रेष्ठैः प्रोच्यते
भिषजां वरैः ।

गुणाः—अत्यम्लपर्णी तीक्ष्णास्ला ग्रीहशूलानिलापहा ॥ ३०८ ॥
रुच्या च दीपनी गुल्मश्लेष्मरोगापहा 'नृपे' ।

४४ शङ्खपुष्पी-शङ्खाहूली ।

नामानि—शङ्खपुष्पी तु शङ्खावहा सुपुष्पी कम्बुमालिनी ॥३०९॥
पीतपुष्पी कम्बुपुष्पा मेघ्या मलविनाशिनी । किरीटी शङ्खकुसुमा
शूलघ्ना शङ्खमालिनी ॥ ३१० ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्या-
विशारदैः । विलासिनी चिरीटी च प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' भ्रुवम्
॥ ३११ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव संप्रोक्ता वनमालिनी । शङ्खनाभि
स्मृतिहिता तथा वर्णविलासिनी ॥ ३१२ ॥ प्रोक्ता 'मदनपाले' तु
भिषक्शास्त्रविशारदैः । मांगल्यकुसुमा चैव प्रोक्ता 'भावप्रकाशके'
॥ ३१३ ॥ एकेनविंशतिः प्रोक्ता संख्या चैव मनीषिभिः ।

गुणाः—शङ्खपुष्पी हिमा तिक्ता मेघाहृत् स्वरकारिणी ॥३१४॥
ग्रहभूतादिदोषघ्नी वशीकरणसिद्धिदा । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
च पुरातनभिषग्वरैः ॥ ३१५ ॥ आयुष्या मानसीव्याधिनाशिनी च
कषायका । बलाशिकान्तिकृत् कुष्ठनाशिनी 'भावनामके' ॥ ३१६ ॥
कटूष्णा च रसा चैव विषपित्तबलासहृत् । अपस्मारविनाशी च
'धन्वे' प्रोक्ता रसायनी ॥ ३१७ ॥ मेहकुमित्रघ्नी च प्रोक्ता 'गण-
निघण्टके' ।

४५ आवर्तकी-रक्त आहुली, तगरबल्ली ।*

नामानि—आवर्तकी तिन्दुकिनी विभांडी तु विषाणिका
॥ ३१८ ॥ रक्तपुष्पी रङ्गलता मनोज्ञा महदा तथा । जाली पति-

*इसके फूल लाल रङ्गके होते हैं ।

कला चैव चर्मरङ्गा तदुत्तरम् ॥ ३१६ ॥ वामावर्तेति कविभिः प्रोक्ता
'राजनिघण्टके' । लता महाजालिनी च 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ ३२० ॥
महाजालिनिका चैव प्रोक्ता 'मदनपालके' । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव
प्रोक्ता वामविपाणिका ॥ ३२१ ॥

गुणाः—आवर्तकी कपायास्ला शीतला पित्तहारिणी । प्रोक्ता
'राजनिघण्टे' च वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ३२२ ॥ कुण्डोर्ध्वदोषशमनी
हृद्योदोषविनाशिनी । कपाया शीतला वृष्या त्रिदोषशमनी तथा
॥ ३२३ ॥ अतिसारहरा प्रोक्ता 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ।

४६ कर्णस्फोटा-कानफोडा ।*

नामानि—कर्णस्फोटा श्रुतिस्फोटा त्रिपुटा कृष्णतंडुला ॥ ३२४ ॥
चित्रपर्णी स्फोटलता चन्द्रिका त्वर्धचन्द्रिका । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
तु भिषग्विभवसंख्या ॥ ३२५ ॥

गुणाः—कर्णस्फोटा कटुस्तिक्ता हिमा च विषहा तथा । ग्रह-
भूतहरा प्रोक्ता 'राजनामनिघण्टके' ॥ ३२६ ॥

४७ कट्वी-कटुकावल्लो, कटुकी ।

नामानि—कट्वी कटुकवल्लो च सुकाष्ठा काष्ठवल्लिका ।
महावल्लो सुवल्लो च पशुमेहनिका कटुः ॥ ३२७ ॥ प्रोक्ता 'राज-
निघण्टे' तु भिषग्विभवसंख्या ।

गुणाः—कट्वी तु मधुरा शीता सर्वज्वरहरा तथा ॥ ३२८ ॥
रुच्या च राजयक्ष्माहा प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ।

४८ अमृतश्रवा-अमृतवल्लो ।†

नामानि—वृक्षारुहामृतश्रवा तथैव तोयवल्लिका ॥ ३२९ ॥
घनवल्लो सितलता प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' पञ्चसंख्या भिषक्-
श्रेष्ठैरत्रैव परिकीर्तिता ॥ ३३० ॥

*इसकी वेलि महाराष्ट्रमें होती है । इसके पत्ते कोरदार कटे हुए होते
हैं । इसका फल पटकसे आवाज़ होती है ।

†चित्रकूटकी पहाड़ीमें होती है ।

गुणाः—ईषतिक्ताऽमृतश्रावा तथैव च रसायनी । कमलाश्वय-
थूनाशा विषकुष्ठापहा 'नृपे' ॥ ३३१ ॥

४९ पुत्रदात्री-पुत्रदाई ।*

नामानि—वातारिपुत्रदात्री च भ्रमरी श्वेतपुष्पिका । वृत्तपत्रा-
तिगन्धालुर्वैशिजाता सुवल्ली ॥ ३३२ ॥ संप्रोक्ता वसुसंख्याका
वैद्यैरत्रैव निश्चिता ।

गुणाः—पुत्रदात्री वातहन्त्री कटूष्णा कफहारिणी ॥ ३३३ ॥
वन्ध्यादोषहरा प्रोक्ता सुरभी 'राजनामके' ।

पलाशी ।†

नामानि—पलाशी पत्रवल्ली च पर्णवल्ली तथैव च ॥ ३३४ ॥
सुरपर्णी सुपर्णी च दीर्घवल्ली विषादनी । अम्लपत्रो दीर्घपत्रो
रसाम्ला तदनंतरम् ॥ ३३५ ॥ अम्ली अम्लातकी चैव कांजिका च
पलाशिका । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु चतुर्दशभिषग्वरैः ॥ ३३६ ॥

गुणाः—पलाशी मधुराम्ला च मुखदोषविनाशिनी । अरोचक-
हरा पथ्या पित्तकोपकरी 'नृपे' ॥ ३३७ ॥ इति सिद्धेश्वरकृतराघव-
विरचिते गुडूच्यादि-प्रथमवर्गः समाप्तः ।

२ शताह्वादि वर्गः ।

शताह्वा-सौंफ ।

नामानि—शताह्वा शतपुष्पा च मिश्रिर्घोषा तु पोतिका । अहि-
च्छत्रा सुवाक्पुष्पी माधवी कारवी शिफा ॥ ३३८ ॥ संघातपत्रिका
छत्रा वज्रपुष्पा सुपुष्पिका । शतप्रसूता बहुला पुष्पाह्वा शतपत्रिका
॥ ३३९ ॥ वनपुष्पा भूरिपुष्पा सुगंधा सूक्ष्मपत्रिका । गंधाधिका-
तिछत्रा च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ३४० ॥ अवाक् पुष्पी घोषवती
शफा च तदनंतरम् । मधुरा योनिर्दोषघ्नी मागधी च शरा तथा

*पुत्रदाई मालवा देशमें प्रसिद्ध है ।

†नागर देशमें प्रसिद्ध है ।

॥ ३४१ ॥ 'केयदेवनिघंटे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः । शफा शताह्वा-
ऽवाक्पुष्पी चेष्टिका चेति मागध्या ॥ ३४२ ॥ पणा 'मदनपाले' तु
भिषग्भिः परिकीर्तिता । तथा संहतपत्री च शितछत्रा ततःपरम्
॥ ३४३ ॥ 'भावप्रकाशे' संप्रोक्ता भिषक्शास्त्रविशारदैः । अर्वाक्पुष्पा
मधुरसा क्षेत्रा संहतपत्रिका ॥ ३४४ ॥ प्राक्ता 'गणनिघंटे' तु चतुश्च-
त्वारिसंख्यका ।

गुणाः—शताह्वा कटु तिक्ता च स्निग्धा श्लेष्मातिसारजित्
॥ ३४५ ॥ ज्वरनेत्रव्रणप्लीहवस्तिहृद्राजनामके । श्लेष्मवातहरा-
चोष्णा संप्रोक्ता 'धन्वनामके' ॥ ३४६ ॥ पित्तला कफपित्तघ्नी मेध्या
च लघु दीपनी । शूलदाहवमीतृष्णागुल्मयोनिरुजां हरा ॥ ३४७ ॥
'द्रव्यरत्नाकरे' चैवं भिषग्भिः परिकीर्तिता ।

२ मिश्रिया-बड़ी सौंफ ।

नामानि—मिश्रिया तालपर्णी च तालपत्री मिश्री तथा ॥ ३४८ ॥
शालेया च शीतशिवा शालिता वनजा तथा । अवाक्पुष्पी च मधुरी
छत्रा संहतपुष्पिका ॥ ३४९ ॥ सुपुष्पा सुरसा वन्या प्रोक्ता 'राजनि-
घंटके' । बलशाली 'केयदेवे' भिषग्लोकैः प्रकीर्तिता ॥ ३५० ॥ उवा-
क्पुष्पी च मागध्या मधुरा तदनंतरम् । शतकेति भिषक्श्रेष्ठैः 'द्रव्य-
रत्नाकरे' तथा ॥ ३५१ ॥ अहिछत्रा त्ववाक्पुष्पी माधवी पातिका
शिफा । एषा षड्विंशसंख्याका प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ ३५२ ॥

गुणाः—मधुरा कटुपाके च स्निग्धा कफविनाशिनी । वातपित्त-
हरा प्लीह जंतुहा 'राजनामके' ॥ ३५३ ॥ तिक्ता हिमा तु वृष्या च
दुर्नामा क्षयहारिणी । क्षतक्षीणहरा बल्या वातपित्तास्रहा 'धने'
॥ ३५४ ॥ रसे तीक्ष्णा लघुश्चैव बन्धकृच्चोष्णदा बला । रुक्षा हृद्या
विट्कृमिहा शुक्रहानिलहारका ॥ ३५५ ॥ 'केयदेवे' निघंटे तु भिष-
क्श्रेष्ठैः प्रकीर्तिता । 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्ता भिषग्भिर्योनिरूल
हृत् ॥ ३५६ ॥

३ शालिपर्णी-सरिवन ।

नामानि—सदला छालपर्णी च स्थिरा चैव सुपुत्रिका । कुमुदा
चैव सौम्या च गुहा चैव तथा ध्रुवा ॥ ३५७ ॥ विदारिगन्ध्यांशुमती
दीर्घमूला सुपर्णिता । वातघ्नी पित्तली तन्त्री सुधा सर्वांनुकारिणी

॥ ३५८ ॥ शोफघ्नी सुभगा देवी निश्चला ब्रीहिवर्णिका । सुमूला
तु सुरूपा च सुपत्रा शुभपत्रिका ॥ ३५९ ॥ शालिपर्णी शालिदला
दीर्घपत्रेति 'राजके' । त्रिवर्ण्यऽतिगुहा चैव महाक्लीजनका तथा
॥ ३६० ॥ पीतिनीति भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्ता 'धन्वंतरौ' ध्रुवम् । ततस्त्व-
तिरुहा चैव महाक्लीतनका तथा ॥ ३६१ ॥ श्रीपर्णिका तु श्रीपर्णी
'केयदेवे' प्रकीर्तिता । तथा 'मदनपाले' तु त्रिपर्णीति प्रकीर्तिता
॥ ३६२ ॥ दीर्घाघ्निः पीवरा चैव प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' । ध्रुवपर्णी
त्वतिगुहा महाक्लीतनिका 'गणे' ॥ ३६३ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु पर्णी
चैव प्रकीर्तिता । चत्वारिंशत् चतुश्चैव संख्या प्रोक्ता मनीषिभिः ॥ ३६४ ॥

गुणाः—शालिपर्णी रसे तिक्ता गुरूष्णा वातहा तथा । विषम-
ज्वरमेहार्शशोकसन्तापहा नृपे ॥ ३६५ ॥ गरच्छर्दिहरा प्रोक्ता वैद्यै-
'भावप्रकाशके' । लघुश्वासहरा भेदी पित्तवाततृषापहा ॥ ३६६ ॥
कासदाहहरा प्रोक्ता 'धन्वंतरिनिघण्टके' । स्वादुवृष्या वृंहणी तु
तथैव च रसायनी ॥ ३६७ ॥ विप्रश्वासात्रिदोषघ्नी कृमीमेहविना-
शिनी । क्षतकासातिसारघ्नी प्रोक्ता 'केयनिघण्टके' ॥ ३६८ ॥

४ समष्टीला-काकुंवा, नद्याभ्र ।

नामानि—गंडीरा तु समष्टीला नद्याभ्रात्वभ्रगंधिकृत् । कोश-
फला च कोशाभ्र उपदंशे (?) तु 'राजके' ॥ ३६९ ॥ काकाभ्रा
कंटकिफला 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ।

गुणाः—समष्टीला कटूष्णा च रुच्या मुखविशोधना ॥ ३७० ॥
दाहकृत्कफवातघ्नी क्षीपना 'राजनामके' ।

५ वृहती-बड़ीकटाई ।

नामानि—वृहती महती क्रांता वार्ताकी सिंहिका कुली
॥ ३७१ ॥ राष्ट्रिका स्थूलकंटा च चंडाकी तु महोटिका । बहुपुत्री
कंटतनुः कंटालुः कट्कला तथा ॥ ३७२ ॥ डोरली वरवृंताकी
प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । क्रांता तु राष्ट्रकी चैव विशदा च महो-
टिका ॥ ३७३ ॥ 'धन्वंतरिनिघण्टे' च भिषक्श्रेष्ठैः प्रकीर्तिता ।
कटुकी कंटकी चैव भंडाकी च विधावका ॥ ३७४ ॥ स्थलभंडा-
किनी चैव 'केयदेवे' प्रकीर्तिता । हिंगुली दुष्प्रधर्षा च प्रोक्ता

‘ भावप्रकाशके ’ ॥ ३७५ ॥ महावर्ताकिनी चैव प्रोक्ता ‘ गणनि-
घटके ’ । अष्टाविंशतिसंख्याका प्रोक्ता पूर्वचिकित्सकैः ॥ ३७६ ॥

गुणाः—वृहती कटुतिक्तोष्णा वातज्वरहरा तथा । कास-
श्वासरुचिहरा हृद्रोगामहरा ‘ नृपे ’ ॥ ३७७ ॥ ग्राहिणी पाचिनी
प्रोक्ता ‘ धन्वंतरिनिघटके ’ । कफश्लेष्महरा हृद्या दीपनी कुष्ठहा
तथा ॥ ३७८ ॥ आस्योद्भवमलघ्नी च शूलहा ‘ केयदेवके ’ । कफ-
घातहरा प्रोक्ता ‘ द्रव्यनामनिघटके ’ ॥ ३७९ ॥

६ पीततंडुला-मोतरिंगणी ।

नामानि—ततः सर्पतनुश्चैव क्षयिका पीततंडुला । पुत्रप्रदा
बहुफला गोधिनी तदनंतरम् ॥ ३८० ॥

गुणाः—क्षयिका वृहती तिक्ता कटुरुष्णा च तत्समा । धारा-
स्तंभकरा प्रोक्ता ‘ राजनामनिघटके ’ ॥ ३८१ ॥

७ श्वेतवृहती ।

नामानि—ततस्तु श्वेतवृहती श्वेतवार्ताकिनी तथा । श्वेत-
सिंही श्वेतफला तथा श्वेतमहोटिका ॥ ३८२ ॥ प्रोक्ता ‘ राज-
निघटे ’ तु रुद्रसंख्या भिषक्जनैः ।

गुणाः—वातश्लेष्महरा रुच्या नानानेत्ररुजापहा ॥ ३८३ ॥

८ कण्टकारी-भटवटैया ।

नामानि—कंटकारी कंटकिनी दुस्पर्शादुःप्रहर्षिणी । क्षुद्रा
व्याघ्री निदिग्धा च द्रविणी क्षुद्रकण्टका ॥ ३८४ ॥ बहुकण्टा क्षुद्र-
कण्टा तथा कण्टालिका मता । ततः क्षुद्रफला चैव प्रोक्ता ‘ राज-
निघटके ’ ॥ ३८५ ॥ ‘ धन्वंतरौ ’ धावनीति ‘ केयदेवे ’ प्रचो-
दनी । बहुगूडाकुली चैव वार्ताकी तदनंतरम् ॥ ३८६ ॥ स्पृशी
च राष्ट्रिकी चैव प्रोक्ता ‘ त्वमरकोशके ’ ।

गुणाः—कंटकारी कटूष्णा च दीपनी श्वासकासहा ॥ ३८७ ॥
प्रतिश्यायश्लेष्मवातज्वरहा ‘ राजनामके ’ । आमवातारुचिहरा
कासहृद्रोगहा ‘ धने ’ ॥ ३८८ ॥ तिक्ता रुक्षा भेदिनी च पाचनी
पार्श्वरोगजित् । कृच्छ्रपीनसहंती च मलपाके कटूष्णका ॥ ३८९ ॥

फलगुणाः—भेदनं रोचनं हृद्यं तिकं पिताग्निकृत्या । श्लेष्म-
वायुकंदुकासमेहकृमिज्वरापहा ॥ ३६० ॥ 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः
'द्रव्ये' चैव सरा कृमृता । आस्यवैरस्यहन्त्री च ग्राही कुष्ठविनाशिनी
॥ ३६१ ॥ शूलाग्निमांघहा प्रोक्ता चैवै 'भावप्रकाशके' ।

६ लक्ष्मणा ।

नामानि—क्षेत्रदूती तु श्वेता च लक्ष्मणा सितसिंहिका ॥ ३६२
॥ सितक्षुद्र सिता छिन्न क्षुद्रवार्ताकिनी तथा । कटुवार्ताकिनी
चैव क्षेत्रजा कपटेश्वरी ॥ ३६३ ॥ निस्नेहफलिका रामा सितकंटा
महौषधी । गर्दभी चंद्रिका चांद्रि चंद्रपुष्पा प्रियंकरी ॥ ३६४ ॥
माकुली दुर्लभा रास्ना प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । कासघ्नी क्षुद्र-
माता च किष्वा तु कपटा तथा ॥ ३६५ ॥ मलिना मलिनांगी च
ह्लिन्नदूती लतांगिनी । बहुवामा महर्षीका कुमती तदनंतरम् ॥
३६६ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः । चंद्रपुष्पी
तु वनजा धूर्ता च दूतिका तथा ॥ ३६७ ॥ श्वेतलक्ष्मा 'केयदेवे'
भिषग्भिः परिकीर्तिता । चंद्रहासेति मुनिभिः प्रोक्ता 'मदन-
पालके' ॥ ३६८ ॥ गर्भदा चंद्रभा चंद्रा प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ।
चत्वारिंशत्त्रयश्चैव संख्या प्रोक्ता भिषजनैः ॥ ३६९ ॥

गुणाः—श्वेता तु कंटकारी च रुच्योष्णा कफवातजित् ।
चक्षुष्या दीपनी प्रोक्ता तथा रसनियामिका ॥ ४०० ॥ 'राजनाम-
निघण्टे' च 'द्रव्ये' स्याद्गर्भकारिणी । पार्श्वपीडाहरा चैव सरा
'भावप्रकाशके' ॥ ४०१ ॥ तत्रैव तत्फलगुणः शुकरेचनमित्यपि ।

१० पृष्ठिपर्णी-पिठवन ।

नामानि—कलशी पृष्ठिपर्णी च तथैव च महागुहा ॥ ४०२ ॥
शृगालविन्ना धमनी मेखला लांगुली गुहा । क्रोष्टुच्छी च शृङ्गाली
सिंहपुच्छी तथैव च ॥ ४०३ ॥ पृथक्पर्णी दीर्घपर्णी दीर्घा क्रोष्टु-
कमेखला । चित्रपर्ण्युपचित्रा च श्वपुच्छा तदनन्तरम् ॥ ४०४ ॥
प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रविशारदैः । अंग्री शृगालविन्ना
च बलापर्णी तु क्रोष्टुका ॥ ४०५ ॥ कपित्थका धावनीति 'धन्वन्त-
रिनिघण्टके' । क्लीतनी धातनी चैव स्निग्धपर्णी तथैव च ॥ ४०६ ॥
'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशयः । शृगालवृक्षा जटिला

प्रोक्ता 'मदनपालके' ॥ ४०७ ॥ अंग्रिपणीं क्रोष्टुविष्ठा प्रोक्ता 'भाव-
प्रकाशके' । शृगालविन्न्या पणीं तु तथैव क्रोष्टुपुष्पिका ॥ ४०८ ॥
प्रोक्ता 'गणनिघंटे' तु वेदवन्दिभिधा ध्रुवम् ।

गुणाः—पृष्ठिपणीं कटूष्णास्ला तिक्ता कासातिसारजित्
॥ ४०९ ॥ घातज्वरघ्नोन्माददाहहा 'राजनामके' । रक्तपित्तहरा
रक्षा हिक्राहा 'गणनामके' ॥ ४१० ॥ त्रिदोषज्वरकासघ्नी 'द्रव्य-
रत्ने' प्रकीर्तिता । रक्तातिसारहन्त्री च लघु वृष्या तृषापहा ॥ ४११ ॥
दाहवान्तिहरा प्रोक्ता वैद्यै 'मदनपालके' । 'भावप्रकाशे' संप्रोक्ता
वृष्या च मधुरा रसा ॥ ४१२ ॥ श्वासहन्त्रीति विज्ञेया वैद्यै विद्या-
विशारदैः ।

११ गोक्षूरक-बड़ा गोखरू ।

नामानि—गोक्षूरको गोक्षुरकः क्षुरांगश्च श्वदंष्ट्रकः ॥ ४१३ ॥
कंटकी भद्रकंटश्च व्यालदंष्ट्र क्षुरस्तथा । ततश्च क्रमशश्चैव दुश्चक्रम-
महांगकौ ॥ ४१४ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघंटे' च रुद्रसंख्या भिषगजनैः ।

१२ वनशृङ्गाटक-छोटे गोखरू ।

नामानि—ततो गोक्षुरकश्चैव तथा कंटो त्रिकंटकः ॥ ४१५ ॥
षडङ्गो बहुकंटश्च क्षुरो गोकंटकस्तथा । पलंकषा कंटफलस्तनु क्षुद्र-
क्षुरस्तथा ॥ ४१६ ॥ तथैव भक्षकंटश्च चणकद्रुम एव च । स्थूल-
शृङ्गाटकश्चैव वनशृङ्गाटकस्तथा ॥ ४१७ ॥ इक्षुगन्धः स्नादुकटः
प्रोक्तो 'राजनिघंटे' । भक्षको मधुरश्चैव श्वदंष्ट्रस्त्रिक एव च
॥ ४१८ ॥ व्यालदंष्ट्रो भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्तो 'धन्वन्तरौ' ध्रुवम् । गोक्षुरः
स्थलशृङ्गाट 'केयदेवे' प्रकीर्तितौ ॥ ४१९ ॥ इक्षुगन्धो भिषक्श्रेष्ठैः
प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ।

गुणाः—गोक्षुरौ* शीतलौ प्रोक्तौ मधुरौ बृंहणौ बले ॥ ४२० ॥
कुच्छाशमरीमेहदाहनाशकौ च रसायनौ । 'द्रव्यरत्नाकरे' वैद्यै र्वात-
जित् परिकीर्तितः ॥ ४२१ ॥ 'भावप्रकाशे' संप्रोक्तावर्शघ्नाविति
निश्चयम् । शूलहृद्रोगजित् वृष्या 'धन्व' नामनिघंटे ॥ ४२२ ॥

*गोक्षूरस्य द्वौ भेदौ वर्तते, तस्मात् अत्र द्विवचनं कृतम् । द्वयोर्भेदयोरपि
साधारणतः समानगुणधर्माः सन्ति । वने भवः ग्रामे भवश्च (स्थलशृङ्गाटकः)
इति द्वौ भेदौ ।

पुष्टिप्रदौ दीपनौ च वस्तिवातहरौ तथा । त्रिदोषश्वासकासघ्नौ 'केये'
प्रोक्ता भिषग्वरैः ॥ ४२३ ॥

१३ यवासा-जवासा, लाल धमासा ।

नामानि—“यासो यवासो बहुकण्टकश्च खरस्तथा छालदल-
स्तथैव” । दूरमूलस्त्वनन्ता च विषकण्टक एव च ॥ ४२४ ॥ तीक्ष्ण-
कण्ठः समुद्रान्ता दीर्घमूलो मरुद्भवा । सूक्ष्मपत्रो विषघ्नश्च कंटा-
लुस्तदनन्तरम् ॥ ४२५ ॥ त्रिकण्टकश्च गन्धारी प्रोक्ता 'राजनिघं-
टके' । 'धन्वन्तरिनिघंटे' तु प्रोक्ता बालकपत्रकः ॥ ४२६ ॥ कटुस-
ताम्रमूली च तथा धन्वयवासकः । 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः कथितो
नैव संशयः ॥ ४२७ ॥ कुनाशकः कषायश्च दूरविग्रह एव च । प्रोक्तो
'भावप्रकाशे' च भिषग्विद्याविशारदैः ॥ ४२८ ॥ बलिपत्रो भिषक्श्रेष्ठैः
प्रोक्तो 'गणनिघंटके' । त्रिंशत्संख्या समाख्यातो भिषक्शास्त्र-
विशारदैः ॥ ४२९ ॥

गुणाः—यासो मधुर तिक्तोऽसौ शीतपित्तार्तिदाहजित् । बल-
दीपनकृत् तृष्णा कफछर्दिविसर्पजित् ॥ ४३० ॥ प्रोक्तो 'राजनिघंटे'
च 'भावे' मेदविनाशनः । रक्तपित्तज्वरहरौ प्रोक्तो 'धन्वनिघंटके'
॥ ४३१ ॥ कषायश्च हिमश्चैव कफमेहमदापहा । भ्रमकुष्ठविसर्पघ्ना
कासवातासृगापहा ॥ ४३२ ॥ 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव
संशयः । वातपित्तकफासृघ्नो 'गणे' प्रोक्ता भिषक्जनैः ॥ ४३३ ॥

१४ वासकः-रूसा ।

नामानि—वासकः सिंहिका वासा भिषङ्माता वसादनी ।
अदरूपः सिंहमुखी सिंही कंठोरवीवृषा ॥ ४३४ ॥ शितकर्णी वाजि-
दन्ता नासा पंचमुखी तथा । सिंहपर्णी मृगेन्द्राणी प्रोक्ता 'राजनिघं-
टके' ॥ ४३५ ॥ सिंहास्या शितबल्ली च मातृका सिंहवल्लभा । वाजि-
दंतो भिषक्श्रेष्ठैः 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ ४३६ ॥ सिंहकश्च मह-
द्वैद्यैः प्रोक्तो 'गणनिघंटके' । सिंही 'त्वमरकोशे' च त्रयोविंशति-
संख्याकाः ॥ ४३७ ॥

गुणाः—वासा तिक्ता कटुः शीता कामला रक्तपित्तहा । कफ-
ज्वरक्षयश्वासनाशनी 'राजनामके' ॥ ४३८ ॥ ऊर्ध्वासृक्पित्तहन्त्रीति
'गणे' प्रोक्ता चिकित्सकैः । हृच्छर्दिकुष्ठहन्त्री च तृषाहा 'धन्वनामके'

॥ ४३६ ॥ ज्वरमेहाहचिघ्नो च वातला कफनाशिनी । 'केयदेवे'
भिषक्श्रेष्ठै 'द्रव्ये' मेहविनाशिनी ॥ ४४० ॥

१५ शितिवार-सिरियारी ।*

नामानि—शितिवारः शितवरः सूच्यान्हः सूचिपत्रकः । श्री-
घारकः शिखी वधुः स्वस्तिकः सुनिषण्णकः ॥ ४४१ ॥ सूचीदला
कुरुटश्च ततः श्वेतावरस्तथा । मेधाकृत् ग्राहकश्चैव कुकुटस्तद-
न्तरम् ॥ ४४२ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु भिषक्शास्त्रविचक्षणैः ।
शीतिवारः सनिषण्णस्तद्रत्सीवारको धनौ ॥ ४४३ ॥ कुरंटिका
क्षेत्रभूषा कुरंटी शीर्षमंजरी । श्रीहस्तितो सिंहकेशी युवकः क्षेत्र-
नाशिनी ॥ ४४४ ॥ कृष्णसूक्ष्मपुला चैव 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ।
भूरुण्डी हस्तिनी चैव श्वेतवारक एव तु ॥ ४४५ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे'
चैव प्रोक्ता पूर्वचिकित्सकैः । पूर्णाकश्च भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्तो 'भाव-
प्रकाशके' ॥ ४४६ ॥ एकत्रिंशत्संख्यका च प्रोक्तेषा भिषजां वरैः ।

गुणाः—शितिवारा च संग्राही कषायेष्णा त्रिदोषनुत् ॥ ४४७ ॥
मेघाहचिज्वरहरा दाहहा 'राजनामके' । रुक्षा वृष्या गुरुश्चैव तथा
मारुतपित्तकृत् ॥ ४४८ ॥ विषश्वयथुनाशा च वस्तिवातहरा तथा ।
कुच्छ्राश्मकफवातघ्नी प्रोक्ता 'केयनिघण्टके' ॥ ४४९ ॥ 'द्रव्ये' तु
कफवातघ्नी बन्धिकृच्च सरो स्मृता ।

१६ क्षुद्रदुरालभा-छोटा धमासा ।

नामानि—करभा दनिका चैव तथैव करभप्रिया ॥ ४५० ॥
ग्राहिणी फणिहृत् चैव कषाया चोद्गमक्षिका । अजादन्यजभक्षा
च तथैव च विशारदा ॥ ४५१ ॥ कच्छुराफणिहारी च सूक्ष्मपत्रा
मरुद्भवा । विरूपा मरुजा जाता कषायी 'गणनामके' ॥ ४५२ ॥
एकानविंशतिः प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः ।

गुणाः—क्षुद्रा दुरालभा चाम्बला ज्वरकुष्ठविनाशिनी ॥ ४५३ ॥
श्वासकासघ्नमघ्नी च तथा पारदशुद्धिदा ।

*इसका शाक होता है, बड़ा होने पर इसकी पेड़में एक सफेद तुरी निकलता
है उसे सुनगा या गंडाम और महाराष्ट्र देशमें कोंबड़ा कहते हैं । ऐसे तुरीवाले
कुरडूको देवकुरडू कहते हैं ।

१७ दुरालभा-धमासा ।

नामानि—धन्वयासो दुरालभा ताम्रमूला च कच्छुरा ॥ ४५४ ॥
 दुरालभा च दुःस्पर्शा धन्वी धन्वयवासका । प्रबोधनी सूक्ष्मदला
 विरूपा दूरविग्रहा ॥ ४५५ ॥ दुर्लभा दुःप्रधर्षी च प्रोक्ता 'राज-
 निघण्टके' । यासा तु कष्टरा चैव प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं ॥ ४५६ ॥
 तथा 'मदनपाले' तु यासकेति स्मृता बुधैः । भासा 'गणनिघण्टे'
 च प्रोक्ता त्वष्टादशैव तु ॥ ४५७ ॥

गुणाः—दुरालभा कटुस्तिक्ता वातपित्तज्वरापहा । उष्णा
 गुल्मप्रमेहघ्नी प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ४५८ ॥

१८ अग्निदमनी-अग्निनी धमासा ।

नामानि—ततोऽग्निदमनी चैव बहुकंटा तथैव च । वल्लि-
 कंटारिका चैव तद्रत् गुच्छफला तथा ॥ ४५९ ॥ ततः क्षुद्रफला
 चैव क्षुद्रकंटारिका तथा । तथैव क्षुद्रदुःस्पर्शा दमनी तदनन्तरम्
 ॥ ४६० ॥ मलेंद्रमाता विदिता प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । दशसंख्या
 भिषग्भिस्तु प्रोच्यते नैव संशयः ॥ ४६१ ॥

गुणाः—अथाग्निदमनी कट्वी चोष्णा रुक्षा तथैव च । रुच्या
 घातकफघ्नी च हृद्या च दीपनी तथा ॥ ४६२ ॥ गुल्मघ्नीहृहरा प्रोक्ता
 'राजनामनिघण्टके' ।

१९ बाकुची-बावची ।

नामानि—बाकुची सोमराजी च सोमवल्ली सुवल्लिका ॥ ४६३ ॥
 सिता सिताधरी चैव चंद्ररेखा च चंद्रिका । सुप्रभा कुष्ठहंत्री च
 कांभोजी पूतिगंधिका ॥ ४६४ ॥ अवलगुजा चांद्रसंज्ञा राजी च
 तदनन्तरम् ॥ ऐन्दवी कालमेषी च त्वग्दोषघ्नी तथैव तु ॥ ४६५ ॥
 ततः कृष्णफला चैव वलगुजा च प्रभा तथा । बाकुटी चैव विदिता
 'राजनामनिघण्टके' ॥ ४६६ ॥ पूतिफला चंद्रलेखा प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ'
 ध्रुवं । ततस्तु चंद्रशकला चंडरी चंद्रिका तथा ॥ ४६७ ॥ जीवना
 मलयू चैव इंदुराट् कालमेषिका । सोलखंडा सुवल्लिका 'केवदेवे'
 प्रकीर्तिता ॥ ४६८ ॥ तथा 'मदनपाले' तु वरा प्रोक्ता मनीषिभिः ।
 अहिदूरो कुष्ठहरिः प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' ॥ ४६९ ॥ चत्वारिंशत्
 संख्यकेति संप्रोक्ता भिषजां वरैः ।

गुणाः—वाकुची कटु तिक्तोष्णा कृमिकुष्ठ कफापहा ॥४७०॥
 प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' च वैद्यविद्याविचक्षणैः । तत्फलं पित्तलं
 कुष्ठकफानिलहरं कटु ॥ ४७१ ॥ 'केयदेवे' 'भिषक्श्रेष्ठैः' संप्रोक्तं
 नैव संशयः । 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तं वायुजन्तुविनाशकम् ॥ ४७२ ॥
 तत्फलं श्वेतकुष्ठघ्नं कफवातहरं 'गणे' । केयं शोथामपांडूघ्नं फलं
 'भावप्रकाशके' ॥ ४७३ ॥ त्वरदोषविषकं हृद्घ्नं खजुनाशकरं स्मृतं ।
 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च व्रणहन्तं प्रकीर्तितं ॥ ४७४ ॥ दीपनी मधुरा
 रुक्षा रुच्या हृद्या तथैव च । विष्टंभी च सरा मेधया रक्तपित्तकफा-
 पहा ॥ ४७५ ॥ श्वासकासकृमीमेह*ज्वरहन्त्रीति 'केयके' ।

२० शणपुष्पी-सनई ।

नामानि—शणपुष्पी बृहत्पुष्पी शणिका शवघटिका ॥ ४७६ ॥
 पीतपुष्पी स्थूलफला लोमशा माल्यपुष्पिका । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
 तु पुरातनचिकित्सकैः ॥ ४७७ ॥ महाशणा वामनी च तथैव कटुति-
 क्ता । 'धन्वन्तरिनिघण्टे, तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ४७८ ॥ घंटार-
 वात्मघण्टीका घण्टा शवरपुष्पिका । 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता
 नैव संशयः ॥ ४७९ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव त्वल्पी प्रोक्ता मनीषिभिः ।
 धावनी खलपघण्टा च पुष्पीका 'मदने' स्मृता ॥ ४८० ॥ घण्टा तु
 रणघण्टेति प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' । एकविंशतिसंख्याका संप्रोक्ता
 भिषजांवरैः ॥ ४८१ ॥

गुणाः—शणपुष्पी रसे तिका कषाया कफवातजित् । अजीर्ण
 ज्वरहन्त्री च वमनी रक्तदोषनुत् ॥ ४८२ ॥ 'राजनामनिघण्टे' च मि-
 षभिः परिकीर्तिता । त्रिदोषहा 'द्रव्यरत्ने' संप्रोक्ता भिषजांवरैः
 ॥ ४८३ ॥ वातघ्नी कंठहृद्रोगमुखरोगहरा 'धने' । कफपित्तहरा प्रोक्ता
 'केयदेवनिघण्टके' ॥ ४८४ ॥

२१ लघुशणपुष्पी-छोटी सनई ।

नामानि—सूक्ष्मपुष्पी तु क्षुद्रा च शणपुष्पी च विष्टिका । सू-
 क्ष्मपर्णी सूक्ष्मघण्टी वाणावहा रससंज्ञका ॥ ४८५ ॥ प्रोक्ता 'राजनि-
 घण्टे' तु भिषक्शास्त्रविशारदैः ।

*बाह्याभ्यन्तर—कृमीणां नाशका इति हेतोः द्विवचनं वा ?

गुणाः—शणपुष्पी क्षुद्रतिका घम्या रसनियामिका ॥ ४८६ ॥

२२ श्वेतशणपुष्पी-सफेद सनई ।

नामानि—वृत्तपर्णी श्वेतपुष्पी महासीता तथैव च । श्वेतघण्टी महापूर्वा तथैव शणपुष्पिका ॥ ४८७ ॥ महा श्वेतेति मुनिभिः प्रोक्ता षट् 'राजनामके' ।

गुणाः—महाश्वेता कषायोष्णा शस्ता रसनियामिका ॥ ४८८ ॥ कुतूहलेषु च प्रोक्ता मोहनस्तम्भनादिषु ।

२३ शरपुंखा-सिलफोंका ।

नामानि—शरपुंखा कांडपुंखा वाणपुंखेंदुर्पुष्पिका ॥ ४८९ ॥ तथा शायकपुंखाव्हा प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ।

२४ श्वेतशरपुंखा-सफेद सिलफोंका ।

नामानि—श्वेताद्या चैव विख्याता तथैव सितसायका ॥ ४९० ॥ श्वेतपुंखा शुभ्रपुंखा प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ।

गुणाः—शरपुंखा कटूष्णा च कृमिवातहरा 'नृपे' । श्वेता रसायनी प्रोक्ता कंटपुंखा तु शूलहा ॥ ४९१ ॥

२५ कंटकशरपुंखा ।

नामानि—कंटपुंखा तु कंटालुस्तथैव कंटपुंखिका । वन्दिहसंख्या भिषग्भिस्तु प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ४९२ ॥

२६ शण-सन ।

नामानि—शणस्तु माल्यपुष्पः स्यात् वमनः कटुतिक्तकः । निशान्नरो दीर्घशाखत्वकसारो दीर्घपल्लवः ॥ ४९३ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वसुसंख्या भिषक्जनैः ।

गुणाः—शणस्त्वम्लः कषायश्च मलपातं च कारयेत् ॥ ४९४ ॥ गर्भपातप्रदश्चैव वातिकृच्छामपातरुत् । वातोद्भवकफान्हन्ति 'नृपे' प्रोक्तौगमर्दहा ॥ ४९५ ॥

२७ अंबष्ठा-अम्बाडी, पटुवा, जूट ।

नामानि—अम्बष्ठा चैव अवांडी वाला तद्वत् शरालका । अम्बष्ठा-
कांठिकाहवा माचिका दृढवल्कला ॥ ४२६ ॥ मयूरिका गंधपत्री
चित्रपुष्पी तथैव तु । सुखमाचीलिङ्गपत्री विज्ञेया भूरिमल्लिका
॥ ४२७ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु पुरातनभिषक्वरैः । विजालिका तु
संप्रोक्ता 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ ४२८ ॥ चक्रकला भूमिमूली मसूर-
विदला तथा । प्रोक्ता 'गणनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ४२९ ॥
द्व्यष्टका बहुमूला च तद्वद्दंतशला तथा । सूचीमुखा सहस्री च मधु-
पर्णी तथैव च ॥ ४३० ॥ कौशिकाभा च सुरता विदुला 'केयदेवके' ।
शची दन्तवटा चैव 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ॥ ४३१ ॥ अम्बष्ठाका कषाया
च विख्याता शकटामुखी । प्रोक्ता 'मदनपाले' तु पुरातनभिषक्वरैः
॥ ४३२ ॥ प्रस्थिका चैव केशी च मयूरविदला तथा । बालमूली
भिषग्भिस्तु प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ ४३३ ॥ प्रोक्तैषा भिषजां श्रेष्ठै-
रष्टत्रिंशतिसंख्यका ।

गुणाः—अथांबष्ठा कषायाम्ला कफकण्ठरुजापहा ॥ ४३४ ॥
बलासवातहा चैव रुचिरुद्दीपनी 'नृपे' । शीतातिसारहा प्रोक्ता
'केयदेवनिघण्टके' ॥ ४३५ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' वैद्यैः पित्तजित् परि-
कीर्तिता । 'धने' पक्वातिसारघ्नी 'गणे' रक्तातिसारजित् ॥ ४३६ ॥

२८ नीली-नील ।

नामानि—नीली नीला नीलिनी च नीलपत्री तथैव च । तुत्था
राज्ञी नीलिका च नीलपुष्पी च कालिका ॥ ४३७ ॥ श्यामा तु
शोधनी चैव ग्राम्या भद्रा च श्रीफला । भारवाही च मोचा च
कृष्णा व्यञ्जनकेशिका ॥ ४३८ ॥ महाफला सिता चैव रंजनी क्लीतनी
तथा । नीलकेशी चारटीका गन्धपुष्पा च श्यामली ॥ ४३९ ॥ महा-
बला गन्धपत्री स्थिररङ्गा तथैव च । रङ्गपुष्पीति विख्याता प्रोक्ता
'राजनिघण्टके' ॥ ४४० ॥ तूणी विशोधनी चैव मे(मा?)ली च भार-
बाहिका । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्ता पूर्वचिकित्सकैः ॥ ४४१ ॥
कालिन्दोला तु रूढा च सारटा 'केयदेवके' । दोला तुच्छा ग्रामिणी
च मधुपर्णी तथैव च ॥ ४४२ ॥ तिलपुष्पा कालकेशी प्रोक्ता 'भाव-

प्रकाशके' । द्रोणी तु क्लीतकीका च संप्रोक्ताऽ'मरकोशके' ॥ ५१३ ॥
एकत्रिंशतसंख्यकेति संप्रोक्ता भिषजां वरैः ।

गुणाः—नीली तु कटुतीक्ष्णोष्णा केश्य कासकफापहा ॥ ५१४ ॥
आमवातविषघ्नी च गुल्मोदरकृमीहरा । ज्वरघ्नीति 'नृपे' प्रोक्ता
पुरातनचिकित्सकैः ॥ ५१५ ॥ सरा कुष्ठार्शहन्त्री च गंडमालावृ-
द्धिका । 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्ता वैद्यविद्याविचक्षणैः ॥ ५१६ ॥ हृद्रो-
गवातगुल्मघ्नी प्लीहहा 'धन्वनामके' । रसे पाके तु तिक्ता च कृच्छ्र-
मेहघ्निनाशिनी ॥ ५१७ ॥ कफानिलहरा चैव वातरक्तहरा तथा ।
उदावर्तामवातघ्नी गरहा 'केयदेवके' ॥ ५१८ ॥ मोहभ्रमत्रिदोषघ्नी
प्रोक्ता 'मदनपालके' । वातोद्भवकफघ्नी च रेचिनी 'भावनामके'
॥ ५१९ ॥

२९ महानीली-बड़ी नील ।

नामानि—महानील्यमला चैव तुत्था श्रीफलिका तथा । राज-
नीली तु मेला च केशार्हा भृशपत्रिका ॥ ५२० ॥ प्रोक्ता 'राजनिघंटे'
तु वसुसंख्या भिषक्जनैः ।

गुणाः—महानीली गुणाढ्या स्याद्रंगश्रेष्ठा तु वीर्यदा ॥ ५२१ ॥
पूर्वोक्तनलिका देशा सगुणा सर्वकर्मसु ।

३० गोजिव्हा-वन गोभी ।

नामानि—गोजिव्हा खरपत्री च भूतान्मादार्तिहा तथा ॥ ५२२ ॥
अधोमुखाऽधःपुष्पी च धेनुजिव्हा तदुत्तरम् । प्रोक्ता 'राजनिघंटे'
तु भिषक्विद्याविशारदैः ॥ ५२३ ॥ गोधूमी दार्दिपत्री च दीर्घिका
क्रोष्टूमूलिका । गोभा गोजी खरस्पर्शा भूमिका गोजिकालिका
॥ ५२४ ॥ 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशयः । 'द्रव्यरत्ने'
दार्दिकेति संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ ५२५ ॥ गोभी तु दीर्घिका चैव
तथैव खरपर्णिनी । प्रोक्ता 'मदनपाले' तु भिषक्विद्याविशारदैः
॥ ५२६ ॥

गुणाः—गोजिव्हा कटुका शीता पित्तघ्नी व्रणरोपणी । सर्व-
दन्तविषापघ्नी प्रोक्ता 'राजनिघंटे' ॥ ५२७ ॥ पाके स्वादु रसे
हैमा वातला ग्राहिणी तथा । कफपित्तहरा हृद्या कासाहचिविना-
शिनी ॥ ५२८ ॥ श्वासप्रमेहरक्तघ्नी ज्वरहा 'केयदेवके' ।

३१ अपामार्ग-लटजीरा ।

नामानि—अपामार्गः शेखरी च किणिही खरमंजरी ॥ ५२६ ॥
 अश्वः शल्या दुर्ग्रहा च प्रत्यक्षुष्णी मयूरिका । कांडकंठः शैखरिका
 मर्कटी दुरभिग्रहा ॥ ५३० ॥ पराक्षुष्णी च वशिरा कटो मर्कट-
 पिप्पली । कंठमंजरीका कंटा क्षत्रकः पंकितकंडकः ॥ ५३१ ॥ माला-
 कंठः कुब्जकश्च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' किणही दुर्ग्रहा चैव तथा
 कर्कटपिप्पली ॥ ५३२ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च संप्रोक्ता भिषजां
 वरैः । क्षारमध्या मार्गदन्ता 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ ५३३ ॥ शुभ्रापा-
 मार्गवश्चैव प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' । त्रिंशत्संख्या भिषक्श्रेष्ठैः
 संप्रोक्ता नैव संशयः ॥ ५३४ ॥

गुणाः—अपामार्गस्तु तीक्ष्णोष्ण कटुः कफविनाशकृत् । अर्श-
 कंडूदरामघ्नो ग्राही च विषहा तथा ॥ ५३५ ॥ रक्तहृद् वान्तिकृत्
 प्रोक्तो 'राजनामनिघण्टके' । दीपनोथ सरश्चैव मेदानिलहरस्तथा
 ॥ ५३६ ॥ शूलसिध्मापचीकंडूद्रुघ्नो 'केयदेवके' । कफवातहरश्चैव
 'गणे' प्रोक्तो भिषक्जनैः ॥ ५३७ ॥

३२ रक्तापामार्ग-लाल लटजीरा ।

नामानि—रक्तापामार्गकश्चैव शुभ्रापामार्ग एव च । आघट्टको
 दुग्धनिका रक्तविट्ठलपत्रिका ॥ ५३८ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु
 भिषक् विद्यापरायणैः । ततो रक्तफलश्चैव वसिरः कपिपिप्पली
 ॥ ५३९ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः । रक्तो रक्त-
 फलाचैव विन्दुको वषिरस्तथा ॥ ५४० ॥ कुण्टस्तु मर्कटी चैव प्रत्यक्ष-
 श्रेणी खरच्छदः । 'केयदेवनिघण्टे' च प्रोक्ता पूर्वचिकित्सकैः ॥ ५४१ ॥
 धामार्गवः केशपर्णी प्रत्यक्षुष्णी तथैव च । प्रोक्ता 'भावप्रकाशे' च
 त्रिंशत्संख्या भिषक्जनैः ॥ ५४२ ॥

गुणाः—रक्तापामार्गकः शीतः कटुः कफमरुत्प्रदः । व्रणकंडू-
 विषघ्नश्च संग्राही वान्तिकृत् तथा ॥ ५४३ ॥ शीतस्वादु रसे पाके
 दुर्जरं वातलं तथा । रुक्षं च रक्तपित्तघ्नं विण्टम्भी 'केयदेवके'
 ॥ ५४४ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तं वान्तिकृत् श्वासहारकं । वातकृत्
 'केयदेवे' च सर्वे फलगुणाः स्मृताः ॥ ५४५ ॥

३३ बला-वरियारा ।

नामानि—ओदनिका बला भद्रा समंगा तदनन्तरम् । भद्रो-
दनी च कल्याणी तथैव वरकाष्ठिका ॥ ५४६ ॥ मोटा भद्रपला चैव
बलाढ्य वाटिका तथा । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक् विद्याविशा-
रदैः । ॥ ५४७ ॥ प्रोक्ता 'मदनपाले' तु सनासा वरवाहिनी । वाटी
महासमंगा च तथैव खरयष्टिका ॥ ५४७ ॥ ओदनाव्हा शीतपाकी
प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' भ्रुवं । वाट्यालका तु वाटी च चिरपुष्पी तदु-
त्तरम् ॥ ५४८ ॥ वाट्या वीर्यबला चैव 'केयदेवे' प्रकीर्तिता । क्रुरा समा-
शीतकरा प्रतापोरिष्यका तथा ॥ ५५० ॥ प्रोक्ता 'गणनिघण्टे' तु
सप्तविंशतिसंख्यका ।

गुणाः—बला तिक्ता च मधुरा तथा पित्तातिसारजित् ॥ ५५१ ॥
बलवीर्यपुष्टिदात्री तद्वत् कफविशोधिनी । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' च
पुरातनभिषग्वरैः ॥ ५५२ ॥ तन्मूलं च त्वचा क्षीरं शर्करामूत्रकृच्छ्र-
जित् । स्निग्धा हिमा स्वादु वृष्या त्रिदोषशमनी तथा ॥ ५५३ ॥
रक्तपित्तक्षतघ्नीति प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' भ्रुवं । रसे पाके च मधुरा
घातशोणितहा 'गणे' ॥ ५५४ ॥

३४ *बलीत्तरा-खिरेंटी, वरियारी ।

नामानि—बला महासमंगा च ओदनी च वृकारुहा । ततो
वृद्धिबला चैव तथैव क्षततंडुला ॥ ५५५ ॥ भुजंगजिह्वा शीता च
तथैव शीतपाकिनी । बलाढ्या शीतवरा बल्याखीरिहिटी तथा
॥ ५५६ ॥ बलीत्तरा व्यालजिह्वा पंचभू 'राजनामके' ।

गुणाः—महासमंगा मधुरा त्वम्ला चैव त्रिदोषहा ॥ ५५७ ॥
ज्वरदाहहरा प्रोक्ता वैद्यैः 'राजनिघण्टके' ।

३५ महाबला-सहदेवी ।

नामानि—महाबला ज्येष्ठबला तथैव तु कटंभरा ॥ ५५८ ॥ केश-
रिका केशरुहा वर्षपुष्पा मृगादनी । प्रसारणी देवबला तथैव केश-
वर्धिनी ॥ ५५९ ॥ सारिणी सहदेवी च पीतपुष्पी तनुत्तरम् । देवाढ्या

*इसके बीजको बलबीज कहते हैं ।

गन्धवल्ली च मृगा मृगरसा तथा ॥ ५६० ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
 तु भिषग्विद्याविशारदैः । वृहत्फला देवसहा तथैव तु वृहद्वला
 ॥ ५६१ ॥ वाट्यायनीति संप्रोक्ता भिषग्भिः 'राजनामके' । चीरपुष्पी
 तु वाट्या च वाट्याली तु वृहत्फला ॥ ५६२ ॥ 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः
 संप्रोक्तानैव संशयः । तथा 'मदनपाले' तु वीरपुष्पा प्रकीर्तिता
 ॥ ५६३ ॥ महर्षी विपुला धन्या मांगल्याहर्हा प्रसादनी । महामन्धा
 देवदण्डा तथैवोत्पलसंज्ञका ॥ ५६४ ॥ प्रोक्ता 'गणनिघण्टे' तु पञ्च-
 त्रिंशत् भिषक्जनैः ।

गुणाः—महाबला तु हृद्रोगशोफवातार्शहा तथा ॥ ५६५ ॥ शुक्र-
 वृद्धिकरी बल्या विषमञ्जरहा 'नृपे' ।

३६ अतिबला-ककई ।

नामानि—बलिकातिबला बल्या घंटा चैव विकंकता ॥ ५६६ ॥
 वाट्यपुष्पी च शीता च शीतपुष्पा तथैव च वृष्यगंधी भूरिबला
 प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ५६७ ॥ वृष्या तु वाट्यपुष्पेति प्रोक्ता
 'धन्वंतरौ' ध्रुवं । भारद्वाजी ऋष्यप्रोक्ता पुष्पणी ऋष्यपुष्पिका
 ॥ ५६८ ॥ पीतपुष्पी ऋष्यगंधा तथैव तु महासहा । केयदेवनिघण्टे'
 तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ५६९ ॥ तथा 'मदनपाले' तु संप्रोक्ता
 वृष्यगंधिका । कंतिका तु सहा चैव प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ ५७० ॥
 सुवर्णकेति संप्रोक्ता एकविंशतिसंख्यका ।

गुणाः—बलिका तु भवेत्तिका वातघ्नी कृमिदाहनुत् ॥ ५७१ ॥
 तृणाल्पविषघ्नी च क्लेदोपशमनी 'नृपे' ।

३७ नागबला-गुलसकरी, गंगेरन । *

नामानि—महाबला नागबला खरगंधा चतुःफला ॥ ५७२ ॥
 महोदया महाशाखा महापत्रा महाफला । विश्वदेवात्वरिष्ठा च खर्वा
 ह्रस्वा गवेधुका ॥ ५७३ ॥ देवदण्डा महादण्डा खंडा 'राजनिघण्टके'
 गांगेरुकी कालगाढा बला च खरधन्विका ॥ ५७४ ॥ खंडारी
 'केयदेवे' तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः । आपा 'भावप्रकाशे' च
 संप्रोक्ता नैव संशयः ॥ ५७५ ॥ वृक्षाब्दा तु गवेधूका क्षाला गण-

* इसका फल गुलाबीरङ्ग का होता है । इसका फल सहदेवीके फलसे
 बड़ा और जरा चपटा होता है । इसके फल में चार पखरी होती हैं ।

निघण्टुके । पंचविंशतिसंख्याका प्रोक्तैषा भिषजांवरैः ॥ ५७६ ॥

गुणाः—अथ नागवला चैव गुरुष्णाम्लमधुस्तथा । कंडकुष्ठ-
व्रणघ्नी च वातपित्तहरा 'नृपे' ॥ ५७७ ॥

वलाचतुष्टयगुणाः ।

स्निग्धं मधुरसं पाके शीतलं ग्राहिणी तथा ॥ ५८८ ॥
सुस्था ओजवलायुर्दा कांतिकृत् वातरक्तजित् । रक्तपित्तहरा चैव
योनिदोषहरा तथा ॥ ५८९ ॥ क्षतक्षयवृहत्कुष्ठान् हन्ति वृष्या च
'केयके' । तत्फलं 'केयदेवे' च पाके स्वादु रसे मधु ॥ ५९० ॥
हिमं गुरुस्तंभनं च लेखनं तु विबन्धनं । आध्मानं पवनं हन्ति
गरपित्तहरं तथा ॥ ५९१ ॥ कफरक्तहरं प्रोक्तं वैद्यैः 'केयनिघण्टुके'
पुंस्त्वमेवहरं प्रोक्तं 'मदने' वैद्यनायकैः ॥ ५९२ ॥

* ३८ महाराष्ट्री-मराठी ।

नामानि—महाराष्ट्री शारदी च संप्रोक्ता तोयपिप्पली ।
मत्स्यादनी मत्स्यगन्धा लांगली शकुलादनी ॥ ५७८ ॥ अग्निज्वाला
चित्रपत्री प्राणदा जलपिप्पली । मत्स्योदरी बहुशिखा तृणशीता
तदुत्तरा ॥ ५७९ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्विद्याविशारदैः
शकुलादनीति विख्याता 'धन्वन्तरिनिघण्टुके' ॥ ५८० ॥ अम्बुवल्ली
जीविता च 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता । धत्तूरकण्टकी चैव प्रोक्ता
'मदनपालके' ॥ ५८१ ॥ गंडूगद्वा कंचटं च तथैव तु गडूगदा ।
'केयदेवे' तु संप्रोक्ता एकविंशतिसंख्यका ॥ ५८२ ॥

गुणाः—महाराष्ट्री तीक्ष्णकट्वी कषाया मलशोधिनी । व्रण-
कीटहरा प्रोक्ता रसदोषहरा 'नृपे' ॥ ५८३ ॥ कफवातहरा प्रोक्ता
श्वासरक्तविनाशिनी । विषदाहघ्नमघ्नी च सूक्ष्मातृद्वातिनी 'धने'
॥ ५८४ ॥ शीतलं कटु पाके च रसे रुक्षं हृदि प्रियं । रुचिप्रदं

†मराठी का पेड. एक या डेड बीता जंचा होता है । इसके पत्ते तुलसी-
के समान किन्तु जरा मोटे होते हैं । इसमें पिलाई ललाई लिये बाँडिया लगती
हैं । जीभमें रखनेसे अकरकाके समान जीभमें चुनचुनाती है । कोई कोई
इसे अकरका का ही चुप कहते हैं । गलेमें छाले पड़े हों या दुखता हो तो
इसकी बाँडियां खाकर लार गिरने देवे तो मुंह जल्द आराम होता है ।

वन्हिरुद्धि संग्राही दाहनाशनं ॥ ५८५ ॥ चक्षुष्यं रक्तव्रणजित्
 प्रोक्तं 'केयनिघण्टके' । 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तं रक्तदाहहरं तथा ॥ ५८६ ॥
 लघु शुक्रकरं प्रोक्तं 'मदने' वैद्यनायकैः । कफपित्तहरा चैव
 शोधनी ज्वरदाहनुत् ॥ ५८७ ॥ ज्वरदाहप्रमेहघ्नो हिमा प्रोक्ता
 'गणे' ध्रुवं ।

३९ अश्वगंधा-असगन्ध ।

नामानि—अश्वगंधा वाजिगंधा कंबुकाष्ठा वराहिका । वराह-
 कर्णी तुरगी वनजा वाजिनी हयी ॥ ५८३ ॥ पुष्टिदा बलदा पुण्या
 हयगंधा च पीवरा, बलाशपर्णी वातघ्नी शामला कामरूपिणी ॥ ५८४ ॥
 बल्या कालप्रिया चैव गंधपत्री हयप्रिया । वराहपुत्री विख्याता
 प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ५८५ ॥ तथा वाजिकरी चैव कंचुक्याश्च
 वरोहका । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ५८६ ॥ कुष्ठ-
 गंधा हयाव्हा च गोकर्णी वरदा वृषा । बर्हिष्पीता तु पित्ता च
 कंबुका 'केयदेवके' ॥ ५८७ ॥ अवरोहो रक्तजश्च 'द्रव्यरत्नाकरे'
 स्मृता । तथा 'मदनपाले' तु तुरगाव्हा प्रकीर्तिता ॥ ५८८ ॥
 हयाव्हा कदरा चैव तथैव कुष्ठगंधिनी । प्रोक्ता 'भावप्रकाशे' च
 भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ ५८९ ॥ तुरगा हयगंधी च वृंहणी वातशा-
 मनो । रसायनवरा चैव त्वलको 'गणनामके' ॥ ६०० ॥ चत्वा-
 रिंशत्सप्त चैव संख्या प्रोक्ता भिषग्वरैः ।

गुणाः—अश्वगंधा कटूष्णा च तिका बलप्रदायिनी ॥ ६०१ ॥
 वातहृत् श्वासकासघ्नो क्षयव्रणहरा 'नपे' । वातोद्भवकफघ्नी च
 विषव्रणहरा तथा ॥ ६०२ ॥ कांतिदा भिषजां श्रेष्ठैः प्रोक्ता 'धन्वन्तरे'
 ध्रुवं । शोफकंठूचित्रकुष्ठकृमिक्षतक्षयापहा ॥ ६०३ ॥ 'केये' प्रोक्ता
 भिषक्श्रेष्ठैः 'मदने' शुक्रहा स्मृता ।

४० हपुषा-वडी हाऊवेर ।

नामानि—हपुषाविपुषा विश्रा विश्रगंधा विगन्धिका ॥ ६०४ ॥
 प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु 'केयदेवे' ततः परैः । विश्रो चैव तु कुष्ठघ्नी
 तथैव विषदूषणी ॥ ६०५ ॥ वसुसंख्या भिषग्भिस्तु संप्रोक्ता नैव
 संशयः ।

४१ ध्वांक्षनाशिनी-छोटी हाजबेर ।

नामानि—तथा खल्पफला चैव कच्छूघनी ध्वांक्षनाशिनी ॥ ६०६ ॥ प्लीहशत्रुविषघ्नी च कफघ्नी त्वपराजिता । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु 'वैद्यविद्याविशारदैः' ॥ ६०७ ॥ अथाऽश्वत्थफला चैव प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं । यक्षघ्ना वपुषा चैव तथैव ध्वांक्षनाशिकी ॥ ६०८ ॥ विश्रगंधा मत्स्यगंधा विषहा 'केयदेवके' । चित्रगन्धा च दुर्गन्धा प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' ॥ ६०९ ॥ सप्तभूसंख्यका प्रोक्ता वैद्यविद्याविशारदैः ।

गुणाः—हपुषाद्वयमित्युक्तं कटुतिक्तोष्णकं गुरु ॥ ६१० ॥ बलासश्लेष्मप्रदरं गुरुदरहरं तथा । वित्बंधशूलगूलमघ्नमर्शोघ्नं 'राजनामनि' ॥ ६११ ॥ वातप्लीहविवंधघ्नं 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । दीपनी ग्राहिणी गुर्वी वातोदरनिवर्हिणी ॥ ६१२ ॥ पित्तोदरहरा प्रोक्ता वैद्यः 'केयनिघण्टके' । वातार्शहा भिषक्श्रेष्ठै 'मदने' परिकीर्तिता ॥ ६१३ ॥

४२ शतावरी-सतावर ।

नामानि—शतावरी शतपदो पीवरीदीवरी वरा । वृष्य दीप्या-द्वीपशत्रु द्वीपिकाऽधरकण्टिका ॥ ६१४ ॥ सूक्ष्मपत्रा सुपत्रा च बहुमूला शतावह्या । नारायणी स्वादुरसा शतावहा लघुपर्णिका ॥ ६१५ ॥ आत्मशक्ति जरामूला शतवीर्या महोदनो । मधुरा शतमूला च केशिका शतपत्रिका ॥ ६१६ ॥ विश्वाख्या वैष्णवी कार्ष्णि वासुदेवी वरीयसी । दुर्मरा तैजवल्लीति प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ६१७ ॥ शतावहा बहुपत्री च प्रोक्ता 'मदनपालके' । भीरु बहुसुता हेतुदरी 'भावप्रकाशके' ॥ ६१८ ॥

४३ महाशतावरी-बड़ी सतावर ।

नामानि—महाशतावरी वीरा तुंगिनी बहुपत्रिका । सहस्रवीर्या सुरसा महापुरुषदंतिका ॥ ६१९ ॥ ऊर्ध्वकंदा महावीर्या फणिजिव्हा महाशना । शतवीर्या सुवीर्या च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ६२० ॥ अभीरुरुर्ध्वकंठी च प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं । ऋष्यप्रोक्ता भीरुपत्री 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ ६२१ ॥ चरी केशो सूक्ष्मपत्री प्रोक्ता 'मदन-

पालके' । हेतुर्महोदरी चैव प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ ६२२ ॥ अहिजि-
व्हकसंज्ञेति प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' । पञ्चविंशतिसंख्याका संप्रोक्ता
भिषजावरैः ॥ ६२३ ॥

गुणाः—शतावरीद्वयं वृष्यं मधुरं पित्तहारकं । हिमं च कफ-
वातघ्नी रसायनवरा 'नृपे' ॥ ६२४ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' स्तन्या हृद्या
'मदनपालके' । तर्दकुरगुणाः प्रोक्ताः काश्यक्षयत्रिदोषहृत् ॥ ६२५ ॥
गुर्वा स्निग्धा शुक्ला च बल्या मेधाग्निपुष्टिदा । चक्षुष्या वातरक्तघ्नी
पित्तासृग्गुल्मनाशिनी ॥ ६२६ ॥ अतिसारादिनाशघ्नी वातपित्तार्शहा
तथा । ग्रहण्यर्शोहृत् प्रोक्ता 'केयदेवनिघण्टके' ॥ ६२७ ॥

४४ एलावालुक-एलुवा ।

नामानि—एलावालुकसंज्ञा च त्वलुकं वालुकं तथा ॥ ६२८ ॥
हरिवालुकसंज्ञं च त्वेलावालुकमेव च । कपित्थं दुष्टवर्णं च प्रसरं च
दृढं तथा ॥ ६२९ ॥ एलागन्धिः कमेलावहं गुतगंधि सुगंधिकं । एलाफलं
तु संप्रोक्तं 'राजनामनिघण्टके' ॥ ६३० ॥ त्वगंधं चैव त्वकूपं च
कुष्ठगन्धि तथैव च । सुगंधी प्रसरं चैव त्वेलावालुकमतः परं ॥ ६३१ ॥
'केयदेवे' तु संप्रोक्तं वैद्यविद्याविशारदैः । तथा 'मदनपाले' तु एला
परिकीर्तितं ॥ ६३२ ॥ कपित्थपत्रं 'भावे' च गन्धत्वक् 'गणनामके' ।

गुणाः—एलावालुकमित्युक्तं कषायं कफवातहृत् ॥ ६३३ ॥
मूर्च्छाज्वरहरं दाहनाशनं रोचनं 'नृपे' । 'द्रव्ये' विषघ्नं संप्रोक्तं
'मदने' सूत्ररोगहृत् ॥ ६३४ ॥ 'भावे' श्वासारुचिघ्नं च विषहृद्रोग-
नाशनं । विषहं गुद्दोषघ्नं भिषग्भिः परिकीर्तितं ॥ ६३५ ॥ 'धन्वं-
तरिनिघण्टे' च शोधनं परिकीर्तितं । पाके कटु शीतलं च लघु कंठ-
हरं तथा ॥ ६३६ ॥ व्रणछर्दितृषाघ्नं च कासकुष्ठबलासहृत् । रक्त-
पित्तहरं बल्यं कृमिनुत् 'केयदेवके' ॥ ६३७ ॥

४५ तेरणी, तेरडा ।

नामानि—तेरणी तेरणस्तेरः कुनीली रागदस्तथा । प्रोक्ता
'राजनिघण्टे' तु भिषक्विद्याविचक्षणैः ॥ ६३८ ॥ गौरिणी तेर इति
च कुलीनी रङ्गनामकः । ग्रहसंख्या भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव
संशयः ॥ ६३९ ॥

गुणाः—तेरणः शिशिरस्तिक्को व्रणघ्नो 'राजनामके' ।

४६ कलिकारी-करियारी ।

नामानि—कलिकारी लांगलिनी हलिनी गर्भपातिनी ॥६४०॥
 दीप्ता विशल्याग्निमुखी हली नक्तेंदुपुष्पिका । विद्युज्वालाग्नि-
 जिह्वा च व्रणहृत् पुष्पसौरभा ॥ ६४१ ॥ स्वर्णपुष्पावन्निशिखा
 प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । अनन्ता वन्निहवक्त्रा च गर्भनुत् 'भावनामके'
 ॥ ६४२ ॥ फलिनी शक्रपुष्पिका प्रोक्ता 'कोशे' भिषक्चरैः । कलि-
 काली लांगली च सीरी दीप्ता तथैव च ॥ ७४३ ॥ पुष्पेंदुश्च भिष-
 कश्रेष्ठैः प्रोक्ता 'धन्वंतरौ' ध्रुवं । इन्दुपुष्पी वन्निजिह्वा प्रदीप्ता-
 ग्निशिखा शिखा ॥ ६४४ ॥ तथा वन्निमुखा चैव प्रभाता पुष्पसौ-
 रभा । 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशयः ॥ ६४५ ॥ 'द्र-
 व्यरत्नाकरे' चैव लांगुली परिकीर्तिता । कलिहारी शक्रपुष्पी सारी
 'मदनपालके' ॥ ६४६ ॥ सारेंद्रपुष्पी विख्याता वन्निज्वाला तथैव
 च । प्रोक्ता 'गणनिघण्टे' तु चत्वारिंशति संख्यका ॥ ६४७ ॥

गुणाः—कलिकारी कटूष्णा च कफवातविनाशिनी । गर्भान्तः
 शल्यनिः कासकारिणी सारिणी 'नृपे' ॥ ६४८ ॥ 'मदने' शूलहा
 'धन्वे' व्रणश्वयथुनाशिनी । 'केयदेवे' पित्तला च बलासघ्नी तथैव
 च ॥ ६४९ ॥ कुष्ठार्शोव्रणजंतुघ्नी भिषग्भिः परिकीर्तिता ॥

४७ जयन्ती ।

नामानि—बला मोटा हरीता च सूक्ष्ममूला जया तथा ॥६५०॥
 ततोपराजिता चैव विक्रांता विजया तथा । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
 तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ६५१ ॥ स्थूलमूलेति संप्रोक्ता 'केयदेवे'
 भिषक्जनैः । शीतला वातलश्चैव शणपर्णीति 'केयके' ॥ ६५२ ॥
 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव जयन्ती परिकीर्तिता । वन्निभूतसंख्यका प्रोक्ता
 वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ६५३ ॥

गुणाः—जयन्ती तु भवेत्तिका कटूष्णा वातनाशिनी । भूता-
 पहा कंठशोधी सा कृष्णा च रसायनी ॥६५४॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
 तु 'धन्वे' विषत्रिदोषहा ॥ 'केये' पित्तकफघ्नी च मूत्रकृच्छ्रहरा
 तथा ॥ ६५५ ॥ जयं विवादे कुरुते प्रोक्ता वैद्यैर्न संशयः । 'द्रव्ये'
 हिमा कफघ्नीति भिषग्भिः परिकीर्तिता ॥ ६५६ ॥

४८ काकमाचिका-मकोय ।

नामानि—काकमाची ध्वांक्षमाची वायसाव्हा च वायसी ।
 सर्वतिका बहुफला कट्फला च रसायनी ॥ ६५२ ॥ काकमाता
 गुच्छफला खादुपाका तु सुन्दरी ॥ वरा विद्राविणी चैव मत्स्याक्षी
 कुष्ठनाशिनी ॥ ६५३ ॥ तिका च बहुतिकेति प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ।
 काकाव्हा चैव कट्वा तु रसायनवरा तथा ॥ ६५४ ॥ 'धन्वंतरि-
 निघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजावरैः । काकमाची तु कामाता ध्वांक्षी
 च काकिनी तथा ॥ ६५५ ॥ माची गुडफला चैव 'केय' प्रोक्ता
 भिषगवरैः । तुंडकी कामना चैव प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' ॥ ६५७ ॥

गुणाः—काकमाची कटुस्तिक्ता रसायणा कफशूलहृत् । शो-
 फार्शः कुष्ठकण्डूनां नाशिनी 'राजनामके' ॥ ६५७ ॥ हिकालुर्दिविनाशी
 च 'भावे' नेत्रहिता स्मृता । रसायनी त्रिदोषघ्नी प्रोक्ता 'धन्वंतरे'
 ध्रुवम् ॥ ६५८ ॥ हृद्यावृष्या च स्वयेति प्रमेहश्वासकासहा । उवराह-
 चिह्ना प्रोक्ता 'केयदेवनिघण्टके' ॥ ६५९ ॥ स्निग्धा शुक्रप्रदा प्रोक्ता
 'मदने' परिकीर्तिता ।

४९ मूषकमारी-मूसामारी ।

नामानि—श्रुतश्रेणी द्रवन्ती च न्यग्रोधी मूषिकाव्हा ॥ ६६० ॥
 चित्रा मूषकमारी च प्रत्यक्ष्रेणी च चक्षुषा । कटुराखुविषघ्नीति
 प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ६६१ ॥ दशसंख्येति संप्रोक्ता वैद्यवि-
 द्याविशारदैः ।

गुणाः—श्रुतश्रेणी 'नृपे' प्रोक्ता कटुराखुविषापहा ॥ ६६२ ॥
 चक्षुष्या व्रणदोषघ्नी नेत्रामयनिहन्तनी ।

५० विजया-भांग ।

नामानि—विजया वीरपत्रा च गंजाई चपला जया ॥ ६६३ ॥
 आनन्दा हर्षणी चैव प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । मातुलानी संगिका च
 भंगिका 'केयदेवके' ॥ ६६४ ॥ भंगा गंजा मोहिनीति 'द्रव्यरत्नाकरे'
 स्मृता । मादिनीति भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ ६६५ ॥

गुणाः—जया कटुः कषायोष्णा तिक्ता वातकफापहा । संग्राही
 वाक्प्रदा बल्या मेधावी दीपिनी 'नृपे' ॥ ६६६ ॥ पित्तला कर्षणी
 चैव मदंरुत् 'केयदेवके' ।

५१ मार्कव-भांगरा ।

नामानि—मार्कवो भृङ्गराजश्च भृङ्गाव्हा केशरंजनः ॥ ६६७ ॥
 पित्तप्रियोंगारकश्च केश्यः कुन्तलवर्द्धनः । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु
 भिषक्शास्त्रपरायणैः ॥ ६६८ ॥ भृङ्गारको भेकरजो भृङ्गो भृङ्गार एव
 च । 'धन्वन्तरे' भिषक्श्रेष्ठैः कथितो नैव संशयः ॥ ६६९ ॥ रवि-
 प्रियो पंकजातः सूर्यावर्तस्तु केशराट् । अमेदकरजश्चैव केशाली
 रविवल्लभः ॥ ६७० ॥ प्रोक्ता 'मदनपाले' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।
 तथा 'भावप्रकाशके' च भृङ्गारः परिकीर्तितः ॥ ६७१ ॥ मार्कलः पंक-
 जश्चैव भृङ्गाव्हा 'गणनामके' । सप्तविंशतिसंख्याका प्रोक्तैषा भिष-
 जावरैः ॥ ६७२ ॥

गुणाः—मार्कवो स्यात्तु चक्षुष्यस्तिक्तोष्णः केशरंजनः । कफा-
 मशोफचित्रघ्नो नीलश्चैव रसायनः ॥ ६७३ ॥ वैद्यै 'राजनिघण्टे'
 च 'द्रव्ये' ज्वरहरः स्मृतः । 'भावे' दन्तहितः प्रोक्ते पुरातनचिकि-
 त्सकैः ॥ ६७४ ॥ त्वच्यो पांडुं मुष्कवृद्धिं विषं हन्तीति 'धन्वके' ।
 अक्षिरोगशिरोर्तिघ्नो कफवातविनाशनः ॥ ६७५ ॥ कासकृमिश्वास
 कुष्ठान् हन्ति 'केये' स्मृतं वुधैः ।

५२ पीतमार्कव-पीला भांगरा ।

नामानि—स्वर्णभंगारिसंज्ञश्च हरिवासो हरिप्रियः ॥ ६७६ ॥ देव-
 प्रियो वन्दनीयः पवनो 'राजनामके' ।

गुणाः—गुणास्तु पूर्ववत् ।

५३ नीलमार्कव-नीला भांगरा ।

नामानि—महाभृङ्गो नीलपुष्पः श्यामलो नीलभृङ्गराट् ॥ ६७७ ॥
 महानीलः सुशीलश्च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ।

५४ काकजङ्घा-मसी ।

नामानि—काकजङ्घा ध्वांक्षजघा काकाव्हा वायसी च सा
 ॥ ६७८ ॥ पारावतपदी दासी नदीकान्तामलोमशा । प्रोक्ता 'राज-
 निघण्टे' तु भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ ६७९ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च
 प्राचीबला सुलोमशा । मदव्या कर्पणी काका काकतिक्ता नदीकका

॥ ६८० ॥ प्राचीचलत्सरित्कान्ता तथा भूधरभूषणा । 'केयदेवे'
भिषक्श्रेष्ठैः नदीकान्ता तु 'द्रव्यके' ॥ ६८१ ॥ ततः प्रतिबला चैव
परा तु सरिका तथा । राजनीति भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्ता 'गणनिघ-
ण्टके' ॥ ६८२ ॥ त्रयोविंशतिसंख्याका संप्रोक्ता भिषजांवरैः ।

गुणाः—काकजंघा तु तिक्तेष्णा कृमिव्रणकफापहा ॥ ६८३ ॥
बाधोर्याजीर्णनाशा च विषमज्वरहा 'नृपे' । हिमा कषाया संप्रोक्ता
कफपित्तविनाशिनी ॥ ६८४ ॥ रक्तकुष्ठहरा कंठविषहा 'केयदेवके' ।
रक्तपित्तं हिमं हन्ति प्रोक्ता 'द्रव्ये' भिषक्वरैः ॥ ६८५ ॥

५५ चंचू ।

नामानि—चंचू तु विजला चंचुः कलभी वीरपत्रिका । चंचुर-
श्चुंचुपत्रश्च सुशाकः क्षेत्रसम्भवः ॥ ६८६ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
तु भिषक्शास्त्रविशारदैः । कटीरज कटीरश्च वृहद्घोटी च लोणिका
॥ ६८७ ॥ कुटिंजर कुटीरश्च तथैव तु सुसूरकः । 'केयदेवे' भिषक्-
श्रेष्ठैः कथितो नैव संशयः ॥ ६८८ ॥ चंचुष्के चंचुपत्राख्यो पिच्छ-
लच्छल एव च । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव नवभू परिकीर्तिता ॥ ६८९ ॥

गुणाः—चंचू तु मधुरा तीक्ष्णा कषाया मलशोषिणी । गुल्मो-
दरविबन्धाशोऽग्रहणीनाशिनी 'नृपे' ॥ ६९० ॥ सरः शीता वह्निहृच्च-
वातहा 'द्रव्यनामके' । दोषत्रयविनाशा च धातुपुष्टिकरा बला ॥ ६९१ ॥
मेध्या 'भावप्रकाशे' च प्रोक्ता वैद्यैर्न संशयः । मूत्रकुच्छहरा वस्ती-
वातहर्ता 'गणे' स्मृता ॥ ६९२ ॥

५६ वृहच्चंचू ।

नामानि—वृहच्चंचु विषारिश्च महाचंचुः सुचंचुका । स्थूलं-
चुचुर्दीर्घपत्री दिव्यगन्धा तु 'राजनि' ॥ ६९३ ॥ सप्तसंख्येति
प्रोक्तैषा भिषक्शास्त्रविशारदैः ।

गुणाः—वृहच्चंचु कटूष्णा च कषाया मलशोधिनी ॥ ६९४ ॥
गुल्मशूलोदरार्शघ्नी विषहा च 'रसायनी' । तद्वीजं तु कटूष्णं च
गुल्मशूलविषापहं ॥ ६९५ ॥ त्वग्दोषकंडुकुष्ठघ्नं प्रोक्तं 'राजनिघण्टके' ।

क्षुद्रचंचु ।

नामानि—क्षुद्रचंचुस्तु चंचुः स्याच्चंचुः शुनकचंचुका ॥ ६९६ ॥
त्वक्सारभेदनी क्षुद्रा कटुका परपत्रिका ।

गुणाः—क्षुद्रचंचुस्तु मधुरा कटूष्णा च कषायिका ॥ ६६७ ॥
दीपनी शूलगुल्मार्शशमनी च विवंधकृत् । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
पुरातनचिकित्सकैः ॥ ६६८ ॥

५८ सिंदुवार-श्वेत निर्गुण्डी, श्वेत सन्हालू ।

नामानि—सिंदुवारः श्वेतपुष्पः सिंदूकः सिंदुवारकः । स्थिर
साधनकश्चैव त्वनन्तः सिद्धकस्तथा ॥ ६६९ ॥ अर्थसिद्धकसंज्ञेति
प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । श्वेतको नीलपुष्पश्च तद्वत् शीतसहस्तथा
॥ ७०० ॥ निर्गुण्डी सितसिन्दूका प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं । वनकेंद्र
भूतकेशी भूतावेश्या तु सुस्थिरा ॥ ७०१ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु प्रोक्ता
सप्तदशेति च ।

गुणाः—सिंदुवारा कटुस्तिक्ता कफवातक्षयापहा ॥ ७०२ ॥
कुष्ठकंडूशूलहरा प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । कृमिकुष्ठप्लीहहरा गुल्मार्
चिहरा 'धने' ॥ ७०३ ॥ चक्षुष्या दीपनी मेध्या केश्यारौचकहारिणी ।
मेदामशूलव्रणहा प्रतिश्यायहरा तथा ॥ ७०४ ॥ शोफहा श्वासका
सघ्नी तत्पुष्पं विषपित्तनुत् । 'केयदेवनिघण्टे' च संप्रोक्ता भिषजां
वरैः ॥ ७०५ ॥ स्मृतिप्रदामवातघ्नी 'द्रव्ये' प्रोक्ता भिषक्जनैः ।
धूपलेपात्विषघ्नश्च रक्तगुल्महरा तथा ॥ ७०६ ॥ उदावर्तहरा प्रोक्ता
'गणनामनिघण्टके' ।

५९ नीलसिंदुक-नीला सन्हालू ।

नामानि—शीतंसहा तु निर्गुण्डी तथैव नीलसिंदुकः ॥ ७०७ ॥
सिन्दूकच्छपिका भूतकेशीन्द्राणी च नीलिका । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
तु भिषक्विद्या परायणैः ॥ ७०८ ॥ गिरि सिन्दुक संज्ञश्च नीलसिन्दु
सहा तथा । इन्द्राणी 'केयदेवे' तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ७०९ ॥
दशसंख्येति प्रोक्तैषा वैद्यविद्याविचक्षणैः ।

गुणाः—नीलसिंदुः कटुस्तिक्त रुक्षो कासहरस्तथा ॥ ७१० ॥
श्रेष्मशोफानिलहरो प्रदराध्मानहा 'नृपे' ।

६० शेफालिका-वननिर्गुण्डी ।

नामानि—शेफालिका तु सुवहा शुक्लांगी शीतमंजरी ॥ ७११ ॥
अपराजिता च विजया वातकी भूतकेश च । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु

शताह्वादिघर्गः ।

भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ ७१२ ॥ वनजा चैव शुक्ला च तथैव नील-
मञ्जरी । तथैव श्वेतसुरसा प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं ॥ ७१३ ॥ वनजा-
मरपत्नी च शतभीरुः छदा तथा । भूपदी तु सुगन्धा च तथैव सुरसा
रसा ॥ ७१४ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः । सुवहा तु
चला चैव स्मृतिदा 'भावनामके' ॥ ७१५ ॥ तथैद्रसुरसा चैव प्रोक्ता
'त्वमरकोशके' । चतुर्विंशतिसंख्याका संप्रोक्ता नैव संशयः ॥ ७१६ ॥

गुणाः—श्वेतनिर्गुण्डिका वातकफघ्नी सन्धिवातहा । गुदवात-
हरा प्रोक्ता 'राजनामनिघण्टके' ॥ ७१७ ॥

६१ भेण्डा-वनभिण्डी ।

नामानि—भेण्डा भिंडातिका भिंडो भिंडकः क्षेत्रसंभवः । चतु-
ष्पदः चतुःपुण्ड्रः सुशाकश्चांम्लपत्रकः ॥ ७१८ ॥ करपर्णो वृत्तबीजो
प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ।

गुणाः—भेण्डात्वस्लरसा सोष्णा ग्राहिका रुचिकारिका ॥ ७१९ ॥
'राजनामनिघण्टे' च 'द्रव्ये' वृष्यकरा स्मृता ।

६२ पुत्रदा-पुत्रदाई ।

नामानि—पुत्रदा गर्भदात्री च प्रजादापत्यदा तथा ॥ ७२० ॥
सृष्टिप्रदा प्राणिमाता तापसद्रमसन्निभा । सप्तसंख्या च संप्रोक्ता
'राजनामनिघण्टके' ॥ ७२१ ॥

गुणाः—पुत्रदा मधुरा शीता नारीपुष्पादिदोषहा । पित्तदाह-
श्रमहरा गर्भदा 'राजनामके' ॥ ७२२ ॥

६३ तक्राह्वा-ताका ।

नामानि—तक्राह्वा तक्रभक्षा च तक्रपर्याय एव च । पंचांगुली
सिताभास्या 'द्राजनाम्नीति' पंच च ॥ ७२३ ॥

गुणाः—तक्राह्वस्तु कटुः प्रोक्तो दुष्टव्रणविनाशकः । मेहप्रदर-
पित्तघ्नो वैद्यै 'राजनिघण्टके' ॥ ७२४ ॥

६४ स्वर्णुली-सनाय, सैनुली ।

नामानि—स्वर्णुली हेमपुष्पी च स्वर्णपुष्पध्वजा तथा ।

गुणाः—स्वर्णुली तु कटुः शीता कषाया व्रणहा 'नृपे' ॥ ७२५ ॥
कासश्वासहरा 'द्रव्ये' कफपित्तहरा तथा ।

६५ खस्खस ।

नामानि—खस्खसः सूक्ष्मबीजः स्यात् सुबीजः सूक्ष्मतंडुलः ॥ ७२६ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रविशारदैः । खस्तिलो तिलमेदश्च शुभ्रपुष्पो लसत्फलः ॥ ७२७ ॥ वृष्या बल्येति कविभिः प्रोक्ता 'मदनपालके' । 'भावप्रकाशे' खास्खस रुद्रसंख्या भिषग्वरैः ॥ ७२८ ॥

गुणाः—खस्खसी मधुरा प्रोक्ता कांतिकृद्बीर्यदा बला । प्रोक्ता राजनिघण्टे च वैद्यविद्याविचक्षणैः ॥ ७२९ ॥ वृष्या ग्राही च पित्तघ्नी 'द्रव्ये' च गुरु वातकृत् ।

६६ सिंगुडी-शेगुडी ।

नामानि—सिंगुडी मतिदा बल्या तथा पंगुत्वहारिणी ॥ ७३० ॥ वृषत्यति च वातघ्नी गुच्छपुष्पी तु 'राजके' ।

गुणाः—सिंगुडी कटूष्णा च वातहृत् पृष्ठिशूलहा ॥ ७३१ ॥ योग्या रसायने चैव देहदाढ्यं करी 'नृपे' ।

६७ अरण्यकुसुंभ-वनकुसुम ।

नामानि—ततोरण्यकुसुम्भा च कौसुंभस्तवन्निर्भवा ॥ ७३२ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वन्निहसंख्या भिषक्जनैः ।

गुणाः—अथारण्यकुसुंभस्तु कटुः पाके च श्लेष्महृत् ॥ ७३३ ॥ दीपनश्चैव संप्रोक्तो 'राजनामनिघण्टके' ।

६८ आहुली-हुरहुर, तरवड ।

नामानि—आहुल्यं हलुराख्यं च करं तरवटं तथा ॥ ७३४ ॥ ततः शिबीफला चैव सुपुष्पात्त्वबुरं तथा । दन्तकाष्ठं हेमपुष्पं पीतपुष्पं तथैव च ॥ ७३५ ॥ ततः कांचनपुष्पं च नृपसांगल्यमेव च । शरत्पुष्पं च विख्यातं प्रोक्तं 'राजनिघण्टके' ॥ ७३६ ॥ वन्निभूसंख्या प्रोक्ता भिषक्शास्त्रविशारदैः ।

गुणाः—आहुल्यं तु भवेत्तीक्ष्णं चक्षुष्यं शीतमेव च ॥ ७३७ ॥ पित्तदाहहरं चैव मुखरक्कुष्ठकण्डुहृत् । जन्तुशूलव्रणहरं प्रोक्तं 'राजनिघण्टके' ॥ ७३८ ॥

६९ भूम्याहुली-सौनामकवी ।

नामानि—ततस्तु भूम्याहुलिका कुष्ठकेतुस्तथैव च । मार्कण्डेयं तु विदितं महौषधप्रतः परम् ॥ ७३६ ॥ प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' तु भिष-
कशास्त्रविशारदैः । मार्कण्डेयैर्भूयैठरिका तथैव मृदुरेचनी ॥ ७३७ ॥
'केयदेवे' भिषकश्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशयः । ततो भूपिंडरी चैव
तथैव मधुरेचनी ॥ ७३८ ॥ ग्रहसंख्या भिषक्भिस्तु संप्रोक्तैषा
विचक्षणैः ।

गुणाः—भूम्याहुली कटुस्तिक्ता ज्वरकुष्ठप्रसिधमहा ॥ ७३९ ॥
प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' च भिषकशास्त्रविशारदैः । सरा कषाया
शोफघ्नी कफपित्तविनाशिनी ॥ ७४० ॥ आनाहोदरगुल्मघ्नी कटुः
तृष्णाविषापहा । छर्दिकुष्ठकमिघ्नी च श्वासदाहज्वरापहा ॥ ७४१ ॥
'केयदेवनिघण्टे' च वैद्यैः प्रोक्ता न संशयः ।

७० कासमर्द-कसौदी, अगौथ ।

नामानि—कासमर्दस्तु कासारिस्त्वरिमर्दश्चदीपनः ॥ ७४२ ॥
कनकं जरणश्चैव कालश्च कालमर्दकः । 'धन्वंतरिनिघण्टे' तु संप्रो-
क्तो भिषजांवरैः ॥ ७४३ ॥ कनकः कासकश्चैव कर्तृकासघ्न एव
च । कासमर्दः कर्कशश्च 'केयदेवे' प्रकीर्तितः ॥ ७४४ ॥ मर्दकः
कण्टकंश्च 'द्रव्यारत्नाकरे' स्मृतः । अञ्जनो नातरश्चैव प्रोक्ता 'म-
दनपालके' ॥ ७४५ ॥ कोलं 'गणनिघण्टे' च प्रोक्तं वैद्य विच-
क्षणैः । त्रयोविंशतिसंख्याका प्रोक्ता सर्वं भिषग्वरैः ॥ ७४६ ॥

गुणाः—कासमर्दस्तु तिक्तोष्णो मधुरः कफवातहा । अजी-
र्णकासपित्तघ्नः पाचनः कण्टशोधनः ॥ ७४७ ॥ 'राजनामनिघण्टे'
च 'धन्वे' पित्तकरः स्मृतः । विषकासहरः प्रोक्तः 'केयदेवनिघ-
ण्टके' ॥ ७४८ ॥ सरः शीतो विषूचिघ्नः 'द्रव्ये' च कफवातहृत् ।
तत्पत्रं तु भवेदुष्णं वृष्यं वातघ्नपाचनं ॥ ७४९ ॥ 'मदने' कविभिः
प्रोक्तं 'भावे' पित्तविनाशनं ।

७१ आदित्यपत्र ।

नामानि—सुपत्रो विटपश्चार्कः कुष्ठारिस्तपनः छदः ॥ ७५० ॥
रविप्रियो रश्मिपतिः सूर्यपत्रोऽकपत्रकः । आदित्यपत्रोऽर्कदलो प्रोक्तो

‘राजनिघण्टके’ ॥ ७५४ ॥ रुद्रसंख्या भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्तो नैव संशयः ।

गुणाः—आदित्यपत्रं कटुहृष्णवीर्यं वातघ्नमेतत्कफनाशनं च ॥ ७५५ ॥ स्याद्दीपनं गुल्महरं तथैवारुच्यघ्नमुक्तं ‘नृपनामके’ च ॥

७२ श्वेताम्ली—श्वेत पिठोंडी, पर्पोटी ।

नामानि—श्वेताम्ली त्वम्लिका चैव पिष्टौडी पिष्टिका तथा ॥ ७५६ ॥ श्वेताम्लपीडिका चैव प्रोक्ता ‘राजनिघण्टके’ । रससंख्येति संप्रोक्ता भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ ७५७ ॥

गुणाः—श्वेताम्ली मधुरा वृष्या पित्तघ्नी बलदायका ।

७३ नीलाम्ली-काली पिडोंडी ।

नामानि—नीलाम्ली चैव नीली च पिष्टौडी दीर्घशाखिका ॥ ७५८ ॥ श्यामाम्ला ‘राजनाम्नीति’ प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः । ‘द्रव्य-रत्नाकरे’ चैव नीलाम्ला परिकीर्तिता ॥ ७५९ ॥

गुणाः—नीलाम्ला मधुरा रुच्या कफवातज्वरापहा ।

७४ अजगंधा—तिलवण ।

नामानि—अजगन्धा वस्तगंधा खरपुष्पाऽविगन्धिका ॥ ७६० ॥ उपगंधा ब्रह्मकर्मा ब्राह्मी पूतिमयूरिका । प्रोक्ता ‘राजनिघण्टे’ तु भिषक्विद्याविचक्षणैः ॥ ७६१ ॥ पशुगंधा च कवरी तथैव तु सुवर्चला । ततस्तु शबरीगन्धा प्रोक्ता ‘गणनिघण्टके’ ॥ ७६२ ॥ तुङ्गी तु कावरी चैव प्रोक्ता ‘धन्वंतरौ’ ध्रुवं । पूतिकीटा बर्बरी च पूति-बर्बर एव च ॥ ७६३ ॥ तुंगी तुवरपुष्पीति प्रोक्ता ‘मदनपालके’ । शतपुष्पा पूतिगन्धा तथैव तु शकम्भरा ॥ ७६४ ॥ बर्बरो बर्बरीगंधा ‘केयदेवे’ प्रकीर्तिता । चतुर्विंशतिसंख्याका संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ ७६५ ॥

गुणाः—अजगन्धा कटुष्णा च वातगुल्महरा तथा । कर्णव्रण-शूलहन्त्री वातोदरविनाशिनी ॥ ७६६ ॥ पीताजगन्धा च ‘नृपे’ हृजने हितकारिणी । हृद्याग्निवर्द्धिनी चैव दृष्टिमांघ्रप्रदायका ॥ ७६७ ॥ शुक्रवृद्धिकरा वातकफहा ‘मदने’ स्मृतः ।

७५ आदित्यभक्ता—सूरजमुखी, हुरहुज ।

नामानि—आदित्यभक्ता वरदात्वकभक्ता सुवर्चला ॥ ७६८ ॥
 अर्ककान्ता सूर्यलता सौरी मंडूकपर्णिका । सुतेजाऽर्कहिता चैव
 रवीष्टा सुरसम्भवा ॥ ७६९ ॥ मंडूकी सत्यनामा च देवी मार्तण्ड-
 वल्लभा । विक्रान्ता भास्करेष्टेति प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ७७० ॥
 सूर्यकान्तादित्यभक्ता तथैव च सुखोज्जवा । आदित्यपर्णी संप्रोक्ता
 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ ७७१ ॥ दिव्यतेजा शीतवृक्षो रविवल्ली
 रवौषधी । अर्कपुष्पी मूलपर्णी वृद्धिका तु रविप्रिया ॥ ७७२ ॥ 'कैयदेवे'
 तु संप्रोक्ता प्राया ब्रह्मसुवर्चला । रविक्रान्ता मंडूकी च तथैव च महौ-
 षधी ॥ ७७३ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव संप्रोक्ता भिषजां वरैः । सूर्यावर्ता
 रविप्रीता प्रोक्ता 'मदनपालके' ॥ ७७४ ॥ सुकर्कला सूर्यभग्ना तथा
 चादित्यवल्लभा । कपोतवंका विख्याता प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' ॥ ७७५ ॥

गुणाः—आदित्यभक्ता शिशिरा कटुस्तिक्ता भयापहा । त्वग्दोष-
 कं डुकुष्ठघ्नी भूतव्रणविनाशिनी ॥ ७७६ ॥ शीतज्वरहरा प्रोक्ता 'राजनाम
 निघण्टके' । शोफोष्णपांडुकुष्ठघ्नी बलासघ्नी 'गणे' स्मृता ॥ ७७७ ॥
 सूत्रला तु 'मदे' प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः । खर्या स्फोटहरा प्रोक्ता
 हिता चैव रसायनी ॥ ७७८ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च संप्रोक्ता वैद्य-
 नायकैः । पाके स्वादु रसे गुर्वी विष्टम्भी पित्तला तथा ॥ ७७९ ॥
 कफवातहरा रुक्षा 'द्रव्यनामनिघण्टके' । अत्युष्णा लघु रुक्षा च
 सरा कफहरा तथा ॥ ७८० ॥ रक्तपित्तरुचिहरा श्वासकासज्वरा-
 पहा । विस्फोटकुष्ठमेहघ्नी चाश्वमरीयोनिरोगजित् ॥ ७८१ ॥ कृच्छ्र-
 पांडुहरा प्रोक्ता 'कैयदेवे' भिषग्वरैः । कफवातामजन्तुघ्नी प्रोक्ता 'भार्य-
 प्रकाशके' ॥ ७८२ ॥

७६ विषमुष्टिः—विषदोडी* ।

नामानि—विषमुष्टिः केशमुष्टिः सुमुष्टिरणुमुष्टिकः । क्षुपडो-

*विषदोडीका दूसरा नाम हत्थाजोड़ी है । इसके फलका आकार वैसा ही होता है जैसा हाथकी मुट्ठी बन्द करनेसे होता है । इसकी वेलिकी एक डण्डीमें दो दो जुड़े फल होते हैं । ये फल मन्दारके फलके समान बड़े और गोले होते हैं । इन्हें टोंचनेसे सफेद दूध निकलता है । इसके फल कड़वे होते हैं इतोवे विषमुष्टि कहलाते हैं । इसकी वेलि अकसर काली ज़मीनमें होती और फैलती है तथापि विस्तार अधिक नहीं होता । इसकी पत्तियां धौकी पत्तीके समान लम्बाई लिये होती हैं ।

डोति संप्रोक्ता भिषग्भिः 'राजनामके' ॥ ७८३ ॥ शुद्रमुंडी 'केयदेवे'
डोडी 'मदनपालके' । शुधावहा चैव संप्रोक्ता 'केयदेवे' पुनस्तथा
॥ ७८४ ॥ अष्टसंख्या भिषक्श्रेष्ठेः संप्रोक्ता नैव संशयः ।

गुणाः—विषमुष्टिः कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफघातहा ॥ ७८५ ॥
कण्ठामयहरा रुच्या रक्तपित्तहरा तथा । दाहहा भिषजां नाथैः प्रोक्ता
'राजनिघण्टके' ॥ ७८६ ॥ मेहक्रिमिश्रवासगुल्मान् सूषकायां विषं
तथा । अर्शान् हन्तीति कविभिः प्रोक्ता 'केयनिघण्टके' ॥ ७८७ ॥

७७ डोडी ।*

नामानि—अन्याडोडी तु जीवन्ती शाकश्रेष्ठा सुखालुका । बहु-
पर्णी दीर्घपत्रा सूक्ष्मपत्रा च जीवनी ॥ ७८८ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
तु चाष्टसंख्या भिषग्वरैः ।

गुणाः—अन्याडोडी कटुस्तिक्ता चोष्णा स्यात् दीपनी तथा
॥ ७८९ ॥ कफघातहरा रुच्या कण्ठरोगविनाशिनी । रक्तपित्तहरा
दाहनाशिनी 'राजनामके' ॥ ७९० ॥

७८ कालांजनी—काला कपास ।†

नामानि—कालांजनी चांजनी च रेचनी त्वसितांजनी । नीलां-

*डोडीकी वेलि कोंकण (महाराष्ट्र) प्रान्तमें बहुत होती है । यह खूब फैलती है । इसकी पत्तियाँ गुर्चकी पत्तियोंके समान किन्तु ज़रा बड़ी होती हैं । इसकी दण्डीमें दो दो जोड़ी फल लगते हैं । इसके फलोंका आकार कुछ कुछ हत्थाजोड़ीके समान होता है । इन फलोंको भी टोंचनेसे खोद दूध निकलता है । इसकी वेलि वृत्तों पर चढ़ती है । वेलका कन्धा लगा हो तो कन्धे पर इसकी पत्तियाँ रख जुआं रखनेसे दो तीन दिनोंमें कन्धा अच्छा हो जाता है ।

†काले कपासकी दो जाति होती हैं । १ काला कपास २ वेणी । काले कपासके बीज वन कपासके बीजोंके समान किन्तु काले होते हैं । इसकी पत्ती वेणीसे छोटी और चोटीकी ओर तीन भाग रहते हैं । इसके फूल कुछ तांबड़ी रङ्गके होते हैं । इसका कपास मध्य श्रेणीका होता है । वेणीका बीज लम्बाई लिये वेणीके समान रहता है । इसके पत्ते काले कपासके पत्तोंसे बड़े होते हैं और उसके पाँच भाग ऐसे होते हैं कि पाँच चोटीसे जान पड़ते हैं । इसका फूल पिलाई लिये रहता है । इसका फूल बत्ती बनानेके लिये अच्छा होता है किन्तु सूत कातनेके लिये उत्तम नहीं होता । इसके सिवाय तीसरे देवकपासके पत्ते काले कपासके पत्तोंसे छोटे और उनकी चोटीकी ओर पाँच भाग होते हैं । इसके बीज हरापन लिये और फूल ललाई लिये रहते हैं । इसका धागा लम्बा और मज़बूत होता है । इसकी रुई सबसे अच्छी समझी जाती है ।

जनी च कृष्णाभा काली कृष्णांजनी च सा ॥ ७६१ ॥

गुणाः—कालांजनी कटूष्णा स्यादस्लामक्रिमिशोधिनी । अपा-
नावर्तशमनी जठरामय हा 'नृपे' ॥ ७६२ ॥ कृमिश्लेष्मोदरहरा हृद्रो-
गहारिणी 'द्रवे' ।

७६ कार्पासी-देवकपास ।

नामानि—कार्पासी सारिणी चञ्चला स्थूलपि वदरी पिचुः
॥ ७६३ ॥ मरुदूर्वा समुद्रान्ता वादरा तुडिकेरिका । गुणसू 'राज-
नाम्नाति' संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ ७०४ ॥ कार्पासाच्छादनफला
पथ्याऽनन्ना पटप्रदा । भद्रा बन्धफला चैव कर्पासस्तु वरदुमः
॥ ७६५ ॥ स्थूलं पिचञ्चला विदिता वादरः 'केयदेवके' । वदरी स्थूल-
पिचुरो 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृतः ॥ ७६६ ॥ आच्छादनी सोमवल्ली
चक्रिका मेनिका 'गणे' । वामनी वासनी चैव विषमो च महाजसी
॥ ७६७ पटतूलश्च संप्रोक्ता वैद्यविद्याविचक्षणैः ।

गुणाः—कार्पासी मधुरा शीता स्तन्या पित्तकफापहा ॥ ७६८ ॥
तृष्णादाहश्रमहरा भ्रान्तिमूर्च्छाविनाशिनी । बलदेति भिषकश्रेष्ठैः
प्रोक्ता 'राजनिघंटके' ॥ ७६९ ॥ तद्बीजं श्लेष्मलं स्निग्धं वृष्यं 'केय-
निघंटके' । तत्पत्रं वातहृद्रक्तनाशनं मूत्रवर्द्धनम् ॥ ८०० ॥ कर्णपीडा
कर्णनादपूयसावविनाशनम् । 'भावप्रकाशे' संप्रोक्तं वैद्यविद्याविच-
क्षणैः ॥ ८०१ ॥

८० अरण्यकार्पासी ।

नामानि—वनजारण्यकार्पासी भारद्वाजी वनोद्भवा ।

गुणाः—भारद्वाजी हिमा रुच्या 'नृपे' शस्त्रव्रणापहा ॥ ८०२ ॥

८१ कोकिलाक्षः-तालिमखाना ।

नामानि—कोकिलाक्षः शृगाली च शृखला रणकस्तथा । शृ-
गालघंटी वज्रास्थिशृखला व्रजकंटकः ॥ ८३ ॥ इक्षुरः क्षुरको वज्रः
शृखलीका पिकेश्मणः । पिच्छिला चेश्मगन्धा च 'राजनामनिघंटके'
॥ ८०४ ॥ इक्षुरी चेश्मवाला च इक्षुरस्तैलकंटकः । तथेश्मगंधिका चैव
वृहत्कोशा च खगटः ॥ ८०५ ॥ कलम्बशाली विज्ञेया 'केयदेवे' प्रकी-
र्तिता । कोकिलश्च तथा 'द्रव्ये' प्रोक्तं वैद्यविशारदैः ॥ ८०६ ॥ तथा

‘मदनपाले तु कांडेश्च क्षुरस्तथा । काकेश्च भिक्षुकश्चैव वालिका
श्चक्षुकस्तथा ॥ ८०७ ॥ प्रोक्ता ‘भावप्रकाशे’ च वैद्यविद्याविशारदैः ।

गुणाः—कोकिलाक्षस्तु मधुरः शीतपित्तातिसारजित् ॥ ८०८ ॥
वृष्यः कफहरो बल्यो रुच्यः संतर्पणो ‘नृपे’ । स्निग्धः पिच्छलवृष्यश्च
वाततृष्णाश्मरीहरः ॥ ८०९ ॥ रक्तामवातहृत् प्रोक्तो ‘केयदेवनिघं-
टके’ । मेहवातहरो ‘द्रव्ये’ ‘भावे’ शोथविनाशनः ॥ ८१० ॥ वातरक्त
हरः प्रोक्तो पुरातनचिकित्सकैः ।

८२ सातला-पीतदुग्ध, सैहुंड ।

नामानि—सातला सप्तला सारी विडुला विमलाऽमला ॥ ८११ ॥
बहुफेना चर्मकषा फेनदीप्ता विषाणिका । स्वर्णपुष्पी पत्रधना प्रोक्ता
‘राजनिघंटके’ ॥ ८१२ ॥ विडुला चर्मकर्पा च फेना दीप्ता सरालिका ।
सनालिका पीतदुग्धा तथैव तु सरालिका ॥ ८१३ ॥ ‘केयदेवनिघंटे’
तु प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः । तथा ‘मदनपाले’ तु सम्यक्प्रोक्ता वनालि-
का ॥ ८१४ ॥ विडुला भूमिफेना च प्रोक्ता ‘भावप्रकाशके’ । आत्म-
नाला चर्मकोशा त्वमला ‘गणनामके’ ॥ ८१५ ॥ एकत्रिंशत्संख्यकेति
प्रोक्ता शास्त्रविचक्षणैः ।

गुणाः—सातला कटु पित्तघ्नी लघु तिक्ता काषायका ॥ ८१६ ॥
विसर्पविषहन्त्री च मेधाविस्फोटहारिणी । व्रणशोफहरा प्रोक्ता वैद्यैः
‘राजनिघंटके’ ॥ ८१७ ॥ सूत्रकृच्छ्रहरा प्रोक्ता भिषग्भिः ‘गणनामके’ ।
शोधना कफपित्तासृक्शोफोदरविनाशिनी ॥ ८१८ ॥ लघु मासृत्क-
त्प्रोक्ता ‘धन्वे’ नाहहरस्तथा । शीतला चैव तीक्ष्णा च तिक्ता चैव
हृदिप्रिया ॥ ८१९ ॥ हृद्रोगकफहृच्चैव पित्तोदावर्तगुल्महा । उदरघ्नी
गरहरा विषक्रिमिविनाशिनी ॥ ८२० ॥ शोथामारुचिहा ‘केये’ प्रोक्ता
रेचकवातिकृत् ।

८३ कामवृद्धिः कामवृक्ष । *

नामानि—स्मवृद्धिः कामवृद्धिस्तथैव मदनायुधः ॥ ८२१ ॥ कन्द-
र्पजीवो कामोपजीवो चैव जितेन्द्रियः । मनोजवृद्धिः संप्रोक्तो ‘राज-
नामनिघंटके’ ॥ ८२२ ॥

*कामज वृक्ष कर्नाटक देशमें बहुत होता है । इसके बीज अत्यन्त वृष्य होते हैं ।

शताह्वादिचर्गः ।

५७

गुणाः—कामवृद्धस्य बीज स्यान्मधुरं बलवद्धनं । कामवृद्धिकरं
रुच्यं बहुलैन्द्रियवृद्धिदं ॥ ८२३ ॥

८४ चक्रमर्दः-चकौड़ा, पंवाड़ ।

नामानि—एडहस्ती विमर्दश्च ददुघ्नः शकुनाशनः । चक्री चक्र-
गजश्चैव दूढबीजो प्रपुन्नटः ॥ ८२४ ॥ चक्रमर्दस्त्वेडगजो मेषाब्धो
चैडहस्तिकः । व्यावर्तकश्चक्रगजश्चक्री पुन्नाट एव च ॥ ८२५ ॥ खर्जु-
घ्नस्तु गजाख्यश्च प्रोक्तं 'गणनिघटके' । ततस्त्वेडगजश्चैव मेषा
क्ष्वेडगजस्तथा ॥ ८२६ ॥ प्रपुन्नटश्च विख्यातो प्रोक्तो 'धन्वंतरौ'
ध्रुवम् । क्ष्वेडकोऽगजश्चैव क्ष्वेडको मर्दको मदा ॥ ८२७ ॥ चक्रिलो
मेषकुसुमो 'केयदेवनिघटके' । तथा 'मदनपाले' तु संप्रोक्तो कुष्ठक-
तनः ॥ ८२८ ॥ 'भावप्रकाशे' संप्रोक्तो पञ्चाटो मेषलोचनः । उरणाक्ष-
स्तु 'कोशे' च कविभिः परिकीर्तितः ॥ ८२९ ॥

गुणाः—चक्रमर्दः कटुः प्रोक्तो मेदेवातकफापहा । व्रणकंदुकु-
ष्ठदद्रुपामहा 'राजनामके' ॥ ८३० ॥ हिमो रुक्षोऽथ हृद्यश्च स्वादुर्विण्ट-
भकारकः । मलमूत्रहरश्चैव पित्तानिलहरस्तथा ॥ ८३१ ॥ कफकुष्ठ
ज्वरघ्नश्च श्वासकासादिमेदहा । अरुचिक्रिमिहन्तेति फलं तस्य कटू-
ष्णकं ॥ ८३२ ॥ विषापहं तस्य शाकं मलघ्नं 'केयदेवके' । त्रिदोषघ्नं
तथा प्राहि शिरोर्तिहरणं तथा ॥ ८३३ ॥ शोकोद्भवकफान् हन्ति
'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृतं ।

भिंभिरीटा-भुरहुरी । *

नामानि—भिंभिरीटा कंटफली पीतपुष्पा च भिंभिरा
॥ ८३४ ॥ हुडरोमाश्रयफला वृत्ता 'राजनिघण्टके' । 'द्रव्यरत्नाकरे'
चैव भिंभीसा परिकीर्तिता ॥ ८३५ ॥ सप्तसंख्येति संप्रोक्ता भिष-
क्शास्त्रपरायणैः ।

गुणाः—भिंभिरीटा कटुः शीता कषया चातिसारजित्
॥ ८३६ ॥ वृष्या संतर्पणी बल्या महिषीक्षीरवर्धिनी । प्रोक्ता 'राज-
निघण्टे' च वैद्यविद्या विशारदैः ॥ ८३७ ॥

*इसमें नोकदार चुंगची बराबर गोल, बहुतसे फल लगते हैं । ये फल
चलते समय कपड़ोंमें लपट जाते हैं ।

निघण्टशिरोमणिः ।

३ पर्पटादिवर्गः ।

१ पर्पटः—पित्तपापडा ।

नामानि—पर्पटश्चरको रेणुस्तृष्णारिः खरको रजः । शीतः शीतप्रियः पांशुः कल्याणो वर्मकण्टकः ॥ ८३८ ॥ कुशशाखः पर्पटकः पित्तारिः रक्तपुष्पकः । सुतित्तो कटुपत्रश्च कवचो राजनामके' ॥ ८३९ ॥ वरतिकतो वर्मकण्टो वरकस्त्वतिसारहा । ज्वरनाशनकश्चैव प्रोक्तो 'धन्वंतरौ' ध्रुवं ॥ ८४० ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु पित्तहा शिववल्लभः चर्मावहयः सूक्ष्मपत्रो चर्मकण्टक एव च ॥ ८४१ ॥ यवकण्टस्तथा 'द्रव्ये' लृष्टिकः फलकण्टकः । तथा 'गणनिघण्टे' तु संस्मृतो धर्मखेटकः ॥ ८४२ ॥

गुणाः—पर्पटः शीतलस्तिक्तः पित्तश्लेष्मज्वरापहः । रक्तदाहारुचिग्लानिमदभ्रमहरो 'नृपे' ॥ ८४३ ॥ मुखरोगहरो प्रोक्तो वैद्यै 'गणनिघण्टके' । रसे पाके च तिक्ता स्यात् संग्राही वातलस्तथा ॥ ८४४ ॥ दाहलृदिपिपासघ्नः 'केये' च पित्तनाशनः । 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तः पित्तमेहविनाशकृत् ॥ ८४५ ॥

२ जीवक ।

नामानि—जीवको जीवो जीव्यः शृङ्गावहः प्राणदः प्रियः मंगल्यश्चिरजीवी च मधुरः कूर्मशीर्षकः ॥ ८४६ ॥ ह्रस्वांगो वृद्धिदोऽयुष्मान् दीर्घायुर्जीवदस्तथा । बलदस्तु तथा प्रोक्तो 'राजनामनिघण्टके' ॥ ८४७ ॥ 'धन्वंतरिनिघण्टे' तु शृङ्गकः कूर्चशीर्षकः । श्वेदस्वादुः 'क्षीरजीवी' भिषग्भिः परिकीर्तितः ॥ ८४८ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु शर्मकूर्चक एव च । श्रेयस्तु जीववृक्षश्च संप्रोक्तो भिषग्वरैः ॥ ८४९ ॥

गुणाः—जीवको मधुरः शीतो रक्तपित्तानिलापहः । क्षयदाहहरश्चैव स्वरशुकविवर्द्धनः ॥ ८५० ॥ श्लेष्मवृद्धिकरश्चैव गर्भसंघातकारकः । प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' च वैद्यैर्विद्याविचक्षणैः ॥ ८५१ ॥

३ ऋषभक ।

नामानि—ऋषभो गोपतिर्धीरो विषाणी धूर्धरो वृषः । कङ्कान् पुंगवो वोढा शृङ्गी धूर्यस्तु भूपतिः ॥ ८५२ ॥ काम

ऋक्षप्रियश्चोक्तो लांगुली गोश्च बन्धुरः । गोरक्षो वनवासीति प्रोक्तो
'राजनिघण्टके' ॥ ८५३ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु दुर्धरो वृषभस्तथा ।
श्रीमान् वृषाणी ककुदो चिंद्राक्षो मातृकः स्मृतः ॥ ८५४ ॥ 'केयदे-
वनिघण्टे' तु भिषग्भिः परिकीर्तितः । बद्धामयपतिश्चैव 'द्रव्यरत्ना-
करे' स्मृतः ॥ ८५५ ॥

गुणाः—ऋषभो मधुरः शीतः पित्तरक्तविरेकनुत् । शुक्रश्लेष्म-
करश्चैव दाहक्षयज्वरापहः ॥ ८५६ ॥ गर्भसंधानकारीति प्रोक्तो
'राजनिघण्टके' ।

४ श्रावणी-छोटी मुण्डी ।

नामानि—श्रावणी स्यान्मुंडिनिका भिक्षुः श्रवणशीर्षकः
॥ ८५७ ॥ श्रवणा च प्रव्रजिता परिव्राजी तपोधनः । प्रोक्ता 'राज-
निघण्टे' तु भिषक्विद्याविचक्षणैः ॥ ८५८ ॥ मुंडिनिका श्रवण्याह्वा
प्रोक्ता 'धन्वे' भिषग्वरैः । अलम्बुजा श्रवणयुक्ता कुलहला च श्रीमती
॥ ८५९ ॥ चुंबला 'केयदेवे' च 'द्रव्ये' प्रोक्ता तपोधना । क्षीरतिका
चकोरा च नीलहारा 'गणे' स्मृता ॥ ८६० ॥

गुणाः—श्रावणी तु कपाया स्यात् कटूष्णा कफपित्तजित् ।
आमातिसारकासघ्नी विषहृद्दिहारा 'नृपे' ॥ ८६१ ॥ वातपित्तास्र-
हन्त्री च तथामारुचिहारिणी । गंडापरुमारहन्त्री च श्लीपदघ्नी 'घने'
स्मृता ॥ ८६२ ॥ वीर्योष्णा चैव मेध्या च तथा वातकफापहा ।
अपचीप्लीहमेहघ्नी पांडुर्योनिरुजापहा ॥ ८६३ ॥ कृच्छ्रहृत् किमिहा
प्रोक्ता 'केयदेवनिघण्टके' । पाके कटुगुंदातिघ्नी प्रोक्ता 'भावप्रका-
शके' ॥ ८६४ ॥

५ महाश्रावणी-बड़ी मुण्डी, गोरखमुण्डी ।

नामानि—महाश्रावणिका चैव महामुण्डी च लोचना । कदम्ब-
पुष्पा विकचा कोला चौडा पलंकषा ॥ ८६५ ॥ नदीकदम्बो मुण्डाख्या
महामुंडिनिका तथा । छिन्ना ग्रन्थिनिका माता स्थविरा लोमिनी
तथा ॥ ८६६ ॥ भूकदम्बाऽलम्बुजा च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । 'धन्व-
न्तरौ' लोमनीया छिन्नग्रन्थिनिका स्मृता ॥ ८६६ ॥ 'केयदेवनिघण्टे'
तु गोच्छाला त्वरुणा तथा । तपोधना बोटवृद्धा बोढा प्रोक्ता
भिषग्वरैः ॥ ८७० ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव शोभनीया प्रकीर्तिता ।

६०

निघण्टुशिरोमणिः ।

‘भावप्रकाशे’ संप्रोक्ता त्वव्यथाऽतितपस्विनी ॥ ८७१ ॥ कोलाहला
त्वम्बुसा च शशका ‘गणनामके’ ।

गुणाः—महाश्रावणिका चोष्णा ईषद्रौल्या मरुच्छ्रवा ॥ ८७२ ॥
स्वरकृद्रोचनी तिक्ता मेहहृच्च रसायनी । ‘राजनामनिघण्टे’ च
प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ॥ ८७३ ॥

६ मेदा-मैदा ।

नामानि—मेदा वसा मणिच्छिद्रा जीवनी शल्यपर्णिका । मेद-
सारा स्नेहवती मेदिनी मधुरा वरा ॥ ८७४ ॥ स्निग्धा मेदोद्भवा
साध्वी विषदा बहुरङ्घ्रिका । नखच्छेद्या तथा प्रोक्ता ‘राजनाम-
निघण्टके’ ॥ ८७५ ॥ शल्यदा शल्यपर्णी च तथा पुरुषहन्तिका ।
‘केयदेवे’ भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशयः ॥ ८७६ ॥ तथा ‘मदन-
पाले’ तु मणिक्षुद्रा भवाध्वरा । सुरा मेदसमुद्भूता धरणी मेहसंभवा
॥ ८७७ ॥ प्रोक्ता ‘गणनिघण्टे’ तु भिषक्शास्त्रपरायणैः ।

गुणाः—मेदा तु मधुरा शीता पित्तदाहार्तिकासनुत् ॥ ८७८ ॥
राजयक्ष्मज्वरहरा वातदोषकरी ‘नृपे’ । गुरु स्तन्या वातपित्तनाशिनी
‘धन्वनामके’ ॥ ८७९ ॥ बलासशुक्रकृच्चैव वृंहणं ‘केयदेवके’ । वात-
पित्तास्रहृच्चैव क्षतक्षयहरा तथा ॥ ८८० ॥ रक्तवातहरा चैव प्रोक्ता
‘भावप्रकाशके’ ।

७ महामेदा-बड़ी मेदा ।

नामानि—महामेदा वसुच्छिद्रा जीवनी पांशुरागिणी ॥ ८८१ ॥
देवेष्टा सुरमेदा च दिव्या देवमणिस्तथा । देवगन्धा महाच्छिद्रा
वृक्षार्हा ‘राजनामके’ ॥ ८८२ ॥ मणिच्छिद्रा वृक्षरूपा महापुरुषदंतिका ।
‘केयदेवे’ भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशयः ॥ ८८३ ॥ तथा ‘मदन-
पाले’ तु त्रिदन्ती देवतामणिः । प्रोक्ता षोडशसंख्येति भिषक्शास्त्र
विशारदैः ॥ ८८४ ॥

गुणाः—महामेदा हिमा रुच्या कफशुक्रविवर्द्धिनी । रक्तदाह-
हरा चैव पित्तक्षयनिवारिणी ॥ ८८५ ॥ वातज्वरहरा चैव प्रोक्ता
‘राजनिघण्टके’ ।

८ ऋद्धिः ।

नामानि—ऋद्धिः सिद्धिः प्राणदा च जीवदात्री तु श्रेयसी

पर्पटादिवर्गः ।

६१

॥ ८८६ ॥ अपांगी चेतनी योग्या रथांगी मङ्गला तथा । कोलकान्ता यशस्या च जीवश्रेष्ठेति 'राजके' ॥ ८८७ ॥ रथांगं मङ्गलं चैव वसु-
'धन्वन्तरौ' स्मृतं । आश्वासनी तुष्टिराशी चेतना च पयस्विनी ॥ ८८८ ॥

६ वृद्धिः ।

नामानि—वृद्धि स्तुष्टिः पुष्टिदा श्री मङ्गल्या वृद्धिदात्रिका ।
जनेष्टा सम्पदा लक्ष्मीभूतिरुत्सव एव च ॥ ८८९ ॥ जीवभद्रा भिषक्-
श्रेष्ठैः प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । ऋषिश्रेष्ठा युगयोग्या लक्ष्मीः सर्व-
जनप्रिया ॥ ८९० ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः ।
सुखा तु शोधिनी चैव श्रावणी च सुयोग्यदा ॥ ८९१ ॥ विभूतिर्मधुरा
चैव प्रियो मङ्गल एव च । 'केयदेवनिघण्टे' तु सपाविंशतिसंख्यका
॥ ८९२ ॥

गुणाः—ऋद्धिर्वृद्धिश्च मधुरा सुस्निग्धा तिकशीतला । रुचि-
मेधाकरी श्लेष्मकुष्ठक्रिमिहरा 'नृपे' ॥ ८९३ ॥ क्षयपित्तानिलहरा
रक्तज्वरविनाशिनी । कफशुक्रप्रदा चैव प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं
॥ ८९४ ॥ त्रिदोषमूर्च्छाहन्त्री च रक्तपित्तहरा तथा । गर्भवृद्धिप्रदा
चैव प्रोक्ता 'केयनिघण्टके' ॥ ८९५ ॥ ऋद्धिर्दानादिनिन्द्या च प्रोक्ता
'गणनिघण्टके' ।

१० धूम्रपत्रा-गन्धाणी, कीडामारी ।

नामानि—धूम्रपत्रा तु धूम्रावहा सुलभा च स्वयंभुवा ॥ ८९६ ॥
गृध्रपत्रा च गृध्राणी कृमिघ्नी स्त्रीमलापहा । अष्टसंख्या 'नृपे' प्रोक्ता
भिषग्भिः शास्त्रवित्तमैः ॥ ८९७ ॥

गुणाः—गुध्राणी तु रसे तिका शोफक्रिमिविनाशिनी । उष्णा
कासहरा रुच्या दीपनी 'राजरामके' ॥ ८९८ ॥

११ प्रसारिणी ।

नामानि—प्रसारिणी सुप्रसरा सारणी सरणी सरा । चारु-
पर्णी राजबला भद्रपर्णी प्रतानिका ॥ ८९९ ॥ प्रबला राजपर्णी च
बल्या भद्रबला तथा । चन्द्रवल्ली प्रभद्रा च 'राजनामनिघण्टके'
॥ ९०० ॥ प्रहिता भद्रकाली च 'केये' प्रातानिका तथा । तथा 'मदन-

पाले' तु प्रसरा परिकीर्तिता ॥ ६०१ ॥ प्रोक्ता 'भावप्रकाशे' तु प्रतानिनी कटभरा ।

गुणाः—प्रसारिणी गुरुणा च तिक्ता वातार्शहा तथा ॥ ६०२ ॥ श्वयथूमलहारा च विष्टम्भहारिणी 'नृपे' । कफहन्त्रीति संप्रोक्ता 'मदने' वैद्यनायकैः ॥ ६०३ ॥ सरा सन्धानकृच्चैव त्रिदोषघ्नी च वृष्यदा । बलतेजःकान्तिकरा प्रोक्ता 'धन्वनिघण्टके' ॥ ६०४ ॥ रसे तिक्ता च वीर्योष्णा शुक्रला वातरक्तहा । त्रिदोषघ्नी 'केयदेवे' प्रोक्ता वैद्यैर्न संशयः ॥ ६०५ ॥

१२ पाषाणभेदी-पाषाणभेद ।

नामानि—पाषाणभेदोऽश्मघ्नश्च शिलाभेदोऽश्मभेदकः । श्वेता चैतपलभेदी च नगभिच्छलिगर्भकः ॥ ६०६ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वैद्यशास्त्रपरायणैः । पाषाणभेदी पाषाणस्तथैवाश्मनिभेदकः ॥ ६०७ ॥ अश्मभेदनसंज्ञश्च नगभेदन एव च । प्रोक्ता 'मदनपाले' तु भिषक्विद्याविचक्षणैः ॥ ६०८ ॥ तथा 'भावप्रकाशे' तु गिरिभित् परिकीर्तितः । दूषद्भेदः प्रस्तरश्च नगभेदक एव च ॥ ६०९ ॥ अश्मरीभेदकश्चैव प्रोक्ता 'केयनिघण्टके' ।

गुणाः—पाषाणभेदो मधुरस्तिको मेहतृषाहरः ॥ ६१० ॥ प्रोक्तं राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः । 'केयदेवे' हिमो भेदी योनिरोगविनाशनः ॥ ६११ ॥ मूत्ररोगहरश्चैव व्रणदोषहरस्तथा । गुदभ्रंशहरश्चैव 'गणे' प्रोक्ता भिषक्जनैः ॥ ६१२ ॥ शूलकृच्छ्रत्रिदोषघ्नो मेहहृद्रोगप्लीहहा । गुल्मार्शनाशनश्चैव वस्तिशुद्धिकरस्तथा ॥ ६१३ ॥ शर्कराशिशूलघ्नः प्रोक्तो 'धन्वन्तरौ' ध्रुवम् । शोफहृद्रोगहा 'भावे' 'मदने' तु सरः स्मृतः ॥ ६१४ ॥

१३ वटपत्री पाषाणभेदी-वडवती पाषाणभेदी ।

नामानि—अन्या तु वटपत्रीस्यात्तथा ऐरावती च सा । गोधावती रावती च श्यामा खट्वांगनामिका ॥ ६१५ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रपरायणैः । सुस्वातिका रेवती च मोहनी 'केयदेवके' ॥ ६१६ ॥

गुणाः—वटपत्री हिमा गौल्या मेहकृच्छ्रविनाशिनी । बलदा व्रणहन्त्री च दीपनी 'राजनामके' ॥ ६१७ ॥ योनिदोषहरा चैव मूत्र-

रोधहरा तथा । तत्फलं मधुरं रुक्षं स्तंभनं लेखनं ध्रुवं ॥ ६१८ ॥
कफपित्तहरं चैव विवंधाध्मानकृत्तथा । शुद्रं ग्राही पित्तजिघ्र प्रोक्तं
'केयनिघण्टके' ॥ ६१९ ॥ स्तंभनं वातलं शीतं मदनं परिकीर्तितं ।

१४ श्वेताशिला-सफेद पाषाणभेद ।

नामानि—श्वेताशिला चलकला च शिलाजा शैलचलकला ॥ ६२० ॥
घलका तु शैलगर्भावहा शिलात्वक् 'राजनामके' ।

गुणाः—शिलाचलकं हिमं स्वादु मेहकृच्छ्रविनाशनं ॥ ६२१ ॥
मूत्ररोधाश्मरीशूलक्षयपित्तापहारकं ।

१५ क्षुद्रपाषाणभेदा-क्षुद्रपाषाणभेद ।

—नामानि—क्षुद्रपाषाणभेदान्या चतुःपत्री च पार्वती ॥ ६२२ ॥
नगभूश्चश्मकेतुश्च गिरिभूः कंदरोद्भवा । शैलोद्भवा च गिरिजा नगजा
'राजनामके' ॥ ६२३ ॥ दशसंख्येति संप्रोक्ता भिषक्शास्त्रपरायणैः ।

गुणाः—व्रणघ्नी तु 'नृपे' प्रोक्ता मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरा ॥ ६२४ ॥

१६ गृहकन्या-ग्वारपाठा ।

नामानि—गृहकन्या कुमारी च कन्यका दीर्घपत्रिका । स्थले-
रुहा मृदुःकन्या बहुपत्रामराऽजरा ॥ ६२५ ॥ कंदकप्रावृता वीरा
भृंगेष्टा विपुलश्रवा । ब्रह्मघ्नी तरुणी रामा कपिला चांबुधिश्रवा
॥ ६२६ ॥ सुकंटका स्थूलदला प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । माता च
मण्डला चैव फलमत्स्याऽक्षकारका ॥ ६२७ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु
भिषक्श्रेष्ठैः प्रकीर्तिता । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव संप्रोक्ता त्वतिपित्त-
ला ॥ ६२८ ॥ तथा घृतकुमारी तु प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' । सप्तविं-
शतिसंख्याका संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ६२९ ॥

गुणाः—गृहकन्या हिमा तिका कासपित्तकफापहा । विषकुष्ठ-
श्वासहरा 'नृपे' प्रोक्ता रसायनी ॥ ६३० ॥ यकृतपित्तहरा चैव गल-
रोगहरा तथा । वृंहणी चैव बल्या च त्वगामयहरा 'नृपे' ॥ ६३१ ॥
भेदिनी ग्रंथिनी चैव ह्यग्निदग्धव्रणापहा । विस्फोटकरूपितघ्नी 'केये'
कफज्वरापहा ॥ ६३२ ॥ 'द्रव्ये' सरा ग्रीहहरा 'भावे' नेत्र्या
स्मृता बुधैः ।

१७ बर्हिचूडा-मोरपंखी ।

नामानि—शिखिनी बर्हिचूडा स्यात् शिखालुः सुशिखा शिखा
॥ ६३३ ॥ केकीशिखा मयूरस्य शिखेति 'राजनामके' । 'द्रव्यरत्ना-
करे' चैव मधुराब्हा मधुच्छदा ॥ ६३४ ॥ मयूराब्हा सहस्रा च प्रोक्ता
'मदनपालके' । सहस्राक्षो नीलकण्ठशिखा 'भावप्रकाशके' ॥ ६३५ ॥

गुणाः—बर्हिचूडा रसे स्वादु मूत्रकृच्छ्रहरा तथा । बालग्रहहरा
चैव वश्यकर्मप्रदा 'नृपे' ॥ ६३६ ॥ 'द्रव्ये' कफातिसारघ्नी पित्तश्ले-
ष्मातिसारजित् ।

१८ क्षीरिणी-पिसौरा ।

नामानि—क्षीरिणी कांचनक्षीरी कर्षणी कटुपर्णिका ॥ ६३७ ॥
तिक्तदुग्धा हैमवती हिमदुग्धा हिमावती । हिमाद्रिजा पीतदुग्धा
यवचिंची हिमोद्भवा ॥ ६३८ ॥ हैमी तु हिमजा चैव प्रोक्ता 'राजनि-
घण्टके' । कर्षणी हेमदुग्धेति प्रोक्ता 'धन्वंतरौ' ध्रुवम् ॥ ६३९ ॥ यव-
चित्रा कांचनी च 'केयदेवे' स्मृता बुधैः । अष्टभूसंख्यका प्रोक्ता
भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ ६४० ॥

गुणाः—क्षीरिणी तिक्तशीता च रेचिनी शोफघातहा । कृमि-
कफहरा चैव पित्तज्वरहरा 'नृपे' ॥ ६४१ ॥

१९ स्वर्णक्षीरी-सत्यानाशी, घमोय ।

नामानि—स्वर्णक्षीरी स्वर्णदुग्धा स्वर्णाब्हा रुक्मिणी तथा ।
सुवर्णहेमदुग्धी च हेमक्षीरी तु कांचनी ॥ ६४२ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघ-
ण्टे' तु भिषक्विद्याविचक्षणैः । सुवर्णक्षीरी हेमांगा तथा कनकक्षीरिका
॥ ६४३ ॥ 'धन्वंतरिनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः । क्षीरगर्भा
दुग्धिकेति 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ॥ ६४४ ॥ हेमाब्हा हेमदुग्धा च तथा
हेमावती 'मदे' । पटुपर्णी हैमवती पीतदुग्धा च चोककः ॥ ६४५ ॥
प्रोक्ता 'भावप्रकाशे' तु भिषक्विद्याविचक्षणैः । प्रोक्ता 'गणनि-
घण्टे' तु भिषग्भिस्तिक्तदुग्धिका ॥ ६४६ ॥ विंशत्संख्या भिषग्भिस्तु
प्रोक्ता शास्त्रविचक्षणैः ।

पर्वटादिवर्ग ।

६५

गुणाः—स्वर्णणीरी हिमा तिका कृमिपित्तकफापहा ॥ ६४७ ॥
 मूत्रकृच्छ्राशमरीशोफदाहज्वरहरा 'नृपे' । उत्क्रेशकारिणी चैव 'मंदे'
 मंदकरा स्मृता ॥ ६४८ ॥ विषपित्तहरा चैव रक्तपित्तहरा 'धने' ।
 कंडूहरा 'केयदेवे' रक्तानाहहरा तथा ॥ ६४९ ॥ कामलाघ्नी तथा
 प्रोक्ता वैद्यविद्याविशारदैः । वातास्रहा 'द्रव्यरत्ने' पांडुहा 'गणना-
 मके' ॥ ६५० ॥

१९ त्रायमाणा-त्रायमाण ।

नामानि—त्रायमाणा कृतत्राणा त्रायंती त्रायमाणिका । बल-
 भद्रा सुकामा च वार्षिकी गिरिजानुजा ॥ ६५१ ॥ मंगल्याब्हा
 देवदला पालिनी भयनाशिनी । अवनी रक्षणी त्राणा संप्रोक्ता 'रा-
 जनामके' ॥ ६५२ ॥ बलदेवा तु विदिता तथैव गिरिसानुजा । 'ध-
 न्वंतरिनिघंटे' तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ६५३ ॥ आर्द्रार्द्रिसानुजा
 चैव तथा वार्षिकत्राणिका । 'केयदेवे' तु संप्रोक्ता सुदला च सुता-
 निका ॥ ६५४ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव सुहृत्संज्ञा प्रकीर्तिता । तथा
 'त्वमरकोशे' तु प्रोच्यते बलभद्रिका ॥ ६५५ ॥

गुणाः—त्रायमाणा भवेच्छीता मधुरा गुल्महा तथा । रक्तज्वर-
 कफघ्नी च भ्रमतृष्णाक्षयापहा ॥ ६५६ ॥ ग्लानिहा विषहृदिघ्नी
 प्रोक्ता 'राजनिघंटके' । कटुः पित्तास्रशूलघ्नी प्रोक्ता 'धन्वनिघंटके'
 ॥ ६५७ ॥ हृद्गोगरक्तगुल्मघ्नी पित्तहा 'केयदेवके' । 'मंदे' वैद्यैः सरा
 प्रोक्ता कफपित्तहरा 'गणे' ॥ ६५८ ॥

२० रुदंती-रुद्रवंती ।

नामानि—रुदंती तु स्रवत्तोया संजीवन्यभृतस्रवा । रोमां-
 शिका महामांसी चणपत्रो सुधाश्रवा ॥ ६५९ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघंटे'
 तु भिषक्विद्याविशारदैः ।

गुणाः—रुदंती तु कटुस्तिक्ता कषाया चोष्णकारका ॥ ६६० ॥
 रक्तपित्तक्रिमिहरा कफश्वासविनाशिनी । रसायनी मेहहरा 'राज-
 नामनिघंटके' ॥ ६६१ ॥

२१ ब्राह्मी ।

नामानि—ब्राह्मी सरस्वती सौम्या सुरश्रेष्ठा सुवर्चला । कपो-
 तवेगा वैधात्री दिव्यतेजा महौषधी ॥ ६६२ ॥ स्वायंभुवी सौम्य-

लता सुरेज्या ब्रह्मकन्यका । मंडूकमाता मत्स्याक्षी मण्डूकी सुरसा
तथा ॥ ८६३ ॥ मेध्या वीरा भारती च वरा तु परमेष्ठिनी । दिव्या
च शारदा चैव प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ८६४ ॥ सोमा कपोतवका
च त्वष्टा ब्रह्मसुवर्चसा । 'धन्वंतरिनिघण्टे' तु भिषग्भिः परिकी-
र्तिता ॥ ८६५ ॥ तथा सत्यवती चैव स्मरणी ब्रह्मचारिणी । सत्य-
नामा ब्रह्मसोमा ततो मंडूकपर्णिका ॥ ८६६ ॥ ब्राह्मणी तु सुनामा
च मुनिका मण्डुरच्छदा । त्वाष्ट्री दिव्या तथा मेध्या वयस्था च क-
पोतका ॥ ८६७ ॥ सोमवल्ली 'केयदेवे' प्रोक्ता कंकालपर्णिका ।
'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्ता दिव्यतेजा भिषक्जनैः ॥ ८६८ ॥ लावण्या च
तथा द्रव्या 'मदने' परिकीर्तिता । धीरा शंखधरा प्रोक्ता 'त्वमरे' च
भिषगजनैः ॥ ८६९ ॥

गुणाः—ब्राह्मी हिमा कपाया च तित्ता वातास्रपित्तहा । प्रज्ञा-
मेधाकरा प्रोक्ता वैद्यैः 'राजनिघण्टके' ॥ ८७० ॥ मेध्या स्वर्या च पाके
स्यात् स्वादु हृद्या मतिप्रदा । स्मृतिप्रदाऽरुचिघ्नी च मलघ्नी विषहा
तथा ॥ ८७१ ॥ श्वासकासास्रमेहघ्नी पांडुहा 'केयदेवके' । रसे तित्ता
शोफपांडुउवरहा दीपनी तथा ॥ ८७२ ॥ कुष्ठकंठ्ठीहहरा वातहा च
बलासहृत् । प्रोक्ता 'धन्वंतरौ' वैद्यैः 'मदे' चैव सरा स्मृता ॥ ८७३ ॥
रक्तमेहज्वरहरा प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ।

२२ जलब्राह्मी-जलनीम ।

नामानि—ब्राह्मी तु क्षुद्रपत्रान्या लघुब्राह्मी जलोद्भवा ॥ ८७४ ॥
प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविचक्षणैः । हिलमोची शङ्खधरा
जलब्राह्मी तथैव च ॥ ८७५ ॥ 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव
संशयः । बांबी वामी फेनिला च जलजा हिलमोचिका ॥ ८७६ ॥
'द्रव्यरत्नाकरे' चैव संप्रोक्ता रुद्रसंख्यका ।

गुणाः—बांबी तित्ता रसे चोष्णा सरामानिलहा 'नृपे' ॥ ८७७ ॥
शोफकुष्ठव्रणघ्नी च 'केये' पित्तकफापहा ।

२३ वन्दाक-वन्दालु ।

नामानि—वन्दाकः पादपरुहा शिखरी तरुरोहिणी ॥ ८७८ ॥
वृक्षादनी वृक्षरूढा कामवृक्षस्तु शेखरी । केशरूपा तरुहृदा तरुस्था
गन्धमोहिनी ॥ ८७९ ॥ कामिनी तरुर्गु श्यामा वृषदी 'राजनामके' ।

वन्दारः स्याद्वृक्षरुहा तथैव पद्मरूपिणी ॥ ६५० ॥ 'धन्वन्तरिनि-
घण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः । कामना नीलवर्णी च नीलवल्लो
जयद्रुमा ॥ ६५१ ॥ जीवन्ती तु तथा प्रोक्ता 'केये' तु पदरोहिणी ।
तथा 'भावप्रकाशे' तु वृक्षमक्षा प्रकीर्तिता ॥ ६५२ ॥ द्वष्टद्वहा नररुहा
कामाता चन्द्रके 'गणे' ।

गुणाः—चन्दाकस्तु भवेत्तित्तः शिशिरः कफपित्तजित् ॥ ६५३ ॥
श्रमहृत् सिद्धिदो वृष्यो 'नृपे' प्रोक्तो रसायनः । 'धन्वन्तरिनिघण्टे'
तु संप्रोक्तो व्रणरोपणः ॥ ६५४ ॥ कफवातहरः प्रोक्तो 'केये' रक्त-
विषापहः ।

२४ अरण्यकुलत्थिका-वनकुलथी ।

नामानि—ततोरण्यकुलित्था च कुलाली कुम्भकारिका ॥ ६५५ ॥
चक्षुष्या तु कुलित्था च लोचने हितकारिका । दूक्षप्रसादेति संप्रोक्ता
भिषग्भिर्'नृपनामके' ॥ ६५६ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु वैद्यैः प्रोक्ता
मलापहा । 'केयदेवनिघण्टे' तु कुकारी चिपिटा स्मृता ॥ ६५७ ॥
दशसंख्या भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशयः ।

गुणाः—कुलत्था लोचनहिता तित्ताऽशोऽशूलहा कटु ॥ ६५८ ॥
विवन्धाधमानहृद् 'राज्ञि' चक्षुष्या व्रणरोपिणी । नेत्रस्त्रावहरश्चैव
चरस्थिरविषापहा ॥ ६५९ ॥ विस्फोटनेत्रकङ्कहा नेत्रव्रणहरा 'धने' ।
अशोऽहिक्कास्रहा प्रोक्ता 'गणनामनिघण्टके' ॥ ६६० ॥

२५ तन्दुलीयक-चौराई ।

नामानि—तन्दुलीयस्तन्दुली च तन्दुलीयकग्रन्थिलौ । बहुवीर्यो
मेघनादो सुशाकस्तु घनस्वनः ॥ ६६१ ॥ पथ्यशाकस्तु स्फूर्जन्यः खनि-
तावहस्तथैव च । वीरस्तु तन्दुलश्चैव प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' ॥ ६६२ ॥
पिंडिरस्तु घनश्चैव ततस्तन्दुललम्बिका । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु
संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ ६६३ ॥ चांडालस्तु खटालश्च कांडीरस्त-
न्दुली तथा । विषघ्नो मार्षिकश्चैव मारीपः 'केयदेवके' ॥ ६६४ ॥
ततो 'मदनपाले' तु मार्षिकः परिकीर्तितः । 'भावप्रकाशे' संप्रोक्तो
भिषग्भिस्तत्त्वल्पमारिषः ॥ ६६५ ॥

गुणाः—तन्दुलीयस्तु शिशिरो मधुरो विषनाशनः । रुचिरुद्दी-
पनः पथ्यः पित्तदाहभ्रमापहः ॥ ६६६ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु

वैद्यविद्याविचक्षणैः । असृक्ज्वरहरश्चैव प्रोक्तो 'गणनिघंटके' ॥ ६६७ ॥
रक्तपित्तहरो रुक्षो रसे पाके मधु'र्धने' । मदपित्तविषासृग्घ्नो 'केये'
स्यात्सृष्टमूत्रजित् ॥ ६६८ ॥ ततः सृष्टमलघ्नश्च 'मदे' प्रोक्तो भिषक्जनैः ।

२६ चिविल्लिका-छोटी लोनियां ।

नामानि—“चिविल्लिका रक्तदला खरच्छदा स्यात्क्षुद्रघोली
सदुमाभपत्रिका*” ॥ ६६९ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघंटे' तु भिषक्शास्त्र-
परायणैः । दलग्रलोहिता चिल्ली मधुपत्रा तथैव च ॥ १००० ॥ चीर-
पत्रा क्षीरदला वास्तुकी 'धन्वनामके' । वृहद्दला तु रक्ता च गौड-
वास्तुक 'द्रव्यके' ॥ १ ॥ तथा 'मदनपाले' तु सम्यक् प्रोक्ता
महद्दला ।

गुणाः—चिल्ली कटुः कषाया च जीर्णज्वरहरा तथा ॥ २ ॥
रसायनीति संप्रोक्ता 'राजनामनिघंटके' । सरा शीता ग्रीहहा च
रक्तजित् क्रिमिहारका ॥ ३ ॥ त्रिदोषघ्नी 'मदे' प्रोक्ता भिषग्भिः
शास्त्रवेत्तुभिः । श्लेष्मपित्तप्रमेहघ्नी मूत्ररुच्छहरा तथा ॥ ४ ॥
'धन्वन्तरिनिघंटे' च संप्रोक्ता रुचिकारिणी । अग्निवृद्धिकरा 'द्रव्ये'
'भावे' वातहरा तथा ॥ ५ ॥ श्लेष्महृत् पुष्टिकृच्चैव फलमत्स्य-
निषूदनं ।

२७ हस्तिशुण्डी-हाथीशुण्डा ।

नामानि—हस्तिशुण्डी महाशुण्डी शुण्डी धूसरपत्रिका ॥ ६ ॥

गुणाः—हस्तिशुण्डी तु कृष्णा च सन्निपातज्वरापहा । प्रोक्ता
'राजनिघंटे' तु पुरातनभिषग्वरैः ॥ ७ ॥

२८ कुटुंबिनी-अन्धाहूली†

नामानि—कुटुंबिनी पयस्या च क्षीरिणी जलकामुका । वक्रश-
ल्या दुराधर्षा क्रूरकर्मा भिरिंटिका ॥ ८ ॥ शीता प्रहारजाया

*वृत्त-भेदी वर्ततेऽत्र ।

†अन्धाहूलीकी वेलि गुर्चकी वेलिके समान मोटी होती है । इसकी छाल
जामुनी रङ्गकी और पत्त पीपलके समान किन्तु जरा चौड़े होते हैं । पत्त
तोड़ने से सफेद दूध निफलता है । इसकी डण्ठीमें दो बोड लगते । ये
छिगुनियाके समान मोटे और दोधारके होते हैं । इनमें रेशमके समान रुई
निकलती है ।

च शीतला तु जलेरुहा । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ ९ ॥ अर्कपुष्पी वज्रशल्या दुरामोघा भिरिंटिका । केयदे-
वनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः ॥ १० ॥ ततो 'मदनपाले' तु
जलकामाऽभिरणुका । पयस्था जलकामा च चित्रशल्या दुरामया
॥ ११ ॥ एकविंशतिसंख्येति प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः ।

गुणाः—कुटुंबिनी तु मधुरा ग्राहिणी कफपित्तहा ॥ १२ ॥
कङ्कूरकम्रणहरा 'नृपे' प्रोक्ता रसायनी ।

२९ स्थलपद्मिनी-स्थलकमलनी ।

नामानि—सुगंधमूला पद्मावहा तथैव स्थलपद्मिनी ॥ १३ ॥
तथैवांबुरुहा चेति चारटी पद्मचारिणी । लक्ष्मीश्रेष्ठा तु लक्ष्मी च
रम्या चैव सुपुष्करा ॥ १४ ॥ चरस्थलरुहा चैव तथा पद्मावती मता ।
ततः पुष्करवर्णी च तथा पुष्करिणी मता ॥ १५ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
तु भिषक्शास्त्रपरायणैः । गंधमूलातिपत्रा च पद्मचारी सुपुष्कला
॥ १६ ॥ 'धन्वंतरिनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः । 'द्रव्यरत्नाकरे'
चैव वर्तकी परिकीर्तिता ॥ १७ ॥ व्यथा त्वतिवसा चैव वारटी
'मदने' स्मृता । तथा त्वतिचरा चैव प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ १८ ॥
चतुर्विंशतिसंख्याका प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः ।

गुणाः—तिक्ता शीता च वातघ्नी रक्तपित्तहरा तथा ॥ १९ ॥
मेहातिसारहा प्रोक्ता 'राजनामनिघण्टके' । उष्णा कटुः कफोद्भूत-
वातहा मूत्रकृच्छ्रजित् ॥ २० ॥ अश्मरीशूलविपहा श्वासकासहरा 'भवे'
मोहापस्मारहा प्रोक्ता 'धन्वंतरिनिघण्टके' ॥ २१ ॥ श्लेष्मश्वास-
कृच्छ्रघ्ना 'मदे' प्रोक्ता भिषजनैः । 'गणनामनिघण्टे' तु शूलघ्ना
परिकीर्तिता ॥ २२ ॥ तृष्णादाहप्रशमनी 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ।

३० नागदमनी-नागदमन ।

नामानि—जंबूजांबवती वृत्ता वृत्तपुष्पा च जांबवी । मदघ्नी
नागदमनी दुर्घर्षा दुःसहा तथा ॥ २३ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु
भिषग्भिः शास्त्रवित्तमैः । महा योगेश्वरी चैव तथा योगेश्वरीश्वरी
॥ २४ ॥ नागदंती नागपत्री राक्ता सर्वभयापहा । सर्वगंधा सर्वसहा
विषदंष्ट्रा विषापहा ॥ २५ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः ।

दमनी नागगंधा च नागा भुजगपर्णिका ॥ २६ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव
भिषग्भिः परिकीर्तिता । प्रोक्ता 'मदनपाले' तु नागपत्रा भुजंगिनी
॥ २७ ॥ बलामोटा नागपुष्पी प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ।

गुणाः—ततस्तु नागदमनी तित्कोष्णा च त्रिदोषहा ॥ २८ ॥
कटुतिक्तोदराध्मानहारिणी कोष्ठशोधिनी । 'राजनामनिघण्टे' तु प्रोक्ता
वैद्यैर्न संशयः ॥ २९ ॥ मोहापस्मारदोषघ्नी 'धन्वंतरिनिघण्टके' ।
तृष्णादाहहरा प्रोक्ता 'द्रव्यनामनिघण्टके' ॥ ३० ॥ व्रणरक्षेत्रहघ्नी
च सर्पोद्भवविषापहा । लूताज्वालागदभघ्नी प्रोक्ता 'केयनिघण्टके'
॥ ३१ ॥ कफवातहरा प्रोक्ता वैद्यै 'द्रव्यनिघण्टके' । जयंकरा च
धनदा 'भावे' च सुमतिप्रदा ॥ ३२ ॥ कोष्ठशूलहरा चैव योनिदो-
षहरा 'गणे' ।

३१ नागदंती-नागाली ।

नामानि—नागदंती श्वेतघंटा मधुपुष्पी विशोधनी ॥ ३३ ॥
नागस्फोटा विशालाक्षी नागछत्रा विचक्षणा । सर्पपुष्पा शुक्लपक्षी
स्वादुका शीतदंतिका ॥ ३४ ॥ सितपुष्पी सर्पदंती नागिनी 'राज-
नामके' । नागविन्नाश्वेतदंता एकपर्णी गरस्फुटा ॥ ३५ ॥ मधुपुष्पा
सशल्या च कांडिनी पर्वपुष्पिका । श्वेतघंटा शूलिनी च रामदूतीति
'केयके' ॥ ३६ ॥ विषमद्रा केशरुहा 'द्रव्यनामनिघण्टके' । अष्टविंश-
तिसंख्येति प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः ॥ ३७ ॥

गुणाः—नागदंती कटुस्तिक्ता रक्षा वातकफापहा । गुल्मशूलो-
दरघ्नी च कंठरोगहरा 'नृपे' ॥ ३८ ॥ तृष्णाछर्दिहरा चैव प्रोक्ता
'गणनिघण्टके' ।

३२ विष्णुक्रांता ।

नामानि—विष्णुक्रांता हरिक्रांता नीलपुष्पाऽपराजिता ॥ ३९ ॥
नीलक्रांता सुनीला च विक्रांता छर्दिका तथा । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
तु भिषक्शास्त्रपरायणैः ॥ ४० ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव वश्या प्रोक्ता
मनीषिभिः । तथा 'गणनिघण्टे' तु क्षुरिका च प्रकीर्तिता ॥ ४१ ॥
आस्फोटा गिरिकर्णेति 'काशे' प्रोक्ता भिषग्वरैः । अर्कसुता जया
चैव वर्षगंधा विषोदरा ॥ ४२ ॥ असीतका सूक्ष्मपत्रा 'केयदेव
निघण्टके' ।

गुणाः—विष्णुक्रांता कटुस्तिक्ता कफघातहारा तथा ॥ ४३ ॥
विषहा पाचनी चैव शुभदायी 'नृपे' स्मृता । बुद्धिस्मृतिकरा चैव
व्रणक्रिमिकफापहा ॥ ४४ ॥ 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता शा-
स्त्रवेत्तभिः ।

३३ कुणंजर-लहेसुवा ।

नामानि—कुणंजरः कुणंजी च कुणंजोरण्यवास्तुकः ॥ ४५ ॥
प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रपरायणैः । सप्तसंख्येति संप्रोक्ता
पुरातनचिकित्सकैः ॥ ४६ ॥

गुणाः—कुणंजो मधुरो रुच्यो दीपनः पाचनो 'नृपे' । हिमो
वृष्यो मेहहरो रक्तपित्तहरो 'द्रवे' ॥ ४७ ॥

३४ भूम्यामलकी-भुइआंवला ।

नामानि—ततो भूम्यामलो ताली वितुन्ना दूढपादिका । उच्चटा
चारटी वृष्या भूधात्री च हिमालया ॥ ४८ ॥ वीराऽजरा विश्व-
पर्णी तथा हि भयदा मता । विन्दुपत्री विषघ्नी च बहुवीर्या तमा-
लिका ॥ ४९ ॥ वितुन्निकेति संप्रोक्ता 'राजनामनिघण्टके' । तामला
च जटाताली तमालं च तमालिनी ॥ ५० ॥ वितुन्नं तातमालं च
भूधात्री तु तमालकी । ऋटामला ऋटा चैव 'काशे' प्रोक्ता भिष-
ग्वरैः ॥ ५१ ॥ उत्तमा दूढपादी च बहुपुत्रा शिवा तथा । चामलकी
दूढा माला हिमा सूक्ष्मफला तथा ॥ ५२ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु
प्रोक्ता वैद्यविशारदैः । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव जटांता च शिखा स्मृता
॥ ५३ ॥ ततो 'मदनपाले' तु संप्रोक्ता चाजटा तथा । तद्वद्वृफला
चैव प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ ५४ ॥ सुलोकिनी विष्णुपर्णी तमा-
लका तमा 'गणे' ।

गुणाः—भूम्यामलो कषायाम्ला शिशिरा मूत्ररोगहा ॥ ५५ ॥
हिमा-चातकरा पांडुपित्तरक्तकफापहा । विषकुष्ठश्वासहरा तृपादा-
हहरा 'नृपे' ॥ ५६ ॥ हिध्माक्षतक्षयहरा प्रोक्ता 'केयनिघण्टके' ।

३५ गोरक्षी-गोरख इमली ।

नामानि—गोरक्षी सर्पदंडी च दीर्घदंडी सुदंडिका ॥ ५७ ॥
चित्रला गन्धबहुला गोपाली पंचपर्णिका । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
तु वसुसंख्या भिषगजनैः ॥ ५८ ॥

गुणाः—गोरक्षी मधुरा तिक्ता शिशिरा दाहपित्तनुत् । विस्फो-
टवांत्यतीसारज्वरशोषविनाशिनी ॥ ५८ ॥

३६ गोलोमी ।

नामानि—गोलोमी गोधुमो चैव गोजा क्रोष्टुकपुच्छिका ।
गोसंभवा प्रस्तरणी प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ६० ॥ षट्संख्या मि-
षभिस्तु संप्रोक्ता नैव संशयः ।

गुणाः—गोलोमी तु कटुस्तिक्ता त्रिदोषघ्नी हिमा 'नृपे' ॥ ६१ ॥
रक्ताशोहा ग्राहिणी च दीपनी तत्र संस्मृता । अश्मरीमेहहा प्रोक्ता
'द्रव्यनाम्निनिघण्टके' ॥ ६२ ॥

३७ दुग्धफेनी-दूधफेनी ।

नामानि—दुग्धफेनी पयःफेनी फेनदुग्धा पयःस्विनी । लूतारि-
व्रणकेतुश्च गोजापणीति 'राजके' ॥ ६३ ॥ षट्संख्या कथिता पूर्व
पुरातनभिषग्वरैः ।

गुणाः—दुग्धफेनी कटुस्तिक्ता कषाया शिशिरा तथा ॥ ६४ ॥
विषव्रणहरा रुच्या 'नृपे' प्रोक्ता रसायनी ।

३८ चांगेरी-क्षुद्राम्लिका, अम्बाटी ।

नामानि—क्षुद्राम्ला चैव चांगेरी चुकाम्ला चुक्रिका तथा
॥ ६५ ॥ लोणाम्ला च चतुःपर्णी लोणी लोणाम्लपत्रिका । अंबष्ठा-
म्लघती चाम्ला तथा दन्तशठा मता ॥ ६६ ॥ शस्त्रांगा चाम्लपत्रीति
प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । तथाम्ललोटिका लोटा 'धन्वनामनिघण्टके'
॥ ६७ ॥ अम्लिकाऽम्लष्टका चैव लोटिका लोणिका तथा । सुनीला
राजमाता च अम्लाटा चाम्लदोलका ॥ ६८ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु
प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः । अश्मन्तकोऽम्लपत्रा च कुशली शफरी तथा
॥ ६९ ॥ प्रोक्ता 'भावप्रकाशे' च वैद्यविद्याविशारदैः । सुनिषण-
कपत्रश्च चूता 'गणनिघण्टके' ॥ ७० ॥

गुणाः—क्षुद्राम्लिका रसे चाम्ला चोष्णा वन्निहिविवर्द्धिनी ।
रुचिरुद्ग्राहिणी चैव तथार्शःकफहा नृपे' ॥ ७१ ॥ आमवातहरा
चैव प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं । पित्तला ह्यतिसारघ्नी 'केये' कफ-
मरुद्धरा ॥ ७२ ॥ मुखशोधनिका 'द्रव्ये' 'मदे' कुष्ठहरा स्मृता ।

३६ रक्तपादी-छोटी लजालू ।

नामानि—रक्तपादी शमीपत्रा स्पृका खदिरपत्रिका ॥ ७३ ॥
 संकोचनी समंगा च नमस्करी प्रसारिणी । लज्जालूः सप्तपर्णी च
 खदिरी गण्डमालिका ॥ ७४ ॥ लज्जा च लज्जिका चैव स्पर्शलज्जा च
 रोहिणी । रक्तमूला ताम्रमूला खगुतांजलिकारिका ॥ ७५ ॥ प्रोक्ता
 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रपरायणैः । 'धन्वन्तरौ' गन्धकारी
 जयकारी प्रकीर्तिता ॥ ७६ ॥ जयारुणा खदिरका गण्डकाली प्रो-
 धिनी । 'कैयदेवनिघण्टे' तु रुहा च परिकीर्तिता ॥ ७७ ॥ तथा 'म-
 दनपाले' तु लोहिता मोहिनी स्मृता ।

गुणाः—रक्तपादी कटुः शीता पित्तातिसारजित्त्वा ॥ ७८ ॥
 शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफापहा । कुष्ठघ्नी 'राजनाम्नीति' निघण्टे
 परिकीर्तिता ॥ ७९ ॥ कफपित्तहरा चैव योनिरोगविनाशिनी ।
 रक्तपित्तहरा 'प्रोक्ता' 'कैयदेवनिघण्टके' ॥ ८० ॥ रक्तदाहविषघ्नी च
 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता । विसर्पलूताभूतघ्नी 'मदे' तु व्रणरोपणी ॥ ८१ ॥

४० वैपरीत्या, लज्जालूः-बड़ी लाजवन्ती ।

नामानि—लज्जालूवैपरीत्या च तथैव तु वृहदला । अल्पश्रुपा
 वेदसंख्या संप्रोक्ता 'राजनामके' ॥ ८२ ॥

गुणाः—वृहदलज्जालूका चोष्णा कट्वी कफविनाशिनी । आमहा
 रसनिष्पत्तिर्नानाविज्ञानदा 'नृपे' ॥ ८३ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्ता
 व्रणपित्तातिसारजित् । 'मदे' तु श्लेष्मपित्तघ्नी योनिरोगहरा
 स्मृता ॥ ८४ ॥

४१ हंसपादी-पगी, लजालू भेद ।

नामानि—त्रिपदा रक्तपादी च तथैव हंसपादिका । घृतमंड-
 लिका चैव विश्वग्रन्थिस्त्रिपादिका ॥ ८५ ॥ त्रिपादी कीटमारी च
 हेमपादी मधुस्रवा । कर्णाटी ताम्रपत्री च विक्रान्ता सुवहा तथा
 ॥ ८६ ॥ ब्रह्मादनी पदाङ्गो च शीताङ्गी सुतपाङ्कुका । सञ्चारिणी च
 पदिका प्रल्हादो कीटपादिका ॥ ८७ ॥ गोधापदी च हंसाग्निः धार्त-
 राष्ट्रपदी तथा । हंसपादी च विज्ञेया 'राजनामनिघण्टके' ॥ ८८ ॥

कीटनामा कीटमाता 'केये' तु हविमण्डला । तथा 'गणनिघण्टे' तु घृत-मण्डा बहुस्रवा ॥ ८६ ॥

गुणाः—हंसपादी कटूष्णा च विषभूतभ्रमापहा । अपसारहरा चैव 'नृपे' प्रोक्ता रसायनी ॥ ८७ ॥ विजया तु 'धने' प्रोक्ता भिषग्भिः शास्त्रपारगैः । हिमा गुर्वी रोपणी च रक्तदाहातिसारजित् ॥ ८८ ॥ विसर्पलूताभूतघ्नी व्रणहा 'केयदेवके' ।

४२ अश्वकाथरिका-घोडाकाथरा ।

नामानि—काथरा हयपर्यायैः काथरांतैः प्रकीर्तिता ॥ ८९ ॥ वेदसंख्येति संप्रोक्ता 'राजनाम्नि' निघण्टके ।

गुणाः—अश्वकाथरिका तिक्ता वातघ्नी दीपनी 'नृपे' ॥ ९३ ॥

४३ श्वेता पुनर्नवा-सफेद गदापूर्णा ।

नामानि—पुनर्नवा विशाखश्च कठिल्लः शशिवाटिका । पृथ्वी च सितवर्षा भूर्दीर्घपत्रः कठिल्लकः ॥ ९४ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रविशारदैः । शिवाटिका वृश्चिकश्च महावर्षाभवस्तथा ॥ ९५ ॥ श्वेतमूलस्तु संप्रोक्ता 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । क्षुद्रपत्रो वर्ष-केतुः 'केये' तु रक्तवृन्तकः ॥ ९६ ॥

गुणाः—श्वेता पुनर्नवा तूष्णा तिक्ता कफविनाशिनी । कास-हृद्रोगशूलघ्नी पांडुशोफविनाशिनी ॥ ९७ ॥ वातहा भिषजां नाथैः प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । शोफोदरहरा 'द्रव्ये' प्रोक्ता वैद्यैर्न संशयः ॥ ९८ ॥ मधुरा तु गुरुश्चैव वातशोथहरा तथा । रसायनीति कविभिः प्रोक्ता 'मदनपालके' ॥ ९९ ॥ रूक्षा क्षतहरा प्रोक्ता वैद्यैः 'धन्वनिघण्टके' । दीपना वातकफहा हृद्या रुच्यार्शनाशिनी ॥ १०० ॥ व्रणोदर-गरघ्नीति प्रोक्ता 'केयनिघण्टके' ।

४४ रक्ता पुनर्नवा-लाल गदापूर्णा ।

नामानि—पुनर्नवा तु रक्ताख्या क्रूरा मंडलपत्रिका ॥ १ ॥ रक्त-कांडा वर्षकेतुर्लोहिता रक्तपत्रिका । वैशाखी रक्तवर्षाभूः शोफघ्नी रक्तपुष्पिका ॥ २ ॥ पिकखरा विषघ्नी च प्रावृषेण्या च सारिणी । वर्षाभवः शोणपत्रो शोणः सम्मिलितद्रुमः ॥ ३ ॥ पुनर्नवो नवो नव्यः प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' । कुठिल्लकस्तु संप्रोक्तो 'धन्वन्तरि-

निघण्टके' ॥ ४ ॥ पुनर्मू वृश्चिकश्चैव सदामंडलपत्रकः । वर्षाभूः
क्षुद्रवर्षाभूः शोफघ्नी जटिला तथा ॥ ५ ॥ सद्यो विशाखः संप्रोक्तो
'केयदेवनिघण्टके' । दीर्घवर्षोद्भवा चैव तथैव दीर्घमंडलः ॥ ६ ॥
प्रोक्ता 'मदनपाले' तु वैद्यविद्याविशारदैः । वैशाखो विक्रता चैव
प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' ॥ ७ ॥

गुणाः—रक्ता पुनर्नवा तिक्ता सारिणी शोफनाशिनी । रक्त-
प्रदरहा पित्तपांडुरोगहरा 'नृपे' ॥ ८ ॥ रक्तपित्तहरा चैव कफहा
'द्रव्यरत्नके' । हिमा पाके कटु लघु संग्राही वातला तथा ॥ ९ ॥
पित्तदृक्कफरक्तघ्नी प्रोक्ता 'केयनिघण्टके' ।

४५ नीलपुनर्नवा-नील गदापूर्णा ।

नामानि—नीला पुनर्नवा नीला श्यामा नीलपुनर्नवा ॥ १० ॥
कृष्णाख्या नीलवर्षाभूर्नीलिनी स्वाभिधान्विता ।

गुणाः—नीला पुनर्नवा तिक्ता कटूष्णा च रसायनी ॥ ११ ॥
हृद्रोगपांडुश्वयथुश्वासवातकफापहा ।

४६, ४७ श्वेता वसु, रक्ता वसु-सफेद वसु, लाल वसु ।

नामानि—वसुकोथ वसुः शैवो वसश्च शिवमल्लिका ॥ १२ ॥
ततः पाशुपतश्चैव ग्रहसंख्येति 'राजके'

गुणाः—श्वेतरक्तवसुश्चैव कटुस्तिक्तोष्ण एव च ॥ १३ ॥
पाके शीतौ दोषनौ च ह्यजीर्णानिलगुल्महे ततस्तु श्वेतवसुको 'नृपे'
प्रोक्तो रसायनः ॥ १४ ॥

४८ सर्पिणी ।

नामानि—भुजंगी सर्पिणी चैव कुंडली पन्नगी फणी भोगी
'राजनिघण्टे' तु षट् प्रोक्ता भिषजावरैः ॥ १५ ॥

गुणाः—सर्पिणी तु विषघ्नी च कुचवृद्धिप्रदा । 'नृपे'

४९ वृश्चिका-विछुवा, अगिया ।*

नामानि—वृश्चिका नखपर्णी च पिच्छिलाप्यलिपत्रिका ॥ १६ ॥

प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वेदसंख्या भिषक्जनैः

गुणाः—वृश्चिका पिच्छिलाऽऽस्ता च ह्यन्त्रवृद्ध्यादिहा 'नृपे' १७

५० मत्स्याक्षी जलपीपली, मछेली, गङ्गातिरियां ।

नामानि—ब्राह्मी वयस्या मत्स्याक्षी मीनाक्षी सामवल्लरी प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रपरायणैः ॥ १८ ॥ वच्ची तु भ्रूषनेत्रा च 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता तथा 'मदनपाले' तु वाल्हिका परिकीर्तिता ॥ १९ ॥

गुणाः—मत्स्याक्षी शिशिरा रुच्या व्रणकफहरा 'नृपे' 'द्रव्यरत्ने' च भेदीति भिषग्भिः परिकीर्तिता ॥ २० ॥ ब्राहिणी वातला चैव पाके तु कटुका स्मृता कफपित्तास्रकुष्ठघ्नी । 'केयदेवे' स्मृता बुधैः ।

५१ गुंडाला-गोंडाल ।

नामानि—गुंडाला तु जलोद्भूता गुच्छबुध्ना जलाश्रया ॥ २१ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्श्रेष्ठैर्न संशयः । कुम्भिका वारिपर्णीति प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ २२ ॥

गुणाः—गुंडाला कटुतिक्तोष्णा व्रणशोफहरा 'नृपे' । कृमिहा 'द्रव्यरत्ने' तु 'भावे' प्रोक्ता हिमा सरा ॥ २३ ॥ दोषत्रयकरी रक्षा ज्वरघ्नी रक्तशोषहा ।

५२ भूपाटली-भुइपाडर ।

नामानि—भूपाटली च भूकुम्भी भूताली रक्तपुष्पिका ॥ २४ ॥

*विछुवाका वृक्ष छोटा होता है पत्ते बड़े होते हैं और उनके शरीर पर लगनेसे वहां आग छूटती है । इसके पत्तों पर सफेद रोंवे होते हैं । पत्ते कुछ कालापन लिये होते हैं ।

†जल पीपली नदी तथा जलाशयोंके किनारे होती हैं । पत्ते कटे हुए लम्बे होते हैं । पत्ते खानेमें लसीले होते हैं । इसमें पीपलके समान लम्बी फली लगती है; इसका शाक बनाया जाता है । इसको मछेन्द्रा और पनिसिंगा भी कहते हैं ।

प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्विद्या विशारदैः ।

गुणाः—भूपाटली कटूष्णा च पारदे सुप्रयोजिका ॥ २४ ॥ 'नृपे'
'द्रव्ये' तु बला तथा वीर्यविवर्द्धिनी ।

५३ पांडुफली-पाटली ।

नामानि—पांडु पांडुफली चैव धूसरा वृत्तबीजका ॥ २६ ॥
फली भूरिफली चैव पाटली 'राजनामके' ।

गुणाः—पांडुफली तु शिशिरा कृच्छ्ररक्तहरा बला ॥ २७ ॥ मूत्रा-
घातहरा तृष्णापित्तहा 'राजनामके' ।

५४ केना ।

नामानि—केना तु छुरिका पत्री पर्वमूला त्वविप्रिया ॥ २८ ॥
प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्विद्याविशारदैः । कर्णमोदा तु संप्रोक्ता
'द्रव्यरत्नाकरे' तथा ॥ २९ ॥

गुणः—केना तु मधुरा शीता स्तन्यदा रुचिकृत् 'नृपे' । 'द्रव्ये'
वृष्या मेहहरा रक्तपित्तहरा स्मृता ॥ ३० ॥

ब्रह्मदंडी-उटकटारा ।

नामानि—ब्रह्मदंड्यजदंडी च कंटपत्रफला 'नृपे' ।

गुणाः—ब्रह्मदंडी कटूष्णा च कफशोफविनाशिनी ॥ ३१ ॥
वातहंत्रीति संप्रोक्ता 'राजनामनिघण्टके' ।

५६ द्रवन्ती-छोटी मूसाकानी ।

नामानि—द्रवन्ती शंवरी चित्रा न्यग्रोधी शतमूलिका ॥ ३२ ॥
प्रत्यक्ष्रेणी वृषा चण्डा पत्रश्रेण्याखुपत्रिका । प्रतिपर्णी मूषिकाव्हा
चिक्रांता तु शिफा च सा ॥ ३३ ॥ सहस्रमूली संप्रोक्ता 'राजनाम-
निघण्टके' ।

गुणाः—द्रवन्ती मधुरा शीता रसबंधकरी परा ॥ ३४ ॥ ज्वर-
क्रिमीशूलहरा 'नृपे' प्रोक्ता रसायनी ।

५७ द्रोणपुष्पी-गोमा ।

नामानि—द्रोणपुष्पी दीर्घपत्रा कुम्भघोनि कुतुंबिका ॥ ३५ ॥
चित्रध्रुपः कुतुम्बा च सुपुष्पा चित्रपत्रिका । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'

तु वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥३६॥ द्रोणा छात्रा कुरम्बा च 'केयदेवे' स्मृता बुधैः । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव पालिदी परिकीर्तिता ॥ ३७ ॥ तथा 'मदनपाले' तु प्रोक्तः श्वसनको ध्रुव ।

गुणाः—द्रोणपुष्पी कटूष्णा च रुच्या वातकफापहा ॥ ३८ ॥ अग्निमांघहरा चैव वातज्वरनिवारिणी । 'राजनामनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ३९ ॥ पाके स्वादु तु रुक्षा च भेदिनी वातपित्तहा । कफामकामलाशोफनाशिनी 'केयदेवके' ॥ ४० ॥ गुरु वृष्या कृमिहरा प्रोक्ता 'मदनपालके' । तमकश्वासजित्प्रोक्ता वैद्यैः 'भाविप्रकाशके' ॥ ४१ ॥

५८ महाद्रोणा-बड़ा गोमा ।

नामानि—महाद्रोणा कुरम्बा च देवपूर्वक एव च । दिव्यपुष्पी महाद्रोणी देवीकांडा तथैव च ॥ ४२ ॥ देवद्रोणा भिषग्भिस्तु संप्रोक्ता 'राजनामके' । कौंडिन्यस्तु महादेवस्तथा देवकुरम्बकः ॥ ४३ ॥ कुसुम्भकश्च संप्रोक्तो 'केयदेवनिघण्टके' । वृक्षसारस्तु संप्रोक्तो वैद्यैः 'मदनपालके' ॥ ४४ ॥

गुणाः—देवकुम्भा कटुस्तिक्ता भेद्या भूतार्तिवातहा । कफाग्निमांघहृत्प्रोक्ता 'नृपे' पारदशोधिनी ॥ ४५ ॥

५९ भेण्डुक-भेंडू ।*

नामानि—भेण्डूः स्यात्सलपुष्पा तु भेंडूको 'राजनामके' ।

गुणाः—भेंडुः कटुः कषायश्च भूतज्वरहरो 'नृपे' ॥ ४६ ॥ 'द्रव्यरत्ने' तु मेहघ्नो संप्रोक्तो भिषजांवरैः ।

६० गोरक्षदुग्धी-गोरखदुधी ।†

नामानि—गोरक्षदुग्धी गोरक्षी ताम्रदुग्धी रसायनी ॥ ४७ ॥ बहुपत्रा मृतञ्जीवी मृतसञ्जीवनी 'नृपे' ।

गुणाः—गोरक्षदुग्धी मधुरा वृष्या संग्राहिका हिमा ॥ ४८ ॥

* भेंडूका वृक्ष लगभग एक पुरुष ऊंचा बढ़ता है । इसपर एकपर एक कलङ्गी लगती है और वह रोवेंसे भरी रहती है ।

† यह अन्धाङ्गली जातिकी घनस्पति है । इसमेंसे जो दूध निकलता है वह लाल रङ्गका होता है ।

सर्ववश्यकरी चैव रसे सिद्धिगुणप्रदा । 'नृपे' 'द्रव्ये' स्तम्भिनो च
मेहहा संस्मृता बुधैः ॥ ११४६ ॥ इति श्रीसिद्धेश्वरप्रेरिते राघवविर-
चिते निघण्टशिरोमणे पर्पटादिशुद्धशुभवर्गः समाप्तः ॥

४ पिप्पल्यादिवर्गः ।

पिप्पली-पीपली ।

नामानि—पिप्पली कृकरा शौंडी चपला मागधी कणा ।
कटुबीजा च कोरङ्गी वैदेही तिक्ततण्डुला ॥ १ ॥ श्यामा दन्तफला
कृष्णा कोला च मगधोद्भवा । उषणा चोपकुल्याच तथैव तीक्ष्ण-
तण्डुला ॥ २ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वसुभूसंख्यकेति च ।

गुणाः—पिप्पली ज्वरहा वृष्या स्निग्धा कटुतिक्तका
॥ ३ ॥ दीपनी वातहा श्वासकासश्लेष्महरा 'नृपे' । वातश्लेष्म-
क्षयहरा प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवम् ॥ ४ ॥ आर्द्रा गुणे हिमा गुर्वी
खाद्री स्निग्धा कफप्रदा । जीर्णज्वरहरा प्रोक्ता वैद्यैर् 'भाविप्रकाशके'
॥ ५ ॥

२ गजपिप्पली-गजपीपर ।

नामानि—गजोषणा चव्यफला चव्यजा गजपिप्पली । श्रेयसी
क्षुद्रवैदेही दीर्घग्रंथिश्च तैजसी ॥ ६ ॥ वर्तुली स्थूलवैदेही प्रोक्ता
'राजनिघण्टके' 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु चविका परिकीर्तिता ॥ ७ ॥
वंशिकः सर्वदापुष्पस्तथामर्कटपिप्पली । करंजो पार्वतेयश्च गजकृष्णा
तदुत्तरं ॥ ८ ॥ प्रोक्ता 'गणनिघण्टे' तु मिषकविद्याविशारदैः ।
गजावहा इभकृष्णाच वशिरो हस्तिपिप्पली ॥ ९ ॥ करिकृष्णा
'केयदेवे' कपिवल्ली तु 'भावके' । राजकृष्णा कोलवल्ली 'द्रव्यरत्ने'
प्रकीर्तिता ॥ १० ॥

गुणाः—गजोषणा कटूष्णा च रुक्षा मलविशोषणी । बलास-
वातहन्त्री च स्तन्यकर्णविबद्धिनी ॥ ११ ॥ 'नृपे' 'केय' कटुः पाके
वीर्योष्णा वातश्लेष्महा । कृमिश्वासातिसारघ्नी दीपनी कण्ठरोगहा
॥ १२ ॥

शुष्कापिप्पली ।

शुष्का लघुः स्वादुपाका तथैव च रसे कटुः । सरा च कामला-
हन्त्री कफगुल्मविनाशिनी ॥ १३ ॥ कुष्ठकण्ठरुजाहन्त्री 'मदने'

परिकीर्तिता । मूत्रकृच्छ्राश्मरीहन्त्री तथा विस्कोटनाशिनी ॥१४॥
 येनिशूलप्रहन्त्रीति प्रोक्ता वैद्यै 'गणै' ध्रुवम् । 'द्रव्यारत्नाकरे'
 वैद्यै भेदिनी परिकीर्तिता ॥ १५ ॥ वृष्या पाके स्वादुरसा पित्तला
 च रसायनी । कासोदरप्रहन्त्री च कुष्ठगुल्मार्शनाशिनी ॥ १६ ॥
 आमवातप्रमेहघ्नी शूलहा 'मदने' स्मृता ।

३ सैहली पिप्पली-सिंहली पीपर ।

नामानि—सैहली सर्पदण्डा च सर्पांगी ब्रह्मभूमिजा ॥ १७ ॥
 पार्वती शैलजा मूलं लम्बवीजैत्कटाद्रिजा । सिंहलस्था लम्ब-
 दन्ता जीवाला चैव जीवला ॥ १८ ॥ कुरवी जीवनेत्रा च प्रोक्ता
 'राजनिघण्टके' । सिंहली नीलिकानाडी कुरंटी सितवारिका
 ॥ १९ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव भिषग्भिः परिकीर्तिता ।

गुणाः—सैहली कटुरूपा च जन्तुघ्नी दीपनी परा ॥ २० ॥
 कफश्वासानिलघ्नी च कोष्ठशोधनिका 'नृपे' । 'द्रव्ये' शीतारेचनी
 च वृष्यामानिलशोधिनी ॥ २१ ॥

४ वनपिप्पली-वनपीपर ।

नामानि—सूक्ष्मा क्षुद्रा वनस्था च पिप्पली 'राजनामके' ।
 गुणाः—वनस्था पिप्पली रुच्या तीक्ष्णोष्णा दीपनी 'नृपे'
 ॥ २२ ॥ आर्द्रा भवद्गुणाढ्या तु शुष्का स्वल्पगुणा स्मृता ।

५ पिप्पलीमूल-पीपरामूल ।

नामानि—ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं मूलं तु चटका शिरः ॥ २३ ॥
 कोलमूलं कटुग्रन्थी कटुमूलं कटूषणं । सर्वग्रन्थिस्तु पत्राढ्यं
 विरूपं शोणसम्भवं ॥ २४ ॥ सुग्रन्थि ग्रन्थिलं चैव संप्रोक्तं 'राज-
 नामके' । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु संप्रोक्तं चविकाशिरः ॥ २५ ॥ कणा-
 मूलं मागधं च रुढकं मगधाजटा । षड्ग्रन्थिस्तु सुसंप्रोक्ता 'के-
 देवनिघण्टके' ॥ २६ ॥ कृष्णामूलं तथा चाग्निग्रन्थिकं 'द्रव्यनामके' ।
 शौण्डिकं चपलामूलं संप्रोक्तं 'गणनामके' ॥ २७ ॥

गुणाः—ततस्तु पिप्पलीमूलं कटूष्णं श्लेष्मनाशनं । कुमिहृद्दी-
 पनं चैव वातरोगविनाशनं ॥ २८ ॥ रोचनं पित्तलं चैव 'नृपे' प्राक्तं

भिषक्जनैः । श्वासकासापहं 'द्रव्ये' 'मदे' चेदररोगजित् ॥ २६ ॥
पाचनं च तथा रुक्षं संप्रोक्तं वैद्यनायकैः । आनाहृष्टीहगुल्मघ्नं
क्षयघ्नं 'भावनामके' ॥ ३० ॥

६ शुण्ठी-सोठ ।

नामानि—शुंठी महौषधं विश्वं नागरं विश्वभेषजं । विश्वौषधं
कटुग्रन्थिः कटुभद्रं कटूषणं ॥ ३१ ॥ सौपर्णं शृङ्गवेरं च कफारिश्वा-
र्द्रकः स्मृतः । शोषणं नागरावहं च प्रोक्तं 'राजनिघंटके' ॥ ३२ ॥
'धन्वन्तरिनिघंटके' तु आर्द्रिकं परिकीर्तितं । कटूत्कटं 'केयदेवे'
भिषग्भिः परिकीर्तितं ॥ ३३ ॥ सप्तभूसंख्यका प्रोक्ता भिषक्विद्या-
विशारदैः ।

गुणाः—शुंठी कटूष्णा स्निग्धा च कफशोषविनाशिनी ॥ ३४ ॥
वायुशूलप्रहन्त्री च बद्धोदरविनाशिनी । श्वासाध्मानश्लीपदघ्नी
प्रोक्ता 'राजनिघंटके' ॥ ३५ ॥ आमवातप्रहन्त्री च पाचनी 'मदने'
स्मृता । अरुचिघ्नी च वृष्या च वातोदरविनाशिनी ॥ ३६ ॥ कास-
पाण्डुहरा प्रोक्ता 'धन्वन्तरिनिघंटके' । पाके तु मधुरं प्रोक्तं मलसंग्रा-
हिकं तथा ॥ ३७ ॥ हृद्यं स्वयं वातकफहृद्गोशोविनाशनं । आमघ्नं
पित्तलं 'केये' हिध्मानाहवमेहरा ॥ ३८ ॥

७ आर्द्रक-अदरक ।

नामानि—आर्द्रकं गुल्ममूलं च मूलजं कन्दलं वरं । शृङ्गवेरं
महीजं च सैकतेष्टमनूपजं ॥ ३९ ॥ अपाकशाकमाद्राख्यं राहुलत्रं
सुशाककं । आर्द्रशाकं तु शार्ङ्गं च सच्छाकं 'राजनामके' ॥ ४० ॥
कन्दरं च महाजम्बु 'धन्वन्तरिनिघंटके' । ककुदं 'केयदेवे' च
भिषग्भिः परिकीर्तितं ॥ ४१ ॥ कन्दौषधं 'द्रव्यरत्ने' संप्रोक्तं भिष-
जावरैः ।

गुणाः—आर्द्रकं तु कटूष्णं च हृद्यं पाके च शीतलं ॥ ४२ ॥
दीपनं रुचिदं शोफकण्ठामयविनाशनं । कफहं भिषजानाथैः प्रोक्ता
'राजनिघंटके' ॥ ४३ ॥ 'द्रव्ये' सरं च 'मदने' भेदनं गुह्यं संस्मृतं ।

८ मरिचं-मिर्च ।

नामानि—मरिचं पलितं श्यामं कालं पल्लीजमूषणं ॥ ४४ ॥

यवनेष्टं वृत्तफलं शाकांगं धर्मपत्तनं । कटुकं च शिरोवृत्तं वीरं
कपिविरोचनं ॥ ४५ ॥ मृष्टं सर्वहितं कृष्णं प्रोक्तं 'राजनिघण्टके' ।
'केयदेवनिघण्टे' तु तीक्ष्णं च चर्मबन्धनं ॥ ४६ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव
श्यामं तु परिकीर्तितं । तथा 'मदनपाले' तु संप्रोक्तं चटकाशिरः
॥ ४७ ॥ चरप्रियं कृमिहरं धनं 'गणनिघण्टके' ।

गुणाः—मरिचं कटुतिक्तोष्णं लघुश्लेष्मानिलघ्नकं ॥ ४८ ॥
कृमिहृद्रोगनिघ्नं च रुचिकृद्राजनामके' । पित्तहृत् 'धन्वके' प्रोक्त-
मादं तु परिकीर्त्यते ॥ ४९ ॥ आर्द्रं नात्युष्णमित्युक्तं स्वादु पाके-
त्वपित्तलं । कफप्रसेकदं चैव शुरु तत्रैव प्रोच्यते ॥ ५० ॥ शुष्कं
स्यात्तु रसे पाके चोष्णं हि लघुदीपनं । अवृष्यं श्वासशूलघ्नं शोष्यं
तत्रैव कथ्यते ॥ ५१ ॥ पूयस्त्रघ्नं च नात्युष्णं 'द्रव्ये' स्यान्नातिपित्तलं ।

९ श्वेतमरिच—सफेद मरिच ।

नामानि—सिताख्यं सितमरिचं चन्द्रकं सितवल्लिजं ॥ ५२ ॥
धवलं च तथा प्रोक्तं बालकं बहुलं 'नृपे' । ततस्तु शुभ्रमरिचं
शीघ्रोर्वीजं च शिशुकं ॥ ५३ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु भिषग्भिः
परिकीर्तितं ।

गुणाः—संप्रोक्तं श्वेतमरिचं कटूष्णं चोष्णमेव च ॥ ५४ ॥
विषघ्नं भूतशमनमवृष्यं दृष्टिरोगहृत् । रसायने च संग्राह्यं वैद्यैर्'रा-
जनिघण्टके' ॥ ५५ ॥

१० धान्यक—धानियां ।

नामानि—धान्यकं धानकं धान्यं धानयं धनिकं धना ।
कुस्तुम्बरश्चाल्लकं च छत्रधान्यं वितुन्नकं ॥ ५६ ॥ सुगन्धिः शाक-
योग्यश्च सूक्ष्मपत्रो जनप्रियः । धान्यबीजं बीजधान्यं वेधकं 'राज-
नामके' ॥ ५७ ॥ वेषणाग्रा तु धनिका हृद्यगन्धा तु धान्यका ।
धानी धाना छल्लिधान्यं छत्रा हृद्या च वेषणा ॥ ५८ ॥ 'केयदेव-
निघण्टे' तु भिषग्भिः परिकीर्तितं । तथा 'भावप्रकाशे' च कुन्ती
संस्मृता बुधैः ॥ ५९ ॥

गुणाः—धान्यकं मधुरं शान्तं कषायं पित्तनाशनं । कासतृ-
छर्दिकफहं दीपनं ज्वरहं 'नृपे' ॥ ६० ॥ 'द्रव्ये' ज्वरातिसारघ्नं
'मदने' मूत्रलं लघु । रक्ताशौघ्नं तु 'भावे' ग्राहि प्रोक्तं भिषक्जैः

॥ ६१ ॥ 'धन्वन्तरौ' तु चक्षुष्यं हृद्यं रोचनमित्यपि । पाके स्वादु तथा वृष्यं मूत्रलं च त्रिदोषहृत् ॥ ६२ ॥ उष्णवीर्यं बद्धविट्फं पाचनं दाहश्वासहृत् । गुदोभ्रं शकृमोन्हन्ति 'केयदेवनिघण्टके' ॥ ६३ ॥

११ यवानो-अजवाइन ।

नामानि—यवानो दीप्यको दीप्यो यवसाहो यवाग्रजः । दीपनी चोग्रगन्धा च वातारिर्भूकदंबका ॥ ६४ ॥ यवजो दीपनीयश्च शूलहंघ्री यवानिका । उग्रा च तीव्रगन्धा च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । ॥ ६५ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु भूमिकः परिकीर्तितः । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव कारवी कीर्तिता वृधैः ॥ ६६ ॥ ततो 'मदनपाले' च त्वग्निगन्धा प्रकीर्तितः । तथा 'भावप्रकाशे' च ब्रह्मगर्भाऽजमोदिका ॥ ६७ ॥ अश्विवर्द्धो यवानश्च हृद्यो 'गणनिघण्टके' । ब्रह्मदर्भाह्वयश्चैव 'कोशे' तु परिकीर्तितः ॥ ६८ ॥ चतुर्विंशतिसंख्याका संप्रोक्ता भिषजां वरैः ।

गुणाः—यवानो कटुतिक्तोष्णा वातार्शोश्लेष्ममूलहा ॥ ६९ ॥ आध्मानकुमिलर्दिघ्नी दीपनी 'राजनामके' । आमवातहरा चैव सारति 'द्रव्यनामके' ॥ ७० ॥ रोचनी पाचनी हृद्या लघ्वी कफविनाशिनी । शुक्रानिलोदिरानाहगुल्मघ्नी पित्तकोपना ॥ ७१ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' च संप्रोक्ता भिषजांवरैः । वातश्लेष्महरा गुल्मनाशिनी 'मदने' स्मृता ॥ ७२ ॥ हृद्रोगशमनी प्रोक्ता वैधै 'गणनिघण्टके' ।

१२ चव्य-चवक ।

नामानि—चव्यकं चविका चव्यं वजिरो गन्धनाकुली ॥ ७३ ॥ वल्लीकोलं कोलवल्ली तथा कुटिलमस्तकं । तीक्ष्णा करिफणावल्ली कृकरो 'राजनामके' ॥ ७४ ॥ नेत्रभूसंख्यका प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः ।

गुणाः—चव्यं तु कटुकं चोष्णं रोचनं लघु दीपनं ॥ ७५ ॥ जन्तुहं कासश्वासघ्नं शूलहं 'राजनामके' । कफवातहरं 'धन्वे' 'द्रव्ये' चार्शोहरं स्मृतं ॥ ७६ ॥

१३ चित्रकः-चीता ।

नामानि—चित्रकोशिश्च शार्दूलश्चित्रपाली कुटः शिखी । कृशानुर्दहनश्चैव व्यालो ज्योतिस्तु पालकः ॥ ७७ ॥ अनलो दारुणो

वन्निः पावकः शबलस्तथा । पाठी द्वीपी तु चित्रांगः शूरो 'राज-
निघण्टके' ॥ ७८ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु पाठीना वल्लरी हविः ।
हुताशनोरुणश्चैव ज्योतिष्को हुतभुक् तथा ॥ ७९ ॥ ज्वलनश्च श-
ठश्चैव प्रोक्तो 'केयनिघण्टके' । ज्वालस्तु दीपसज्ञा च त्वमलो 'ग-
णनामके' ॥ ८० ॥

गुणाः—चित्रकोशिसमः पाके कटुः शोफकफापहा । वातोदा-
राशोग्रहणीकृमिकण्डूहरो 'नृपे' ॥ ८१ ॥ कासहृत् 'मदने' प्रोक्तो
पुरातनचिकित्सकैः । वीर्योष्णो दीपनो रुक्षो रोचनश्चामशोफहा ॥ ८२ ॥
कुष्ठहा 'केयदेवे' च कटुत्वात्कफनाशनः । उष्णत्वाद्वातनाशश्च त्रि-
दोषघ्नोऽग्निदीपनः ॥ ८३ ॥ प्रोक्तः पुरातनैर्वैद्यैस्तिकत्वात् पि-
त्तनाशनः ।

१४ रक्तचित्रक-लालचीता ।

नामानि—कालो व्यालः कालमूलो मार्जारस्त्वतिदीपकः
॥ ८४ ॥ दाहकोश्रिः पावकश्च चित्रांगो रक्तचित्रकः । महांगः स्यादु-
द्रसंख्या 'राजनामनिघण्टके' ॥ ८५ ॥

गुणाः—स्थूलकायकरो रुच्यः कुष्ठघ्नो रक्तचित्रकः । रसे नि-
यामको लोहे वेधकश्च रसायनः ॥ ८६ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु
पुरातनभिषग्वरैः ।

१५ विडंगः -वायुविडंग ।

नामानि—विडंगा कृमिहा चैव तण्डुला तण्डुलीयका ॥ ८७ ॥
वातारि तण्डुला चैव जन्तुघ्नी मृगगामिनी । कैरली गव्हराऽमोघा
कपाली चित्रतण्डुला ॥ ८८ ॥ वरा सुचित्रवीजा च जन्तुहन्त्रीति
'राजके' । मोघा तु कैरलं चैव तथैव भृंगगामिनी ॥ ८९ ॥ 'धन्व-
न्तरिनिघण्टे' तु कथिता वैद्यपंडितैः । कृमिजित् कृमिहन्त्री च वेक्लृ
कृमिहरं तथा ॥ ९० ॥ भूतघ्नं कृमिहृच्चैव 'केयदेवनिघण्टके' । 'द्रव्य-
रत्नाकरे' चैव जन्तुघ्नं कृष्णतण्डुलम् ॥ ९१ ॥ तथा 'मदनपाले' तु
कैराला तण्डुलाधिका । क्षुद्रतण्डुलसंज्ञा च तथैव जन्तुहारणं ॥ ९२ ॥
तथा 'गणनिघण्टे' तु कृमिशत्रुः प्रकीर्तितः ।

गुणाः—विडंगस्तु कटूष्णश्च लघुर्वातकफार्तिनुत् ॥ ९३ ॥ अ-
ग्निमांद्यारुचिहरो भ्रांतिक्रिमिविनाशनः । 'द्रव्ये' गुल्महरः प्रोक्तो

‘केये’ विष्टंमहा तथा ॥ ६४ ॥ गणेनाहहरः प्रोक्तो भिषक्श्रेष्ठैर्न
संशयः । पाके कटुस्तु रुक्षश्च वीर्योष्णोऽध्माननाशकः । आमशूलह-
रप्रोक्तो ‘केये’ विष्टंमहा तथा । मेहोदरविनाशश्च मेदप्रोक्तो भिष-
क्जनैः ॥ ६५ ॥

१६ वचा-घोड़वच ।

नामानि—उग्रगन्धा वचा चैव गोलोमी जटिला तथा । उग्रा
लोमशा भद्रा मंगल्या विजया तथा ॥ ६६ ॥ रक्षोघ्नोति भिषग्मि-
स्तु संप्रोक्ता ‘राजनामके’ ‘केयदेवनिघण्टे’ तु पट्ग्रन्था परिकी-
र्तिता ॥ ६७ ॥

गुणाः—वचा तीक्ष्णा कटूष्णा च कफामग्रंथिशोफनुत् । वात-
ज्वरातिसारघ्नी वांतिकृत् भूतनाशिनी ॥ ६८ ॥ तथोन्मादहरा
प्रोक्ता ‘राजनामनिघण्टके’ ।

१७ श्वेतवचा-दुधियावच ।

नामानि—मेध्या श्वेतवचा चैव पट्ग्रन्थादीर्घपत्रिका ॥ ६९ ॥
तीक्ष्णगन्धा हैमवती मंगल्या विजया तथा । प्रोक्ता ‘राजनिघण्टे’ तु
पुरातनचिकित्सकैः ॥ १०० ॥ श्वेता तु शतपर्वा च वीरयुक्ताऽरुणा-
ऽपरा । शुभा भोगवती लोना कर्षणी ‘केयदेवके’ ॥ १ ॥ पारसीका
वचा शुक्ला प्रोक्ता ‘भावप्रकाशके’ । अग्रसंज्ञस्तु रक्षोघ्नी प्रोक्ता
‘गणनिघण्टके’ ॥ २ ॥ एकविंशतिसंख्याका भिषग्भिः परिकीर्तिता ।

गुणाः—श्वेतवचाति गुणाढ्या मतिमेधायुःसमृद्धिका कफनुत्
॥ ३ ॥ वृष्या च वातभूतक्रिमिदोषघ्नी च दीपनी च वचा । शकृत्-
विशोधिनी प्रोक्ता ‘भावे’ मूत्रविशोधनी ॥ ४ ॥ वातश्लेष्म
हरं कंठ्यं मेध्यं कृमिविवंधहृत् । शूलाध्मानहरं प्रोक्तं ‘धन्वन्तरि-
निघण्टके’ ॥ ५ ॥ कटु पाके दीपनी च जीवनी स्वरदा ध्रुवं ।
रक्षोपस्मारजन्तुघ्नी ‘केयदेवे’ स्मृता ध्रुवं ॥ ६ ॥

१८ कुलंजन-कुलिंजन ।

नामानि—कुलंजो गंधमूलश्च तीक्ष्णमूलः कुलंजनः । प्रोक्ता
‘राजनिघण्टे’ तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ७ ॥ ‘द्रव्यरत्नाकरे’ चैव

मंधवीजः प्रकीर्तितः । उग्रगंधा सुगंधा च महाभरवचा तथा ॥८॥

प्रोक्ता 'भावप्रकाशे' च वसुसंख्या भिषग्वरैः ।

गुणाः—कुलंजः कटुतिक्तोष्णो दीपनो मुखदोषनुत् ॥ ८ ॥

'नृपे' 'द्रव्यनिघण्टे' च कफवातहरः स्मृतः । सुस्वरत्नकरी रुच्या
हृत्कंठमुखशोधिनी ॥ १० ॥ 'भावप्रकाशे' संप्रोक्ता पुरातनभिष-
ग्जनैः ।

१९ जीरक-जीरा ।

नामानि—जीरको जरणो जीरो जीर्णो दीप्यश्च दीपकः ॥ ११ ॥

अजाजिको वह्निहस्रलो मागधो 'राजनाके' । दीर्घजं चैव हृद्यं च
मनोज्ञं वरुणं तथा ॥ १२ ॥ पूज्यमानं तु पीताभं रुच्यं 'धन्वन्तरौ'
स्मृतं । रसभूसंख्यका प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः ॥ १३ ॥

गुणाः—जीरकः कटुरुष्णश्च वातहृद्दीपनः परः । गुल्माध्माना-
तिसारघ्नो ग्रहणीकृमिहृ 'नृपे' ॥ १४ ॥ क्षयहा 'द्रव्यरत्ने' च 'मदने'
तु बलासहा । रुक्षो रुच्यश्च संप्राही चक्षुष्यः पित्तलस्तथा ॥ १५ ॥
गर्भाशयविशोधश्च मेध्यो हृद्यश्च पाचनः । छर्दिवातकफघ्नश्च प्रोक्तो
'केयनिघण्टके' ॥ १६ ॥ बल्यो वृष्यः कफघ्नश्च ज्वरघ्नो 'भावनामके' ।

२० श्वेतजीरक-सफेद जीरा ।

नामानि—गौरादिजीरका जाजी श्वेतजीरक एव च ॥ १७ ॥

कणाव्हा कणजीर्णा च कणा दीप्यः सितादिकः । सिताजाजी दीर्घ-
कणा प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ १८ ॥ शुक्लाजाजी दीर्घकस्यात्तथा च
कणजीरकः । दीर्घजीरस्तथा प्रोक्तो 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ १९ ॥

गुणाः—गौराजाजी हिमा रुच्या कटुर्मधुरदीपनी । कृमिघ्नी
विषहन्त्री च चक्षुष्याध्माननाशिनी ॥ २० ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु
वैद्यविद्याशिरदैः ।

२१ कृष्णजीरक-स्याह जीरा ।

नामानि—कृष्णा तु जरणा काली बहुगंधा च मेदिनी ॥ २१ ॥

पटुभेदनिका रुच्या नीला नीलकणा तथा । काश्मीरजीरका वर्ष-
काली स्याद्धान्तिशोधिनी ॥ २२ ॥ कालमेपी सुगंधा च प्रोक्ता
'राजनिघण्टके' । कणजीरः सुजरणा तथा च कालपेशिका ॥ २३ ॥

तथा वर्षा तु संप्रोक्ता 'धन्वन्तरिनिघटके' । कृष्णाजाजी तु हृद्यं
च काकजीरकमेव च ॥ २४ ॥ उद्गारशोधनं चैव कृष्णजीरकनाम
च । 'केयदेवनिघटके' तु प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ॥ २५ ॥

गुणाः—जरणा कटुरूष्णा च कफशोफनिघ्नतनी । रुच्या जीर्ण-
ज्वरघ्नी च चक्षुष्या ग्राहिणी 'नृपे' ॥ २६ ॥ मूर्ध्नि रोगहरा प्रोक्ता
वैद्यै 'द्रव्यनिघटके' । रक्तपित्तहरा चैव गर्भाशयविशोधिनी ॥ २७ ॥
कफपित्तहरा वृष्या शूलघ्नी 'गणनामके' ।

२२ कुंचिका-कलौजी ।

नामानि—उपकुंचिका तु दीप्यश्च काली पृथ्वी पृथुस्तथा ॥ २८ ॥
तथा स्थूलकणा चैव मनोज्ञा तदनन्तरं । जरणी तरुणा जीर्णा
स्थूलजीरक एव च ॥ २९ ॥ कारवी सुपत्री चैव पृथ्वीका 'राजना-
मके' । कालिका सुविषा कुंचो करकृष्णा तु वाष्पिका ॥ ३० ॥
'केयदेवनिघटके' च प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ।

गुणाः—पृथ्वीका कटुतिक्तोष्णा वातगुल्मामदोषनुत् ॥ ३१ ॥
श्लेष्माध्मानहरा जीर्णा जन्तुघ्नी दीपनी 'नृपे' ।

२३ अरण्यजीरक-वनजीरा, कडूजीरा ।

नामानि—वृहत्पाली सूक्ष्मपत्रारण्यजीरकणा तथा ॥ ३२ ॥
वनजीरकसंज्ञश्च संप्रोक्ता 'राजनामके' । धन्वन्तरिनिघटके' तु
वन्यजीरक एव च ॥ ३३ ॥

गुणाः—वनजीरः कटुः शीतो व्रणहा 'राजनामके' । 'द्रव्यरत्ना-
करे' प्रोक्ता स्तंभी वातकफापहा ॥ ३४ ॥

२४ मेथिका-मेथी ।

नामानि—मेथिका मेथिनी मेथी दीपनी बहुपत्रिका । मेथिनी
गन्धबीजा च ज्योतिर्गन्धफला तथा ॥ ३५ ॥ वल्लरी चन्द्रिका
मन्था मिश्रपुष्पा च कैरवी । कुंचिका बहुपर्णी च पीतबीजेति
'राजके' ॥ ३६ ॥

गुणाः—मेथी तु कटुका प्रोक्ता रक्तपित्तप्रकोपिनी । कफा-
रुचिप्रहन्त्री च दीपनी वातहृत् 'नृपे' ॥ ३७ ॥ दाहच्छर्दिश्लेष्मकासवा-
तरपतहरा 'द्रवे' । वातश्लेष्मज्वरघ्नीति प्रोक्ता 'मदनपालके' ॥ ३८ ॥

२५ हिंगुपत्री-वाफली ।

नामानि—पृथ्वीका हिंगुपत्री च कवरी दीर्घिका पृथुः । दारु-
पत्री तु बिल्वीच वाष्पी तन्वीति 'राजके' ॥ ३६ ॥ 'धन्वन्तरिनि-
घंटे' तु पृथुला वाष्पिका स्मृता । 'केयदेवनिघंटे' तु तन्त्री च
दीर्घपत्रिका ॥ ४० ॥ 'मदने' कारवी तन्त्री बिल्वीका चारुपत्रिका
॥ ४१ ॥

गुणाः—हिंगुपत्री कटुस्तीक्ष्णा तिक्तोष्णा कफवातहृत् ॥ ४२ ॥
आमकृमिहरा रुच्या दीपनी पाचनी 'नृपे' । वातगुल्महरा प्रोक्ता
'मदने' वैद्यनायकैः ॥ ४३ ॥ प्लीहयन्धारशगुल्मघ्नी हृद्रस्तिशूलहृत् 'धने' ।
'मदे' श्लेष्महरा 'केये' 'द्रव्ये' छीलाहरा स्मृता ॥ ४४ ॥

२६ हिंगु-हींग ।

नामानि—उग्रगन्धस्तु हिंगुश्च भूतारिर्बाल्हिकं तथा । उग्र-
वीर्यं च सूपानं रक्षोघ्नं जन्तुनाशनं ॥ ४५ ॥ अगूढगन्धं जरणं मेदनं
रामटं तथा । दीप्तं सहस्रवेधं च सूपधूपनमेव च ॥ ४६ ॥ प्रोक्तं 'राज-
निघंटे' तु पुरातनभिषग्वरैः । तथात्युग्रं च जन्तुघ्नं शूलनाशनमेव
च ॥ ४७ ॥ 'धन्वन्तरिनिघंटे' च जरकं 'केयदेवके' । नवभूसंख्यका
प्रोक्ता भिषक्विद्याविशारदैः ॥ ४८ ॥

गुणाः—हिंगु हृद्यं कटूष्णं च कृमिवातकफापहं । विबन्धा-
ध्मानशूलघ्नं चक्षुष्यं गुल्महृत् 'नृपे' ॥ ४९ ॥ सरं हृद्रोगहृत्प्रोक्तं
'धन्वन्तरिनिघंटके' । रक्तपित्तकरं श्वासकासोदरविनाशनं ॥ ५० ॥
आनाहाजीर्णहृच्चैव प्रोक्तं 'केयनिघंटके' । पित्तवर्धनमित्येतत्
'मदने' परिकीर्तितं ॥ ५१ ॥

२७ नाडीहिंगु-डिकेमाली ।

नामानि—नाडीहिंगु पलाशाख्या जन्तुका रामठी तथा ।
वंशपत्री च पिण्डावहा सुवीर्या हिंगुनाडिका ॥ ५२ ॥ प्रोक्तं 'राज-
निघंटे' तु पुरातनचिकित्सकैः । वेणुपत्री वंशदला पिंगा हिंगु
शिवाटिका ॥ ५३ ॥ 'धन्वन्तरिनिघंटे' च प्रोच्यते भिषजांवरैः ।
नाडी हिंगुफला चैव प्रोक्ता 'मदनपालके' ॥ ५४ ॥

गणाः—नाडीहिंगु कटूष्णं च कफवातविबन्धहृत् । विष्टं

पिप्पल्यादिवर्गः ।

८६

नाशनं प्रोक्तं 'राजनामनिघंटके' ॥१५५॥ आमहृद्दीपनं प्रोक्तं 'धन्व-
नामनिघंटके' । गुल्मघ्नीहविषघ्नं च 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृतं ॥ १५६ ॥

२८ अग्निजार* ।

नामानि—अग्निजारोऽग्निनिर्यासोऽप्यग्निगर्भोऽग्निजः स्मृतः ॥ ५७ ॥
वडवाग्निमूला ज्ञेया जरायुश्चाग्निसम्भवः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु
भिषक्विद्याविशारदैः ॥ ५८ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु चाग्निगर्भोऽग्नि-
सम्भवः ।

गुणाः—अग्निजारस्तूष्णवीर्यः कटुश्चोदरनाशनः ॥ ५९ ॥ वातो-
द्भवकफघ्नश्च सन्निपातहरस्तथा । पित्तप्रदो भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्तो
'राजनिघंटके' ॥ ६० ॥ हृद्भोगकफशीतघ्नो 'धन्वे' प्रोक्तो भिषगजैः ।

२९ रासना-रासना† ।

नामानि—रासना युक्तरसा रस्या श्रेयसी रसना रसा ॥ ६१ ॥
सुगन्धिमूला सुरसा रसाढ्यातिरसा तथा । 'राजनामनिघंटे' तु
संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ६२ ॥ एकपर्णी च सुवहा सुगन्धा गन्ध-
नाकुली । सुगन्धा सुरभी चैव 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ ६३ ॥ तथा
'मदनपाले' तु गन्धमूला प्रकीर्तिता । रसनीत्वतिसारस्या 'गणनाम-
निघंटके' ॥ ६४ ॥ एलापर्णी तु 'कोपे' च संप्रोक्ता भिषजांवरैः ।

गुणाः—रासना गुह्यश्च तिक्तोष्णा वातरक्तविषापहा ॥ ६५ ॥
कासशोफश्लेष्महृच्च पाचनी 'राजनामके' । वातोदरामहन्त्रीति
प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं ॥ ६६ ॥ श्वासकासविषघ्नी च ज्वरहिष्मा-
विनाशिनी । शीतामवातहन्त्री च वातशूलविनाशिनी ॥ ६७ ॥

३० स्थूलैला-बड़ी इलायची ।

नामानि—वृहदैला तु स्थूलैला 'त्रिपुटा' त्रिविवोद्भवा । महैला
सुरभित्वक् च पृथ्वी कन्या कुमारिका ॥ ६८ ॥ कायस्थैन्द्री गोपु-
टा च घृताची गर्भसम्भवा । क्रान्तेन्द्राणी दिव्यगन्धा भद्रैला 'राज-

*पश्चिमी समुद्र किनारे प्रविद्ध है ।

†रासना तीन प्रकारका है १ मूलरासना २ पत्र रासना ३ तृण रासना ।
इनमें मूल रासना श्रेष्ठ है । अपने इधर अरहरिया रासना और अलसिया
रासना कह कर इसके दो भेद विशेष प्रविद्ध हैं । दोनों ही काममें आते हैं ।

नामके' ॥ ६६ ॥ त्रिदिवा त्रिदिवोद्भूता पृथ्वीका त्वक्सुगन्धिका ।
 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः ॥ ७० ॥ 'केयदेवे' तु
 पर्वला कन्यका चन्द्रला पुटा । निष्कुटी चन्द्रवालैला बहुला 'त्वमरे'
 स्मृता ॥ ७१ ॥

३१ एला-छोटी इलायची ।

नामानि—एला बहुगन्धैन्द्री द्राविडी निष्कुटिस्त्रुटी । कपोत-
 वर्णी गौराङ्गी वाला बलवती हिमा ॥ ७२ ॥ उपकुंची चन्द्रिका च
 सूक्ष्मा सागरगामिनी । गर्भारिर्गन्धफलिका कायस्था 'राजनामके'
 ॥ ७३ ॥ सूक्ष्मैला बहुला चन्द्रा कौरङ्गी तुत्थनामका । 'धन्वन्तरि-
 निघण्टे' तु प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः ॥ ७४ ॥ निष्त्रुटी तु द्विषा चैव क्षुद्रैला
 चन्द्रसम्भवा । तथा चन्द्रलता प्रोक्ता 'केयदेवनिघण्टके' ॥ ७५ ॥
 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव संप्रोक्ता द्राविडोद्भवा । चन्द्रवाला निष्कुटी च
 कौरङ्गी 'मदने' स्मृता ॥ ७६ ॥ तुत्था 'भावप्रकाशे' च भिषग्भिः
 कथिता ध्रुवं । त्रिपुटी चन्द्रभागा च प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' ॥ ७७ ॥
 त्रिपुटाऽ'मरकोशे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।

गुणाः—एलाद्वयं शीतलं च तिक्तं पित्तकफापहं ॥ ७८ ॥
 हृद्रोगमलपीडाघ्नं पुंस्त्वघ्नं 'राजनामके' अश्मरीनाशिनी प्रोक्ता
 'द्रव्यरत्नाकरे' ध्रुवम् ॥ ७९ ॥ वस्तिप्रणाशिनी प्रोक्ता वैद्यैर्मदन-
 पालके । पित्तप्रकोपनी चैव 'गणे' गर्भविनाशिनी ॥ ८० ॥ कफ-
 वातविषापघ्नी व्रणवस्तिहृजांहरा । मुखकण्ठविशोधी च तथा मस्तक-
 शोधनी ॥ ८१ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च संप्रोक्ता भिषजांवरैः ।
 मूत्रकृच्छ्रार्शहन्त्री च श्वासकासकफापहा ॥ ८२ ॥ पित्ताग्निहृद्रो-
 चना च कफपित्तविनाशिनी । रुक्षा हृल्लासतृट्कण्डूनाशिनी वामनी
 'कये' ॥ ८३ ॥

३२ अजमोदा ।

नामानि—अजमोदा खराव्हा च वस्तमोदा च मर्कटी । मोदा
 गन्धदला हस्ती कारवी गन्धपत्रिका ॥ ८४ ॥ मायूरी शिखिमोदा
 च मोदाढ्या वन्हिदीपिका । ब्रह्मकोशी विशाली च हृद्यागन्धोप-
 गन्धिका ॥ ८५ ॥ मोदिनी फलमुख्या च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ।
 मयूरका दीप्यका च वल्लिस्तु लोमकर्कटी ॥ ८६ ॥ 'धन्वन्तरिनि-

घटे' च प्रोक्तं वैद्यविचक्षणैः । रोमकर्कटसंज्ञश्च यवानः कृमिरोग-
जित् ॥ ८७ ॥ 'केयदेवनिघटे' तु संप्रोक्तं भिषजांवरैः । दीप्यवल्ली
मर्कटा च 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ॥ ८८ ॥ उग्रगन्धा कराव्हा च
कर्कटा 'मदने' तथा । 'भावे' ब्रह्मकुशा चैव खराश्वा लोचमस्तकः
॥ ८९ ॥ यवानिका हृद्यगन्धा मेध्यदा 'गणनामके' ।

गुणाः—अजमोदा कटूष्णा च कफघातहरा तथा ॥ ९० ॥ शूला-
धमानाहचिघ्नी च रुचिकृज्जठरापहा । प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु 'मदे'
वस्तिरुजांहरा ॥ ९१ ॥ 'धन्वे' हिक्काकृमिघ्नी च तिक्ता तु वन्दिही-
पनी । पाके तु कटुका रुक्षा बद्धविट्छर्दिनाशिनी ॥ ९२ ॥ हृद्या वृ-
ष्याक्षिरोगघ्नी प्रोक्ता 'केयनिघटे' ।

३३ रेणुका ।

नामानि—रेणुका कपिला कान्ता नन्दिनी महिला द्विजा ॥ ९३ ॥
राजपुत्री हिमारेणुः पांडुपुत्री हरेणुका । सुपर्णी शिशिरा शान्ता
कौंती वृत्ता च धर्मिणी ॥ ९४ ॥ कपिलोला हैमवती पांडुपत्नीति
'राजके' । भस्मगन्धा तथा 'भावे' 'त्वमरे भस्मगन्धिनी ॥ ९५ ॥
वृहद्घटी तथा प्रोक्ता 'गणनामनिघटे' ।

गुणाः—रेणुका च कटुः शीता खर्जुकण्डुतृपापहा ॥ ९६ ॥
मुखवैमल्यकारी च विषदाहहरा 'नृपे' । पाके तु कटुका मेध्या पा-
चनी गर्भपातनी ॥ ९७ ॥ बलासवातहृत् 'केये' संप्रोक्ता भिषजां-
वरैः । 'द्रव्ये' तु पित्तला प्रोक्ता 'गणे' कफविनाशनी ॥ ९८ ॥

३४ बोलं—बोल ।

नामानि—बोलं रक्तापहं मुंडं सुरसं पिंडकं विषं । निर्लोहं
वर्बरं पिंडं सौरभं रक्तगन्धकं ॥ ९९ ॥ रसगन्धं महागन्धं विश्वं
च शुभगन्धकं । विश्वगन्धं गन्धरसं व्रणारिर्नृपनामके' ॥ १०० ॥
गोपकं नालिकं पौरं रसं 'धन्वनिघटे' । जातीरसं गोमतं च
चंचलं रसगन्धकं ॥ १ ॥ पिंडस्तोकं कालकूटं स्तोमकं चात्मग-
न्धकं । प्राणपिंडो गोपरसः प्राणसंज्ञश्च 'भावके' ॥ २ ॥

गुणाः—बोलं कटूष्णं तिक्तं च कषायं रक्तदोषहृत् । कफपि-
त्तहरं प्रोक्तं प्रदरघ्नं तु 'राजके' ॥ ३ ॥ प्रमेहनाशनं भेदि 'द्रव्ये'
वातकफापहं । 'गणे' तु भिषजांनाथैः संप्रोक्तं पुंस्त्वनाशनं ॥ ४ ॥

‘केये’ मेध्यं त्रिदोषघ्नं गर्भाशयविशोधनं । कुष्ठापस्माररक्तघ्नं ग्रह-
ज्वरहरं तथा ॥ ५ ॥ ‘मदे’ तु दीपनं शीतं पाचनं स्मृतमित्यपि ।

३५ कर्चूरः—कचूर ।

नामानि—कर्चूरो द्राविडः काशीं दुर्लभो गन्धमूलकः ॥ ६ ॥
वेधमुख्यो गन्धसारो जटिलो ‘राजनामके’ । कचूरः स्थूलकन्दश्च
सटी गन्धस्तु ‘द्रव्यके’ ॥ ७ ॥ तथा ‘मदनपाले’ तु शटी प्रोक्ता
भिषग्वरैः । तथा ‘त्वमरकोशे’ तु काल्पको वेधमुख्यकः ॥ ८ ॥
तथा च दुर्लभः प्रोक्तो ‘गणनामनिघण्टके’ ।

गुणाः—कर्चूरः कटुतिक्तोष्णः कफकासविनाशनः ॥ ९ ॥
मुखवैशद्यजननो गलगण्डादिहा ‘नृपे’ । त्रिदोषमुखरोगघ्नो ज्वरहा
‘द्रव्यनामके’ ॥ १० ॥ लघुः श्वासहरः प्रोक्तो वैद्यैर्‘भावप्रकाशके’ ।
रुच्यो वातबलासघ्नो दीपनः प्लीहगुल्महा ॥ ११ ॥ अर्शःकेशहरः
प्रोक्तो ‘धन्वनामनिघण्टके’ । ‘मदे’ च कुष्ठव्रणहा वातगुल्महर-
स्तथा ॥ १२ ॥ कफकृमिहरः प्रोक्तो ‘गणनामनिघण्टके’ ।

३६ पाठा-पाठी ।

नामानि—पाठांष्टांऽवष्टिका च प्राचीना पापचेलिका ॥ १३ ॥
पाठिका स्थापनी चैव श्रेयसी वृद्धकर्णिका । एकष्ठीला कुचैली च
दीपनी वरत्तिकका ॥ १४ ॥ तिक्तपुष्पा बृहत्तिका दीपनी त्रिशिरा
वृकी । वृत्तपर्णी वरा देवी मालवी ‘राजनामके’ ॥ १५ ॥ त्रिवृ-
च्चैव शुभा प्रोक्ता ‘धन्वन्तरिनिघण्टके’ । वृकदन्ती रसा यूथा
एकैशी विद्धकर्णिका ॥ १६ ॥ तथा च तपनी चैव प्रोक्ता ‘केयनि-
घण्टके’ । तथा ‘गणनिघण्टे’ तु प्रोक्तातीसारनाशनी ॥ १७ ॥

गुणाः—पाठा तिका कुरूष्णा च वातपित्तज्वरापहा । पित्तदा-
हातिसारघ्नी भग्नसंधानकृत् ‘नृपे’ ॥ १८ ॥ ‘द्रव्ये’ जीर्णहरा प्रोक्ता
‘मदे’ गुल्मोदरघ्निका । ‘भावे’ तु गरहा प्रोक्ता शूलघ्नी ‘धन्वना-
मके’ ॥ १९ ॥ कुष्ठच्छर्दिगुल्मकण्डुविषहृद्रोगनाशिनी । व्रणशूल-
श्वासहन्त्री कृमिघ्ना ग्राहि वातला ॥ २० ॥ पित्तहृत् कफरक्तघ्नी
प्रोक्ता ‘केयनिघण्टके’ ।

३७ वृक्षाम्लं-कोकम ।

नामानि—वृक्षाम्लमम्लशाकस्याच्चुक्राम्लं तित्तिडीफलं । शा-

काम्लमम्लपूरं च पूराम्लं रक्तपूरकं ॥ २१ ॥ चूडाम्लं चैव बीजा-
म्लं कफाम्लकमतः परं । रसाम्लं वृक्षाम्लफलं श्रेष्ठाम्लं तदनन्तरं
॥ २२ ॥ अत्यम्लमम्लबीजं च फलचुकं च 'राजके' । तित्तिडीकं
चाम्लवृक्षस्तथा चाम्लमहीरुहः ॥ ३२ ॥ 'धन्तन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्तं
वैद्यविचक्षणैः । अम्लपादपसंज्ञश्च 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ॥ २४ ॥
प्रोक्तं 'गणनिघण्टे' तु रक्तपूरकनामकं ॥ २५ ॥

गुणाः—वृक्षाम्लमम्लं कटुकं कषायं सोष्णं कफार्शोघ्नमुदीर-
यन्ति । तृष्णासमीरोदरहृद्गदादिगुल्मातिसारव्रणनाशिनी 'नृपे'
॥ २६ ॥ शूलजन्तुहरं प्रोक्तं वैद्यैर्'भावप्रकाशके' । संग्राहि लघु वातघ्नं
कफघ्नं 'केयदेवके' ॥ २७ ॥ कासमेहहरं चैव 'द्रव्यरत्ने' स्मृतं बुधैः ।

३८ आम्लवेतस-अमलवेत ।

नामानि—अम्लोऽम्लवेतसो वेधी रसाम्लो वीरवेतसाः ॥ २८ ॥
वेतसाम्लश्चाम्लसारः शतवेधी तु वेधकः । भीमश्च भेदना भेदी
राजाम्लश्चाम्लभेदनः ॥ २९ ॥ अम्लान्कुशो रक्तसारः फलाम्लश्चा-
म्लनामकः । सहस्रवेधी वीराम्लो गुल्मकेतुर्धराभिधः ॥ ३० ॥ शङ्ख-
द्रावी मांसद्रावी प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' । रक्तसावी तथा 'धन्वे'
'भावे' तु चुक्रवेतसः ॥ ३१ ॥ चुक्रको चुक्रकेतुश्च शतवेधी सहस्र-
जित् । मांसारिर्भेदकश्चैव द्रावी तु 'केयदेवके' ॥ ३२ ॥ चुक्रवेतस-
संज्ञश्च 'मदने' शतभेदकः ।

गुणाः—अम्लवेतसमत्यम्लं कषायं चोष्णमेव च ॥ ३३ ॥ कफा-
र्शवातगुल्मघ्नमरोचकहरं 'नृपे' । कफदूषणमित्येतन्मदने परिकी-
र्तितं ॥ ३४ ॥ प्लीहादावर्तहिक्काघ्नी ह्यजीर्णकफवातहृत् । छागमांस-
द्रवः प्रोक्तो वैद्यैर्'भावप्रकाशके' ॥ ३५ ॥ तित्कं स्निग्धं दीपनं च
ह्यामघ्नं 'धन्वनामके' । भेदनं लेखनं हृद्यं लघुकृत् कफनाशनं ॥ ३६ ॥
रक्तपित्तहरं चाक्षयं विट्भेदाध्मानहिध्महृत् । आनाहाध्मानशूलघ्नं
वातश्वासकफापहं ॥ ३७ ॥ वमिहृत् 'केयदेवे' च संप्रोक्ता भिषजां वरैः ।

३९ कटुका-कुटकी ।

नामानि—कटुका जननी तित्का रोहिणी कटुरोहिणी ॥ ३८ ॥
चक्रांगी मत्स्यपित्ता च बहुला शकुलादनी । शतपर्वा मत्सभेदी
कृष्णभेदा महौषधी ॥ ३९ ॥ अशोक्रोहिणी कृष्णा कटुः कांडरुहा

तथा । कट्व्यञ्जनी त्वरिष्ठा च केदारकटुका तथा ॥४०॥ आमघ्नो
सादनी चैव तथैव कटुरोहिणी । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्या-
विशारदैः ॥ ४१ ॥ विप्राङ्गी मत्स्यशकला जनी 'धन्वनिघण्टके' ।
तथा द्विजाङ्गी सिंही च ब्राह्मणाङ्गी तु 'केयके' ॥ ४२ ॥ तथा 'मदन-
पाले' तु भद्रा प्रोक्ता मनीषिभिः । कटुभरा त्वशोका च प्रोक्ता
'भावप्रकाशके' ॥४३॥ तथा 'गणनिघण्टे' च मत्स्यविज्ञा प्रकीर्तिता ।

गुणाः—कटुकातिकटुस्तिका शीतपित्तास्रदोषजित् ॥४४॥ बला-
सारोचकश्वासज्वरहृद्देचनी 'नृपे' । 'गणे' तु कामलाघ्नीति विषम-
ज्वरहृत् 'धने' ॥ ४५ ॥ भेदिनी दीपनी रूक्षा कफपित्तज्वरापहा ।
प्रमेहश्वासकासघ्नी कुष्ठकृमिविनाशिनी ॥ ४६ ॥ क्षयहृत् 'केयदेवे'
च संप्रोक्ता भिषजां वरैः ।

४० अतिविषा-अतीस ।

नामानि—श्वेतकन्दा तु विश्वा च भङ्गुरातिविषा तथा ॥ ४७ ॥
शृङ्गी विरूपा वीरा च विषरूपा महौषधी । चान्द्री विषा प्रतिविषा
श्यामकन्दाऽमृता तथा ॥ ४८ ॥ ततः श्वेतवचा चैव त्वरुणोपविषा
तथा । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रविशारदैः ॥ ४९ ॥ शुक्ल-
कन्दा तु श्वेताद्रा विषदा तु घुणप्रिया । पित्तादिवल्लभा प्रोक्ता
बालरोगविनाशिनी ॥ ५० ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्ता वैद्यविशा-
रदैः । 'केयदेवनिघण्टे' तु घुणा चोपविषाणिका ॥ ५१ ॥ तथा 'भाव-
प्रकाशे' च संप्रोक्ता घुणवल्लभा ।

गुणाः—कटूष्णातिविषा तिका कफपित्तज्वरापहा ॥ ५२ ॥
आमातिसारकासघ्नी विषच्छार्दिविनाशिनी । 'नृपे' प्रोक्ता तथा
'केये' कफपित्तातिसारजित् ॥ ५३ ॥ दीपनी पाचनी चैव कृमिरोग-
विनाशिनी । तद्वीजं वातशमनं 'मदने' वाजिकारणम् ॥ ५४ ॥

४१ भद्रमुस्ता-भद्रमोथा ।

नामानि—भद्रा मुस्ता वारिदा च जीमूतोद्भूता नीरदः । मेघो-
म्भोदो घनश्चाध्रं गाङ्गेयो भद्रमुस्तकः ॥ ५५ ॥ वराही गुन्द्रर्ग्रन्थिश्च
भद्रकासी कसेरुकः । क्रोडेष्टा कुरुविंदाख्या सुगन्धिर्ग्रन्थिला हिमा
॥ ५६ ॥ वन्या राजकसेरुश्च कच्छोत्था 'राजनामके' । जलदोबुधर
श्चैव वृषध्वांशी बलाहकः ॥ ५७ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च नादेयः

परिकीर्तितः । तथा वारिदनामा च गुन्द्रा क्रोडकसेरुकः ॥ ५८ ॥
प्रोक्ता 'भावप्रकाशे' तु संख्यातश्च न संशयः ।

गुणाः—भद्रमुस्ता कषाया च तिका शीता च पाचनी ॥
पित्तज्वरकफघ्नी च संग्राही 'राजनामके' । श्लेष्मरक्तातिसारघ्नी
तृष्णा कृमिहरा 'धने' ॥ ६० ॥ 'द्रव्ये' तु रक्तपित्तघ्नी 'भावे' ग्राहीति
दीपनी ।

४२ नागरमुस्ता-नागरमोथा ।

नामानि—ततो नागरमुस्ता च नगरोत्था तदुत्तरं ॥ ६१ ॥
नगरादिर्घृतश्चैव चक्रांकां तदनन्तरं । नादेयी पिंडुमुस्ता च चूडाला
शिशिरा तथा ॥ ६२ ॥ वृषध्वांक्षी कच्छवहा पूर्णकोष्ठः कलापिनी ।
तथानुकुसरोच्चाटा संप्रोक्ता 'राजनामके' ॥ ६३ ॥

गुणाः—अथ नागरमुस्ता तु तिका कटु कषायका । शीतला
कफहन्त्रीति पित्तज्वरविनाशिनी ॥ ६४ ॥ अतिसाराक्षिहरा तृ-
दाहश्रमहा 'नृपे' ।

४३ यष्टीमधु-मुलेठी ।

नामानि—यष्टीमधुर्मधुयष्टी मधुवल्ली मधुस्रवा ॥ ६५ ॥ मधुकं
मधुका यष्टी यष्ट्यावहं 'राजनामके' । यष्टीकं चैव संप्रोक्तं 'धन्वन्तरि-
निघंटके' ॥ ६६ ॥ नवसंख्या भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता नैव संशयः ।

गुणाः—अथ यष्टीमधुः प्रोक्तं मधुरं स्वल्पतिकृकं ॥ ६७ ॥ शीतलं
चैव चक्षुष्यं पित्तहृद्द्रुचिकारकं । शोषतृष्णाव्रणघ्नं च 'राजनामनि-
घंटके' ॥ ६८ ॥ वृष्यं शोषक्षयहरं विषच्छर्दिविनाशनं । रसे स्वादु
तथा शीतपित्तघ्नं 'धन्वनामके' ॥ ६९ ॥ वर्ण्यं स्निग्धम् शुक्लं च
केश्यं स्वयं तथैव च । रक्तवातविषच्छर्दिग्लानिशोकहरं 'कये' ॥ ७० ॥
'भावे' क्षयापहं चैव 'गणे' तु व्रणशोधनं ।

४४ मधुवल्ली-मुलेठी भेदः ।

नामानि—मधुकं मधुवल्ली च मधूलो क्लीतनीयकं ॥ ७१ ॥ ततः
क्लीतनकं चैव तथा मधुरसा स्मृता । मधुरलताऽतिरसा सौम्या
शोषापहा तथा ॥ ७२ ॥ स्थलजा जलजा चैव प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ।

क्रीतिका क्रीतनं चैव मधुपर्णी मधूलिका ॥ ७३ ॥ 'धन्वंतरिनिघंटे'
तु संप्रोक्तं भिषजां वरैः ।

गुणाः—क्रीतनं मधुरं रुच्यं वल्यं वृष्यं व्रणापहं ॥ ७४ ॥ शीतलं
गुरु चक्षुष्यमस्त्रपित्तापहं 'नृपे' ।

४५ भार्गी-भारंगी ।

नामानि—भार्गी गर्दभशाकश्च फंजी चांगारवल्लरी ॥ ७५ ॥
वर्चो ब्राह्मणयष्टिश्च वातारिः कासजित्परं । पद्मा यष्टिश्च भारंगी
सुरूपा भृङ्गजा तथा ॥ ७६ ॥ भ्रमरेष्टा शक्रमाता बर्बरको 'राजनामके' ।
बर्बरको शुकमाता कासघ्नी भार्गवाग्रणी ॥ ७७ ॥ प्रोक्ता 'धन्वनिघंटे'
तु भिषग्विद्याविशारदैः । खरशाकांगारपर्णी महागर्दभगंधिका ॥ ७८ ॥
भंगुरा भृगुजा चैव पालिन्दी भार्गवपर्णी । 'केयदेवनिघंटे' तु प्रोक्ता
वैद्यविचक्षणैः ॥ ७९ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव द्विजेति परिकीर्तिता ।
भृगूद्भवा भृगुभवा ब्राह्मी तु गंधवर्णी ॥ ८० ॥ 'मदे' प्रोक्ता 'गणे'
चैव महाबर्बरिका तथा । मांगल्यवल्लिका चैव तत 'स्त्वमरकोशके'
॥ ८१ ॥ हंजिका फंजिका चैव ब्राह्मणी वर्धकस्तथा । वाल्येशाकं
संप्रोक्तं वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ८२ ॥

गुणाः—भार्गी कट्वी च तिकोष्णा कासश्वासविनाशनी । शोफ-
व्रणकृमिघ्नी च दाहज्वरहरा 'नृपे' ॥ ८३ ॥ द्रव्ये समीरजित् प्रोक्ता
'भावे' स्याद्रक्तगुल्महृत् । वातज्वरप्रहंत्री च 'गणे' हिक्काविनाशनी
॥ ८४ ॥ गुल्मज्वरासृक्वातघ्नी यक्ष्मपीनसहृत् 'धने' । कफाया चैव
संप्रोक्ता लघु दीपनपाचनी ॥ ८५ ॥ रुक्षा शोफहरा चैव कफवातरु-
चिघ्निका । गुल्माशोयक्ष्महृत् प्रोक्ता 'केयदेवनिघंटके' ॥ ८६ ॥

४६ पुष्करमूलं-पोहकर मूल ।

नामानि—मूलं पुष्करमूलं च पुष्करं पद्मपत्रकं । पद्मं पुष्करजं
वीजं पौष्करं पुष्करावहयम् ॥ ८७ ॥ काशमीरं ब्रह्मतीर्थं च कासारिमूलं
पुष्करं । तथैव पुष्करजटा पुष्कराद्या शिफा तथा ॥ ८८ ॥ प्रोक्तं 'राज-
निघंटे' तु वैद्यशास्त्रस्य पंडितैः । चिरंतनं तथा वीरं चिरं
श्वासारिरेव च ॥ ८९ ॥ पद्मतीर्थं वृक्षरूढं तथा पुष्करसागरं । तथा
शूलहरं चैव समूलं सुखसम्भवं ॥ ९० ॥ स्थलपद्मिनीकंदश्च 'धन्वंत-
रिनिघंटके' । पद्मवर्णं तु वाट्यावहं पुण्यसागरमेव च ॥ ९१ ॥

पुष्करांघ्रिर्मूलवीरं तथैव च सुगन्धिकं । 'केयदेवनिघण्टे' तु संप्रोक्तं
भिषजांवरैः ॥ ६२ ॥

गुणाः—अथ पुष्करमूलं तु कटूष्णं तिक्तमेव च । कफवातज्व-
रघ्नं च कासारोचकफापहं ॥ ६३ ॥ शोफपांडुहरं चैव प्रोक्तं 'राज-
निघण्टके' । 'गणे' शूलहरं प्रोक्तं वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ६४ ॥ 'धन्वे'
हिक्कापहं चैव शोकाध्मानविनाशनं । हिध्मापहं भेदनं च पार्श्वशू-
लहरं 'कये' ॥ ६५ ॥ 'भावे' शोथहरं प्रोक्तं भिषग्भिःशास्त्रवेत्तभिः ।

४७ शृंगी-काकडासिंगी ।

नामानि—शृंगी कुलीरशृंगी च घोषा तु वनमूर्धजा ॥ ६६ ॥
चंद्रा कर्कटशृंगी च महाघोषा च शृंगिका । कलिंगा चेंदुखंडा च
तथा वनजमूर्धजा ॥ ६७ ॥ कुलीरा च तथा प्रोक्ता 'धन्वंतरिनिघण्टके'
कर्कटाख्या कर्कटकी कुलीरो 'केयदेवके' ॥ ६८ ॥ तथा 'मदनपाले'
तु शृंगनाम्नीति कथ्यते । 'भावप्रकाशे' संप्रोक्ता स्यात्कुलीर-
विषाणिका ॥ ६९ ॥ अजशृङ्गीति कविभिर्भिषक्शास्त्रविशारदैः ।
तथा 'गणनिघण्टे' तु संप्रोक्ता चार्थचंपिका ॥ ३०० ॥

गुणाः—अथ कर्कटशृङ्गी तु तिक्ता चैव गुरुष्णदा । वातहि-
क्कातिसारघ्नी कासश्वासहरा तथा ॥ १ ॥ पित्तास्रहन्त्री संप्रोक्ता
वैद्यै 'राजनिघण्टके' । 'भावे' तृट्नाशिनी प्रोक्ता पुरातन चिकित्सकैः
॥ २ ॥ हिध्मोर्ध्ववातहा प्रोक्ता 'धन्वनामनिघण्टके' । क्षयारुचि-
ज्वरघ्नीति वमिहन्त्रीति 'केयके' ॥ ३ ॥ कार्श्यहन्त्रीति 'मदने'
भिषग्भिः परिकीर्तिता ॥ ४ ॥

४८ लघुदन्ती-छोटी दन्ती ।

नामानि—दन्ती शीघ्रा श्येनघण्टानागस्फोटा निकुम्भिनी ॥ ५ ॥
दन्तिनी तूपचित्रा च भद्रा रूक्षा च रोचनी । चानुकूला निःशल्या
च वक्रदन्ता तथैव च ॥ ६ ॥ मधुपुष्पा विशल्या च तरुण्यैरंड-
पत्रिका । तथैरंडफला चैव उदुम्बरदला तथा ॥ ७ ॥ कुंभी
विशोधिनी चैव तथास्यादनुरेवती । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषग्भिः
शास्त्रपारणैः ॥ ८ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु घुणप्रिया मकूलकः ।
निकुंभा चित्रकूला च तथा स्यादुपचित्रका ॥ ९ ॥ द्राक्षायनी
शामला च तथा मदनकूलका । आस्या द्रवन्ती शबरी फंजी न्यग्रो-

धक्ता स्मृता ॥ १० ॥ प्रत्यक्ष्रेणी सुतश्रेणी तथा भूषिकसंभवा ।
वृषैरण्डाखुकर्णी च जयैरंडफला तथा ॥ ११ ॥ उदुम्बरच्छदा चैव
विजया 'केयदेवके' । नागदन्त्याखुपर्णी च प्रोक्ता 'मदनपालके' ॥ १२ ॥
वाराहान्यनुकूला च प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' । मुकूलिका तथा कूला
चिद्रकेशा 'गणे' स्मृता ॥ १३ ॥

गुणाः—दन्ती कटूष्णा विख्याता ह्यामशूलविनाशनी । त्वग्दोष-
हृत् भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ १४ ॥ रसे तिकोष्णका
चैव कफोदरविनाशनी । वातोदरार्शहन्त्री च व्रणघ्नी दीपनी 'धने'
॥ १५ ॥ कफवातार्शगुल्मघ्नी क्षयहृत् 'द्रव्यनामके' । रक्तघ्नी कुष्ठ-
कंडुघ्नी कफोदरविनाशनी ॥ १६ ॥ दाहहन्त्रीति कविभिः प्रोक्ता
'भावप्रकाशके' ।

४९ बृहद्वन्तिका-बड़ी दन्ती ।

नामानि—अन्या दन्ती केशरुहा विषभद्रा जयावहा ॥ १७ ॥
आवर्तकी वरांगी च जयावहा भद्रदन्तिका । भिषक्भद्रा तथा प्रोक्ता
'राजनामनिघण्टके' ॥ १८ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु वरणी विष-
भद्रिका । 'केयदेवनिघण्टे' तु वारणा वृषभध्वजा ॥ १९ ॥ प्रोक्ता
द्वादशसंख्याका वैद्यविद्याविचक्षणैः ।

गुणाः—बृहद्वन्ती कटूष्णा च रेचनी कृमिशूलहा ॥ २० ॥
कुष्ठामोदररोगघ्नी प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । तथा शलाशमरोहन्त्री
'द्रव्यरत्ने' प्रकीर्तिता ॥ २१ ॥ रसे पाके कटुश्चैव दीपनी कफ-
नाशनी । पित्तास्रकृमिहृत्चैव शोफोदरहरा 'मदे' ॥ २२ ॥ आनाह-
प्लीहहन्त्रीति 'गणे' प्रोक्ता भिषक्जनैः ।

५० जेपालः ।

नामानि—रेचको जयपालश्च सारकस्तित्तिरीफलम् ॥ २३ ॥
दन्तीबीजं मलद्रावी ज्ञेयं स्याद्वीजरेचनी । कुन्तिनीबीजसंज्ञं च
कुम्भीबीजं तु शोधनी ॥ २४ ॥ घंटाबीजं चक्रदन्ती दन्तिनीबीजकं
तथा । निकुम्भबीजं बीजाख्यं प्रोक्तं 'राजनिघण्टके' ॥ २५ ॥ 'धन्वन्त-
रिनिघण्टे' च निकुम्भा परिकीर्तिता । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव तित्तिरेति
स्मृता बुधैः ॥ २६ ॥ दन्ती द्रवन्तिका चैव मूलकं 'केयदेवके' ।
प्रोक्ता विंशतिसंख्येत भिषक्विद्यापरायणैः ॥ २७ ॥

गुणाः—जेपालः कटुरुष्णश्च कृमिहारी विरेचनः । दीपनः कफ-
वातघ्नो जठरामयहा 'नृपे' ॥ २८ ॥ 'द्रव्ये' भेदी वातिकृच्च श्लेष्मोदर-
विनाशनः । 'मदने' गुरु स्निग्धश्च पित्तोद्भवकफापहः ॥ २९ ॥ रसे
पाके च मधुरो कासहा 'भावनामके' ।

५१ त्रिवृत्-निशोत ।

नामानि—त्रिवृन्मालविका चैव श्यामा तु मसुरा तथा ॥ ३० ॥
अर्धचन्द्रा सुषेणी च कालिन्दी विदला तथा । कालमेघी तु काली
च त्रिवेला 'राजनामके' ॥ ३१ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु सुषेणा च
तथा स्मृता । मालवीका तु सरला काला केशाधिका फला ॥ ३२ ॥
कालपर्णी तथा 'केये' पालिन्दी 'द्रव्यनामके' । मसूरविदला चैव
कालकेशीति 'भावके' ॥ ३३ ॥ तथा 'गणनिघण्टे' तु कपाया मधुरा
स्मृता ।

गुणाः—त्रिवृत्तिका कटूष्णा च कृमिश्लेष्मोदरार्तिजित् ॥ ३४ ॥
कुष्ठकण्डूवृणान्हन्ति रेचनी 'राजनामके' । पित्तज्वरापहन्त्री च प्रोक्ता
'भावप्रकाशके' ॥ ३५ ॥ कफपित्तहरा रुक्षा मधुरा वातरुत् 'धने' ।
ज्वरशोफोदरह्नीहृत्रणपाण्डुरा 'कये' ॥ ३६ ॥

५२ रक्तत्रिवृत्-लाल निशोत, तेड़ ।

नामानि—रक्तान्या चैव कालिन्दी त्रिपुटा ताम्रपुष्पिका ।
कुलवर्णा मसूरी चाप्यमृता कासनाशिका ॥ ३७ ॥ प्रोक्ता 'राज-
निघण्टे' तु भिषक्शास्त्रज्ञपण्डितैः । शुक्लभंडी त्रिभंडी स्यात्काकाक्षी
सरला त्रिवृत् ॥ ३८ ॥ सर्वानुभूतिस्त्रिपुटा ज्येष्ठा कोटरवासिनी ।
'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ॥ ३९ ॥ कोटरस्थारुणा
कुम्भः संप्रोक्ता 'केयदेवके' । सिता त्रिभंडिका कुम्भी 'द्रव्यरत्नाकरे'
स्मृता ॥ ४० ॥ सर्वानुभूतिस्त्रिवृता भंडी कोटरवाहिनी । प्रोक्ता
'मदनपाले' तु पुरातनचिकित्सकैः ॥ ४० ॥ निशोता रेचनी चैव त्रि-
वृत्ता 'भावनामके' । रसायनी कुम्भपुटा त्रिवेला तदनन्तरं ॥ ४१ ॥
यथा कोशफला प्रोक्ता 'गणनामनिघण्टके' ।

गुणाः—रक्ता त्रिवृद्रसे तिक्ता कटूष्णा रेचनी तथा ॥ ४२ ॥
प्रहणी मलविष्टंभहारिणी 'नृपनामके' । श्यामा हीनगुणा चैव
कण्टकर्षणदायका ॥ ४३ ॥ मोहमूर्च्छादाहहारी भ्रमहृ 'त्केयदेवके' ।

५३ त्वच-दालचीनी ।

नामानि—त्वचं त्वग्बलकलं भृगं वरांगं मुखशोधनं ॥ ४४ ॥
शकलं सैहलं वन्यं सुरसं रामवल्लभं । उत्कटं बहुगन्धं च विज्जुलं
च वनप्रियं ॥ ४५ ॥ लाटपर्णं गन्धवलकं वरं शीतं तथा 'नृपे' । मुख-
शोध्यं प्रियं चैव 'धन्वन्तरिनिघंटके' ॥ ४६ ॥ गुडत्वचं तु हृद्यं च
तनुकं स्वर्णभूमिका । लटपर्णं तथा चोचं तथैव धनसंज्ञकं ॥ ४७ ॥
रामाप्रियं 'केयदेवे' प्रोक्तं वैद्यविशारदैः । मनःप्रियं तथा 'द्रव्ये' गुरु-
त्वक् स्वर्णभूमिकं ॥ ४८ ॥ प्रोक्तं 'मदनपाले' तु स्वाद्वी दारुसिता
तथा । तनुत्वक् च तथा प्रोक्तं 'भावनामनिघंटके' ॥ ४९ ॥

गुणाः—त्वचं तु कटुकं शीतं कफकासविनाशनं । शुक्लाम-
शमनं चैव कंठशुद्धिकरं 'नृपे' ॥ ५० ॥ हृद्बस्तिरोगवातार्शः पीनसकृ-
मिशुक्रनुत् । विषदं च तथा प्रोक्तं वैद्यैर्मदनपालके ॥ ५१ ॥ 'भा-
वे' त्वरुचिकङ्कणं वैद्यैः प्रोक्तं पुरातनैः । लघूष्णं कफवातघ्नं विष-
शीर्षरुजां हरं ॥ ५२ ॥ वस्तिशोधनमित्येतत् प्रोक्तं 'धन्वनिघंटके' ।
तिक्तं स्वादूष्णं मधुरं रुक्षं पित्तलमेव च ॥ ५३ ॥ हृद्रोगवस्ति-
शमनं दुर्नामहरणं तथा । आमवातहरं चैव शुक्रहृत् 'केयदेवके' ॥ ५४ ॥

५४ तमालपत्र-तेजपात ।

नामानि—पत्रं तमालपत्रं च पत्रकं छदनं दलं । पलाशम-
शुकं वासस्तापकं सुकुमारकं ॥ ५५ ॥ वस्त्रं तमालकं रामं गोप-
नं वसनं तथा । तमालं सुरभिगन्धं प्रोक्तं 'राजनिघंटके' ॥ ५६ ॥
तथा तापसजं प्रोक्तं 'धन्वन्तरिनिघंटके' । तामसं रोमशं रोमं पं-
चकं 'केयदेवके' ॥ ५७ ॥ शुक्रच्छदं 'द्रव्यरत्ने' भिषग्भिः परिकी-
र्तितं । गोमेदं तु छदं चैव प्रोक्तं 'मदनपालके' ॥ ५८ ॥ कालस्कन्ध-
स्तमालश्च तापिच्छा 'मरकेशके' ।

गुणाः—पत्रकं लघु तिक्तोष्णं कफवातविषापहं ॥ ५९ ॥ वस्ति-
कण्ड्वति दोषघ्नं मुखमस्तकशोधनं । 'राजनामनिघंटे' च संप्रोक्तं
भिषजां वरैः ॥ ६० ॥ हृल्लासारोचकाशोघ्नं 'धन्वन्तरिनिघंटके' ।
'केये' तु भिषजां नाथैः संप्रोक्तं लघुपिच्छलं ॥ ६१ ॥ स्वयः श्लेष्म-
हरं हृद्यं कफपित्तक्षयापहं ।

५५ नागकेशर ।*

नामानि—किंजल्कं कनकावहं च केसरं नागकेशरं ॥ ६२ ॥
चांपेयं नागकिंजल्कं नागीयं कांचनं तथा । सुवर्णं हेमकिंजल्कं
रुक्मं हेम च पिंजरं ॥ ६३ ॥ फणिपन्नगयोगादिकेशरं 'राजनामके' ।
नागपुष्पं तु नागं च कनकं 'धन्वनामके' ॥ ६४ ॥ नागावहमहिपुष्पं
च महापुष्पं हिमाभकं । वरं तथा दुरोहं च नागरेणुकमेव च ॥ ६५ ॥
'केयदेवनिघण्टे' च प्रोक्तं वैद्यत्रिचक्षणैः । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव पुष्पा-
वहं हेमपुष्पकं ॥ ६६ ॥ तथा 'मदनपाले' तु गजं प्रोक्तं मनीषिभिः ।
नागस्तु केसरश्चैव प्रोक्तं 'भावप्रकाशके' ॥ ६७ ॥

गुणाः—नागकेशरमलोष्णं लघु तिक्तं कफापहं । वस्तिवाता-
मयघ्नं च कंठशीर्षरुजापहम् ॥ ६८ ॥ प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' च पुरा-
तनचिकित्सकैः । विषकंडूशोषहरं वातरक्तहरं 'धने' ॥ ६९ ॥ ल-
घ्वामपाचनं रुक्षं पितोद्भवकफापहं । छर्दिकंडूविसर्पघ्नं खुडहं 'के-
यदेवके' ॥ ७० ॥ 'द्रव्ये' रक्तविकारघ्नं 'मदे' दौर्गन्धकुष्ठहं । त्रिदो-
षहं पूर्वमुक्तं 'भावे' हल्लासहारकं ॥ ७१ ॥

५६ तवक्षीर-तीखुर ।

नामानि—तवक्षीरं पयःक्षीरं यवजं गवयोद्भवं । अन्यद्गोधूमजं
चान्यप्तिष्ठिकातंडुलोद्भवं ॥ ७२ ॥ तथैव तालसम्भूतं तालक्षीरादि-
नामकं । वनगोक्षीरजं श्रेष्ठं 'राजनामनिघण्टके' ॥ ७३ ॥ वंश्या
गोधूमसम्भूता वंशक्षीरी तथैव च । पलाशगन्धा संप्रोक्ता 'धन्व-
न्तरिनिघण्टके' ॥ ७४ ॥ 'अमरे' पार्थिवी प्रोक्ता वैद्यशास्त्रज्ञ-
पंडितैः ॥ ७५ ॥

गुणाः—तवक्षीरं तु मधुरं शिशिरं दाहपित्तहं । क्षयकासकफ-
श्वासरक्तदोषहरं 'नृपे' ॥ ७६ ॥ कृच्छ्राश्मरीमेहनघ्नं 'द्रव्यरत्नाकरे'
स्मृतं । बल्या वृष्या च वृहणी रक्तपित्ताहचिघ्निका ॥ ७७ ॥ ज्वर-
कुष्ठहरा चैव कामलापांडुतृणहा । 'केयदेवे' शिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्ता
नैव संशयः ॥ ७८ ॥

*पुन्नाग अर्थात् मुरझीकी मूखी कलीको नागकेशर कहते हैं ।

५७ तालीसपत्र ।

नामानि—तालीसपत्रं तालीसं पत्राख्यं च शुकोदरं । धात्रीपत्रं चार्कवेधं करिपत्रं घनच्छदम् ॥ ७६ ॥ नीलं नीलाम्बरं तालं तालोपत्रं तलाव्हयं । तालीसपत्रकं चैव 'राजनामनिघण्टके' ॥ ८० ॥ तथा चामलकीपत्रं तद्वत्तालीसकं तथा । तमालकीपत्रसंज्ञं तथा तमालकीच्छदं ॥ ८१ ॥ शुकोदरं च पत्राख्यं प्रोक्तं 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं । धात्रीपत्रं कन्दपत्रं तुलसीपत्रसंज्ञकं ॥ ८२ ॥ पत्रं तु 'केयदेवे' च 'मदने' तुलसीच्छदं । पत्रावहं ग्रन्थिकापत्रं संप्रोक्तं वैद्यनायकैः ॥ ८३ ॥

गुणाः—तालीसपत्रं तिकं स्यादुष्णं मधुरमेव च । कफवातहरं कासहिकाक्षय विनाशनं ॥ ८४ ॥ श्वासच्छर्दिहरं प्रोक्तं वैद्यै 'राजनिघण्टके' । 'मदने' कृमिहृत्प्रोक्तं पुरातनचिकित्सकैः ॥ ८५ ॥ दीपनं श्लेष्मपित्तघ्नं मुखरोगहरं ध्रुवं । हृद्यं 'धन्वनिघण्टे' च संप्रोक्तं वैद्यनायकैः ॥ ८६ ॥ 'केये' त्वरुचिगुल्मामानश्निमाद्यं च निघ्नति । वैद्यै 'द्रव्यनिघण्टे' च स्वयं प्रोक्तं न संशयः ॥ ८७ ॥

५८ वंशलोचना-वंशलोचन ।

नामानि—स्याद् वंशरोचना वांशी तुंगाक्षीरी तुंगा शुभा । त्वक्क्षीरी वंशगा शुभ्रा वंशक्षीरी तु वैष्णवी ॥ ८८ ॥ त्वक्सारं कर्मरी श्वेता वंशकर्पूरोचना । तुंगा रोचनिका पिंगा तथैव वंशशर्करा ॥ ८९ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु पुरातनचिकित्सकैः । वंशा तु वंशजा चैव 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ ९० ॥ 'केयदेवे' तु संप्रोक्ता क्षीरिका वंशवर्द्धिनी ।

गुणाः—स्याद्वंशरोचना रुक्षा कषाया मधुरा हिमा ॥ ९१ ॥ रक्तशुद्धिकरी तापपित्तोद्वेकहरा 'नृपे' । तिकता च कासकृच्छ्रघ्नी क्षयश्वासहिता तथा ॥ ९२ ॥ वल्या च वृंहणी चैव 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । कुष्ठपाण्डुवर्णघ्नं च 'भावे' प्रोक्तं भिषकजनैः ॥ ९३ ॥ ज्वरघ्नी कामलाघ्नी च वृष्या तृष्णाविनाशनी । रक्तपित्तहरा चैव प्रोक्तं 'मदनपालके' ॥ ९४ ॥

५९ मंजिष्ठा-मजीठ ।

नामानि—मंजिष्ठा हरिणी रक्ता गौरी योजनवल्लिका । समंगा

विकसा पद्मा रोहिणी कालमेपिका ॥ ६५ ॥ भण्डी चित्रलता चित्रा
चित्राङ्गी जननी तथा । मण्डूकपर्णी विजया मञ्जूषा रक्तयष्टिका
॥ ६६ ॥ क्षेत्रिणी चैव रागाढ्या भण्डीरी कालभण्डिका । अहणा
ज्वरहन्त्री च छद्मा नागकुमारिका ॥ ६७ ॥ भण्डीरतिलका चैव
रागाङ्गी वस्त्रभूषणा । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषकशास्त्रवर्णितैः
॥ ६८ ॥ जिङ्गी भण्डी च कालाङ्गी रक्ताङ्गी मञ्जुका तथा । काला तु
रक्तयष्टी च प्रोक्ता 'धन्वनिघण्टके' ॥ ६९ ॥ लोहिता छद्मका ताम्रा
भण्डीरा मञ्जुला तथा । ताम्रवल्ली ताम्रमुखी प्रोक्ता 'केयनिघण्टके'
॥ ७० ॥ मञ्जुरा पद्मका मञ्जी 'मदने' ज्वरनाशिनी । भण्डीतकी तु
भण्डारी तथा च वस्त्ररञ्जिनी ॥ १ ॥ रसायनी च संप्रोक्ता 'राज-
नामनिघण्टके' । ताम्रमूला कालपेशी रक्तपुष्पी 'गणे' स्मृता ॥ २ ॥

गुणाः—मंजिष्ठा मधुरा स्वादे कषायोष्णा गुहस्तथा । व्रणमेहा-
पहन्त्री च श्लेष्मज्वरतृषापहा ॥ ३ ॥ नेत्ररोगहरा चैव प्रोक्ता
'राजनिघण्टके' । 'भावे' त्वर्शोद्घिनका प्रोक्ता वैद्यविद्याविचक्षणैः
॥ ४ ॥ स्वर्या वर्ण्यतिविख्याता योनिशूलकफापहा । विसर्पशो-
षकुष्ठघ्नी वातरक्तातिसारजित् ॥ ५ ॥ वातपित्तापहन्त्रीति प्रोक्ता
'केयनिघण्टके' ।

६० हरिद्रा-हल्दी ।

नामानि—हरिद्रा तु हरिच्चैव रंजनी दीर्घरागिका ॥ ६ ॥
स्वर्णवर्णा सुवर्णा च वर्णिनी तु शिवा तथा । हरिद्री चैव पीता च
वराङ्गी तदनन्तरं ॥ ७ ॥ वरा जनिष्ठा गौरी च वर्णदात्री पवित्रका ।
हरिता रजनीनाम्नी विषघ्नी वरवर्णिनी ॥ ८ ॥ पिङ्गला वर्णिनी
चैव मङ्गल्या मङ्गला तथा । लक्ष्मी भद्रा शिफा शोभा शोभना
सुभगावहया ॥ ९ ॥ श्यामा जयन्तिका चैव 'राजनामनिघण्टके' ।
तथा पिण्डहरिद्रा च पीतिका 'गणनामके' ॥ १० ॥ हलदिका भद्र-
लता तथा वर्णविलासिनी । दीर्घरङ्गा रङ्गिणी च गौरवर्णवती
निशा ॥ ११ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु संप्रोक्ता वैद्यनायकैः । ततो
रोमशमूला च वरिष्ठा 'विश्वनामके' ॥ १२ ॥ राजिनी चैव पिण्डा
च पीताङ्गा 'केयदेवके' । तथा 'मदनपाले' तु पिण्डी चैव प्रकीर्तिता
॥ १३ ॥ काञ्चनी तु कृमिघ्ना च तथा योषित्प्रिया मता । तथा 'भाव-
प्रकाशे' च प्रोक्ता हटविलासिनी ॥ १४ ॥

गुणाः—हरिद्रा कटु तिक्तोष्णा कफवातास्रकुष्ठहा । मेहकंडू-
व्रणघ्नी च देहवर्णकरी 'नृपे' ॥ १५ ॥ रुक्षा विषापहा चैव शोधनी
कृमिहा तथा । पीनसारचिहन्त्रीति प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं ॥ १६ ॥
कफपित्तापहन्त्री च पांडुऽहापचिनाशनी । त्वग्दोषशोथहा प्रोक्ता
'केयदेवनिघण्टके' ॥ १७ ॥ रक्तमेहहरा प्रोक्ता 'मदने' वैद्यनायकैः ।

६१ दारुहरिद्रा-दारुहलदी ।

नामानि—दारुहरिद्रा दावी च पीतद्रुःपीतिका तथा ॥ १८ ॥
कालेयकं पीतदारुः स्थिररागा च कामिनी । कटंकटेरी पर्जन्या
पीतदारु स्तथैव च ॥ १९ ॥ कालीयकं दारुनिशा ततो कामवती मता ।
कंकटकी दारुपीना पचंपचेति 'राजके' ॥ २० ॥ ततस्तु काष्ठरजनी
पीतचन्दनमेव च । कालीयका च पीता च हेमवर्णवती तथा ॥ २१ ॥
कुसुम्भका हेमकान्ता प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं । कटंकटी 'केयदेवे'
प्रोक्ता वैद्यविचक्षणैः ॥ २२ ॥ पर्जनी पीतकं चैव कालेया च हरि-
द्रुकः । निशा तथा पीतकं च प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ २३ ॥ रात्रि-
दारुः क्षपा चैव प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' । हरिद्रस्तु तथा 'कोशे'
प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ॥ २३ ॥

गुणाः—अथ दारुहरिद्रा तु कटूष्णा तिक्तका तथा । व्रणकंडू-
मेहहरा विसर्पघ्नी विषापहा ॥ २४ ॥ त्वग्दोषकर्णरोगघ्नी नेत्ररोगहरा
'नृपे' । मुखरोगहरा रुक्षा 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ २५ ॥ पांडुशोथा-
पचिघ्नीति 'केये' प्रोक्ता भिषगजनैः ।

६२ लाक्षा-लाख ।

नामानि—लाक्षा खदिरका रक्ता रङ्गमाता पलंकषा ॥ २७ ॥
जन्तुजा कृमिजा चैव दुमव्याधिरलक्तकः । पलाशी मुद्रिणी दीप्ति-
र्जन्तुका गन्धमादनी ॥ २८ ॥ नीला द्रवरसा चैव पित्तारि 'राज-
नामके' । क्षतघ्नी कृमिजा चैव 'धन्वन्तामनिघण्टके' ॥ २९ ॥ 'द्रव्यरत्ना-
करे' चैव कृमिजं तु दुमामयः । निर्भत्सना च दीप्ताब्हा चालक्ता
जावको तथा ॥ ३० ॥ प्रोक्ता 'मदनपाले' तु पुरातनभिषग्वरैः ।
कीटजा लोहिता राक्षा द्राविका क्षतहारिणी ॥ ३१ ॥ कृमिघ्नी कृमि-
पाना च प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ।

गुणाः—लाक्षा तिक्ता कषाया च श्लेष्मपित्तविषापहा ॥३२॥
शोषरक्तापहन्त्री च विषमज्वरहा 'नृपे' । हिक्काविनाशिनी चैव
प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ ३३ ॥ कृमिश्लेष्मव्रणघ्नी च भूतज्वरहरा
'धने' । हिमा त्रिदोषहन्त्रीति 'द्रव्यरत्ने' प्रकीर्तिता ॥ ३४ ॥ वर्ण्या
बल्या च स्निग्धा च रक्तपित्तव्रणापहा । उरःक्षतविसर्पघ्नी कृमि
कुष्ठहरा 'मदे' ॥ ३५ ॥

६३ अलक्तक-अलिता ।

नामानि—अलक्तको जन्तुरसो रागो निर्भर्त्सनस्तथा । जननी
जन्तुकारी च संधर्षा चक्रवर्तिनी ॥ ३६ ॥ जतुरसस्तथा चारुवर्तिनी
'धन्वनामके' । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव संप्रोक्ता व्यंगनाशिनी ॥ ३७ ॥

गुणाः—अलक्तकस्तु तिक्तोष्णः कफघातहरस्तथा । कण्ठ-
रोगहरो रुच्यो व्रणदोषहरो 'नृपे' ॥ ३८ ॥ ततो 'मदनपाले' तु संप्रो-
क्तो व्यंगनाशनः ।

६४ लोध्र-लोध ।

नामानि—लोध्रो रोध्रो भिल्लतरुश्चिल्लकः कांडकीलकः ॥३९॥
तिरीटो लोध्रको वृक्षः शंबरो हस्तिरोध्रकः । तिलकः कांडहीनश्च
शाबरो हेमपुष्पकः ॥ ४० ॥ भिल्ली शाबरकश्चैव प्रोक्तो 'राजनिघ-
ण्टके' । शबरी तिल्वकतस्तथा शबरपादपः ॥ ४१ ॥ तिरीट-
कस्तथा प्रोक्तो 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । कानीनः पट्टिकश्चिल्लो
'केयदेवनिघण्टके' ॥ ४२ ॥ तथा 'मदनपाले' तु सन्ततोद्भवनामकः
तिल्योगालवसंज्ञश्च प्रोक्तो 'भावप्रकाशके' ॥ ४३ ॥ 'गणे' शुक्रः
शाबरश्च मार्जन 'स्त्वमरकोशके' ।

गुणाः—लोध्रः शीतः कषायश्च कफरक्तविषापहः ॥ ४४ ॥
चक्षुष्ये वातहृच्चैव 'राजनामनिघण्टके' । असृग्दर्घो 'मदने' 'केय-
देवे' सरस्तथा ॥ ४५ ॥ कफपित्तारुचिघ्नश्च तृषाशोफातिसारजित् ।
ग्राही च रक्तपित्तघ्नो प्रोक्तो 'भावप्रकाशके' ॥ ४६ ॥ तत्पुष्प कफ-
पित्तघ्नं संग्राहीति स्मृतं बुधैः ।

६५ श्वेतलोध्र-सफेद लोध ।

नामानि—कमुकः पट्टिकारोध्रः कल्करोध्रो वृहद्दलः ॥ ४७ ॥
जीर्णबुधो वृहद्दलको जीर्णपत्रोक्षिभेषजः । शाबरः श्वेतरोध्रश्च गालवो

१०६

निघण्टिशरोमणिः ।

बहलत्वचः ॥ ४८ ॥ पट्टी लाक्षाप्रसादश्च वल्कलो 'राजनामके' ।
 बृहत्पर्णः स्थूलवल्को 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ ४९ ॥ शीतश्च शांबरः
 श्वेतरोधो 'द्रव्यनिघण्टके' । घनत्वक् मार्जनश्चैव 'केयदेवनिघण्टके'
 ॥ ५० ॥

गुणाः—गुणैस्तु पूर्ववत् ज्ञेयं पट्टिकाख्यं च रोधकम् ।

६६ धातकी-धवई, धौ ।

नामानि—धातकी वन्हिपुष्पी च ताम्रपुष्पी तु दाहनी ॥ ५१ ॥
 अग्निज्वाला सुभिक्षा च पार्वती बहुपुष्पिका । कुमुदा साधुपुष्पी च
 कुंजरा मद्यवासिनी ॥ ५२ ॥ गुच्छसंघा गुच्छपुष्पा तथैव लोध
 पुष्पिणी । तीव्रज्वाला वन्हिशिखा मद्यपुष्पेति 'राजके' ॥ ५३ ॥
 धातुकी पार्वतीया च 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । मदनीया पांशुभिक्षा
 मदनी 'केयदेवके' ॥ ५४ ॥ सीधुपुष्पी प्रमदनी त्वधःपुष्पी सुभक्षका ।
 प्रोक्ता 'मदनपाले' तु पुरातनचिकित्सकैः ॥ ५५ ॥ 'भावे' प्रोक्ता
 धातुपुष्पी त्वमरे धृत पुष्पिका ।

गुणाः—धातकी कटुरुष्णा च मदरुद्विषनाशनी ॥ ५६ ॥ प्रवा
 हिकातिसारघ्नी विसर्पव्रणनाशनी । 'नृपे' प्रोक्ता तथा 'द्रव्ये' स्तम्भि-
 नी परिकीर्तिता ॥ ५७ ॥ गर्भसंस्थापनी चैव रक्तपित्तहरा 'धने' ।
 शीता कषाया तृष्णाघ्नी विसर्पहारिणी तथा ॥ ५८ ॥ विषातिसार-
 जंतुघ्नी 'केये' प्रोक्ता भिषक्जनैः । प्रित्तघ्नीति 'गणे' प्रोक्ता पुरातन-
 चिकित्सकैः ॥ ५९ ॥

६७ समुद्रफल ।

नामानि—समुद्रनामप्रथमं पश्चात्फलमुदाहरेत् । समुद्रफल-
 मित्यादि नाम घाच्यं भिषग्वरैः ॥ ६० ॥

गुणाः—कटूष्णं समुद्रफलं वातभूतत्रिदोषहं । कफघ्नान्तिहरं
 प्रोक्तं 'राजनामनिघण्टके' ॥ ६१ ॥

६८ निर्विषा-निर्विषी ।

नामानि—निर्विषोपविषा चैव विषहा विषहंत्रिका । विविषा
 तु विषभवा ह्यविषा विषवैरिणा ॥ ६२ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु
 सप्तसंख्या भिषक्जनैः ।

गुणाः—निर्विषा कटुशीता च कफवातास्रदोषहा भक्तेक-

विषदोषघ्नी घणसंरोपिणी 'नृपे' । श्वयथुश्लेष्मरोगघ्नी प्रोक्ता
'भावप्रकाशके' ॥ ६३ ॥

६९ विष-सामान्य विष ।

नामानि—विषमाहेयममृतं गरलं दारदं गरं । कालकूटं हरिद्रं
च रक्तशृङ्गकमेव च ॥ ६४ ॥ नीलं च गरदं क्ष्वेडो घोरं हालाहलं
हरं । मरं हलाहलं शृङ्गी भूगरं राजनामके' ॥ ६५ ॥

७० वत्सनाभ-वचनाग ।

नामानि—अमृत स्याद्वत्सनाभो विषमुग्रं महौषधं । गरलं
मरणं नागं स्तोककं प्राणहारकं ॥ ६६ ॥ गरलं स्थावरादि स्यात्प्रोक्तं
'राजनिघण्टके' । गरलाग्रं च मधुरं प्रोक्तं वैद्यविशारदैः ॥ ६७ ॥

गुणाः—वत्सनाभोतिमधुरः सोष्णो वातकफापहः । कंठरु-
क्सन्निपातिघ्नः पित्तसंशोधनो 'नृपे' ॥ ६८ ॥ 'द्रव्यरत्ने' योगवाही
रसायनमिति स्मृतं । प्राणन्धनं च व्यवयीति विकाशी च मदावहं
॥ ६९ ॥ आग्नेयं भिषजां श्रेष्ठैः प्रोक्तं 'भावप्रकाशके' ।

७१ आम्लनिशा-आंवाहल्दी ।

नामानि—सटी सटी पलाशश्च षड्ग्रन्थाम्लनिशा वधूः ॥ ७० ॥
सुगंधमूला गंधाली शटिका च पलाशिका । सुभद्रा च तृणी दूर्वा
गंधा पृथुपलाशिका ॥ ७१ ॥ हिमोद्भवा गन्धवधुः सुवता 'राजना-
मके' । चन्द्राणी चन्द्रगन्धा च दुर्विधेया च 'धन्वके' ॥ ७२ ॥ आ-
म्लनिशा तथा प्रोक्ता 'द्रव्यनामनिघण्टके' । षड्ग्रन्थिका गन्धमूला
कर्चूरश्च शटी तथा ॥ ७३ ॥ प्रोक्ता 'ह्यमरकोशे' च भिषक्विद्यावि-
शारदैः ।

गुणाः—सटी तिक्तोष्णकाम्ला च ज्वररक्तकफापहा ॥ ७४ ॥
कण्डूवणास्यरोगघ्नी हृद्येति 'राजनामके' । सन्निपातज्वरघ्नी च
कफकासहरा 'धने' ॥ ७५ ॥

७२ गंधपत्रा-कपूरकाचरी, सुगंधकचोरा ।

नामानि—गन्धपत्रा तु स्थूला च वनजा तिक्तकन्दका । सटिका
चैव वन्या च तवक्षीर्येकपत्रिका ॥ ७६ ॥ गन्धपीता पला शांता गन्धा-
ढ्या गन्धपत्रिका । दीर्घपत्रा गन्धनिशा प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ७७ ॥

तथा गन्धपलाशश्च स्थूलकस्तिक्तकन्दकः । पत्रकन्दा हरिद्रा च
तापसी ज्वेलनी 'धने' ॥ ७८ ॥ सुगन्धचन्द्रा सौम्या च तथैव सोम-
संभवा । काष्ठपलाशिका चैव तथा च सुग्रहांतिका ॥ ७९ ॥ 'केय-
देवनिघण्टे' तु प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ।

गुणाः—गन्धपत्रा कटुः स्वादुस्तीक्ष्णोष्णा कफवातजित् ॥ ८० ॥
कासछर्दिज्वरघ्नी च पित्तला 'नृपनामके' । शूलहिध्माश्वासहरा
'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ ८१ ॥ मुखरुग्गुल्महृत् प्रोक्ता 'द्रव्यरत्नाकरे'
ध्रुवं । ग्रहापहेति संप्रोक्ता वैद्यै 'भावप्रकाशके' ॥

७३ अहिफेन-अफीम ।

नामानि—अफेनं खर-खस्वसो निफेनं चाहिफेनकं ॥ ८२ ॥
नागफेनं तथा प्रोक्तं 'राजनामनिघण्टके' । अफूकं च रसेदभूतं प्रोक्तं
'मदनपालके' ॥ ८३ ॥ तथा खसफलक्षीरं प्रोक्तं 'भावप्रकाशके' ।

गुणाः—अफेनं सन्निपातघ्नं वृष्यं बल्यं च मोहदं ॥ ८४ ॥ 'नृपे'
प्रोक्तं तथा ग्राहि शोषणं श्लेष्महृन्मदे' ।

७४ *साखरुंड-बड़ी माई, पडवास ।

नामानि—साखरुंडो ग्रन्थिफलो विकटो वस्त्रभूषणः ॥ ८५ ॥
कुरुंडः कर्बुरफलः सकुरुंडस्तथा 'नृपे' ।

गुणाः—साखेरुंडः कषायश्च रुचिकृद्दीपनः सरः ॥ ८६ ॥
श्लेष्मवातापहारी च वस्त्ररञ्जनको लघुः ।

७५ हितावल्ली-हितावली ।

नामानि—हितावल्ली च हृद्भात्री कुष्ठघ्नोद्गारकुष्ठकः ॥ ८७ ॥
अंगारग्रन्थिको ग्रन्थी ग्रन्थिलो 'राजनामके'

गुणाः—हितावल्ली रसे तिक्ता ग्रीहगुल्मोदरापहा ॥ ८८ ॥
रुमिकुष्ठगुदात्युग्रखर्जूकण्डूसुहारिणी ।

७६ हस्तिमद ।

नामानि—हस्तिमदो गजमदो गजदानं मदस्तथा ॥ ८९ ॥
कुम्भिमदो दन्तिमदो दानं द्वीपिमदो 'नृपे' ।

*शमीके वृक्ष पर जो छोटी छोटी गाँठें पड़ जाती हैं उन्हें साखरुण्ड
अथवा माई कहते हैं ।

गुणाः—स्निग्धो हस्तिमदस्तिक्तः केश्योऽपस्मारनाशनः ॥ ६० ॥
विषहृत्कुष्ठकण्डूतिव्रणदद्दुविसर्पनुत् ।

७७ मायाफल-माजूफल ।

नामानि—मायाफलं मायिफलं छिद्राफलं च मायिका ॥ ६२ ॥
तथा मायि च संप्रोक्तं 'राजनामनिघण्टके' ।

गुणाः—अथ मायाफलं प्रोक्तं कटूष्णं वातनाशनं ॥ ६३ ॥
योनिस्कोचकृच्छ्रैव केशकृष्णीकरं नृपे' ।

लवणवर्गः ।

सैन्धव-सेधानमक ।

नामानि—सैन्धव स्याच्छातशिवं नादेयं सिन्धुजं शिवं । शुद्धं
शिवात्मजं पथ्यं माणिमथं तु 'राजके' ॥ ६४ ॥ सिन्धुत्थं स्वादु शीतं
च मणिमन्थं च 'धन्वके' । सिन्धु स्याद्विमलं चैव लवणं तु शिला-
त्मकं ॥ ६५ ॥ पटूत्तमं धौतयं तु वरे स्यात् शुभ्रनामकं । 'केयदेव-
निघण्टे' तु संप्रोक्तं वैद्यनायकैः ॥ ६६ ॥

गुणाः—सैन्धवं तु भवेद् वृष्यं चक्षुष्यं रुचिकारकं । दीपनं च
त्रिदोषघ्नं व्रणदोषविन्धहृत् ॥ ६७ ॥ 'राजनामनिघण्टे' च संप्रोक्तं
वैद्यनायकैः । हृद्यं शूलहरं स्निग्धं प्रोक्तं 'केयनिघण्टके' ॥ ६८ ॥
घातिदं तु 'गणे' प्रोक्तं पुरातनचिकित्सकैः ।

२ सौवर्चल-कालानेन ।

नामानि—सौवर्चलं तु रुचकं तिलकं हृद्यगंधकं ॥ ६९ ॥ अक्षं च
कृष्णलवणं रुच्यं कोद्रविकं तथा । प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' तु पुरातन-
चिकित्सकैः ॥ ५०० ॥ तत्काललवणं चैव प्रोक्तं 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं ।
सुगंधि रुचकं चैव मागधं हृद्यसैन्धवं ॥ १ ॥ तिलकं मेचकं मेध्यं
लवणं कृष्णनामकं । जरणं चुतगंधं च 'केयदेवे' प्रकीर्तितं ॥ २ ॥
तथा 'मदनपाले' तु सुगंधाख्यं स्मृतं बुधैः । पाक्यं 'भावप्रकाशे' च
भिषग्भिः परिकीर्तितं ॥ ३ ॥ सुगन्धं काललवणं मगधं कृष्णसं-
ज्ञकं । प्रोक्तं 'गणनिघण्टे' तु पंचविंशतिसंख्यकं ॥ ४ ॥

गुणाः—सौवर्चलं लघु क्षारं कटूष्णं वातगुल्महृत् । ऊर्ध्ववा-
तामशूलघ्नं विबन्धाहृत् 'नृपे' ॥ ५ ॥ अशौंदरहरं प्रोक्तं 'द्रव्य-

रत्नाकरे' ध्रुवं । उद्गारशुद्धिदं प्रोक्तं 'मदने' कविनायकैः ॥ ६ ॥
दीपनं शूलहृद्रोगकफहृद्रोचनं तथा । वातानुलोमनं चैव 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ ७ ॥ ऊर्ध्वाधःकफवातानुलोमनं च विबन्धहृत् ।
आनाहशूलविष्टभनाशनं केयदेवके' ॥ ८ ॥ पित्तलं विशदं चैव
लघुं । 'भावप्रकाशके' ।

३ काचलवण-वांगडखार ।

नामानि—नीलं काचोद्भवं काचं तिलकं काचसंभवं ॥ ९ ॥
काचसौवर्चलं कृष्णलवणं पाक्वजं तथा । काचोत्थं हृद्यगन्धं च
तत्काललवणं तथा ॥ १० ॥ कुरुविदं काचमलं कृत्रिमं 'राजनाम-
के' । पाक्वं चैव त्रिकूटं च काचकं लवणं पटु ॥ ११ ॥ तथा
'मदनपाले' तु पाक्वाह्व कथितं बुधैः ।

गुणाः—ततस्तु काचलवणं रुच्यं पित्तलदाहदं ॥ १२ ॥ कफवा-
तहरं चैव दीपनं गुल्मशूलहृत् । 'नृपे' च पूर्वमुक्तं स्याद्रक्तपित्तहरं
'द्रवे' ॥ १३ ॥ अत्युणं 'मदने' प्रोक्तं वैद्यविद्याविशारदैः ।

४ विडलवण ।

नामानि—विडं द्राविडकं खण्डं कृतकं क्षारमेव च ॥ १४ ॥
आसुरं तु सुपाक्यं च धूर्तं खण्डाख्यमेव च । कृत्रिमं लवणं प्रोक्तं
'राजनामनिघण्टके' ॥ १५ ॥ विहंगंकृत्रिमं क्षारं द्राविणं तिक्त-
मेव च । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्तं वैद्यविचक्षणैः ॥ १६ ॥ विड-
गन्धं पाक्वसंज्ञं च घण्टिकालवणं तथा । द्राविडं 'केयदेवे' तु सं-
प्रोक्तं भिषजान्वरैः ॥ १७ ॥ ततस्तु विडलवणमुष्णं दीपनमेव च ।
रुच्यं ह्यजीर्णशूलघ्नं गुल्ममेहहरं 'नृपे' ॥ १८ ॥ 'गणे' गौरव-
हृत्प्रोक्तं पुरातनचिकित्सकैः । हृद्रोगकफहृत्तीक्ष्णं धन्वे' वातानु-
लोमनं ॥ १९ ॥ ऊर्ध्वाधःकफवातानुलोमनं रुक्षमेव च । लघु व्य-
वायि संप्रोक्तं विबन्धानाहहृत्तथा ॥ २० ॥ विष्टंभहृद्रोगहरं 'केये'
प्रोक्तं भिषग्वरैः ।

५ सांभर-साभरनेन ।

नामानि—गाढादिलवणं शुभ्रं पृथ्वीजं गडदेशजं ॥ २१ ॥
गडोत्थं च महारम्भं सांभरं सम्भरोद्भवम् । प्रोक्तं 'राजनिघण्टे'

तु पुरातनभिषग्वरैः ॥ २२ ॥ शाकम्भरीयं गण्डाख्यं रोमकं 'भाव-
नामके' । प्रोक्तं द्वादशसंख्याकं भिषग्विद्याविशारदैः ॥ २३ ॥

गुणाः—गाढादिलवणं तूष्णमीषदम्लमलापहं । दीपनं कफ-
वातघ्नमर्मकोष्ठविशोधनं ॥ २४ ॥ 'राजनामनिघण्टे' च संप्रोक्तं
वैद्यनायकैः ।

६ समुद्रलवण-समुद्रनोन ।

नामानि—सामुद्रकं तु सामुद्रं समुद्रलवणं शिवं ॥ २५ ॥ व-
शिरं सागरोत्थं च त्वक्षिवं लवणाब्धिजं । प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' तु
वैद्यविद्याविशारदैः ॥ २६ ॥ सागरजं तु चाक्षीवं स्यात्क्षारोदधिसं-
भवम् । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु लवणं परिकीर्तितं ॥ २७ ॥ ततः
सागरकं चैव त्रिकूटोदधिजातकं । वारिसम्भवसंज्ञं च 'केयदेव-
निघण्टके' ॥ २८ ॥ आसुरं वारिसम्भूतं प्रोक्तं 'मदनपालके' ।

गुणाः—सामुद्रं लघु हृद्यं च पलितास्त्रदपित्तदं ॥ २९ ॥ वि-
दाहि कफवातघ्नं दीपनं रुचिदं 'नृपे' । 'केये' पाके तु मधुरं वातघ्नं
श्लेष्मलं तथा ॥ ३० ॥ 'भावप्रकाशे' । संप्रोक्तं गुरु नात्यंतशी-
तलं । पाके नात्युष्णमित्युक्तं भेदनं ह्यविदाहि च ॥ ३१ ॥ स्निग्धं
शूलहरं चैव 'धन्वे' स्यान्नातिपित्तलं । कफवातहरं 'द्रव्ये' 'मदने'
वातकृत्तथा ॥ ३२ ॥

७ द्रोणेय-द्रोणीलवण, वर्तनका नमक ।

नामानि—द्रोणेयं द्रोणिजं द्रोणं त्रिकूटलवणं तथा । वार्धिजं
द्रोणिजं चैव वार्धेयं 'राजनामके' ॥ ३३ ॥

गुणाः—द्रोणेयं तु 'नृपे' प्रोक्तं नात्युष्णमविदाहि च । भेदनं
स्निग्धमीषच्च शूलघ्नं चाल्पपित्तलं ॥ ३४ ॥

८ औखर-मृत्तिकालवण, खारीमीठ ।*

नामानि—औखरकं सार्वगुणं सांभारं मिश्रकं तथा । सार्व-
रसमूखरजं मेलकं सर्व लोणकं ॥ ३५ ॥ तथा च बहुलवणं प्रोक्तं
'राजनिघण्टके' । पांशुजं पांशुक्षारं च शिवं संसर्गलक्षणं ॥ ३६ ॥
संसर्गं तु उषाक्षारं 'केयदेवनिघण्टके' । औरिणं चौर्वसंज्ञं च पांशु-
सम्भवमेव च ॥ ३७ ॥ पांशवं वसुसंज्ञं च 'मदने' परिकीर्तितं ।

गुणाः—औखरं तु कटु क्षारं तिक्तं वातकफापहं ॥ ३८ ॥ वि-

*खारानोन खारी मिट्टीसे चारकी विधिसे निकाला जाता है ।

दाहि पित्तकृद्ग्राहि मूत्रशोषकरी 'नृपे' । कटु पाके व्यवायी च 'ध-
न्वन्तरिनिघण्टके' ॥ ३६ ॥ 'द्रव्ये' तु रक्तशूलघ्नं तद्वद्रातानुलोमनं ।
वैद्यै 'भावप्रकाशे' च प्रोक्तं वातविनाशनं ॥ ४० ॥

६ रोमक-सौरा ।

नामानि—औद्भिदं रोमकं चाथ वसुकं वसु पांशु च । ओखरं
पांसवं चैवमैरिणं तदनन्तरं ॥ ४१ ॥ ऊखरजं सार्वसहं प्रोक्तं 'राज-
निघण्टके' । उद्भिदं पांशलवणमुखरं पांशुक्षारकं ॥ ४२ ॥ और्व्यं
सार्वगुणं प्रोक्तं 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । बस्तगन्धं रोम्यलोणं 'केय-
देवनिघण्टके' ॥ ४३ ॥ पार्थिवं भूमिजं भौमं पृथिवीभवमेव च ।
प्रोक्तं 'मदनपाले' तु भूमिपत्रं 'गणे' स्मृतं ॥ ४४ ॥

गुणाः—रोमकं तीक्ष्मत्युष्णं कटु तिक्तं च दीपनं । दाहशो-
षकरं ग्राहि पित्तकोपकरं 'नृपे' ॥ ४५ ॥

१० समुद्रफेन ।

नामानि—समुद्रफेनं फेनश्च वाधिफेनं पयोधिजम् । सुफे-
नमब्धिडिण्डीरं सामुद्रं 'राजनामके' ॥ ४६ ॥ शुष्कफेनोदधिफेनं
तद्वत्सागरजं मलम् । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्तं वैद्यविचक्षणैः
॥ ४७ ॥ दिण्डिरोब्धिकफश्चैव तथा वारिकफोब्धिजः । शुष्को-
ऽशुष्कस्तोयमलो चाब्धिफेनस्तु 'केयके' ॥ ४८ ॥ फेनोर्णवमलश्चैव
'द्रव्यरत्ने' प्रकीर्तितः ।

गुणाः—समुद्रफेनं शिशिरं कषायं नेत्ररोगनुत् ॥ ४९ ॥ कफ-
कण्ठामयघ्नं च रुचिकृत्कण्ठरोगहृत् । 'नृपे' प्रोक्तं तथा 'धन्वे'
चक्षुष्यं लेखनं हिमम् ॥ १ ॥

११ टंकण-टांकणखार, सोहागा ।

नामानि—टंकणष्टंकणक्षारो रङ्गक्षारो रसाधिकः ॥ ५० ॥
लोहद्रावी रसघ्नश्च सुभगो रङ्गदस्तथा । वर्तुलं कणकक्षारं मलिनं
धातुवल्लभम् ॥ ५१ ॥ प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रज्ञपण्डितैः ।
मालतीरससम्भूतो द्रावी द्रावणकस्तथा ॥ ५२ ॥ लोहशुद्धिकरश्चैव
'धन्वन्तरिनिघण्टके' । स्वर्णपाकस्तथा प्रोक्तो 'केयदेवनिघण्टके' ॥ ५३ ॥
सौभाग्यं धातुद्रवकं प्रोक्तम् 'भावप्रकाशके' । तथा 'त्वमरकोशे' तु
रसयोनिः प्रकीर्तितः ॥ ५४ ॥ द्वावितिसंख्यकेति भिषग्भिः परि-
कीर्तितः ।

गुणाः—टंकणं तु कटूष्णं च कफनाशनमेव च ॥ ५५ ॥ स्था-
घरादि विपघ्नं च कासश्वासहरम् 'नृपे' । दीपनो निलवांतिघ्नो
रूक्षः 'केयनिघण्टके' ॥ ५६ ॥ 'द्रव्यरत्ने' ज्वरघ्नं च 'मदने' वात-
पित्तकृत् ।

१२ श्वेतटंकण-सफेदसोहागा ।

नामानि—श्वेतं तु श्वेतकं चैव श्वेतटंकणमेव च ॥ ५७ ॥
लोहशुद्धिकरम् सिन्धुमालतीतीरसम्भवम् । शिवं च द्रावकं चैव
सितक्षारम् तथा 'नृपे' ॥ ५८ ॥

गुणाः—सुश्वेतं टंकणम् स्निग्धम् कटूष्णम् कफवातनुत् ।
आमक्षयापहच्छ्वास विषकासमलापहम् ॥ ५९ ॥ प्रोक्तं 'राजनि-
घण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।

१३ स्वर्जिक्षार-सज्जीखार ।

नामानि—स्वर्जिक्षारः स्वर्जिकश्च क्षारस्वर्जी सुखार्जिकः ॥ ६० ॥
सुवर्चिकः सुवर्ची च सुखवर्चा 'नृपे' तथा । सर्जिका सर्जिकाक्षारः
सुवर्चश्च सुवर्चिका ॥ ६१ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु संप्रोक्ता वैद्य-
नायकैः । तथा कपोतकोपाक्या 'केयदेवनिघण्टके' ॥ ६२ ॥ तथा 'भाव-
प्रकाशे' तु कपोतः परिकीर्तितः ।

गुणाः—स्वर्जिकः कटुरूष्णश्च तीक्ष्णो वातकफार्तिनुत् ॥ ६३ ॥
गुल्माध्मानकृमीन्हन्ति व्रणजाठरदोषनुत् । 'नृपे' प्रोक्तो तथा मांघ-
मेदोघ्नो 'धन्वनामके' ॥ ६४ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव शूलहा परिकीर्तितः ।

१४ लवणक्षार-लोणखार ।

नामानि—ततो लवणक्षारं च लवणोत्थम् तथैव च ॥ ६५ ॥
लवणासुरजं चैव लवणभेद एव च । जलजं लवणक्षारं क्षारं लवण-
मित्यपि ॥ ६६ ॥ लोणारक्षारसंज्ञं च प्रोक्तं 'राजनिघण्टके' ।

गुणाः—लोणारक्षारमत्युष्णं तीक्ष्णं पित्तप्रवृद्धिदम् ॥ ६७ ॥
वातगुल्महरम् प्रोक्तम् शूलह 'द्राजनामके' ।

१५ वज्रक्षार-नवसागर ।

नामानि—वज्रकं वज्रकक्षारं क्षारश्रेष्ठं विदारकम् ॥ ६८ ॥ सारं
चन्द्रनसारं च धूमोत्थं धूमजांगजम् । प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' तु वैद्य-

विद्याविशारदैः ॥ ६६ ॥ इष्टिकादहने जातं पांडुरं लवणं लघु । नव-
साराख्यसंज्ञं तु सारं च नवसारकम् ॥ ७० ॥ चुल्लिकालवणं चैव
'धन्वन्तरिनिघण्टके' ।

गुणाः—वज्रकं क्षारमत्युष्णं तीक्ष्णं क्षारं च रेचनम् ॥ ७१ ॥
गुल्मेदरातिविष्टम्भशूलघ्नं च सरं 'नृपे' ।

१६ यवक्षार-जवाखार ।

नामानि—यवक्षारस्तु पाक्यश्च यवजो यवशूकजः ॥ ७२ ॥ यव-
शूको यवावहश्च यवपित्त्यं यवाग्रजः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु वैद्य-
शास्त्रज्ञपण्डितैः ॥ ७३ ॥ शूकजो यावशूकश्च यव्यो 'धन्वनिघण्टके' ।
यवनाजलसंज्ञश्च यावशूकक एव च ॥ ७४ ॥ क्षारपाक्यं तीक्ष्णरसो
याव्यो यावहश्च 'केयके' । तथा 'मदनपाले' तु शूकपाक्यः प्रकी-
र्तितः ॥ ७५ ॥

गुणाः—यवक्षारः कटूष्णश्च कफवातोदरापहा । आमशूलाश्म-
रीकृच्छ्रविषघ्नश्च सरो 'नृपे' ॥ ७६ ॥ रुक्षेऽग्निदीपनस्तीक्ष्णो हृद्यो
पित्तास्रदूषणः । 'धन्वे' प्रोक्तो तथा 'केये' अशौघ्नो घ्नीहगुल्महा
॥ ७८ ॥ गलामयानाहपांडुग्रहणी श्वासहा तथा ।

१७ सर्वक्षार-साबुन, रेह ।

नामानि—सर्वक्षारो बहुक्षारः समूहक्षारकस्तथा ॥ ७९ ॥ स्तो-
मक्षारो महाक्षारो मलारिः क्षारमेलकः ।

गुणाः—सर्वक्षारो ह्यतिक्षारश्चक्षुष्यो वस्तिशोधनः ॥ ८० ॥
गुदावतकृमिघ्नश्च वस्त्रशुद्धिकरो 'नृपे' ॥ ८१ ॥

५ मूलकादिवर्गः ।

मूलक-मूली ।

नामानि—मूलकं नीलकण्ठं च मूलावहं दीर्घमूलकं ॥ १ ॥
भूक्षारं कन्दमूलं स्याद्वस्तिदन्तं सितं तथा । शङ्खमूलं हरिप्रणं
रुचिरं दीर्घकन्दकं ॥ २ ॥ कुञ्जरक्षारमूलं च प्रोक्तं 'राजनिघ-
ण्टके' । नीलकन्दं महाकन्दं मृत्तिकाक्षारमेव च ॥ ३ ॥ रुचिर्यं
हरिप्रणं च 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । स्वस्तिको हस्तिकन्दश्च नील-
पर्णं तथैव च ॥ ४ ॥ वस्तिकाक्षारसंज्ञं च द्रवदंशक्षमं तथा ।

तीक्ष्णं तु 'केयदेवे' च भिषग्भिः परिकीर्तितं ॥ ५ ॥ करिदन्तीभसंज्ञश्च
क्षुद्रमूलं च मिश्रकं । 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तं भिषग्विद्याविशारदैः
॥ ५ ॥ दन्तोऽज्वलं तु विदितं तथा मूलकपोतिका । प्रोक्ता 'मदन-
पाले' तु वैद्यशास्त्रज्ञपण्डितैः ॥ ७ ॥ 'भावप्रकाशे' संप्रोक्तं मिश्रं
शालेयकं तथा । तथा 'गणनिघण्टे' तु मृत्तिकाशारसेवित ॥ ८ ॥
ततो व्यक्तिरसं चैव रुचिकं तदनन्तरं । मूलकस्य च संख्याका
संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ९ ॥

गुणाः—मूलकं तीक्ष्णमुष्णं च कटुग्राही च दीपनं । दुर्नामगु-
ल्महृद्रोगवातघ्नं रुचिदं गुरु ॥ १० ॥ 'राजनामनिघण्टे' च संप्रोक्तं
वैद्यनायकैः । उधरनासारोगहर कण्ठरोगविनाशनं ॥ ११ ॥ स्नेह-
सिद्धं त्रिदोषघ्नं प्रोक्तं 'भावप्रकाशके' । भोजनात्प्राक् पित्तलं च
दाहकारि प्रकीर्तितं ॥ १२ ॥ आमत्रिदोषहृत् स्निग्धं विष्टंभी
कफवातहृत् । प्रोक्तं 'धन्वनिघण्टे' च वैद्यविद्याविशारदैः ॥ १३ ॥
स्वयं हृद्यं दन्तशूलनाशन कोष्ठशुद्धिदं । उदावर्तं पीनसाख्य
कासयुक्तक्षयं तथा ॥ १४ ॥ श्वासघ्नं नेत्ररोगं हृत्यतः 'केयदेवके' ।
तत्रैव रुक्षं दाहीति कीर्तितं वैद्यनायकैः ॥ १५ ॥ शुष्कं शोषहर चैव
दोषत्रयविनाशनं । तत्पुष्पं कफपित्तघ्नं फलं वातकफापहं ॥ १६ ॥

२ चाणाक्यमूलक-वड़ी मूली ।

नामानि—चाणाक्यमूलजं चान्यच्छालेयं विष्णुगुप्तकं । स्यू-
लमूलं महाकन्दं कौटिल्यं मरुसम्भवं ॥ १७ ॥ शालामकटकं मिश्रं
प्रोक्तं 'राजनिघण्टके' । शालाककटकं च 'धन्वन्तरिनिघण्टके'
॥ १८ ॥ कपोतिका बालमूलं 'केयदेवनिघण्टके' । गजदन्तसमानं
च तथा नेपालमूलकं ॥ १९ ॥ 'भावप्रकाशे' संप्रोक्ता तथा मूल-
कपोतिका ।

गुणाः—चाणाक्यमूलकं ग्राहिकटु रुच्यं च दीपनं ॥ २० ॥ गु-
रुष्णं कफवातघ्नं कृमिगुल्महरं 'नृपे' ।

३ गृजन-लाल मूली ।

नामानि—गृजनं शिखमूलं च यवनेष्टं च वर्तुलं ॥ २१ ॥
ग्रन्थिमूलं शिखाकन्दं कन्दं डिंडीरमोदकं । प्रोक्तं 'राजनिघण्टे'
तु भिषक्विद्याविशारदैः ॥ २२ ॥

गुणाः—गृजनं कटुकोष्णं च कफवातरुजापहं । रुच्यं च दीपनं हृद्यं दुर्गन्धं गुल्महृन्नेपे ॥ २३ ॥

४ पिंडमूलक-गोल मूली, सलगम ।

नामानि—पिंडमूलं गजांडं च पिंडकं पिंडमूलकं ।

गुणाः—पिंडमूलं कटूष्णं च वातगुल्महरं नृपे ॥ २४ ॥

५ गार्जर-गार्जर ।

नामानि—गार्जरं पिंडमूलं च पीतकं च समूलकं । स्वादुमूलं सुपीतं च नारङ्गं पीत मूलकम् ॥ २५ ॥ प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' तु वैद्यशास्त्रज्ञपण्डितैः । गार्जरं पिंगलं मूलं पिङ्गमूलम् च मूलकं ॥ २६ ॥ पीतकन्दं गृज्जरं च 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । तथा 'मदनपाले' तु प्रोक्तो नारंगवर्णकः ॥ २७ ॥

गुणाः—गार्जरं मधुरं रुच्यं किञ्चित्कटु कफापहम् । आध्मानकुमिशूलघ्नं दाहपित्ततृषापहं ॥ २८ ॥ प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' तु वैद्यशास्त्रज्ञपण्डितैः । पाके तु तीक्ष्णमुष्णं च विदाही दीपनं तथा ॥ २९ ॥ हृद्यं ग्राही तु रुक्षं च रक्तपित्तविनाशनम् । नेत्ररोगाशौग्रहणीवातश्लेष्मिकीमिहरम् ॥ ३० ॥ शुक्रदं रुचिकृत्प्रोक्तं वैद्यैः 'केयनिघण्टके' । 'द्रव्यरत्ने' शीतलं च रक्ताशौहन्ति 'मादने' ॥ ३१ ॥

६ शिशू-सहंजन ।

नामानि—शिशुर्हरितशाकश्च शाकपत्रः सुपत्रकः । उपदंशक्षमश्चैव दंशः कोमलपत्रकः ॥ ३२ ॥ बहुमूला दंशमूलस्तीक्ष्णमूलो 'नृपे' तथा । शिशुको लघुपत्रश्च ह्रस्वदंशक्षमस्तथा ॥ ३३ ॥ ततो मूलकपर्णीति प्रोक्ता 'धन्वन्तरौ' ध्रुवं । 'केयदेवनिघण्टे' तु प्रोक्तो हरितसारकः ॥ ३४ ॥ चाक्षीवो मोचकः प्रोक्तो 'त्वमरे' तीक्ष्णगन्धकः ।

गुणाः—शिशुश्च कटुतिक्तोष्णस्तोक्ष्णो वातकफापहः ॥ ३५ ॥ मुखजाऽयहरो रुच्यो व्रणघ्नो दीपनो 'नृपे' । समीरक्रिमिप्लीहघ्नो विदग्धीविषनाशनः ॥ ३६ ॥ आमगुल्महरः प्रोक्तो 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । पाके कटुस्तु रुक्षश्च संग्राही शुक्लस्तथा ॥ ३७ ॥ हृद्यं च रक्तपित्ताढ्यं चक्षुष्यं कफवातजित् । शोथघ्नो मेदहश्चैव गण्डापचिविनाशनः ॥ ३८ ॥ तत्पुष्पं गुरुग्राहीति कषायं वातकोपनम् ।

तद्वीजं तु भवेत्तीक्ष्णं चक्षुष्यं चोष्णमेव वा ॥३६॥ मधुरं भिषजां
नाथैः 'केयदेवे' प्रकीर्तितम् । 'द्रव्ये' तूदरनिघ्नं च वैद्यैः प्रोक्तं
न संशयः ॥ ४० ॥ तत्फलं कफपित्तघ्नं शूलकुष्ठक्षयापहम् । श्वासघ्नं
कविभिः प्रोक्तम् 'भावनामनिघण्टके' ॥ ४१ ॥

७ शोभांजन-कालासहिंजन ।

नामानि—शोभांजनो नीलशिग्रुस्तीक्ष्णगन्धो जनप्रियः । मुखा-
मोदः कृष्णशिग्रुश्चक्षुष्यो रुचिरञ्जनः ॥४२॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु
वैद्यविद्याविशारदैः । मुखभङ्गः शिग्रुकश्च 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥४३॥
कृष्णगन्धो मुरङ्गो च शालनस्तु क्षमोधनः । छदस्तु 'केयदेवे' च
संप्रोक्तो भिषजांवरैः ॥४४॥ अवदंशो मोचकश्च तथैव बहुलच्छदः ।
मुखभङ्गो मूलपणीं ततो हलच्छदा मता ॥ ४५ ॥ काक्षीवो विद्रधि-
घ्नश्च तथैव मूलकच्छदा ।

गुणाः—शोभांजनस्तीक्ष्णकटुः स्वादूष्णः पिच्छलस्तथा ॥ ४६ ॥
जन्तुवातार्तिशूलघ्नश्चक्षुष्यो रोचनो 'नृपे' ।

८ श्वेतशिग्रु-सफेदसहिंजन ।

श्वेतशिग्रुस्तथा तीक्ष्णो मुखम्भङ्गः सितावहयः ॥४७॥ सुमूलः
श्वेतमरिचो रोचनः शिग्रुकस्तथा । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' च श्वेतको
'धन्वनामके' ॥ ४८ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव प्रोक्तः सितच्छदस्तथा ।
दिक्संख्या च सदा प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः ॥ ४९ ॥

गुणाः—शोफानिलहरो रूच्यो दीपनो मुखजाड्यहा । तथैव
कटुतीक्ष्णश्च चोष्णस्त्वंगव्यथाहरः ॥ ५० ॥ श्वेतस्तु शिग्रुकः प्रोक्तो
'नृपनामनिघण्टके'

९ रक्तशिग्रु-लालसहिंजन ।

नामानि—रक्तको रक्ताशिग्रुः स्यान्मधुरो बहुलच्छदः ॥ ५१ ॥
सुगन्धकेसरः सिंहो मृगारिश्च 'नृपे' तथा । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु
संप्रोक्तो मधुशिग्रुकः ॥५२॥ रक्तान्यः शिग्रुकश्चैव तथैव मधुगुञ्जनः ।
स्वादुगन्धिर्गुञ्जनकः शिग्रुकः 'केयदेवके' ॥ ५३ ॥ पञ्चभूसंख्याका
प्रोक्ता भिषकुशास्त्रपरायणैः ।

गुणाः—रक्तशिग्रुर्महावीर्यो मधुरश्च रसायनः ॥ ५४ ॥ शोफा-
ध्मानसमीरार्तिपित्तश्लेष्मघ्नको 'नृपे' । शिग्रुपत्रम् भवेदुच्यं कटूष्णं

कफवातहम् ॥ ५५ ॥ दीपनं च तथापथ्यं कृमिघ्नं पाचनम् 'धने' ।

१० वंश-बांस ।

नामानि—वंशो यवफलो वेणुः कर्मारस्तृण केतुकः ॥ ५६ ॥
मस्करः शतपर्वा च कंटालुः कंटकी तथा । महाबलो दृढग्रन्थिर्दण्डपत्रो
धनुर्दुमः । धनुष्यो वेणु दृढकाण्डश्च प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' ॥ ५७ ॥
कामुकस्तृणकेतुश्च 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । वंशी सुपर्वा विख्याता
तथैव षट्पदालया ॥ ५८ ॥ तृणध्वजः शब्दमाल स्त्वचिसारश्च 'केयके'
तथा 'भावप्रकाशे' तु तेजनः परिकीर्तितः ॥ ५९ ॥ बहुपर्वकः संप्रोक्तो
'गणनामनिघण्टके' । पञ्चविंशतिसंख्याका संप्रोक्ता भिषजांवरैः ॥ ६० ॥

गुणाः—वंशोऽम्लस्तु कषायश्च किञ्चित्तित्कश्च शीतलः । मूत्र-
कृच्छ्रप्रमेहाशं पित्तदाहास्त्रनाशनः ॥ ६१ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु
पुरातनचिकित्सकैः ।

११ रंध्यवंश-पोला बांस ।

नामानि—रंध्यवंशस्तु त्वक्सारः कीचकावहश्च मस्करः ॥ ६२ ॥
वादनीयः सुपिराख्यः प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव
कुरकश्च करीरकः ॥ ६३ ॥ अत्रुसंख्येति संप्रोक्ता पुरातनचिकि-
त्सकैः ।

गुणाः—विशेषो रंध्यवंशस्तु दीपनोऽजीर्णनाशनः ॥ ६४ ॥ रुचि-
कृत्पाचनोद्दयो गुल्मघ्नो शूलनाशनः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु
वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ६५ ॥

१२ वंशाकुर-अंकुर ।

नामानि—वंशाग्रं तु करीरश्च तथा यवफलांकुरः । वंशांकुरश्च
संप्रोक्तो 'राजनामनिघण्टके' ॥ ६६ ॥

१३ वंशग्रंथि-बांसकी गांठ ।

नामानि—वंशग्रंथिः परुः पर्वः काण्डसंधिश्च 'राजके' ।

गुणाः—करीरं कटु तिक्तारुलं कषायं लघु शीतलं ॥ ६७ ॥
पित्तास्रदाहकृच्छ्रघ्नं रुचिकृत्पर्व निर्गुणं । 'राजनामनिघण्टे' तु प्रोक्तं
वैद्यविशारदैः ॥ ६८ ॥ वस्तिशोधनकश्चैव भेदनः कफहारकः । पित्ता-

सुकुष्ठशोफघ्नो व्रणनाशनमेव च ॥ ६६ ॥ बहुमूत्रकफघ्नश्च प्रोक्तो
'केयनिघण्टके' ।

१४ वेत्र-बड़ा वेत ।

नामानि—वेत्रो वेतो योगिदण्डः सुदण्डो मृदुपर्वकः ॥ ७० ॥

गुणाः—वेत्रः पञ्चविधः शैत्यकपायो भूतपित्तहृत् ॥ ७१ ॥

प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु 'धन्वे' पुत्रविनाशनः ।

१५ माकन्दी-मायमूल ।

नामानि—माकन्दी बहुमूला च मादनी गन्धमूलिका ॥ ७२ ॥

एका विशदमूली च श्यामला चापरा 'नृपे' ।

गुणाः—माकन्दी कटुका तिक्ता मधुरा दीपनी परा ॥ ७३ ॥

रूच्याऽल्पवातुला पथ्या न वर्षासु हिता 'नृपे' ।

१६ शोली-वनहल्दी, सोली ।*

नामानि—शोली वनहरिद्रा च वनारिष्टा च शोलिका ॥ ७४ ॥

गुणाः—शोलिका कटु गौल्या च रुच्या तिक्ता च दीपनी ।

प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु पुरातनचिकित्सकैः ॥ ७५ ॥

१७ शृङ्गाटक-सिंघाड़ा

नामानि—शृङ्गाटकः शृङ्गरुहो जलवल्ली जलाश्रया । शृङ्गकन्दः

शृङ्गमूलो विषाणी 'राजनामके' ॥ ७६ ॥ शृङ्गावहः सप्तनाडीकः

संप्रोक्तो 'धन्वनामके' । जलकण्टस्त्रिकोणश्च त्रिकण्टस्त्रिक एव च

॥ ७७ ॥ कसेरुकं 'केयदेवे' भिषग्भिः परिकीर्तितः । 'भावप्रकाशे'

संप्रोक्तं त्रिकोणफलमित्यपि ॥ ७८ ॥ तथा जलफलं प्रोक्तं भिष-

* सोलहलीका पेड़ दक्खिनी हल्दीके समान होता है और उसमें एक सीधी डरठी निकलती और उसके दोनों ओर पतरे के समान तीन अंगुल चौड़े और मुड़े हाथ भर लम्बे पत्ते निकलते हैं । इस वृक्ष पर एक साधारण आमके बराबर एक कली निकलती है और उसमें खांचे रहते हैं उनमें से एक एक फूल फूलता है । एक फूलकी डरठी चार अंगुल लम्बी रहती और फूल भी लम्बाई लिये रहता है । फूलका रङ्ग सुनहरी रहता है । इसमें अच्छी सुगन्धि आती है । इसका गीला बृत्त सूख जाय तो भी उसमें से मधुर सुगन्धि आती रहती है । इसकी कन्द, गांठ, बद, गलगण्ड, गरडमाला आदिमें पानीसे घिस कर लगायी जाती है ।

विद्याविशारदैः । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव त्वं वुक्कन्द प्रकीर्तितः ॥ ७६ ॥

गुणाः—शृङ्गाटकस्तु संप्रोक्तो रक्तपित्तहरः सरः । लघुवृष्य-
स्त्रिदोषघ्नः पित्तभ्रमविनाशनः ॥ ८० ॥ शोषहा रुचिदश्चैव मेहेनो
'राजनामके' । त्रिदोषज्वरनिघ्नश्च प्रोक्तो वैद्यविशारदैः ॥ ८१ ॥

१८ भृङ्गावहा-भ्रमरच्छली ।*

नामानि—भृङ्गावहा भ्रमरच्छल्ली भ्रमरा भृङ्गमूलिका । भृङ्ग-
च्छल्ली तु कविभिः संप्रोक्ता 'राजनामके' ॥ ८२ ॥ ततो भ्रमरच्छली
तु 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । उग्रगन्धा छदः क्षारद्रुमावहो भ्रमरत्वचा
॥ ८३ ॥ भ्रमरश्चैव विज्ञेयो 'द्रव्यरत्ननिघण्टके' ।

गुणाः—भृङ्गावहा तु कटूष्णा च तिका दीपनरोचनी ॥ ८४ ॥

१९ पेऊ-वनअदरख ।

नामानि—पेऊ वनार्द्रका प्रोक्ता वनजाऽरण्यजाऽऽर्द्रका । प्रोक्ता
'राजनिघण्टे' तु पञ्चसंख्या भिषगजनैः ॥ ८५ ॥

गुणाः—पेऊ तु कटुकाऽम्ला च रुचिकृद्बल्यदीपनी ।

२० रसून-सफेद लहसुन ।

नामानि—रसेनस्तु लशूनश्च ह्यरिष्टो म्लेच्छकन्दकः ॥ ८६ ॥
महौषधं च भूतघ्नस्तूयगन्धश्च 'राजके' । जुगुप्सितोम्लकांतश्च
रसायनवरो 'गणे' ॥ ८७ ॥

गुणाः—लसुनोम्लरसश्चैव गुरूष्णः कफघातहा । अरुचिक्रिमि-
हृद्रोगशोफघ्नश्च रसायनः ॥ ८८ ॥ कटुस्निग्धः पिच्छलश्च वल्यो
वृष्यस्तथैव च । भगास्थिसन्धानकरो मेधावी स्वरवर्णकृत् ॥ ८९ ॥
गुरु स्वादुरसस्तीक्ष्णश्चक्षुष्यो 'राजनामके' । 'धन्वे' तु श्वासहा प्रोक्तो
'मदने' रक्तपित्तकृत् ॥ ९० ॥ हिध्मपीनसकासघ्नो 'गणे' प्रोक्तो
भिषगजनैः ।

२१ महाकन्द-लाल लहसुन ।

नामानि—महाकन्दो गृञ्जनश्च दीर्घपत्रः पृथुच्छदः ॥ ९१ ॥

† भवर छाती का वृक्ष बड़ा होता है । इसके पत्ते बादामके पत्ते के समान
होते हैं । इसकी लकड़ी बहुत अच्छी होती है । इसकी फली बहुत ही पतली
होती है । इसकी लकड़ीका रङ्ग सफेद होता है । इस लकड़ीसे तलवारकी
म्पानें बहुत अच्छी बनती हैं ।

यवनेष्टः स्थूलकन्दस्तथैव च विलोहितः । सप्तसंख्या भिषक्श्रेष्ठैः
संप्रोक्ता 'राजनामके' ॥ ६२ ॥

गुणाः—गृञ्जनस्य मधुरं कटु कन्दं नालमप्युपदिशन्ति कषायं ।
पत्रसञ्चयमुशन्ति च तिक्तं सूरयो लवणमस्थि वदन्ति ॥ ६३ ॥
हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूलविवन्धगुल्माहचिकृच्छृशोफान् । दुर्नाम-
कुष्ठानिलसादजंतुकफामयान्हन्ति महारसेनः ॥ ६४ ॥

२२ पलांडु-सफेद प्याज ।

नामानि—पलाण्डुस्तीक्ष्णकंदश्च उल्ली च मुखदूषणः । शूद्र-
प्रियः रुमिग्नश्च दीपनो मुखगन्धकः ॥ ६५ ॥ बहुपत्रो विश्वगन्धो
रोचनो 'राजनामके' । यवनेष्टः सुकन्दश्च 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥
॥ ६६ ॥ तथा 'मदनपाले' तु दुर्गन्धः परिकीर्तितः । दुर्बलास्यस्तथा
प्रोक्तो 'गणनामनिघण्टके' ॥ ६७ ॥ हरितोऽन्यः पलाण्डुश्च
लताकौ दुद्रुमो 'धने' । हारिद्रोऽन्यस्तथा प्रोक्तो 'राजनामनिघण्टके',
॥ ६८ ॥

गुणाः—पलांडुः कटुको बल्यः कफपित्तहरो गुरुः । वृष्यश्च
रोचनः स्निग्धो वांतिहृद् 'द्राजनामके' ॥ ६९ ॥ 'मदने' वीर्यकृत्प्रोक्तं
'भावे' लशुनसाम्यकः । कफकृत्तत्र संप्रोक्तो वैद्यविद्याविचक्षणैः
॥ १०० ॥ गुरुर्वातास्रपित्तघ्नो मधुरो रुमिनाशनः । अन्यः क्षीरपलां-
डुश्च वृष्यो मधुरपिच्छलः ॥ १ ॥ प्रोक्तो 'धन्वनिघण्टे' तु तद्बीजं
वातलं स्मृतं । कीटघ्नं शीतलं 'द्रव्ये' वृष्यं मोहकरं तथा ॥ २ ॥
वाताशौघं कफघ्नं च प्रोक्तं 'गणनिघण्टके' ।

२३ राजपलांडु-लालप्याज ।

नामानि—ततो राजपलांडुश्च यवनेष्टो नृपाव्हयः ॥ ३ ॥ राजप्रियो
महाकन्दो दीर्घपत्रश्च रोचकः । नृपेष्टो नृपकन्दश्च रक्तकन्दो 'नृप'
प्रियः ॥ ४ ॥ राजेष्टश्च तथा प्रोक्तो 'राजनामनिघण्टके' ।

गुणाः—पलांडुर्नृपपूर्वश्च शिशिरः पित्तनाशनः ॥ ५ ॥ कफ-
हृद्दीपनश्चैव बहुनिद्राकरो 'नृपे' ।

२४ सूरण-जमींकन्द ।

नामानि—कंडुलः सूरणः कन्दो सुकन्दो स्थूलकन्दकः ॥ १०६ ॥
दुर्नामारिः सुव्रतश्च वातारिः कन्दसूरणः । अशौघं स्तीव्रकन्दश्च

१२२

निघण्टुशिरोमणिः ।

कन्दार्हः कन्दवर्धनः ॥७॥ बहुकन्दो रुच्यकन्दः सुरकन्दस्तथा 'नृपे' ।
सुरेन्द्रको वज्रकन्दो चित्रकन्दस्तु 'केयके' ॥८॥ गुदजघनस्तु कन्दश्च
कन्दाली कन्दकस्तथा । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव प्रोक्तो वैद्यविशारदः
॥९॥ गुदामयहरश्चैव कुंदलो 'मदने' स्मृतः ।

गुणाः—सूरणः कटु रुच्यश्च दीपनः कृमिनाशनः ॥ १० ॥
कफघातश्वासकासवमनाशोहरस्तथा । शूलगुल्महरश्चैव रक्तदोष
हरो 'नृपे' ॥ ११ ॥ आमदोषहरश्चैव पाचनो 'धन्वनामके' । विशद-
श्चैव रुक्षश्च विष्टं भी च कषायकः ॥ १२ ॥ बलासगुदकीलघ्नः प्रोक्तः
'केयनिघण्टके' । सर्वेषां कन्दशाकानां सूरणः श्रेष्ठ उच्यते ॥ १३ ॥
दूषणां रक्तपित्तीनां कुष्ठिनां न हितो हि सः । कण्डुकुच्य तथा प्रोक्तो
'भावनामनिघण्टके' ॥ १४ ॥

२५ अरण्यसूरण-ढेही, वनसूरन* ।

नामानि—सितसूरणश्च वन्यश्च वनजोऽरण्यसूरणः । वनकन्दः
कंडुलश्च 'नृपे' तु श्वेतसूरणः ॥ १५ ॥ उल्लस्तु 'केयदेवे' च 'द्रव्य-
रत्नाकरे' तथा । सुरेन्द्रकश्चित्रदंडः वज्रकन्दश्च कन्दकः ॥ १६ ॥

*वनसूरनका वृक्ष सूरनके ही समान और पत्ते तथा कन्द भी सूरनके ही
समान होता है । यह बरसातमें आपही आप जगता है । इसकी १ छूत और
२ वज्रपूठ दो जाति होती हैं । छूतमें फूलकी डण्डी निकलने पर उसमें पत्ता
निकलता है । परन्तु दूसरी जातिके वज्रपूठ सूरनमें जो डण्डी निकलती है
उसमें छोटी पीले रङ्गकी टोंटीके समान नली निकलती है । वह हाथीकी सूँड़के
समान सीधी होती है । इसका वृक्ष पुराना होने पर इसमें जो सूरनके
समान पत्तोंका छतासा रहता है वह गिर जाता है और उस डण्डीके ऊपरी
भागमें मकाई के भुट्टेके समान भुट्टा निकलता है । इसीसे इसे वज्रपूठ कहते हैं ।
इस भुट्टेमें लम्बे और घने दाने रहते हैं । दाने पकने पर भुट्टा सूँड़ोंके समान
लाल दिखाई पड़ते हैं । कोकण देशमें वज्रपूठ वृक्षको शेवल्या कहते हैं और
इसकी कोमल डण्डीकी वहांवाले भाजी बनाते हैं । छूतकी भी भाजी बनती है ।
इसके कन्दकी भी तरकारी बनाते हैं । इसमें कनकनाहट और खुजली बहुत
होती है । उसे दूर करनेके लिये शाकको कतरकर चावलके धोवनमें पकाते और
इमली तथा इमलीकी पत्ती डालकर कनकनाहट दूर करते हैं । फिर तलनेके
समय भी इमली और गुड़ डालते हैं । ऐसा करनेसे उसका विषभागभी निकल
जाता है । फोड़ा, गलगण्ड, गांठ, कर्णमूल आदिपर इसके कन्दको घिसकर
अथवा पीसकर लगानेसे गांठ वैठ जाती है ।

गुणाः—वनस्थः सूरणो रुच्यः कटूष्णः कृमिगुल्महा । शूलहा-
ऽरुचिहृच्चैव प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' ॥ १७ ॥ 'द्रव्ये' पित्तकरो रुक्षो
हृद्यः कफविनाशनः ।

२६ मुखालु—कोनफल, गोराडू ।*

नामानि—मुखालुपिंडपारोहो दीर्घकन्दः सुकन्दकः ॥ १८ ॥
स्थूलकन्दो महाकन्दः खादुकन्दस्तु 'राजके' ।

गुणाः—मुखालुर्मधुरः शीतः पित्तहा रुचिवातकुत् ॥ १९ ॥
प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु दाहशोषतृषापहा । रक्तदोषहरश्चैव शोफहा
'द्रव्यनामके' ॥ १२० ॥

२७ पिंडालु—शकरकन्द ।†

नामानि—पिंडालुर्गन्धिलः पिंडकन्दस्तादुलपत्रकः । कन्दग्रन्थी
रोमकन्दो रोमालुर्रोमशस्तथा ॥ २१ ॥ नानाकन्दः पिंडकश्च 'राजना-
मनिघण्टके' ।

गुणाः—पिंडालुर्मधुरः शीतो सूत्रकृच्छ्रामयापहः ॥ २२ ॥ दाह-
शोषप्रमेहघ्नो वृष्यः सतर्पणो गुहः । 'द्रव्यरत्ने' दुर्जरं च संप्रोक्तं
नैव संशयः ॥ २३ ॥

२८ रक्तपिंडालु—लाल शकरकन्द ।

नामानि—रक्तालु रक्तपिंडालु रक्तपिंडश्च लोहितः । रक्तकन्दो
लोहितालुः प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' ॥ १२४ ॥

*.गोराडूकी बेलिके पत्ते बंगलापानके समान लम्बे नेत्रदार होते हैं ।
इसकी कन्द शकरकन्दके समान लाल और सफेद दो जातिकी होती है । कोंकण
गुजरात और खानदेशमें यह अधिक होता है । इस लताकी डरठी लगानेसे
सालभरमें बड़ी शकरकन्दके समान कन्द निकलता है । इसकी तरकारी अच्छी
होती है । इस कन्दका ऊपरी छिलका निकाल कर कन्द टुकड़े टुकड़े कर सुखारखे
और उसका आटा बनाकर लड़कोंको दे तो तीखुर के समान उसका उपयोग
होता है । यह कन्द बलदायक और पौष्टिक है । इसकी सुबसी, पींड और
अरंडी नामसे तीन जाति हैं ।

†पिण्डालु शकरकन्दके समान एक कन्द है । इसकी बेलिका विस्तार
अधिक नहीं होता । इसके पत्ते गोल पानके समान और कोरदार होते हैं ।
इसमें आलू के समान कन्द निकलती है ।

गुणाः—रक्तपिंडालुकः शीतो मधुराम्लः श्रमापहः । पित्तदाहा-
पहो वृष्यो गुरुर्बल्यो 'नृपे' तथा ॥ २५ ॥

२६ कासालु-कसैर ।

नामानि—कासालुः कासकन्दश्च कन्दालुश्चाऽऽलुकस्तथा । आ-
लुर्विशालपत्रश्च पत्रालुश्चेति 'राजके' ॥ २६ ॥ कासमेदस्तु कांडा-
लुस्त्वलुको 'धन्वनामके' ।

गुणाः—कासालुस्त्रकं हूतिवातश्लेष्मामयापहः ॥ २७ ॥ अरोचक-
हरः स्वादुः पथ्यो दीपन 'राजके' ।

३० फोंडालु ।

नामानि—फोंडालुर्लोहितालुश्च रक्तपत्रो मृदुच्छदः ॥ २८ ॥

गुणाः—फोंडालुः श्लेष्मवातघ्नः कटूष्णो दीपनो 'नृपे' ।

३१ पानीयालु-पत्तेकी अरुई ।

नामानि—पानीयालुर्जलालुः स्यादनूपालुर्वालुकः ॥ २९ ॥

गुणाः—पानीयालुस्त्रिदोषघ्नः सन्तर्पणकरो 'नृपे' ।

३२ नीलालु-काली अरुई ।

नामानि—नीलालु रसितालुश्च कृष्णालुः श्यामलालुकः ॥ ३० ॥

गुणाः—नीलालुमधुरः शीतः श्रमहा दाहहा 'नृपे' ।

३३ महिषीकन्द-भैंसाकन्द ।

नामानि—शुभ्रालुर्महिषी कन्दः शुक्रकन्दो लुलायकः ॥ ३१ ॥
सर्पाख्यो वनवासी च विषकन्दस्तदुत्तरम् ॥ नीलकन्दो 'राज-
नाम्नि' प्रोक्ता वैद्य विशारदैः ॥ ३२ ॥

गुणाः—कटूष्णो महिषीकन्दः कफवातामयापहः । मुखजाड्य-
हरो रुच्यो महासिद्धिकरः सितः ॥ ३३ ॥

३४ हस्तिकन्द-हाथीचिंघारी ।

नामानि—हस्तिकन्दो हस्तिपत्रः स्थूलकन्दोऽतिकन्दकः । बृहत्प-
त्रोऽतिपत्रश्च हस्तिकर्णः सुकर्णकः ॥ ३४ ॥ त्वग्दोषारिः कुष्ठहन्ता
गिरिघासी नगाश्रयः । गजकन्दो नागकन्दो 'राजनामनिघण्टके'
॥ ३५ ॥

गुणाः—हस्तिकन्दः कटूष्णश्च कफवातामयापहः । त्वग्दोषश्र-
ममहा कुष्ठविषवीसर्पनाशकः ॥ ३६ ॥

३५ कोलकन्द-वनप्याज ।

नामानि—कोलकन्दः कृमिघ्नश्च पञ्जलो वस्त्रपञ्जलः । पुटालुः
सुपुटश्चैव पुटकन्दस्तथा 'नृपे' ॥ ३७ ॥

गुणाः—कोलकन्दः कटुश्चोष्णो विषवांतिहृमिघ्नकः ।

३६ वाराही-गेंटी, भिवोलीकन्द ।

नामानि—वाराही सूकरी क्रोडकन्या गृष्टिश्च गृष्टिका ॥ ३८ ॥
कन्या विष्वक्सेनकांता वराही ब्रह्मपुत्रिका । कौडीत्रिनेत्रकौमारी
माधवेष्टा महौषधिः ॥ ३९ ॥ क्रोडो सूकरकन्दश्च वन्यश्च कुष्ठ-
नाशनः । वनवासी महावीर्यो तथा शबरकन्दकः ॥ ४० ॥ वराहकन्दो
धीरश्च ब्राह्मकन्दः सुकन्दकः । वृद्धिदोष्याधिहंता च त्वमृतो 'राज-
नामके' ॥ ४१ ॥ माधवी सूकरी कान्तिः कान्ता च वनमालिनी ।
वक्त्रालुः श्वासकन्दश्च शौकरी 'केयदेवके' ॥ ४२ ॥ 'द्रव्ये' तु
शबरीकन्दः किटिः क्रोडा च 'मादने' । तथा कांक्षी च संप्रोक्ता
'गणनामनिघण्टके' ॥ ४३ ॥ विष्वक्सेनप्रिया चैव बदरा 'त्वमरे'
स्मृता ।

गुणाः—वाराही तिक्तकटुका विषपित्तकफापहा ॥ ४४ ॥ कुष्ठ-
मेहकृमिहरा वृष्या वल्या रसायनी । 'नृपे' प्रोक्ता तथा 'द्रव्ये'
घातघ्नी कफनाशनी ॥ ४५ ॥ मधुरातिशुक्ला च तथा शुक्करा
'मदे' । सूत्ररोगहरा चोष्णा 'गणे' प्रोक्ता भिषक्जनैः ॥ ४६ ॥

३७ विष्णुकन्द ।†

नामानि—विष्णुकन्दो विष्णुगुप्तः सुपुटो बहुसंपुटः । जलवासो
बृहत्कन्दो दीर्घवृत्तो हरिप्रियः ॥ ४७ ॥

* जङ्गलों और पर्वतों पर इसकी बेल बहुत फैलती है । इसके पत्ते पानके
समान और कन्द आलू अथवा बृषणके समान होती है और ऊपर सुवरके बालके
समान रोवें रहते हैं । यह कन्द हाथ भर गहरी जमीनमें दो दो निकलती हैं इसे
शूकर खोद कर प्रेमसे खाते हैं ।

† विष्णु कन्द कोकण प्रान्तमें बहुत होता है ।

गुणाः—विष्णुकन्दस्तु मधुरः शिशिरः पित्तदाहहा । शोफहा रुचिदश्चैव सन्तर्पणकरो 'नृपे' ॥ ४८ ॥

३८ धरणीकन्द ।*

नामानि—धरणी धारणी चैव वीरपत्नी सुगन्धकः । कन्दालु वतकन्दश्च कन्दाढ्यो दण्डकन्दकः ॥ ४९ ॥ 'राजनाम्नि' तथा वीरपत्नी चैव सुकन्दकः । कन्दाद्यश्च तथा प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ३३ ॥

गुणाः—ततस्तु धरणीकन्दो मधुरः कफपित्तहा । वक्त्रदोषहरां कण्डूकुष्ठघ्नो 'राजनामके' ॥ ५१ ॥

३९ नाकुली-नकुलकन्द ।

नामानि—नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धारक्तपत्रिका । ईश्वरी नागगन्धा च त्वहिभुक् सुरसा तथा ॥ ५२ ॥ सर्पादनी व्यालगन्धा प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । तथा सर्पसुगन्धा च तथैव भोगिगन्धिका ॥ ५३ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्ता रोचकपत्रिका । नकुलेष्टा महातीर्था विषघ्नी सुवहा तथा ॥ ५४ ॥ सुगन्दा विषदंष्ट्री च 'केये' तु चिरपत्रिका । ततो नागसुगन्धा च भुजङ्गाक्षी तथैव च ॥ ५५ ॥ सर्पाङ्गी विषनाशा च प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ।

४० गन्धनाकुली, सर्पाक्षी-सुगन्धनकुलकन्द ।

नामानि—अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली ॥ ५६ ॥ सर्पाक्षी फणिहंश्री च नकुलाख्याऽहिभुक् तथा । विषमर्दनिका चाहिमर्दिनी विषमर्दिनी ॥ ५७ ॥ महाहिगन्धाऽहिलता प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । नकुलेष्टा तु छत्राक्षी 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ ५८ ॥ छत्राक्षी कामचारी च 'केये' तु सर्पलोचना ।

गुणाः—नाकुलीयुगुलं तिक्तं कटूष्णं च त्रिदोषजित् ॥ ५९ ॥ अनेकविषविध्वंसि 'राजनामनिघण्टके' । रुमिवृश्चिकसर्पादिविषहृत् व्रणरोपणं ॥ ६० ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च 'केये' सप्तलुतापहं ॥ ६१ ॥

४१ मालाकन्द ।

नामानि—मालाकन्दः पंक्तिकन्दस्तथा च त्रिशिखीदला ॥ ६२ ॥

* धरणीकन्दं अनूप देशमें होता है

कन्दलताऽऽवलीकन्दो ग्रंथिदला तु 'राजके' ॥

गुणाः—मालाकन्दो गण्डमालानाशने दीपनस्तथा ॥ ६३ ॥
गुल्महा वातश्लेष्मघ्नस्तीक्ष्णश्च 'नृपनामके' ।

४२ विदारी कन्द ।

नामानि—विदारिका स्वादुकन्दा सिताशुक्लाशृगालिका ॥ ६४ ॥
विदारी वृष्यकन्दा च विडाली वृष्यवल्लिका । भूकृष्मांडी स्वादुलता
गजेष्टा वारिवल्लभा ॥ ६५ ॥ तथा कन्दफला चैव 'राजनामनिघण्टके' ।
तथा इक्षुविदारी च वल्लिशकफलं तथा ॥ ६६ ॥ तद्वत्कन्दपलाशश्च
श्रेष्ठकन्देक्षुवल्लरी । कन्दवल्ली वृष्यफला त्विक्षुकन्देक्षुवल्लिका ॥ ६७ ॥
तथा चेक्षुलता चैव प्रोक्ता 'केयनिघण्टके' । वृष्यगन्धो विडालिश्च
वृष्यपर्णी तु 'द्रव्यके' ॥ ६८ ॥ कोष्ठी 'भावप्रकाशे' च गजवाजि-
प्रिया 'गणे' ।

गुणाः—विदारी मधुरा शीता गुरुः स्निग्धाऽऽपित्तजित् ॥ ६९ ॥
कफकृत्पुष्टिकृद्वत्या 'नृपे' वीर्यविवर्धिनी । 'धन्वे' समीरजित्प्रोक्ता
'केये' स्वर्या तथैव च ॥ ७० ॥ वर्णदा स्तन्यदा प्रोक्ता 'द्रव्ये' तु
वांतिजित्तथा । रक्तहृद्रातहृत् चैव प्रोक्ता 'मदनपालके' ॥ ७१ ॥

४३ क्षीरविदारी ।*

नामानि—ततः क्षीरविदारी स्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्लरी । इक्षुव-
ल्ली क्षीरकन्दः क्षीरवल्ली पयस्विनी क्षीरशुक्ला क्षीरलता पयः
कन्दा पयोलता । पयोविदारिका चैव प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ७२ ॥
शुक्ला तु क्षीरशुक्ला च त्विक्षुपर्णी सुकन्दका । शुक्लकन्दा महाश्वेता
पयस्विनीक्षुगन्धिका ॥ ७३ ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ।
'द्रव्ये' त्विक्षुलता चैव ऋक्षगन्धाऽमरे तथा ॥ ७४ ॥

गुणाः—अथ क्षीरविदारी तु मधुराम्ला कपायका । तिक्ता च
पित्तशूलघ्नी मूत्रमेहहरा 'नृपे' ॥ ७५ ॥ क्षीरकन्दो द्विधा प्रोक्तो
विनालस्तु सनालकः । विनालो रोगहर्ता स्याद्वयस्तंभी सना-
लकः ॥ ७६ ॥

*क्षीरविदारी अथवा क्षीरकन्द दो प्रकारका है । एक विनाल अर्थात् डण्ठी
रहित और एक सनाल अर्थात् डण्ठीवाला । विना डण्ठीका रोग हरण करने-
वाला और डण्ठीवाला वयस्तम्भक है ।

४४ शालमलीकन्द-सेमरका मुसला ।

नामानि—शालमलीकन्दकश्चाथ विजुलो वनवासकः । वन-
वासी मलघ्नश्च मलहन्तेति 'राजके' ॥ ७७ ॥

गुणाः—ततस्तु शालमलीकन्दो मधुरो मलरोधजित् । शिशिरः
पित्तदाहघ्नो शोषसंतापहा 'नृपे' ॥ ७८ ॥

४५ चंडालकन्द ।

नामानि—प्रोक्तश्चण्डालकन्दः स्यादेकपत्रो द्विपत्रकः । त्रिप-
त्रऽथ चतुष्पत्रः पञ्चपत्रश्च भेदतः ॥ ७९ ॥

गुणाः—चण्डालकन्दो मधुरः कफपित्तास्रदोषजित् । विषभूत-
हरः प्रोक्तो 'नृपे' चैव रसायनः ॥ ८० ॥

४६ तैलकन्द-तेलकन्द ।

नामानि—तैलकन्दो द्रावकन्दस्ति लांकितदलस्तथा । ततः कर-
वीरकन्दस्तिलचित्रपत्रावहकः ॥ ८१ ॥

गुणाः—तैलकन्दो लोहद्रावी कटूष्णो विषहारकः । वाताप-
स्मारशोफघ्नो तथा च रसबन्धकः ॥ ८२ ॥ देहशुद्धिकरः प्रोक्तो
'राजनामनिघण्टके' ।

तैलकन्दस्वरूपः ।

अश्वारिपत्रसंकाशस्तिलबिन्दुसमन्वितः ॥ ८३ ॥ संस्निग्धा-
धस्थभूमिश्च तिलकन्दोऽतिविस्तृतः ।

४७ त्रिपर्णीकन्दः ।

नामानि—त्रिपर्णिका वृहत्पत्री छिन्नग्रन्थिनिका तथा ॥ ८४ ॥
कन्दालः कन्दबहलाऽप्यम्लवल्ली विषापहा ।

गुणाः—त्रिपर्णी मधुरा शीता श्वासकासव्रणापहा पित्तप्रको-
पशमनी विषघ्नी 'राजनामके' ॥ ८५ ॥

४८ लक्ष्मणाकन्द ।

नामानि—लक्ष्मणा पुत्रकन्दा च पुत्रदा नागिनी तथा । नागा-
वहा नागपत्नी च तुलिनी मज्जिका तथा ॥ ८६ ॥ अस्रबिन्दुच्छदा
चैव पुंस्त्वदा 'राजनामके' । रक्तबिन्दुच्छदा नागा नागपत्री तथैव

च ॥ ८७ ॥ ततस्तु पुत्रजननी 'केयदेवनिघटके' । रम्या तु बिन्दुपत्रा
च 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृता ॥ ८८ ॥ पुत्रकाकाररत्नाल्पविन्दुमिली-
ञ्छिता सदा । वस्तुगन्धाकृतिश्चैव संप्रोक्ता 'भावनामके' ॥ ८९ ॥

गुणाः—लक्ष्मणा मधुरा शीता स्त्रीबन्धुत्वविनाशिनी । रसा-
यनकरी बल्या त्रिदोषशमनी 'नृपे' ॥ ९० ॥ रुक्षा वृष्या हिमा 'केये'
प्रोक्ता पित्तानिलापहा ।

४९ हस्तजोडिका-हाथजोडी ।

नामानि—करजोडिहस्तजोडिः प्रोक्ता 'राजनिघटके' ॥ ९१ ॥

गुणाः—वश्यकृत् करजोडिस्तु रसबन्धकरस्तथा ।

५० मुसलीकन्द-काली मुसली ।

नामानि—मुसली तालमूली च सुवहा तालमूलिका ॥ ९२ ॥
गोधापदी हेमपुष्पी भूताली दीर्घकन्दिका । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे'
तु भिषक्विद्योपजीविभिः ॥ ९३ ॥ हिरण्यपुष्पी खर्जूरी खलिनी
मौशली तथा । वृष्यकन्दा तालपत्री महावृष्या तु 'केयके' ॥ ९४ ॥
महावृषा 'मदे' चैव तथा कांचनपुष्पिका ।

गुणाः—मुसली मधुरा शीता वृष्या पुष्टिबलप्रदा ॥ ९५ ॥ पि-
च्छला कफदा पित्तदाहश्रमहरा परा । मुसली स्याद्विधा प्रोक्ता श्वे-
ताचापरसंज्ञका ॥ ९६ ॥ श्वेता खलपगुणोपेता अपरा च रसायनी ।
'नृपे' प्रोक्ता तथा 'केये' अर्शोग्नी वातनाशनी ॥ ९७ ॥

५१ गुच्छकन्द ।

नामानि—गुच्छावहकन्दो गुलुच्छकन्दस्तवककन्दकः । विघं-
टिकाभिधा चैव विघट्टिका तथा 'नृपे' ॥ ९८ ॥

गुणाः—गुलुच्छकन्दो मधुरः शीतलो वृष्य एव च । सन्त-
पणो दाहहेति प्रोक्ता 'राजनिघटके' ॥ ९९ ॥

५२ वास्तुक-बथुवा ।

नामानि—वास्तुकं वास्तु वास्तूकं वस्तूकं हिलमोचिका । शाक-
राजो राजशाकश्चक्रवर्ती 'नृपे' तथा ॥ १०० ॥ वीरशाकं शाकवीरः
क्षारपत्रः प्रसादकः । 'केये' प्रोक्तस्तथा 'भावे' शाकराट् परिकी-
र्तितः ॥ १०१ ॥

१३०

निघण्टुशिरोमणिः ।

गुणाः—वास्तुकं मधुरं शीतं क्षाराम्लं त्रिदोषजित् । ज्वरा-
शोघ्नं रोचनं च मलमूत्रादिशुद्धिकृत् ॥ २०२ ॥ 'नृपे' प्रोक्तस्तथा
'केये' पाचनो हृद्य एव च । रक्तपित्तकृमिप्लीहादावर्तघ्नः सरस्तथा
॥ २०३ ॥ मेधाश्लिष्टश्च संप्रोक्तो बलकृच्छुककृत्तथा ।

५३ चुक्र-चूका ।

नामानि—चुकं तु चुक्रवास्तूकं लिङ्गुचं चास्वलास्तुकम् ॥ २०४ ॥
दलाम्लमम्लशाकाख्यमम्लादिहिलमोचिका । अम्लपत्रा तु कविभिः
संप्रोक्तम् 'राजनामके' ॥ २०५ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव चुक्रकं परि-
कीर्तितम् । चुक्रिका चैव पत्राम्ला रोचनी शतवेधिका ॥ २०६ ॥
प्रोक्ता 'भावप्रकाशे' तु वैद्यविद्याविशारदैः । वेदभूषण्यका प्रोक्ता
पुरातनचिकित्सकैः ॥ २०७ ॥

गुणाः—चुकं त्वम्ललघूष्णं च वातगुल्मविनाशनम् । रुचि-
कृद्दीपनं पथ्यमीषत्पित्तकरम् 'नृपे' ॥ २०८ ॥

५४ चिल्लिका-चिल्ली, बड़ा बथुवा ।

नामानि—पलाशलोहिता चिल्ली वास्तुका चिल्लिका तथा ।
मृदुपत्री क्षारदला चोरपत्री तु वास्तुकी ॥ २०९ ॥ दलाग्रलोहिता चैव
प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' । बृहद्दला तु रक्ता च तथैव गौडवास्तुका
॥ २१० ॥ प्रोक्ता 'मदनपाले' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।

गुणाः—चिल्ली वास्तुकतुल्या च सक्षारा श्लेष्मपित्तनुत् ॥ २११ ॥
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रघ्नी पथ्या तु रोचनी 'नृपे' ।

५५ श्वेतचिल्ली* ।

नामानि—श्वेतचिल्ली तु वास्तुकी सुपथ्या श्वेतचिल्लिका
॥ २१२ ॥ सितचिल्ल्युपचिल्ली च ज्वरघ्नी क्षुद्रवास्तुकी । प्रोक्ता
'राजनिघण्टे' तु वसुसंख्या भिषगवरैः ॥ २१३ ॥

गुणाः—श्वेतचिल्ली सुमधुरा क्षारा च शिशिरा तथा । त्रिदो-
षशमनी पथ्या ज्वरदोषविनाशिनी ॥ २१४ ॥

*इसकी पत्तियां बथुवासे कुछ छोटी होती हैं ।

५६ शुनकचिल्ली-कुत्ताचील ।

नामानि—शुनकचिल्ली सुचिल्ली खानचिल्लीति 'राजके' ।

गुणाः—श्वचिल्ली कटुतीक्ष्णा च कण्डुव्रणहरा 'नृपे' ॥ २१५ ॥

५७ शिशुपत्रशाक-सहिंजनपत्र शाक ।

गुणाः—शिशुपत्रभवं शाकं रुच्यं वातकफापहम् । कटूष्णं दीपनं पथ्यं हृमिघ्नं पाचनम् 'नृपे' ॥ २१६ ॥

५८ पालक्य-पालक ।

नामानि—पालक्यं तु पालक्या च मधुरा क्षुरपत्रिका । सुपत्रा स्निग्धपत्रा च ग्रामीणा ग्राम्यवल्लभा ॥ २१७ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्यापरायणैः । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव क्षुरिका परिकीर्तिता ॥ २१८ ॥ तथा 'मदनपाले' तु संप्रोक्ता क्षुरपत्रिका ।

गुणाः—पालक्यमीषत्कटुकं मधुरं पथ्यशीतलम् ॥ २१९ ॥ रक्तपित्तहरं ग्राहि तथा सन्तर्पणम् 'नृपे' ।

५९ राजगिरा-रामदाना ।

नामानि—राजाभिधानपूर्वा तु नगाव्हाद्यपरेण तु ॥ २२० ॥ राजाद्रिः स्याद्राजगिरि 'नृपे' तु राजशाकिनी ।

गुणः—राजशाकिनिका रुच्या पित्तघ्नी शीतला तथा ॥ २२१ ॥ सैवाति शीतला रुच्या 'नृपे' तु स्थूलशाकिनी ।

६० उपोदकी-बड़ी पोई ।

नामानि—उपोदकी कलम्बी च पिच्छला पिच्छलच्छदा ॥ २२२ ॥ मोहिनी मदशाकश्च विशाला 'राजनामके' । मच्छकाली पोतकी च सुतुङ्गा 'द्रव्यरत्नाके' ॥ २२३ ॥ उपोदका मदघ्नी च सुगन्धा मदकालिका । वृन्दारका तु कण्टकी प्रोक्ता 'गणनिघण्टके' ॥ २२४ ॥ षट्भूमि-संख्यका प्राक्ता परातनचिकित्सकैः ।

गुणाः—उपोदकी कषायोष्णा विष्टम्भश्लेष्मकारिणी ॥ २२५ ॥ कटुका मधुरा रुच्या निद्रालस्यकरी 'नृपे' । 'द्रव्ये' शीता शुक्रकारी 'गणे' मेहहरा स्मृता ॥ २२६ ॥

६१ क्षुद्रोपोदकी-छोटी पोई ।

नामानि—उपोदकी परा क्षुद्रा सूक्ष्मपत्रा तु मण्डपी ।

गुणाः—रसवीर्यविपाकेषु सदृशी पूर्वया स्वयं ॥ २२७ ॥ प्रोक्ता
'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।

६२ वनजोपोदकी-वनपोई ।

नामानि—वनजा वनजाव्हा च वनजोपोदकी 'नृपे' ॥ २२८ ॥

गुणाः—वनजोपोदकी तित्ता कटूष्णा रोचनी च सा ।

६३ मूलपोती-मूलपोई ।

नामानि—मूलपोती क्षुद्रवल्ली पोतिका क्षुद्रपोतिका ॥ २२९ ॥
क्षुद्रोपोदकनाम्नी च वल्लिः शाकटपोतिका । वल्लिशाकस्तथा वल्लि-
पोतिका 'राजनामके' ॥ २३० ॥

गुणाः—मूलपोती त्रिदोषघ्नी वृष्या बल्या लघुश्च सा । बल-
पुष्टिकरी रुच्या जठरानलदीपनी ॥ २३१ ॥

६४ कुणंजर-लहेसुवा ।

गुणाः—कुणंजरस्त्रिदोषघ्नो मधुरो रुच्यदीपकः ॥ २३२ ॥ ईष-
त्कषायः संग्राही पित्तश्लेष्मकरो लघुः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु
भिषक्विद्याविशारदैः ॥ २३३ ॥

६५ कौसुम्भशाक-कुसुमशाक ।

गुणाः—कौशुम्भशाकं मधुरं कटूष्णं विण्मूत्रदोषापहरं मदघ्नं ।
दृष्टिप्रसादं कुरुते विशेषाद्बुचिप्रदं दीप्तिकरं च वन्हेः ॥ ३४ ॥ प्रोक्तं
'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।

६ शतपुष्पदल-सौवाशाक ।

गुणाः—शतपुष्पादलं सोष्णं मधुरं गुल्मशूलजित् ॥ ३५ ॥
वातघ्नं दीपनं पथ्यं पित्तकृदुचिदं 'नृपे' ।

६६-तंडुलीयपत्र-चौराई भाजी ।

गुणाः—तण्डुलीयकदलं हिममर्शःपित्तरक्तविषकासविनाशि ।
ग्राहकं च मधुरं च विपाके दाहशोषशमनं रुचिदायि ॥ ३६ ॥ प्रोक्तं
'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ २३७ ॥

६७ राजिकापत्र-राईका शाक ।

गुणाः—कटूष्णं राजिकापत्रं कृमिवातकफापहं । कण्ठामयहरं
स्वादुवन्निदीपनकं 'नृपे' ॥ २३८ ॥

६८ सार्पपत्र-सरसोंका शाक ।

गुणाः—सार्पपत्रं पत्रमत्युष्णं रक्तपित्तप्रकोपनुत् । विदाहि कटुकं
स्वादु शुक्रदुग्धविदं 'नृपे' ॥ २३९ ॥

६९ चांगेरीशाक-आंवो लोना ।

गुणाः—चांगेरीशाकमत्युष्णं कटुरोचनपाचनं । दीपनं कफ-
वातार्शःसंग्रहण्यतिसारजित् ॥ ४० ॥ प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' तु
वैद्यशास्त्रविशारदैः ।

७० घोली-बड़ी लोनिया ।

गुणाः—घोला च घोलिका घोली कलन्धुष्कुम्भकालुकं ॥ ४१ ॥
'राजनामनिघण्टे' तु संप्रोक्ता भिषजांवरैः । लोणा 'केये' तथा
'द्रव्ये' वनस्था त्वम्लपर्णिका ॥ ४२ ॥ दुर्जरा चैव पिच्छा च
पुनर्भूः पिच्छलच्छदा । लोणिका 'केयदेवे' च तथा 'भावप्रकाशके'
॥ ४३ ॥ बृहल्लोणी तु लोणी च प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ।

क्षेत्रजा घोली-कुलफा ।

गुणाः—क्षेत्रजं लवणं रुच्यमम्लं वातकफापहम् ॥ ४४ ॥

७१ आरामघोलिका-लोनियां ।

गुणाः—आरामघोलिका चाम्ला रुक्षा रुच्याऽनिलापहा ।

७२ सूक्ष्मघोलिका-छोटी लोनियां ।

गुणाः—पित्तश्लेष्मकरी चान्या सूक्ष्मा जीर्णज्वरापहा ॥ ४५ ॥

७३ जीवशाक ।

नामानि—जीवन्ते रक्तनालश्च ताम्रपत्रः सनालकः । शाक-
वीरस्तु मधुरो जीवशाकश्च मेषकः ॥ ४६ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे'
च 'केयदेवे' तु वास्तुकः । तथा जीवन्तकः प्रोक्तो वैद्यविद्याविशा-
रदैः ॥ २४७ ॥

गुणाः—जीवशाकः सुमधुरो बृंहणो बस्तिशोधनः । पित्तघ्नो दीपनो बल्यो पाचनो वृष्य एव च ॥ ४८ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु त्रिदोषघ्नश्च 'केयके' ।

७४ गौर सुवर्णशाक-सोनभाजी ।*

नामानि—ततो गौरसुवर्णं च स्वर्णं सौगन्धिकं तथा ॥ ४९ ॥ भूमिजं वारिजंह्रस्वं गन्धशाकं तथैव च । कटुश्चट्काटकं चैव वर्णशाकं तु 'राजके' ॥ २५० ॥

गुणाः—गौरसुवर्णं शिशिरं कफपित्तज्वरापहम् । पथ्यं दाहा-
रुचिभ्रान्तिरक्तश्रमहरं 'नृपे' ॥ २५१ ॥

७५ वर्षाभूशाक-विषखपरा ।

७६ वसुपत्रशाक-सफेदवसु ।

गुणाः—वर्षाभूवसुको वर्णकफमांघ्रानिलापहो । शाके रुक्षतरौ गुल्मह्रीहशूलापहारकौ ॥ २५२ ॥

७७ फंजिका, जीवनी, पद्मा, तर्कारी, चंचुक ।

नामानि—फांजी, हरणदोडी या डोडी, भारङ्गी, नरवेल, या अरनी, चोंच या चञ्चु ।

नामानि—फंजिका जीवनी पद्मा तर्कारी चंचुकाः पृथक् ।

गुणाः—वातामयहरं ग्राहि दीपनं रुचिदायकं ॥ ५३ ॥

७८ फज्जादिशाक-फांजी आदिकी भाजी

फंजादिपंचकं भेडा कुणजखिपुटस्तथा ॥ इत्यादिनवपत्राणां शाकमेकत्र योजितम् ॥ ५४ ॥

गुणाः—दीपनं पाचनं रुच्यं बलवर्णविधायकं । त्रिदोषशमनं पथ्यं ग्राहि वृष्यं सुखावहम् ॥ २५५ ॥

७९ कूष्मांडी-पेठा, सफेद कुम्हड़ा ।

नामानि—कर्कोटिका च कूष्मांडी कुम्मांडी तु बृहत्फला । सुफलास्यात्कुम्भफला नागपुष्पफला 'नृपे' ॥ ५६ ॥ 'धन्वन्तरौ'

* चित्रकूट प्रान्तके आसपास होती है ।

क्षीरफला सोमसृष्टा च पीतिका । ततः स्थिरफला चैव सोमका
त्वमृता तथा ॥ ५७ ॥ महत्फला पुष्पफला तथैव सोमयष्टिका ।
गुडयोगफला चैव प्रोक्ता कर्कारुकस्तथा ॥ ५८ ॥ राजकर्कटीनाम्नी
च 'केयदेवनिघण्टके' । कूष्माण्डकी कर्कटी च 'द्रव्यरत्ने' महा-
फला ॥ २५६ ॥ 'भावप्रकाशे' संप्रोक्तं कूष्माण्डं कविभिर्ध्रुवम् ।

गुणाः—'राजनिघण्टे' । सूत्राघातहरं प्रमेहशमनं कृच्छ्राश्रमरी-
च्छेदनं विण्मूत्रम्लपनं तृषार्तिशमनं जीर्णागपुष्टिप्रदं । वृष्यं स्वादुतरं
त्वरोचकहरं बल्यं च पित्तापहं । कूष्माण्डं प्रवरं वदन्ति मिषजो
बल्लीफलानां पुनः ॥ ६० ॥ वातपित्तहरं हृद्यं वस्तिशुद्धिकरं तथा
॥ ६१ ॥ चित्तवैकारनुत् प्रोक्तं 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । कफघातहरं
रूक्षं संप्रोक्तं 'केयदेवके' ॥ ६२ ॥ 'मदने' रक्तपित्तघ्नं वातहृत्क-
विभिः स्मृतं ।

८० गोरक्षतुम्बी-वड़ी लौकी, दुधी ।

नामानि—गोरक्षतुम्बी गोरक्षी नवालावुर्घटाभिधा ॥ २६३ ॥
कुम्भालावुर्घटालावुः कुम्भतुम्बी तु 'राजके' ।

गुणाः—गोरक्षतुम्बी मधुरा शिशिरा, पित्तहा गुरुः ॥ ६४ ॥
रुच्या सन्तर्पणी बल्या वीर्यदा पुष्टिदा 'नृपे' ।

८१ दुग्धतुम्बी-दुधिया लौकी ।

नामानि—दुग्धतुम्बी क्षीरतुम्बी दीर्घवृत्तफलामिधा ॥ ६५ ॥
इक्ष्वाकुः क्षत्रियवरा दीर्घबीजा महाफला । क्षीरिणी दुग्धबीजा च
दन्तबीजा पयस्विनी ॥ ६६ ॥ महाबल्ली महातुम्बी हलालुश्च श्रम-
घ्निका । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ६७ ॥ राजालावु
रसालावुर्मधुरालावुनी तथा । शाकालावुस्तुम्बकश्च भक्षालावुस्तु
'केयके' ॥ ६८ ॥ अलाम्बुनी वृत्ततुम्बी 'द्रव्ये' चालावुका स्मृता ।
'गणे' तुम्बिस्तथा तुम्बी मिष्टा 'मदनपालके' ॥ २६६ ॥

गुणाः—तुम्बी सुमधुरा स्निग्धा पित्तघ्नी गर्भपोषकृत् । वृष्या
वातप्रदा चैव बलपुष्टिकरा 'नृपे' ॥ ७० ॥ 'धन्वन्तरौ' शीतला
च 'केये' विष्टम्भकरिका । कफपित्तहरा प्रोक्ता पुरातनमिषगवैः
॥ २७१ ॥

*८२ भूतुम्बी-पाताले तुम्बी ।

नामानि—भूतुम्बी नागतुम्बी च शक्रचापसमुद्भवा । वल्मीक-
संभवा देवी दिव्यतुम्बी तु 'राजके' ॥ ७२ ॥

गुणाः—भूतुम्बी कटु कोष्णा च सन्निपातापहारिणी । दन्तार्गला
दन्तरोधधनुर्वातहरा 'नृपे' ॥ ७३ ॥

८३ कलिङ्ग-तरबूजा ।

नामानि—ततोमांसफलश्चैव कलिङ्गश्चित्रवल्लिकः, वृत्तफलो
मांसलश्च चित्रो मधुफलस्तथा ॥ ७४ ॥ घृणाफलश्च संप्रोक्तो
'राजनामनिघण्टके' । कलिन्दकं तु कालिङ्गं कृष्णबीजं तु 'केयके'
॥ ७५ ॥ हरितं वर्तुलफलं 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृतं । सुवर्तुलं तु
कालिन्दं स्मृतं 'भांवप्रकाशके' ॥ ७६ ॥

गुणाः—कलिङ्गो मधुरः शीतः पित्तदाहश्रमापहः । वृष्यः सन्त-
र्पणो बल्यो वीर्यपुष्टिकरो 'नृपे' ॥ ७७ ॥ ग्राही च गुक्षविष्टस्मो
ह्यभिष्यंदकरो ध्रुवं । शुक्रनुत् पित्तदृच्चैव कफवातकरं तथा ॥ ७८ ॥
पक्वं तु शीतमुष्णं स्यात् 'केये' च कफवातहृत् ।

८४ धाराकोशातकी-तरोई ।

नामानि—कोशातकी स्वादुफला सुपुष्पा तदनंतरं ॥ ७९ ॥
कर्कोटकी पीतपुष्पा तथा धाराफला स्मृता । धामार्गवो दीर्घफला
सुकेशा 'राजनामके' ॥ ८० ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु जालिनी
कृतवेधना ।

गुणाः—धाराकोशातकी स्निग्धा मधुरा कफपित्तनुत् ॥ ८१ ॥
ईषद्वातकरो पथ्या रुचिकृद्बलवीर्यदा । 'नृपे' धन्वन्तरौ चैव
पक्वामाशयशोधनी ॥ ८२ ॥ पित्तघ्नो दीपनी श्वासकासज्वरकृमि-
घ्निका । वातला कफपित्तघ्ना 'केयदेवे' प्रकीर्तिता ॥ ८३ ॥ शोफ-

* यह नागलुम्बी सांपकी बांबीमें उत्पन्न होती है । बांबीमें बिच्छूके
ढङ्के समान पीले रङ्गके कांटे दिखाई पड़ते हैं । उसके नीचे बांबीमें लुम्बीके
समान काले रङ्ग की नागलुम्बी होती है । एक जगह पर यह पांच सात मिलती
है । यह बड़ी विचित्र औषधि है । इसे बांट कर पिलाने और मस्तक पर लेप
करनेसे अनेक प्रकारके विष मष्ट होते हैं ।

पांडुररूपीह कुष्ठार्शःकफपित्तहा । तत्फलं भेदनं शीतं लघु मेहत्रि-
दोषहृत् ॥ ८४ ॥ प्रोक्तं 'मदनपाले' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।

८५ हस्तिकोशातकी-घियातरोई, नेनुआं ।

नामानि—हस्तिकोशातकी चैव बृहत्कोशातकी तथा ॥ ८५ ॥
महाकोशातकी वृत्ता ग्राम्यकोशातकी 'नृपे' । धामार्गवः कोशफला
राजकोशातकी तथा ॥ ८६ ॥ कर्कोटकी पीतपुष्पा महाजालीति
'धन्वके' । हस्तिघोषा 'केयदेवे' 'मदने' राजिमत्फला ॥ ८७ ॥
घोषका हस्तिपर्णश्च 'भावे' प्रोक्ता महाफला ।

गुणाः—हस्तिकोशातकी स्निग्धा मधुराऽऽध्मानवातहृत् ॥ ८८ ॥
वृष्या कृमिकरी चैव व्रणसंरोपणी 'नृपे' । उवरान्ते हितकृ 'द्वन्वे'
'केये' तु गुरुश्लेष्मका ॥ ८९ ॥ 'द्वन्वे' वातहरा प्रोक्ता 'मदे'
शीता प्रकीर्तिता । पित्तघ्नी दीपनी श्वासज्वरघ्नी प्रोच्यते बुधैः
॥ ९० ॥

८६ स्वादुपटोली-मीठा परवर ।

नामानि—ततः स्वादुपटोली तु पटोली मण्डली तथा । मधुरा
तु पटोली स्यात्प्रोक्ता दीर्घपटोलिका ॥ ९१ ॥ स्निग्धपर्णी 'नृपे'
चैव तथा स्वादुपटोलिका । पांडुको राजमान्यश्च ज्योत्स्नाजाली
तथैव च ॥ ९२ ॥ ततो राजपटोली च संप्रोक्ता 'केयदेवके' ।
चिचुण्डो वेश्मकूलश्च श्वेतराजो बृहत्फला ॥ ९३ ॥ प्रोक्ता 'मदन-
पाले' तु 'भावे' च गृहकूलकः । चिचिण्डश्च सुदीर्घश्च प्रोक्तो वैद्य-
विशारदैः ॥ ९४ ॥

गुणाः—पटोली स्वातु पित्तघ्नी रुचिकृज्वरनाशनी । बलपुष्टि-
करी पथ्या दीपनी पाचनी 'नृपे' ॥ ९५ ॥ पटोलपत्रं पित्तघ्नं नालं
तस्य कफापहं । फलं त्रिदोषशमनं मूलं चास्य विरेचनं ॥ ९६ ॥
प्रोक्तं 'राजनिघंटे' तु त्रिदोषघ्नी तु 'धन्वके' । 'केये' हृद्यं सरं चोष्णं
कफपित्तहरं ध्रुवं ॥ ९७ ॥ कण्डुदाहतृपाघ्नं च स्फोटकुष्ठज्वरा-
स्रजित् ॥

८७ दधिपुष्पी-बड़ी सैम, चमारी सैम ।

नामानि—दधिपुष्पी तु खट्वांगी कूपा पर्यंकपादिका ॥ ९८ ॥
खट्वापादी तु वंश्या च काकांडी कालपादिका । खट्वा चैव तथा

१३८

निघण्टुशिरोमणिः ।

प्रोक्ता 'राजनामनिघण्टके' ॥ ६६ ॥ 'द्रव्ये' कृष्णफला चैव काकां-
डोला त्रिपर्णिका । 'केयदेवे' कोलशिम्बी तथा सूकरपादिका ॥ ३०० ॥

गुणाः—खट्वांगी मधुरा कट्वी शीता सन्तापपित्तहा । गुर्वी
वातकरी रुच्या 'राजनामनिघण्टके' ॥ ३०१ ॥ वातपित्तहरा 'द्रव्ये'
'भावे' चोष्णानिलापहा । कफपित्तहरा चैव शुक्रशिवलविट-
करी ॥ ३०२ ॥

८८ खड्गशिंवी-गोजिया सैम ।

नामानि—असिशिंवी खड्गशिंवी शिंवी निस्त्रिंशशिंबिका ।
स्थूलशिंवी बृहच्छिम्बी महाशिम्बी सुशिम्बिका ॥ ३ ॥ प्रोक्ता
'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः । कुत्सवल्ली कुत्सशिम्बी
कुत्सा पुस्तकशिम्बिका ॥ ४ ॥ पुस्तकाख्या पुस्तकशिम्बी कुशिम्बी
'केयदेवके' । खड्गा सूकरपादी च शारदी नीलपुष्पिका ॥ ५ ॥ 'द्र-
व्यरत्नाकरे' चैव संप्रोक्ता वैद्यनायकैः । शिंबिः शिम्बी तथा 'भावे'
संप्रोक्ता वैद्यनायकैः ॥ ६ ॥

गुणाः—असिशिम्बी तु मधुरा कषाया श्लेष्मपित्तजित् । व्रण-
दोषहरा शीता रुचिरुदीपनी 'नृपे' ॥ ७ ॥ वातश्लेष्महरा बल्या
श्लेष्मला दाहनाशिनी । 'केये' प्रोक्ता तथा 'द्रव्ये' कफवातहरा
ध्रुवं ॥ ८ ॥

८९ कारवल्ली-करैला ।

नामानि—करका कारवल्ली च चीरिपत्रः करिल्लका । सूक्ष्म-
वल्ली कण्टफला पीतपुष्पाऽवुवल्लिका ॥ ९ ॥ प्रोक्ता 'राजनि-
घण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः । तथा 'शिवनिघण्टे' तु मण्डपी चिरि-
तच्छदा ॥ १० ॥ सुकुमारी तु सुषवी तोयवल्लफलाऽखिली । 'केय-
देवे' तु संप्रोक्ता वैद्यशास्त्रज्ञपण्डितैः ॥ ११ ॥ करिल्लं कारवेल्लं तु
'द्रव्यनामनिघण्टके' । फलात्मिका राजवल्ली 'गणनामनिघण्टके'

गुणाः—कारवल्ली सुतिकोष्णा दीपनी कफवातजित् ॥ १२ ॥
अरोचकहरा चैव रक्तदोषहरा 'नृपे' ॥ १३ ॥ 'मदे' तु कामलाघ्नी
च 'केये' वातहरा 'ध्रुवं' । अवृष्या रक्तपित्तघ्नी कृमिपाण्डुवणापहा
कासश्वासप्रमेहघ्नी कुष्ठाध्मज्वरनाशिनी ।

६० कर्कोटकी-वन करैला, खेखसा, ककोडा ।

नामानि—कर्कोटकी स्वादुफला मनोज्ञा च मनस्विनी ॥ १५ ॥
 बोधना चैव कर्कोटी देवी कण्टफला 'नृपे' । विषप्रशमनी चैव कु-
 मारी 'धन्वनामके' ॥ १६ ॥ पीतपुष्पा तथा जाली प्रोक्ता 'मदन-
 पालके' ।

गुणाः—कर्कोटी कटु तिक्तोष्णा विषघ्नी वातहारिणी ॥ १७ ॥
 दीपनी रोचनी चैव पित्तहृत् 'राजनामके' । श्लेष्महृत् विषद्वधघ्नी
 कन्दशीर्षरुजापहः ॥ १८ ॥ प्रोक्ता 'धन्वनिघटे' तु 'केये' किलास-
 चित्रहृत् । 'मदे' हृल्लासहृत् 'भावे' श्वासकासज्वरापहा ॥ १९ ॥

६१ स्वादुतुण्डिका-मीठा कुन्दरू ।

नामानि—स्वादुतुण्डी रक्तफला तुण्डी मधुरबिम्बिका । रुचि-
 रफलोष्णफला पीलुपर्णी तथा स्मृता ॥ २० ॥ मधुबिम्बी 'नृपे' चैव
 प्रोक्ता वैद्यविशारदैः । तुण्डिकेरिफला बिम्बी ओष्ठोपमफला तथा
 ॥ २१ ॥ गोलहा च तुण्डिका चैव 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । ओष्ठमा तु
 चोष्ठफला धोहरा 'द्रव्यनामके' ॥ २२ ॥ 'मदे' दन्तच्छदा चैव रक्त-
 पीतफला 'गणे' । 'केये' तु विद्रुमफला तथा च तुण्डिकेरिका ॥ २३ ॥
 ततो विद्रुमवाक् चैव प्रोक्ता वैद्यविशारदैः । 'शोढले' तु तथा प्रोक्ता
 छर्दिन्योष्ठी च बिम्बिका ॥ २४ ॥

गुणाः—बिम्बी तु मधुरा शीता पित्तश्वासकफापहा । अस्तृग्-
 ज्वरहरा रम्या कासजि 'द्राजनामके' ॥ २५ ॥ वातुला श्लेष्मला चैव
 क्षयश्ववधुनाशनी । संग्राही कामलाहन्त्री पाके च कटुका 'ध्रुवं'
 ॥ २६ ॥ रक्तपित्तहरा चैव घाताध्मादिविवन्धकृत् । 'केयदेवे' भि-
 षक्श्चेष्टैः कथिता नैव संशयः ॥ २७ ॥ 'धन्वे' तु रक्तपित्तघ्नी शो-
 फपांडुहरा ध्रुवं । तत्फलं बुद्धिहृत्प्रोक्तं स्तन्येवृद्धिकरं तथा ॥ २८ ॥
 मूलं तु वीर्यदं शीतं मेहहृत् 'द्रव्यरत्नके' । 'मदे' भ्रांतिहरं प्रोक्तं
 'गणे' वमनहारकं ॥ ३२६ ॥

६२ निष्पावी-सैम ।

नामानि—निष्पाविका पञ्चधा स्यात् श्वेता कृष्णा च पीतिका ।
 लघ्वो च बृहती चैव गुणैस्तुल्या प्रकीर्तिता ॥ ३० ॥ तथा 'राज-

निघण्टे' तु चतुर्धा परिकीर्तिता । निष्पावी ग्रामजादिः स्यात्फलनी
नखपूर्विका ॥ ३१ ॥ मण्डपी फलिका शिंवी ह्येया गुच्छफला च
सा । विशालफलिका चैव निष्पाविश्चिपिटा तथा ॥ ३२ ॥ 'द्रव्य-
रत्नाकरे' चैव नलिका परिकीर्तिता ।

६३ नखनिष्पाविका-छोटी सैम ।

नामानि—अथांगलीफला चैव नखनिष्पाविका तथा ॥ ३३ ॥
वृत्तनिष्पाविका ग्राम्या नखगुच्छफला 'नृपे' ।

गुणाः—निष्पावौ द्वौ हरिच्छुभ्रौ कषायौ मधुरौ सरौ ॥ ३४ ॥
कण्टशुद्धिकरौ मेध्यौ दीपनौ रुचिकारकौ । संग्राहि समवीर्यः स्या-
दीषच्छ्रेष्ठो द्वितीयकः ॥ ३५ ॥ प्रोक्तौ 'राजनिघण्टे' तु कफपित्त-
हरौ 'द्रव्ये' ।

६४ वार्ताकी-वैगन, भट्टा ।

नामानि—वार्ताकी कण्टवृंताकी कण्टालुः कण्टपत्रिका ॥ ३६ ॥
निद्रालुर्मांसलफला वृंताकी च महोटिका । चित्रफला कण्टकिनी
महती कटुफला तथा ॥ ३७ ॥ मिश्रवर्णफला नीलफला रक्तफला च
सा । शाकश्रेष्ठा वृत्तफला नृपप्रियफला 'नृपे' ॥ ३८ ॥ भट्टाकी वार्ति-
का वृंता भट्टिका 'धन्वनामके' । 'केयदेवानिघण्टे' तु कथिता चार-
भण्डिका ॥ ३९ ॥ वार्ताकिनी तु निद्रालुः कथिता नीलकण्टका ।
महापथ्या पथ्यतमा बहुवीर्या रसोत्तमा ॥ ४० ॥ वैद्यविद्याप्रवीणैस्तु
संप्रोक्ता 'धन्वनामके' ।

गुणाः—वार्ताकी कटुका रुच्या मधुरा पित्तनाशनी ॥ ४१ ॥
वलपुष्टिकरी हृद्या गुरुवातकरा 'नृपे' । स्वादूष्णं च तथा तीक्ष्णं
पाके तु कटु दीपनम् ॥ ४२ ॥ शुक्रलं कफघातघ्नं वृंताकं 'धन्व-
नामके' । ज्वरकासक्रिमिहरं पक्वं स्यात्पित्तकारकम् ॥ ४३ ॥ बालं
पित्तकफघ्नं च 'केये' प्रोक्तं भिषगजनेः । वृंताकं पित्तलं किञ्चि-
दङ्गारपरिपाचितम् ॥ ४४ ॥ कफमेदोनीलामघ्नमत्यर्थं लघु दीपनम् ।
तदेव हि गुरु स्निग्धं सतैलं लवणान्वितम् ॥ ४५ ॥ प्रोक्तं 'भाव-
प्रकाशे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।

९५ डंगरी-काशीकुम्हड़ा, लालकुम्हड़ा ।*

नामानि—डंगरी डंगरी चैव दीर्घावास्त्र डंगरिः ॥ ४६ ॥
डंगरी नागशुण्डो च गजदन्तफला 'नृपे' । कूष्मांडिकी पीतपुष्पा
गाम्या पीतफला तथा ॥ ४७ ॥ गुडयोगफला चैव प्रोक्ता 'शिव-
निघण्टके' ।

गुणाः—डङ्गरी शीतला रुच्या दाहपित्तास्रदोषजित् ॥ ४८ ॥
शोषहृत्तर्पणी गौल्या जाड्यहा मूत्ररोधनुत् । प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु
वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ४९ ॥

९६ पड्भुजा-खरबूजा ।

नामानि—पड्भुजा तु मधुफला पड्भुजा वृत्तकर्कटी । तिका
तिक्तफला चैव मधुपाका च पड्भुजा ॥ ५० ॥ वृत्तेवास्त्र संप्रोक्ता
'राजनामनिघण्टके' । खर्वुजं फलराजं स्यादमृताब्दं दशांगुलम् ॥ ५१ ॥
प्रोक्तं 'मदनपाले' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।

गुणाः—खर्वुजं तर्पणं वृष्यं पुष्टिदं श्रमदाहहृत् ॥ ५२ ॥ मूत्र-
शुद्धिकरं चैव विषपित्तहरं तथा । उन्मादापहरं वीर्यवृद्धिदं कफदं
'नृपे' ॥ ५३ ॥ कोष्ठशुद्धिकरं बल्यं गुरुस्निग्धं च स्वादुकम् । शीतं
पित्तानिलहरं प्रोक्तं 'मदनपालके' ॥ ५४ ॥

९७ कर्कटी-ककरी ।

नामानि—कर्कटी तु कटुदला तथा छर्द्यायनी स्मृता । मूत्रफला
पीतसा च त्रपुसी हस्तिपर्णिका ॥ ५५ ॥ मूत्रला लोमशकांडा बहु-
कण्टा तथा 'नृपे' । दीपनी स्फोटिनी चैव ततोऽनलविवर्द्धनी ॥ ५६ ॥
'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु शकटा गजकर्णिका । पर्वारुश्च तथा प्रोक्ता
ऊर्वारुः 'केयदेवके' ॥ ५७ ॥

गुणाः—कर्कटी मधुरा शीता कफपित्तहरा ध्रुवम् । रक्तदोष-
करा पक्वा बहुमूत्रकरी तथा ॥ ५८ ॥ मूत्ररोधाश्मरी हन्त्री पित्त-
घान्तिहरा ध्रुवम् । दाहश्लेष्महरा रुच्या प्रोक्ता 'राजनिघण्टके'

*इसका फल तरकारीवाले कुम्हड़ेसे छोटा होता है । इसका स्वाद आलूके
शाकके समान होता है ।

१४२

निघण्टुशिरोमणिः ।

॥ ३५६ ॥ पक्वा स्यात्पित्तकारी च बन्दिदा तृचिनाशनी । भ्रम-
दाहहरा प्रोक्ता 'केयदेवनिघण्टके' ॥ ३६० ॥

६८ त्रपुसी-खीरा ।

नामानि—त्रपुसी तुन्दिलफला तथा त्रपुसकर्कटी । बहुफला
कोशफला कण्टालुस्तदनन्तरम् ॥ ६१ ॥ पीतपुष्पी तथा प्रोक्ता 'राज-
नामनिघण्टके' । त्रपुसं कटुकं चैव विपांडुहस्तिपर्णिनी ॥ ६२ ॥ छर्द्या-
यनी मूत्रफला तकारी कटुका 'धने' । मूत्रला कण्टका चैव 'केय-
देवनिघण्टके' ॥ ६३ ॥

गुणाः—त्रपुसी मधुरा रुच्या शिशिरा भ्रमहा गुरुः । पित्त-
दाहहरा चैव वांतिहृत् मूत्रदा 'नृपे' ॥ ६४ ॥ मूत्रवस्तिशोधनिका
कफपित्तासनाशनी । मूत्रकृच्छ्रविन्धघ्नी 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ ६५ ॥
कफवातकरा चैव 'द्रव्ये' प्रोक्ता भिषक्जनैः ।

६९ एर्वास-बड़ी ककरी, फूटवाली ककरी ।

नामानि—एर्वासः कर्कटी प्रोक्ता व्यालपत्रा च लोमशा ॥ ६६ ॥
स्थूला तोयच्छला चैव हस्तिदंतफला 'नृपे' । 'धन्वन्तरौ' तु
कविभिर्हर्वासः परिकीर्तिता ॥ ६७ ॥ मूत्रफलं वालुकं च प्रालम्बं
'केयदेवके' ।

गुणाः—उर्वासकं पित्तहरं शीतलं मूत्ररोगहृत् ॥ ६८ ॥ मधुरं
रुचिदं चैव मूर्छासन्तापहारकं । वातकोपकरं प्रोक्तं वैद्यै 'राज-
निघण्टके' ॥ ६९ ॥ भेदी विष्टंभकारी च त्वभिष्यन्दी च मूत्रलम् । रक्त-
पित्तहरं चैव पक्वं स्यात्कफहारकं ॥ ७० ॥ हृद्यं दीपनमित्युक्तं
'केयदेवनिघण्टके' ।

१०० वालुकी-सैन्धिया ।

नामानि—वालुकी तु बहुफला संप्रोक्ता क्षेत्रकर्कटी ॥ ७१ ॥
तथा च मधुरफला क्षुद्रैर्वाहस्तथा मता । स्निग्धफला क्षेत्ररुहा
कथिता पीतपुष्पिका ॥ ७२ ॥ शारदिका तथा ख्याता 'राजनामनि-
घण्टके' ।

गुणाः—वालुकी मधुरा शीता हृद्याधमानभ्रमापहा ॥ ७३ ॥
काशपोनसकारी च पित्तहा रुचिदा 'नृपे' ।

१०१ चिर्भिटा-गोरख ककरी, कचेलिया ।

नामानि—चिर्भिटा रोचनफला सुचित्रा क्षेत्रचिर्भिटा । चिर्भि-
टिका पांडुफला पथ्या चित्रफला मता । कर्कटी तु तथा प्रोक्ता
'राजनामनिघंटके' ॥७५॥ गोरक्षी चैव गोदुग्धं चिर्भिटी 'केयदेवके' ।
धेनुदुग्धं 'द्रव्यरत्ने' तथा गोरक्षकर्कटी ॥ ७६ ॥ 'धन्वे' तु चिर्भटं
चैव प्रोक्तं वैद्यविशारदैः ।

गुणाः—वाल्ये तिका चिर्भिटा किंचिद्भस्मा गौलयोपेता दीपनी
सा च पाके । शुष्का रुक्षा श्लेष्मवातारुचिघ्नी जाड्यघ्नी वै
रोचनी दीपनी च ॥ ७७ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघंटे' तु वैद्यशास्त्रपंडितैः
॥ ७८ ॥ भेदिनी कृमिकण्डुघ्नी ज्वरहा 'गणनामके' । रुक्षा गुरुः शी-
तला च ग्राही विष्टंभकारिणी ॥ ७९ ॥ वातप्रकोपना चैव कफपित्त-
विनाशिनी । । अभिष्यंदी तथा 'केये' पक्वमुष्णं तु पित्तलं ॥ ८० ॥

१०२ मृगाक्षी-सन्धिनी ।

नामानि—मृगाक्षी श्वेतपुष्पा च मृगोर्वारुमृगादनी । चित्रवल्ली
बहुफला कपिलाक्षी मृगेशणा ॥ ८१ ॥ चित्रा चित्रफला पथ्या वि-
चित्रा मृगचिर्भिटा । मरुजा कुंभसी देवी कटफला लघुचिर्भिटा
॥ ८२ ॥ सेन्दिनी च महादेवी 'राजनामनिघंटके' । सुखवासः शीशा-
वृत्तं विचित्रं पांडुरं तथा ॥ ८३ ॥ विचित्रकं चित्रफलं 'केयदेवनि-
घंटके' । तथा 'मदनपाले' तु संप्रोक्तं पीतवर्णकं ॥ ८४ ॥

गुणाः—मृगाक्षी कटुका तिका पाकेभ्ला वातनाशनी । पित्त-
कृत्पीनसहरा दीपनी रुचिदा 'मृपे' ॥ ८५ ॥ 'केये' तु शीतला प्रोक्ता
वन्धिकृ 'नमदने' स्मृता ।

१०३ चीना कर्कटिका-चिचड़ा, चीना ककरी ।

नामानि—चीनाकर्कटिका ज्ञेया बीजकर्कटिका तथा ॥ ८६ ॥
सुदीर्घा राजिलफला 'नृपे' कुलककर्कटी । चीनाकं चीनकं चीना
'केयदेवनिघंटके' ॥ ८७ ॥

गुणाः—चीना कर्कटिका रुच्या शिशिरा पित्तनाशनी । मधुरा
तृप्तिदा हृद्या दाहशोषहरा 'नृपे' ॥ ८८ ॥ 'केये' तु वातकफहृत्प्रोक्ता
वैद्यविचक्षणैः ।

शशाङ्गुली-एक प्रकारकी ककरी ।

नामानि—शशाङ्गुली बहुफला तङ्गुली क्षेत्रसंभवा ॥ ८६ ॥ क्षुद्रा-
म्लालोमशफला धूम्रवृत्तफला 'नृपे' ।

गुणाः—शशाङ्गुली तिककटुः कटूम्ल कफनाशनी ॥ ६० ॥ पा-
केम्ल दीपनी रुच्या जरठा मधुरा तथा । विदाहीति भिषक्श्रेष्ठैः
प्रोक्ता राजनिघण्टके ॥ ३६१ ॥

१०५ कटुहुंची-कडवंची ।

नामानि—कटुहुंची श्रीफलिका प्रतिपत्रफला तथा । सुषवी
कारवी चैव तद्वद्बहुफला तथा ॥ ६२ ॥ क्षुद्रकारलिका प्रोक्ता ज्ञेया
कन्दलता तथा । क्षुद्रादिकारवल्ली च प्रोक्ता 'राजनिघण्टके' ॥ ६३ ॥
'द्रव्ये' लघुलता चैव व्रणघ्नी कृष्णमृद्गवा ।

गुणाः—कटुहुंची कटुस्तिका रक्तवातकरो तथा ॥ ६४ ॥ रोचनी
दीपनी पथ्या 'राजनामनिघण्टके' ।

१०६ क्षुद्रकारलीकन्द-कडवंचीकन्द ।

गुणाः—कारलीकन्दमर्शोघ्नं मलरोधविशोधनं ॥ ३६५ ॥ योनि-
निर्गतदोषघ्नं गर्भस्रावविपापहम् ॥ २१२४ ॥

६ शालमल्लयादिवर्गः ।

१ शालमली-सेमर ।

नामानि—शालमलिश्चिरजीवी स्यात्पिच्छिलो रक्तपुष्पकः ॥ १ ॥
कुक्कुटी तूलवृक्षश्च मोचाल्यः कंटकद्रुमः । रक्तोत्पलो रम्यपुष्पो बहु-
वीर्यो यमद्रुमः ॥ २ ॥ दीर्घद्रुमः स्यूलफलो दीर्घायू 'राजनामके' ।
पिच्छिला तूलिनी मोचा कंटकाढ्या सुपूरिणी ॥ ३ ॥ बहुवीर्यो तू-
लफलो निस्सारा दीर्घपादपा । दुरारोहा रम्यपुष्पो रोचना च यम-
द्रुमः ॥ ४ ॥ शालमली रक्तपुष्पा च 'धन्वे' तु चिरजीविका । पिच्छा
याम्यद्रुमश्चैव पूरणी स्थिरजीविका ॥ ५ ॥ रक्तपुष्पी तथा प्रोक्ता
'क्रेयदेवनिघण्टके' । तूलिका कुक्कुटी चैव तथैव चिरजीविनी ॥ ६ ॥
प्रोक्ता 'मदनपाले' तु भिषक्विद्याविशारदैः । रक्तशालमलिका 'द्रव्ये'

शाल्मल्यादिवर्गः ।

१४५

स्थिरायुर्भाधनामके' ॥ ७ ॥ तथा 'गणनिघण्टे' तु कुंकुमास्थू-
लजीविका ।

गुणाः—शाल्मलिः पिच्छिलो वृष्यो बल्यो मधुरशीतला ॥ ८ ॥
कषायश्च लघुः स्निग्धः शुक्रश्लेष्मविवर्द्धनः । तद्रसस्तगुणो ग्राही
कषायः कफनाशनः ॥ ९ ॥ पुष्पं तद्वच्च निर्दिष्टं फलं तस्य तथा-
विधं । प्रोक्तं 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ १० ॥ रसायन-
वरा चैव बृंहणी रक्तपित्तजित् । तत्फलं ग्राहि पित्तघ्नं प्रोक्तं 'मद-
नपालके' ॥ ११ ॥ तत्पुष्पं कफपित्तघ्नं वातलं 'केयदेवके' । 'गणे'
तु योनिदोषघ्नं संप्रोक्तं वैद्यनायकैः ॥ १२ ॥

२ मोचरस ।

नामानि—मोचो मोचरसो मोचसारः शाल्मलिवेष्टकः । सुरसः
पिच्छलसारो मोचनिर्यास इत्यपि ॥ १३ ॥ मोचस्रावस्तथा प्रोक्तो
'राजनामनिघण्टके' । निर्यासः शाल्मलेः पिच्छस्तथा शाल्मल इत्यपि
॥ १४ ॥ तथा वेश्मरसश्चैव 'धन्वनामनिघण्टके' । मोचकः 'केयदेवे'
तु वेष्टको 'द्रव्यनामके' ॥ १५ ॥ मोचस्रावी यथा पिच्छा प्रोक्ता
'मदनपालके' । पिच्छलश्च तथा प्रोक्तो 'गणनामनिघण्टके' ॥ १६ ॥

गुणाः—अथ मोचरसः प्रोक्तः कषायः कफवातहा । बलप्रभाव-
र्णवीर्यपुष्टिसिद्धिप्रदायकः ॥ १७ ॥ आयुर्वृद्धिकरो ग्राही प्रोक्तो
'राजनिघण्टके' । प्रवाहिकातिसारघ्नो स्निग्धो ह्यामविनाशिनी
॥ १८ ॥ कफपित्तहरः प्रोक्तो 'केयदेवनिघण्टके' । 'मदने' रक्तपि-
त्तघ्नो दाहहा परिकीर्तितः ॥ १९ ॥

३ रक्तरौहितक-रक्तरौहिडा ।

नामानि—रौहीतको रौहितक रौहितश्च कुशाल्मलिः । सदा-
प्रसूनश्च कूटशाल्मलिश्च विरोचनः ॥ २० ॥ शाल्मलिको 'नृपे' प्रोक्ता
तथा दाडिमपुष्पकः । रोचनश्च तथा रौही 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ २१ ॥
दाडिमपत्रः ग्रीहघ्नो रौहिणो 'गणनामके' । तत 'स्त्वमरकोशे' तु
ग्रीहशत्रुः स्मृतो बुधैः ॥ २२ ॥ रक्तस्तु रक्तपुष्पश्च रक्तघ्नः पारिजा-
तकः । 'केयदेवनिघण्टे' तु प्रोक्तो वैद्यविशारदैः ॥ २३ ॥

४ श्वेतरौहितक-श्वेत रौहिडा ।

नामानि—'नृपे' तु श्वेतरौहीतः सितपुष्पः सिताब्जः । सि-

१४६

तिघण्टशिरोमणिः ।

संगः शुक्ररोहीतो लक्ष्मीवाञ्जनवल्लभः ॥ २४ ॥

गुणाः—‘नृपे’ रोहीतकद्वंद्वं कटु स्निग्धं कषायकं । शीतलं क्लृप्तमिष्टीहृद्यं व्रणरक्ताक्षिरोगहं ॥ २५ ॥ ‘धन्वे’ प्रोक्तो यरुद्धा च तथा ‘केयनिघण्टके’ । सरो वातकफघ्नश्च चोष्णो गुल्मविषापहः ॥ २६ ॥ मेदोषिवन्धानाहघ्नो कर्णशूलविनाशनः ।

५ एकवीर ।

नामानि—एकवीरो महावीरः सकुर्वीरः सुवीरकः ॥ २७ ॥ एकादिवीरपर्यायैर्वीरः प्रोक्तो ‘नृपे’ तथा ।

गुणाः—एकवीरो भवेच्चेष्णः कटुकस्तोदघातनुत् ॥ २८ ॥ शुभ्रसीकटिष्ट्यादिशूलपक्षाभिघातनुत् ।

६ पारिभद्र—फरहद ।

नामानि—पारिभद्रो निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ॥ २९ ॥ षड्पुष्पो रक्तपुष्पः कृमिघ्नो रक्तकेसरः । ‘नृपे’ प्रोक्तो तथा ‘केये’ प्रभद्रः कंटकीशुकः ॥ ३० ॥ पारिजातः कंटकी च कंटकीपारिजातकः ।

गुणाः—पारिभद्रः कटून्मलश्च कफवातविनाशनः ॥ ३१ ॥ रोचनो दीपनः पथ्यो प्रोक्तो ‘राजनिघण्टके’ । शोफपाण्डुक्रिमिहरो मेहोहा ‘मदेने’ तथा ॥ ३२ ॥ पुष्पं तु पित्तरोगघ्नं कर्णव्याधिविनाशनं । ‘भावे’ तु पूर्वमुक्तं स्याद्द्रणे च व्रणशोधजित् ॥ ३३ ॥ कफपित्तहरं चैव संप्रोक्तं वैद्यनायकैः ।

७ खदिर—खैर ।

नामानि—खदिरौ बालपत्रश्च खाद्य (व्य) पत्री क्षतक्षमः ॥ ३४ ॥ सुशाल्यो वक्रकंटश्च यक्षांगो दन्तधावनः । गायत्री जिह्वाशल्यश्च कंठीसारद्रुमस्तथा ॥ ३५ ॥ कुष्ठारिर्बहुसारश्च मेध्यश्च ‘नपनामके’ । ‘केयदेवे’ तु गीतश्च कुष्ठघ्नः कुष्ठकंटकः ॥ ३६ ॥ ‘केशे’ तु बालतनयस्तथा च दन्तधावनः ।

गुणाः—सामान्यखदिरश्चैव रसे तिक्तस्तु शीतलः ॥ ३७ ॥ पित्तादिकफकुष्ठघ्नो पाचनः कासशोफहा ।

८ श्वेतखदिर-सफेदखैर ।

नामानि—खदिरः श्वेतसारश्च कार्मुकः कुञ्जकण्टकः ॥ ३८ ॥
सोमसारो नेमिवृक्षः सोमबल्कः पथिद्रुमः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे'
तु वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ ३८ ॥ सारशल्यस्तथा प्राक्तो 'केयदेवनिघण्टके' ।

गुणाः—ततस्तु श्वेतखदिरस्तिक्तः काषायकः कटुः ॥ ४० ॥
चोष्णः कण्डूकुष्ठहरः कफवातविनाशनः । व्रणापहेति संप्रोक्तो
'राजनामनिघण्टके' ॥ ४१ ॥ शीतपित्तकफघ्नश्च रक्तदोषहरो 'धने' ।
शीतः कफादिपित्तघ्नः श्वित्रकुष्ठकृमिघ्नकः ॥ ४० ॥ शोथप्रमेहमे-
दोघ्नः कासारुचिविनिघ्नकः । पाण्डुहा 'केयदेवे' च संप्रोक्तो वैद्य-
नायकैः ॥ ४३ ॥ मेहशोथामपित्तासृक्नाशिनो 'मदने' स्मृतः ।

९ रक्तखैर—लालखैर ।

नामानि—रक्तसारस्तु रक्तश्च सुसारस्ताम्रकण्टकः ॥ ४४ ॥
संप्रोक्तो बहुशल्यश्च याज्ञिकः कुष्ठतोदनः । यूपद्रुमोऽस्रखदिरोऽप्यरुश्च
'राजनामके' ॥ ४५ ॥

गुणाः—कटूष्णो रक्तखदिरः कषायो गुरुतिक्तकः । आमवाता-
स्त्रवातघ्नो व्रणभूतज्वरापहः ॥ ४६ ॥ 'नृपे' प्रोक्तो तथा 'धन्वे'
हिमः पित्तकफघ्नकः । कुष्ठकण्डूकृमिघ्नश्च कफरेतविशेषकः ॥ ४७ ॥
शुक्रवृद्धिकरो 'द्रव्ये' दाहज्वरविनाशनः । तन्मिर्यासगुणश्चैव मधुरो
बलकृत्तथा ॥ ४८ ॥ कीर्यवृद्धिकरश्चैव मुखरोगविनाशनः ।

१० विट्खदिर-दुर्गन्धखैर ।

नामानि—ततोविट्खदिरश्चैव कांभोजी कालकन्धकः ॥ ४९ ॥
गौरटो मरुजश्चैव संसारो बहुसारकः । पत्रतरुर्महासारः खादिरो
'राजनामके' ॥ ५० ॥ इरिमेदारिमेदश्च प्रोक्तो 'मदनपालके' ।

गुणाः—विट्खदिरः कटुरुष्णस्तिक्तो रक्तव्रणोत्थदोषहरः ॥ ५१ ॥
कण्डूतिविषवीसर्पज्वरकुष्ठोन्मादभूतघ्नः ।

११ आरि-बल्लीखैर ।

नामानि—आरिः सन्दानिका दाला तथा खदिरपत्रिका ॥ ५२ ॥
प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु वेदसंख्या भिषक्जनैः ।
गुणाः—आरिः कषायकटुका तिक्ता रक्तातिपित्तनुत् ॥ ५३ ॥

१२ खदिरसार-खैरसार ।

नामानि—खादिरः खदिरोद्भूतस्तथा खदिरसारकः । 'नृपे'
खदिरनिर्यासो रङ्गदो रङ्ग एव च ॥ ५४ ॥

गुणाः—कटुकः खादिरः सारस्तिकोष्णः कफघ्नातृहृत् । वण-
कण्ठामयघ्नश्च रुचिकृद्दीपनो 'नृपे' ॥ ५५ ॥ 'द्रव्यरत्ने' त्रिदोषघ्नः
संप्रोक्तो वैद्यनायकैः ।

१३ शमी ।

नामानि—शमी शान्ता शिवेशाना तुङ्गेष्टा सुरभिस्तथा ॥ ५६ ॥
कचशत्रुफला चैव शापापशमनी तथा । सुभद्रा केशमथनी लक्ष्मीः
शुभकरी मता ॥ ५७ ॥ मेध्या तपनतनया हविर्गन्धा तथा स्मृता ।
मङ्गल्या शंकुफलिका पापापशमनी तथा ॥ ५८ ॥ भद्रा तु शङ्करी
ज्ञेया केशहन्त्री शिवाफला । सुपत्रा सुखदा चैव 'राजनामनिघ-
ण्टके' ॥ ५९ ॥ ईशानी शङ्करी चैव 'धन्वे' तु पापनाशिनी । केशहन्तृ-
फला चैव केशहृत्फलिका तथा ॥ ६० ॥ केशापहा शाकफला 'केय-
देवनिघण्टके' । 'द्रव्ये' सक्तुफला चैव शाङ्करी मङ्गलप्रदा ॥ ६१ ॥
शिबी खदिरपत्रा च पवित्रा 'मदने' 'शिवे' । पवित्रपत्रा शमिका
शुक्लफला तथा 'गणे' ॥ ६२ ॥

गुणाः—शमी रूक्षा कषाया च रक्तपित्तातिसारजित् । तत्फलं
तु गुरु स्वादुतिक्तोष्णं केशहृत् 'नृपे' ॥ ६३ ॥ 'द्रव्ये' तु शीतं 'केये'
च कफकुष्ठार्शनाशनम् । श्वासकासकृमिभ्रान्तिनाशनं लघु रेच-
कत् ॥ ६४ ॥

१४ लघुशमी ।

नामानि—शमी शान्ता शुभा भद्रा जया चैवापराजिता ।
विजया तु 'नृपे' प्रोक्ता पूर्वोक्तगुणसंयुता ॥ ६५ ॥ ईशान त्वजिता
'केये' भूशमी 'मदने' स्मृता । ततस्त्वमरकोशे तु शमीरः परि-
कीर्तितः ॥ ६६ ॥

१५ बबुल - अबूल ।

नामानि—बबुलो युगलाक्षश्च कण्डालुस्तीक्ष्णकण्टकः ।
गोशृङ्गः पङ्क्तिबीजश्च दीर्घकण्टः कफान्तकः ॥ ६७ ॥ दृढबीजो-
ज-

भक्षश्च दर्वुरो 'राजनामके' । किंकिराटपीतकश्च 'द्रव्ये' तु पीत-
पुष्पकः ॥ ६८ ॥ किंकिराटस्तथा प्रोक्तो 'भावनामनिघण्टके' ।

गुणाः—वव्वुलस्तु कषायोष्णः कफकासक्षयापहः ॥ ६९ ॥ आम-
रक्तातिसारघ्नः पित्तदाहहरो 'नृपे' । 'द्रव्ये' 'मदे' शीतलश्च भेदी
कुष्ठगरापहः ॥ ७० ॥

१६ जालवव्वूलकः—जाल वव्वूल ।

नामानि—जालवव्वूलकश्चैव छत्राकः स्थूलकंटकः ॥ ७१ ॥
सूक्ष्मशाखस्तनुच्छाद्यो रन्ध्रकंटस्तु 'राजके' ।

गुणाः—जालवव्वूलको रुक्षो वातामयविनाशकृत् ॥ ७२ ॥ पि-
स्तकृच्च कषायोष्णः कफहृद्दाहकारकः ।

१७ अरिमेद-हिवर ।

नामानि—इरिमेदोरिमेदश्च गोधास्कन्धोरिमेदकः ॥ ७३ ॥ अ-
हिमेदोहिमारश्च पूतिमेदोहिमेदकः । प्रोक्तो 'राजनिघंटे' तु 'केयदेवे'
रिभस्तथा ॥ ७४ ॥ विट्खदिरः सर्पमेदो मेदेरिपुररिस्तथा । त्वरिभो
'द्रव्यरत्ने' तु कालस्कन्धो 'मदे' तथा ॥ ७५ ॥ पुष्कारिश्च तथा प्रोक्तो
'गणनामनिघण्टके' ।

गुणाः—अरिमेदः कषायोष्णस्तिको भूतविनाशकः ॥ ७६ ॥ शोफा-
तिसारकासघ्नो विसर्पविषहा 'नृपे' । कृमित्रणादिदंतासृक्नाशना
'मदने' स्मृतः ॥ ७७ ॥ प्रमेहमेदहा प्रोक्तो 'वैद्यगणनिघंटे' । 'धन्वे'
तु मुखरोगघ्नो रक्तवैकारहृद्भिः ॥ ७८ ॥ 'केये' तु कृमिकण्डूतीव-
स्तिरोगादिनाशनः । दन्तरोगहरः प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ७९ ॥
'द्रव्ये' तु दाहहृत्प्रोक्तो 'भावे' तु ग्रहभीतिहा ।

१८ पखौड-पखौडा ।

नामानि—पखौडः पंचकृत्पंचवर्धनः पंचरक्षकः ॥ ८० ॥ प्रोक्तो
'राजनिघंटे' तु पत्तरो 'द्रव्यनामके' । पखौडः पक्वपौडश्च प्रोक्तो
वैद्यविशारदैः ॥ ८१ ॥

गुणाः—हस्तांजनविधौ शस्तः कटुजीर्णज्वरापहः । 'नृपे' प्रोक्तो
तथा 'द्रव्ये' शीतुपित्तहरः स्मृतः ॥ ८२ ॥

१९ इंगुदी - हिंगोट, इंगुवा ।

नामानि—इंगुदी हिंगुपत्रश्च विषकंटोनिर्लातकः । गौरस्तूतः
सुपत्रश्च शूलारिस्तापसद्रुमः । तथा क्रोष्टुफलश्चैव 'राजनामनि-
घटके' ॥ ८३ ॥ इंगुदे भल्लकस्तिको तिगुदे पूतिकण्टकः । कंटर्का-
गारवृक्षश्च कोरको वृक्ष एव च ॥ ८४ ॥ व्यवहारिस्तिकमज्जः 'केय-
देवनिघटके' । 'द्रव्ये' तु तापसतरुवृद्धकंटक एव च ॥ ८५ ॥
इंगुलो 'मदने' प्रोक्तो तिल्वको 'गणनामके' ।

गुणाः—इंगुदी मदगन्धी स्यात्कटूष्णाफेनिला लघुः ॥ ८६ ॥
रसायनी जंतुवातकफव्रणहरी 'नृपे' । लूताविषघ्नी संप्रोक्ता वैद्यै-
'मदनपालके' ॥ ८७ ॥ पाके कटुः कृमिघ्नी च श्वित्रकुष्ठग्रहापहा ।
विषशूलहरा चैव प्रोक्ता 'केयनिघटके' ॥ ८८ ॥ तत्फलं कफवातघ्नं
चोष्णं 'भावप्रकाशके' ।

२० करीरः—करील ।

नामानि—निष्पत्रकः करीरश्च करिरं ग्रंथिलस्तथा ॥ ८९ ॥
कृकरो गुडपत्रश्च करकस्तीक्ष्णकण्टकः । प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु
वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ९० ॥ शाकपुष्पो मृदुफलः क्रकचस्तीक्ष्णसा-
रकः । प्रोक्तो 'धन्वनिघटे' तु तथा 'केयनिघटके' ॥ ९१ ॥ करीर-
कस्तीक्ष्णवृक्षः सुफलश्च हुताशनः । निष्पत्रिका 'द्रव्यरत्ने' कृकरो
'मदनपालके' ८२ ॥ अपत्रा चैव कथिता 'भावनामनिघण्टके' ।

गुणाः—निष्पत्रिकाध्मानकरा कषाया च कटूष्णका ॥ ९३ ॥
कफकारी श्वासहंत्री वातारुचिविनाशनी । शूलच्छर्दिखर्जुव्रणना-
शिनी 'राजनामके' ॥ ९४ ॥ 'द्रव्ये' बलासहा प्रोक्ता 'धन्वे' तु गुद-
कीलहा । कटुतीक्ष्णश्लेष्महा च दुर्नामकफवातहा ॥ ९५ ॥ विषशो-
फाममेदघ्नी तत्पुष्पं तु त्रिदोषहृत् । फलं दूष्णं विकाशी च रुक्षं
च कफपित्तजित् ॥ ९६ ॥ संग्राहीति भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्तं 'केयनि-
घटके' ।

२१ स्नुही—सेहुंड ।

नामानि—स्नुही सुधा महावृक्षः क्षीरो निस्त्रिंशपत्रिका ॥ ९७ ॥
शाखाकण्टश्च गुडाख्यः सेहुंडो वज्रकण्टकः । बहुशाखो वज्रवृक्षो

वातारिः क्षीरकाण्डकः ॥ ६८ ॥ भद्रो व्याघ्रनखश्चैव नेत्रारिर्दण्डवृक्षकः ।
समेतदुग्धो गण्डीरः स्नुक् चेति 'राजनामके' ॥ ६९ ॥ बबुसावः
'केयदेवे' कुलिशदुम एव च । वज्रो वज्री वज्रतुंडो 'द्रव्ये' महातरु-
स्तथा ॥ १०० ॥ 'भावे' समन्तदुग्धा च सिंहतुंडः सिंहतुंडकः । वज्र-
द्रुमस्तथा प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः ॥ १०१ ॥

गुणः—स्नुहिरुष्णा पित्तदाहकुष्ठवातप्रमेहनुत् । क्षीरं वातविषा-
ध्मानगुल्मोदरहरं 'नृपे' ॥ १०२ ॥ वातिरेचनकृत्प्रोक्तो 'द्रव्यनाम-
निघंटके' । कटुतिक्तस्तीक्ष्णकश्च दीपनो गुरु रोचनः ॥ ३ ॥ वात-
शूलामहृच्चैव कफोन्मादशंशोफहा । शोकपाण्डुव्रणघ्नश्च मेदोदू-
षीविषघ्नकः ॥ ४ ॥ अष्टौलाहाश्मरीहेति प्रोक्तो 'मदनपालके' ।

२२ त्रिधार-तिधारी सिंहतुंड ।

नामानि—त्रिधारा च स्नुही प्रोक्ता तिस्रोधारा तु 'राजके' ॥ ५ ॥

गुणः—पूर्वोक्तगुणवत्पेषा विशेषाद्रससिद्धिदा ।

२३ कंधारी-नागफनी ।

नामानि—कंधारी कन्धरी कंधा दुर्धर्षा तीक्ष्णकण्टका ॥ ६ ॥
तीक्ष्णगन्धा क्रूरगन्धा दुष्प्रवेशा तथा 'नृपे' । क्रूरकर्मा त्वहिंसा च
तथैव चक्रवल्लरी ॥ ७ ॥ कपालकुक्कुलिकाम्लफला 'केयदेवनि-
घण्टके' ।

गुणः—कंधारी कटु तिक्तोष्णा कफवातनिहंतनी ॥ ८ ॥ शो-
फघ्नी दीपनी रुच्या रक्तप्रन्थिहरा 'नृपे' ।

२४ श्वेत एरंड-सफेद एरण्ड ।

नामानि—श्वेतैरंडः सितैरंडश्चित्रो गन्धर्वहस्तकः ॥ ९ ॥ आ-
मंडस्तरुणः शुक्लो वातारिर्दीर्घदंडकः । पंचांगुलो वर्धमानो खुको
'राजनामके' ॥ १० ॥ एरण्डको यक्षहस्तो खुरुत्तानपत्रकः । गन्धर्वो
व्याघ्रपुच्छश्च शुक्लः 'केयनिघंटके' ॥ ११ ॥ 'भावे' व्यडम्बकामण्ड-
श्चोखुको व्यडम्बनः ।

गुणः—श्वेतैरंडः कटुस्तिक्तश्चोष्णः कफज्वरपहः ॥ १२ ॥
रसार्हो वायुनिघ्नश्च कासहा 'राजनामके' । मधुर्वृष्यो गुरुश्चैव रेच-
कारी च कुष्ठहा ॥ १३ ॥ श्वासकासाश्मरीगुल्मप्लीहोदरविनाशनः ।

वध्मर्माहकटीवस्तिरोगहा मेहनाशनः ॥ १४ ॥ शिरोरोगामहच्चैव
 प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' । तत्पत्रं वातनिघ्नं च कफकृमिविनाशनं
 ॥ १५ ॥ गुल्मवातहरं प्रोक्तं 'भावनामनिघण्टके' ।

२५ रक्तएरंड-लालएरण्ड ।

नामानि—रक्तैरंडस्तथा व्याघ्रो हस्तिकर्णो खुस्तथा ॥ १६ ॥
 उरुबूको नागकर्णश्चंचुस्तानपत्रकः । करपर्णो पञ्चनखः स्निग्धो
 व्याघ्रदलस्तथा ॥ १७ ॥ चित्रबीजो व्याघ्रकरो ह्रस्वैरण्डस्तु 'राजके' ।
 एरंडको हस्तपर्णो मंडो लोहितशीर्षकः ॥ १८ ॥ व्याडंवा 'केयदेवे'
 तु 'मदने' चंचुलस्तथा । व्याघ्रतर्ह्वस्तवैरिः प्रोक्तो वैद्यविशारदैः
 ॥ १९ ॥ व्याघ्रतलो व्याघ्रपुच्छस्त्वभकर्णश्च 'द्रव्यके' ।

गुणाः—रक्तैरंडः श्वयथुहा वायुरक्तार्तिपांडुहा ॥ २० ॥ भ्रांति-
 श्वासज्वरघ्नश्च रेचको 'राजनामके' । वातरक्तहरश्चैव 'केयदेवनिघ-
 ण्टके' ॥ २१ ॥ शूलशोफहरश्चैव तत्फलं मेदवातहृत् । 'द्रव्ये' तु पा-
 र्श्वशूलघ्नं प्रोक्तं वैद्यविचक्षणैः ॥ २२ ॥ आममाहृतहृच्चैव फलम-
 त्युष्णदायकं । गुल्मशूलानिलहरं यकृतप्लीहोदराशोहृत् ॥ २३ ॥ क-
 टुका दीपनी मज्जा मलमेदकरी मता । वातश्लेष्मोदरघ्नीति प्रोक्ता
 'भावप्रकाशके' ॥ २४ ॥

२६ स्थूलैरंड-बड़ाएरण्ड ।

नामानि—स्थूलैरंडो महैरंडो महापंचांगुली 'नृपे' ।

गुणाः—स्थूलैरंडो गुणाढ्यः स्याद्रसवीर्यविपक्वितु ॥ २५ ॥

२७ घोटी-घोटी ।

नामानि—घोंटा घदरिका घोटी गोलिका शत्रुकंटकः । कर्कटी
 च तुरंगी च तुरगा 'राजनामके' ॥ २६ ॥

गुणाः—घोटिका कटुकोष्णा च मधुरा वातनाशनी । व्रणकं-
 डूतिकुष्ठासृग्दोषश्वयथुहा 'नृपे' ॥ २७ ॥

२८ लताकरंज-कज्जा ।

नामानि—लताकरंजो दुस्पर्शो वीरास्यो वज्रबीजकः । धन-
 दाक्षः कंटफलः कुवेराक्षश्च 'राजके' ॥ २८ ॥ गदग्नस्तिरिगिच्छिको
 'द्रव्यरत्नाकरे' तथा ।

शाल्मल्यादिवर्गः ।

१५३

गुणाः—लताकरंजपत्रं तु कटूष्णं कफवातनुत्र ॥ २६ ॥ तद्वोजं दीपनं पथ्यं शूलगुल्महरं 'नृपे' ।

२९ कारी ।

नामानि—कारो तु कारिका कार्या गिरिजा कटुपत्रिका ॥ ३० ॥ तत्रैका कंटकारी स्यादन्या त्वाकर्षकारिका ।

गुणाः—कारो कषायमधुरा द्विविधा पित्तनाशनी ॥ ३१ ॥ दीपनी ग्राहिणी रुच्या कंटशोधकरी गुरुः ।

३० मदन-मैनफल ।

नामानि—मदनः शल्यः कैटर्यः पिंडी धाराफलस्तथा ॥ ३२ ॥ तगरः करहाटश्च राठः पिंडीतकस्तथा । कंटालो विषमुष्टिश्च छर्दनो विषपुष्पकः ॥ ३३ ॥ घंटाली मादनो हर्ष्यो घंटाल्यो वस्तिशोधनः । ग्रन्थिफलो गोलफलो मदनान्वहश्च 'राजके' ॥ ३४ ॥ 'धन्वे' विषमुष्ककश्च गालवः शल्यकः फलः । मरुबकश्च श्वसनो मातुलो बीजपुष्पकः ॥ ३५ ॥ 'केयदेवे' तथा 'द्रव्ये' गालो गालफलः स्मृता ।

गुणाः—मदनः कटुतिकोष्णः कफवातव्रणापहः ॥ ३६ ॥ शोफहा वांतिकारी च प्रोक्ता 'राजनिघंटके' । लेखनो लघु रुक्षश्च प्रतिश्यायज्वरघ्नकः ॥ ३७ ॥ कुष्ठार्शोविद्रधिहरः प्रोक्तः 'केयनिघंटके' । आनाहगुल्मनिघ्नश्च प्रोक्तो 'द्रव्ये' भिषजनैः ॥ ३८ ॥

३१ महापिण्डीतक-बड़ा मैनफल ।

नामानि—वाराहोऽन्यः कृष्णवर्णो महापिंडीतको महान् । स्निग्धपिंडीतकश्चान्यः स्थूलवृक्षफलो 'नृपे' ॥ ३९ ॥ गन्धपिंडीरकश्चैव प्रोक्तो 'केयनिघंटके' । तथा 'केये' पीतके तु स्नेहपिंडीतकः स्मृता ॥ ४० ॥ कुरंटकस्तथा श्वेतो श्वेतपिंडीतकः स्मृतः । चर्मकारतरुश्चैव चर्मद्रुस्तीक्ष्णकीलकः ॥ ४१ ॥

गुणाः—'नृपे' तथान्यो* मदनः कटुतिकतरसान्वितः । छर्दनः कफहृद्रोग पक्वाशय शोधनः ॥ ४२ ॥

*यहां 'अन्यो' शब्दसे बड़ा मैनफल, काला मैनफल, पीला मैनफल और सफेद मैनफलके गण समझना चाहिये ।

३२ वेल्लतर-वरवेल ।

नामानि—वेल्लतरो वीरतरः श्रुधाकुशलसंज्ञकः । दीर्घमूले वीरवृक्षः कृच्छ्रारि 'राजनामके' ॥ ४३ ॥ तथाऽरुणाऽसितश्वेतनील-
लोहितपुष्पकः । शमीपत्रो सूक्ष्मपत्रो तथा वेल्लन्तरः स्मृतः ॥ ४४ ॥
स्याज्जातितुल्यकुसुमः कण्टकी विजलदेशजः । प्रोक्ता 'भावप्रकाशे'
तु तथा 'केयनिघण्टके' ॥ ४५ ॥ बहुधारो वृहद्भासो दीर्घपत्रो-
श्मकृच्छ्रहा । 'द्रव्यरत्ने' ग्रन्थिपर्णी वीरदुर्वीरपादपः ॥ ४६ ॥ बहु-
वारो वेल्लतूरो बहुमूले 'मदे' 'गणे' ।

गुणाः—वेल्लन्तरः कटूष्णश्च कृच्छ्रघ्नः सन्धिशूलनुत् ॥ ४७ ॥
घन्धिदीप्तिकरः पथ्यो वातघ्नो 'राजनामके' । तृष्णाकफापहश्चैव
मूत्राघातशरीरघ्नकः ॥ ४८ ॥ ग्राही च योनिमूत्रघ्नः 'केयदेवनिघ-
ण्टके' । भ्रंशहेति 'गणे' प्रोक्तः प्राचीनभिषजावरैः ॥ ४९ ॥

३३ तरटी ।

नामानि—तरटी तारटी तीव्रा बर्बुरा रक्तबीजका ।

गुणाः—'नृपे' तु तिक्तमधुरा गुह्यव्या कफापहा ॥ ५० ॥

३४ श्रीवल्ली-सीकाकाई ।

नामानि—श्रीवल्ली शिववल्ली च कण्टवल्ली च शीतला ।
अम्ला कटुफलाऽश्वत्था दुरारोहा 'नृपे' तथा ॥ ५१ ॥

गुणाः—श्रीवल्ली कटुकाम्ला च वातशोफकफापहा । तत्फलं
तैललेपघ्नमत्यम्लं रुचिकृ 'नृपे' ॥ ५२ ॥

३५ निकुञ्जिका-सीकाकाईभेदः ।

नामानि—अन्या निकुञ्जिकाऽम्लाख्या कुञ्जिका कुञ्जवल्ली ।

गुणाः—निकुञ्जिका 'नृपे' प्रोक्ता श्रीवल्लीसदृशी गुणैः ॥ ५३ ॥

३६ अपर्वदण्ड-रामबाण ।

नामानि—अपर्वदण्डो दीर्घश्च रामबाणो नृपप्रियः । रामकांडो
रामशरो रामस्येषुश्च 'राजके' ॥ ५४ ॥

गुणाः—रामकांडजमूलं स्यादीषदुष्णं रुचिप्रदम् । रसे चाम्लं
कषायं च पित्तकृत्कफघातहृत् ॥ ५५ ॥

३७ यावनालशर-रामवाणभेद ।

नामानि—यावनालोऽथ नदिजो दृढत्वग्वारिसम्भवः । यावनालनिभश्चैव खरपत्रस्तु 'राजके' ॥ ५६ ॥

गुणाः—यावनालशरं मूलमीपन्मधुरं रुच्यकम् । शीतं पित्ततृषापघ्नं पशूनामवलप्रदम् ॥ ५७ ॥

३८ शर-सरपत ।

नामानि—शरो वाण इषुः कांड उत्कटः सायकः क्षुरः । इक्षुरः क्षुरिकापत्रो विशिखश्च ततः स्मृतः ॥ ५८ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु तथा 'भाचप्रकाशके' । मद्रमुंजस्तेजनश्च तथेक्षुवेष्टलः स्मृतः ॥ ५९ ॥

३९ स्थूलशर-बड़ासरपत ।

नामानि—महाशरः स्थूलशरो दीर्घमूलक एव च । क्षुरपत्रश्चेक्षुरकः संप्रोक्तो स्थूलसायकः ॥ ६० ॥ बहुमूलो 'नृपे' चैव वैद्यविद्याविशारदैः ।

गुणाः—शरद्वयं तु मधुरं तिक्तं कफविनाशनम् ॥ ६१ ॥ मदभ्रान्तिहरं चैव बल्यं वीर्यकरं ध्रुवम् । किञ्चिद्वातकरं प्रोक्तं वैद्यै 'राजनिघण्टके' ॥ ६२ ॥ कफवातहरं चैव शीतवीर्यं च शोषहम् । दाहच्छर्दिहरं प्रोक्तं वैद्यै 'गणनिघण्टके' ॥ ६३ ॥

४० मुञ्जा-मुञ्जतृण ।

नामानि—मुञ्जो मौंजीतृणाख्यः स्याद्ब्रह्मण्यस्तेजनावहयः । वानीरजो मुञ्जनकः शारी दर्भावहयस्तथा ॥ ६४ ॥ दूरमूलो दृढतृणो दृढमूलो बहुप्रजः । रजतः शत्रुभङ्गश्च 'राजनामनिघण्टके' ॥ ६५ ॥ क्षुरस्तु स्थूलदर्भश्च वाणाव्हो ब्रह्ममेखलः । प्रोक्तो 'धन्वनिघण्टे' तु तथा 'भावे' सुमेखलः ॥ ६६ ॥

गुणाः—मुंजस्तु मधुरः शीतः कफपित्तजदोपजित् । ग्रहरक्षासु दीक्षासु भूतघ्नः पावने 'नृपे' ॥ ६७ ॥ चोष्णं वीसर्पमूत्रघ्नं वस्त्यक्षिरोगहा 'धने' । 'द्रव्ये' तु दाहहा प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ६८ ॥

४१ काश-कांसा ।

नामानि—काशः कांडेक्षुरिक्ष्वारिः काकेक्षुर्वायसेक्षुकः । इक्षुरश्चेक्षुकांडश्च शारदः सितपुष्पकः ॥ ६९ ॥ नादेयो दर्भपत्रश्च

लेखनी कांडकांडकः । कण्टालङ्कारकश्चैव 'राजनामनिघण्टके' ॥ ७० ॥
सुकांडश्च तथा प्रोक्तो वैद्यैर्'मदनपालके' ।

गुणाः—काशश्च शिशिरो गौल्यो रुचिकृत् पित्तदाहनुत् ॥ ७१ ॥
तर्पणो बलकृद्वृष्यः श्रमशोपक्षयापहः । प्रोक्तो 'राजनिघंटे' तु वैद्य-
विद्याविशारदैः ॥ ७२ ॥ कृच्छ्राश्मरी दाहरक्तपित्तक्षयहरो 'मदे' ।
तृषाहा मूत्ररोधघ्नो वातपित्तघ्नको 'गणे' ॥ ७३ ॥

४२ मिशी-छोटाकांस ।

नामानि—अन्यो शिरी मिशी गुण्डा अश्वालो नीरजः शरः ।
प्रोक्तो 'राजनिघंटे' तु इक्षुगन्धा च 'भावके' ॥ ७४ ॥ तथा चेशुर-
सश्चैव वैद्यविद्याविशारदैः । श्वेतचामरपुष्पश्च तथेशुकुसुमो 'धने'
॥ ७५ ॥ काशेशुस्तु 'मदे' चैव सुकांडः श्वेतचामरः ।

गुणाः—मिशी मधुरशीता च पित्तदाहक्षयापहा ॥ ७६ ॥

४३ सितदर्भ-श्वेतदर्भ, कुशो ।

नामानि—सितदर्भो ह्रस्वकुशः पूतो यज्ञियपत्रकः । वज्रो ब्रह्म-
पवित्रश्च तीक्ष्णो यज्ञस्य भूषणः ॥ ७७ ॥ सूचीमुखः पुण्यतृणो
वन्निहूतस्तृणो 'नृपे' । मृदुदर्भः कुशो बर्हिः शुचिचीरः सुवृत्तकः
॥ ७८ ॥ 'धन्वन्तरिनिघंटे' तु संप्रोक्तो भिषजांवरैः । कुशं कुथः पवित्रं
च दर्भं 'श्रामरकोशके' ॥ ७९ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव सूच्यग्रः पारिकी-
र्तितः । श्वेतपत्रः श्वेतदर्भो याज्ञेयः शुद्रपत्रकः ॥ ८० ॥ प्रोक्तो 'गण-
निघंटे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।

गुणाः—दर्भमूलं हिमं रुच्यं मधुरं पित्तनाशनं ॥ ८१ ॥ रक्तज्वर-
तृषाश्वासकामलानाशनं 'नृपे' । रक्तपित्तप्रशमनं मूत्रकृच्छ्रहरं 'धने'
॥ ८२ ॥ 'मदे' तु बस्तिरोगघ्नं कफपित्तविनाशनं । रक्तप्रदरहं 'भावे'
अश्मरीघ्नं तथा 'द्रवे' ॥ ८३ ॥ छर्दिमूर्च्छाहरं चैव दाहघ्नं 'गणना-
मके' । शुकशुद्धिकरं चैव रक्तशुद्धिकरं तथा ॥ ८४ ॥

४४ हरिद्वर्भ-बड़ाकुश ।

नामानि—कुशोन्यः शरपत्रश्च हरिद्वर्भः पृथुच्छदः । शिरी च
रुक्षदर्भश्च दीर्घपत्रः पवित्रकः ॥ ८५ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघंटे' तु भिष-
ग्विद्याविशारदैः । खरोन्यः पृथुलः शीरो गुंदा वानीरजो 'धने' ।

गुणाः—दर्भौ च गुणे तुल्यो तथापि च सितोद्विगः । यदि
श्वेतकुशाभावस्त्वपरं योजयेद्विषक् ॥ ८७ ॥

४५ बलवजा-नरई ।

नामानि—बलवजा बृहत्पत्री च तृणेश्वस्तृणबलवजा । मौंजीपत्रा
बृहत्तृणा पानीयाश्चा बृहत्शुरा ॥ ८८ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु वैद्यवि-
द्याविशारदैः ।

गुणाः—बलवजा मधुरा शीता पित्तदाहृत्पापहा ॥ ८९ ॥ वातप्र-
कोपनी रुच्या कंठशुद्धिकरी 'नृपे' ।

४६ कत्तूण-रोहिसघास, गन्धेजघास ।

कुत्तूणं कत्तूणं भूतिर्भूतिकं रोहिषं तृणं ॥ ९० ॥ श्यामकं ध्या-
मकं पूतिर्मृद्वलं देवदग्धकं । प्रोक्तं 'राजनिघटे' तु भिषकशास्त्रज्ञ-
पंडितैः ॥ ९१ ॥ 'धन्वे' तु सकलं पौरं पाटलं देवदंडकं । तथा
'मदनपाले' तु सरलं देवगन्धकं ॥ ९२ ॥ 'गणे' विंदुचितं 'कोशे'
संप्रोक्तं देवजग्धकं ।

गुणाः—लघुरोहिषसंज्ञं तु कटुतिक्तकफापहं ॥ ९३ ॥ शस्त्रशल्या-
दिदोषघ्नं बालग्रहहरं 'नृपे' । हृद्रोगकण्ठहं चैव रक्तपित्तविनाशनं
॥ ९४ ॥ कफज्वरहरं चैव कासशूलहरं 'मदे' । कफपित्तकृमिघ्नं च
कण्डूविषज्वरघ्नकं ॥ ९५ ॥ वैद्यै 'गणनिघटे' तु संप्रोक्तं नैव संशयः ।

४७ दीर्घरोहिषक-बड़ा रोहिस ।

नामानि—'नृपे' रोहिषकं दीर्घं बृहत्कांडो बृहच्छदं ॥ ९६ ॥
रागीष्टं दीर्घं नालश्च तिक्तसारश्च कुत्सितं ।

गुणाः—दीर्घरोहिषकं तिक्तं कटूष्णं कफवातजित् ॥ ९७ ॥ भूत-
ग्रहविषघ्नं च व्रणक्षतविरोपणं ।

४८ नल-नरकुल ।

नामानि—नलो नालो नडश्चैव कुशिरंध्रोथ कीचकः ॥ ९८ ॥
वंशांतरश्च धमनः शून्यमध्ये विभीषणः । छिद्रांतो मृदुपत्रश्च रंघ्रप-
त्रो मृदुच्छदः ॥ ९९ ॥ नालवंशः पोठगलो 'राजनामनिघटके' । वटश्च
नर्तको रंध्री 'धन्वंतरिनिघटके' ॥ १०० ॥ मृत्युपुष्पः 'केयदेवे' पी-
टस्तु 'द्रव्यरत्नके' । 'मदे' पिठः पुष्पमृत्युर्नलिको 'गणनामके' ॥ १ ॥

गुणाः—नलः शीतकषायश्च मधुरो रुचिकारकः । रक्तपित्तप्रशमनो दीपनो वीर्यदा 'नृपे' ॥ २ ॥ वृद्धस्त्रीयोनिमूत्रार्तिपित्तदाहविसर्पयुत् । चोष्णश्च 'केयर्द्वे' तु 'द्रव्ये' कृच्छ्रहरः स्मृतः ॥ ३ ॥ रक्तदाहहरश्चैव कफपित्तहरो धने । 'भावे' रक्तप्रदरहा हृद्योनिवस्तिरोगहा ॥ ४ ॥ वस्तिशूलाश्मरीपित्तरोगघ्नो 'गणनामके' ।

४९ महानल - बड़ानरकुल ।

नामानि—'नृपे' महानलो वन्यो देवनालोत्तमो नलः ॥५॥ स्थूलनालः स्थूलदंडः सुरमालः सुरद्रुमः ।

गुणाः—देवनालोति मधुरो वृष्य ईषत्कषायकः ॥ ६ ॥ नलः स्यादधिको वीर्ये शस्यते रसकर्मणि ।

५० नीलदूर्वा - हरीदूब ।

नामानि—स्यान्नीलदूर्वा हरितं च शाम्भवी श्यामा च शांता शतपर्षिकामृता । पूता शतप्रंधिरनुष्णवल्लिका शिवा शिवेष्टापि च मंगला जया ॥ ७ ॥ सुभगा भूतहन्त्रो च शतमूला महौषधी ॥ ८ ॥ अमृता विजया गौरी शांता च 'नृपनामके' । शतपर्वा शीतवीर्या शतवल्ली च शीतला ॥९॥ हरितं शाङ्खलं शष्पं 'घन्वन्तरिनिघण्टके' । सहस्रवीर्यान्ता च प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ १० ॥

गुणाः—नीलदूर्वा 'नृपे' शीता मधुरा तिक्तरोचनी । रक्तपित्तातिसारघ्नी कफवातज्वरापहा ॥ ११ ॥ वान्तिहृद्रक्तपित्तघ्नी कफपित्तहरा 'द्रव्ये' । 'घन्वन्तरिनिघण्टु' च संप्रोक्ता श्लेष्मवातला ॥२१२॥

५१ श्वेतदूर्वा - सफेद दूब ।

नामानि—गोलोमी श्वेतदूर्वा च सिताख्या तदनन्तरं ॥ १३ ॥ चण्डा भद्रा भार्गवी च गौरी चैवा तु दुर्भरा । विघ्ना ईशानकान्ता च श्वेतानन्ता च दिव्यका ॥ १४ ॥ श्वेतकांडा प्रचण्डा च तथैव सुखवल्लभा । सहस्रवीर्या तु शुभा तथा सहस्रकांडका ॥ १५ ॥ सहस्रपर्वा खच्छा च सुपर्वा तु सितच्छदा । कच्छान्तरुहा च तथा 'राजमामनिघण्टके' ॥ १६ ॥ भार्गवी तु रुहा 'घन्वे' श्वेतदण्डा सितालता ।

गुणाः—श्वेतदूर्वातिशिशिरा मधुरा वान्तिपित्तजित् ॥ १७ ॥ आप्रातिसारकासघ्नी रुच्या दाहतृषापहा । 'नृपे' प्रोक्ता तथा 'भावे' कषाया च विसर्पजित् ॥ १८ ॥

५२ वल्लीदूर्वा-लता दूय ।

नामानि—मालादूर्वा वल्लिदूर्वालिदूर्वा मालाग्रंथिग्रंथिलाग्रन्थि-
दूर्वा । मूलग्रन्थिर्वल्लरी ग्रंथिमूला रोहतपर्वा पर्ववल्ली सिताख्या ॥ १६ ॥

गुणाः—वल्लिदूर्वा सुमधुरा कफवान्तिवृषापहा । पित्तघ्नी
शिशिरा तिक्ता 'राजनामनिघण्टके' ॥ २० ॥

५३ गण्डदूर्वा-गांठर दूय ।

नामानि—गंडाली स्याद्गण्डदूर्वातितीव्रा मत्स्याक्षी स्याद्वा-
रुणी मीनवेत्रा । श्यामग्रन्थिग्रन्थिलाग्रन्थिपर्णी सूचीपत्रा श्याम-
कांडा जलस्था ॥ २१ ॥ शकुलाक्षी कलाया च चित्रा तु 'राजना-
मके' । बह्वी नाडी तथा प्रोक्ता बालही तु शकुलाक्षिका ॥ २२ ॥
'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु मत्स्यगन्धा 'मदे' तथा ।

गुणाः—गण्डदूर्वा तु मधुरा वातपित्तज्वरापहा ॥ २३ ॥ शिशिरा
द्वंद्वदोषघ्नी भ्रमतृश्रमहा 'नृपे' । लोहद्रावी दाहहा च बलासघ्नी च
रक्तहा ॥ २४ ॥ पित्तक्षयहरा हैमा प्रोक्ता 'मदनपालके' । 'भावे' तु
ग्राहिणी कुष्ठपित्तज्वरहरा स्मृता ॥ २५ ॥

दूर्वासाधारणगुणाः ।

दूर्वा कषाया मधुराश्च शीतः पित्तवृषारोचकवान्तिहन्त्र्यः ।
सदाहमूर्च्छाग्रहभूतशान्तिश्लेष्मश्रमध्वसनवृत्तिदाश्च ॥ २६ ॥

५४ कुन्दरु ।

नामानि—कुन्दरुः कुन्दरो रुण्डी दीर्घपत्रः खरच्छदः । रसालः
क्षेत्रसम्भूतः सुतृणो मृगवल्लभः ॥ २७ ॥

गुणाः—गौल्यां कुन्दरुमूलं च शीतं पित्तातिसारनुत् । प्रशस्तं
गोधनानां च बलपुष्टिप्रदं 'नृपे' ॥ २७ ॥

५५ भूतृण-सुमन्धरोहिष ।

नामानि—भूतृणं रोहिणी भूतिभूतिकोऽथ कुटुम्बकः । माला-
तृणं सुमाली च छत्रोऽतिच्छत्रकस्तथा ॥ २८ ॥ गुह्यबीजः सुगन्धश्च
गुच्छालः पुंस्त्वपिग्रहः । बधिरश्चातिगन्धश्च शृङ्गरोहस्तु 'राजके'
॥ ३० ॥ गुच्छश्चैव तथा प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः ।

गुणाः—भूतृणं कटुतिक्तं च वातसन्तापनाशनं ॥ ३१ ॥ हन्ति
भूतप्रहावेशान्विषदोषांश्च 'राजके' । उदरक्रिमिकासघ्नं कफश्लेष्मा-
शोहं 'गणे' ॥ ३२ ॥ तीक्ष्णमुष्णं विदाही च दीपनं लघु रोचनं ।
दक्षं च मुखशुद्धं स्यादवृष्यं पित्तदूषकं ॥ ३३ ॥ रक्तदूषकमित्युक्तं
वैद्यैर्भाविप्रकाशके ।

५६ सुगन्धभूतृण-सुगन्धी चास ।

नामानि—सुगन्धभूतृणश्चान्यः सुरसः सुरभिस्तथा ॥ ३४ ॥
गन्धतृणः सुगन्धश्च मुखवासस्तु 'राजके' तथा 'गणनिघटे' तु
वैद्यैः प्रोक्तं सुगन्धिकं ॥ ३५ ॥

गुणाः—गन्धतृणं सुगन्धिस्यादीपत्तिकृतं रसायनं । स्निग्धं
मधुरशीतं च कफपित्तश्रमापहं ॥ ३६ ॥

५७ ऊखल-ऊखलतृण ।

नामानि—ऊखलो भूरिपत्रश्च सुतृणश्च तृणोत्तमः ।

गुणाः—ऊखलो बलदो रुच्यः पशूनां सर्वदा हितः ॥ ३७ ॥
प्रोक्ते 'राजनिघटे' तु भिषक्शास्त्रपरायणैः ।

५८ इक्षुदर्भा-इक्षुदर्भ ।

नामानि—इक्षुदर्भा सुदर्भा च पत्रालुस्तृणपत्रिका ॥ ३८ ॥

गुणाः—इक्षुदर्भा सुमधुरा स्निग्धोष्णा तु कषायका । कफपि-
त्तहरा रुच्या लघुः सन्तर्पणी 'नृपे' ॥ ३९ ॥

५९ गोमूत्रिका-गोमूत्रतृण ।

नामानि—गोमूत्रिका रक्ततृणा क्षेत्रजा कृष्णभूमिजा ॥ ४० ॥

गुणाः—गोमूत्रिका तु मधुरा वृष्या गोदुग्धदा 'नृपे' ।

६० शिल्लिका-शिल्लिकतृण ।

नामानि—शिल्लिका शिल्लिनी शीता क्षेत्रजा च मृदुच्छदा ॥ ४१ ॥

गुणाः—शिल्लिका मधुरा शीता तद्वीजं बलदं 'नृपे' ।

६१ निःश्रेणिका-निश्रेणीतृण ।

नामानि—निःश्रेणिका श्रेणिका च नीरसा वनवल्लरी ॥ ४२ ॥
वनवल्लभा तथा प्रोक्ता 'राजनामनिघटके' ।

गुणाः—निःश्रेणिका नीरसोष्णा पशूनामवलप्रदा ॥ ४३ ॥

श्री विश्वविद्यालय

SAMPLE STOCK VERIFICATION

1988

VERIFIED BY R. 12

